* अर्थात राजपनसब

अथमुतफरीजोंकाइतिहास

जगतमेंसबसेबडीभींत चीनदेशके उत्तरमे शत्रुओं सेमुल्कबचानेकेलियेइसामसीहसे २२० वर्ष पहिले चीनकेमहाराजाफगफूर **पहिलेनायन** नेअपनेमुल्ककीसीमा परइसदीवारकोवनाया था जिसको २०९६ वर्ष हुये यहदीवारबडे २ पहाडोऔर नीचेघाटियों-दरयाओं-नालों आदि परहोती हुई १२५० मीलिलंबाईमें बडे परिश्रम कोबनाईगईहै-उचाई २० फीट मोटाई नीचे २५ औरउपर १५ फीट है ७ घोडोंके सवार बराबर होकरइसपरघोडे दौडातेजासक्तेहै यहदीवारपत्थरसेचुनीगईहै **आदमीकीउमर** एकफ्रांस केविद्वान आलमनेमामूलीआदमीकीअवस्था ५० वर्षकीबतलाकरउसके योंहिस्से किये है ६००० दिनसोनेमें ६५०० दिनकाम काजमें ८०० दिनचलनेफिरनेमे ४००० दिनखेलकूदमें १५०० दिनखाने पीनेमें-५०० दिनबीमारीमें **छापेखानेका** इनरसन ६०० ई० मे पहिले पहल जारीहुवाथा **जेबीघडी** सबसे पहिले सन १५७७ ई० मेंबानाईगई **दियासलाई** पहिले पहल सन १८२९ मेबनाईगई-॥

सुचना

[illegible] हमने इसग्रंथ को शुध्य करके छपवाने में कोइ कसरबाकीन्ही छोडी परन्तु मनुष्य का स्वभावभूलनेकाहै इसकेउपरान्त श्रीजी हजूर **महारावलबैरीसालजीसाहिब** के स्वर्गबासहोनेसे महताजी **श्रीनथमलजीसाहिब** दसदीवानका जिन्होने इस ग्रंथ की सामगरीके सोचनेमेबडा ही परीश्रम किया है चित्तउदास होगया जिससे हमकहसक्ते हैं किबहुतसीवाते रहगई होंगी जिनकी निसबत आसाहै किअबकी बेर छपनेमें शामिल हो सकेंगी आपलोग भूल को क्षमा करें-॥

सबपाठकोंकासुभचिन्तक सेवक लखमीचन्द रईस जैसलमेर-॥ २० दिसम्बर सन १८९२ ई०

इति

तवारीखजैसलमेर

تواریخ جیسلمیر

نمبر (۲) نمبر (۱)



नम्बर २



नम्बर १

तसवीर जनाबदीवानमहता नथमल जीसाहब नदारुलमुहामरियासत जैसलमेर	तसवीरश्री श्री १०८ श्रीमहारावल = ॥ वैरीसाल जीसाहब बहादुरवैकुन्ठवाशी सकसो भड़नालोसवे फरमांरवाय जैसलमेर

कविता

सोरठा॰ विस्नुरवल वैरशल जिका पुरीजैशान। थारेन्यावी धर्म सोदीपै न-यो दीवान॥१॥श्री रावल रिपुशाल नामसुनत रिपुकंपमन। सचिव सकड़-नथमाल सांमदांमभयभेदगुन॥२॥वैराजसवातां जुगजातां जावे नहीं। इल परअखयातां सांतोंदधि कांठे सिरे॥३॥वडपनबुद्धि विशालकी कविमुखसो-भा करे। मणधारी नथमाल वाणीगाढापनवचन॥४॥मतरो अतिकै माश -

निराग राजस्थानयंत्रालयअजमेरमुहल्लापुराणीमंडीमेंमोलवीमुहम्मदमुरादअलीकेप्रबन्धसे

सतबहतरो धार्कसरसे। श्रोपत बश उजास नीति प्रीत पालक न था ॥ ५ ॥ कहियो राम कथा सोलह में इस्मृत श्रवे। नेणबीच न था जाहिर ही देखे जगत ॥ ६ ॥

निवेदन

इस किताब के पढने वालों की सेवा में खाकसार मुहम्मद मुराद अली होशियार मालद व प्रबन्ध करता राजपूताना गज़ट व चिराग राजस्तान यंत्रालय अजमेर अर्ज़ करता है कि श्री महारावल बैरीशाल जी साहब बहादुर के जीवन चरित्र ग्रन्थ में जो ऐन ही हस्ब हाल सरदारों भाई बेटों व अहलकारों आदि मुलाजमों वल्कि और ही लायक सखशों का मान कुर्ब बढाना मांगित ब्राह्मण चारण भाट वगैरह आम प्रजा का पालन करना उनकी भलाई व रियासत की उन्नति का ख्याल रखना और जो अहद नामा राज व सरकार अंगरेजी के बीच में उनके बुजर्गों ने किये थे उसका सच्चे दिल से खैर ख्वाही के साथ पूरे तौर पर निवाहना सब देशी बिदेशी सूरबीर दातार व सच्चे आदमी से दिल में खुस रहना और हर एक सख्श को जो जैसा है पेशानी व बातों से सही सनाख्त कर लेना परन्तु दयालुता से बुरे का भी अपमान न करना सबके गम में सरीक होना और दिल से तो धर्म श्री वल्लभ कुल याने पुष्टि मारग का रखने पर ही दूसरे सब धर्मों को जाहिरमें मानना सिध महात्मा साधु सन्यासी आदि मात्र अतीत अभ्यागत फ़कीर वगैरह का सत्कार करना वगैरह २ बहुत कुछ लिख दिये हैं तदापि मैं कहता हूं कि हज़ार हों गुण अब लों नहीं लिखे गये जो सारे गुण मुफ़सल लिखे जावें तो ग्रन्थ पूरा ही न होसके बस इतने ही में समझना चाहिये कि इस जमाना में सच्चमच्च राजे परीक्षित अब तरे हैं पुरानी चाल को बहुत पसन्द फ़रमाते हैं व लात्मा तो ऐसे कोई भी नहीं होंगे ॥ जासगोरहुवा

चुंकि - ऐसे निष्कलंक खानदान का जो १ हज़ार बर्ष से पुराना राज प्रतापी राजाओं के समय में सब तरह तरक्की पा पाकर मुल्क व आबादी आमदनी व कुर्ब साहाना से कम होते जाने और ऐसे जमाना में ही वैसे ही रहने का बड़ा ही तआज़ुब हुवा तो तवारीख के देखने व वाकि-

फ़कारोंसेवर्तावकीवातेंसुन्नेपरख्यालकियातोइतनेसववसहीजानेगयेसोसमझकर
वर्तावरहेगातोठीकहै (१) राजनीतिरीतियानेहुक्मवसनदतहरीरकोपायदारीऔर
हिसाबजमाखर्चकीसफ़ाईनहीरखकरहरजमानामेंरईसवसर्दारमनोमिंगकारखाई
जोभेमीचाराकीरीतहैरखतेरहेकिमिलनेवोलनेलिखनेमेंसादगीवसवदेशविदेश
काधनलूटकरलगानेलुटानेवमरनेमारनेकोहीजवडीनामवरीसमझेहैंनमालूम
सोबतमेंकैसेदानावदूरअन्देसरहेहैं॥(२) प्रतापीराजापिंडाकहकीकोभाईकेसिवाय
हरपीड़ीमेंमात्रसर्दारउमरावबल्किवाजवक्तखुदभाईवेटेभीगनीमकेसवेदनकरमु-
ल्कलूटनेवगमानेमेंकोताईनहीकरीनीतिवधर्मनहीसमझनेसेघरकीफूटहीरही॥
(३) वादशाहोंकेहुक्महाजरीमेंनफ़रतरखनेसेमुल्कवकुवेलकवनयेसिरनहीं
पाकरकवजेकामुल्कवाहिम्मतसेपायाहुवालकवमेंहीकमीहोतीरहीसिर्फइसीकह
नेपेरहेकिभाटीभोलावअठखीलाहदसेपरेहैहां*महारावलभीमजोवादशाहकी
खिदमतमेंहाजरहुवायातोमानकुर्ववमुल्कसवसेवढकरपायाहीथाऔरनवरोजाहुआ
यासोजाहिरआमहै(४)जागीरमेंगेहूंवकर्सेनहोनेपरभीगांवकीपैदाअलावाखांपखीयीव
नरसिंहोकेपाटवीसरदारनहीलेसकतेभाईवनेकरलेतेहैंजमानेसावकमेंतोधाडापाड
करगादररखतेथेसोअवरहानहीसवतरहलायकपनासेघटतेजातेहैंश्रीजीममदूहनेधा
लनासेगामोंमेंजराअतकरानेकस्सावसानेकूवाबनानेकीइजाज़तकेकईगांववज़मीन
पाटवीभोगवनेकीसर्तपरअंजसरेनोअताफरमायेपरन्तुसर्दारोंनेतोमोटीअकलसे
पुरानीसोढकीरीतज्यूंभाईहिस्सेकरहीलीयेवेचारीलाजकिसकेभुजापेरहे(५)कोई
मुलाजिमकैसाहीखैरखाहीसेबन्दगीपकड़नेबालेपरिवरसपिन्सनहरजमानेमेंहि-
मालयकापटाहोताहैवउसकीऔलादकाजोनशीव-हांइससमयश्रीहजूरनेदिलेरीव
दूरअन्देशीसेऐसीबुरीचालकईपलटदीहैंमगरअगवानोंकोखुदाऐसीनीयतबख्शे
नवचलेक्योंकि(दोहा) लघुकदलीकेमधुरफल-बड़ेपातअगवान।तरुमोटेछोटेदलन

*महारावलजीश्रीभीमसिंहजीअकवरबादशाहकेदर्वारमेंबड़ीइज्जतरखतेथेऔरबादशाह
कीमहर्वानीकेचिन्हआजलोंजेसलमेरमेंदिखाईपड़तेहैं।अ०म० मोलवीमुरादअली॥

फलखाटे इमलांन॥ १॥ देखिये दूसरीरियासतोंजो थोडे हीअरसे सेहुईहैं राज नीति रीत रख ने व जागीरमें १ सर्दार मालक होने के बाइस उसके भुजांपर लाज रहने व हुक्कामवक्त के हुक्म हाजरीमें तन मन धन से तत्पर रहकर किसकदर मान कुर्ब व मुल्क पाये व पारहेहैं और बन्दगी पहुंचने वाले को परिवरश पुस्तेना करने से बडापन जाहिर होनेके अलावा दूसरे मुलाज्मीन कैसी खैरख्वाहीसे हाजरी दिखानेमें कोशिसें करतेहैं॥

पस - राज खुदा दाद तो है ई मगर १ खूबी यहां की बेशक सबसे ऊपर है कि मालक तो सबको बेटा बेटा और वह मालक को मा बाप व प्रत्यक्ष परमेश्वर जानकर हर काममें ऐसी तरह बोरते हैं सो देखकर हुक्काम वक्त व बडे २ दाना दूरअन्देस भी हैरान हैं कि इतनी सी पैदा पर इतने बडे जंगली मुल्क का बन्दोबस्त व सब तरह राज का ठाठ व राजपूताने में बहुत रईसों से रावता दोस्ती व सगपन टीका नुता सोगात याने सब रस्मात बराबर रखकर मकानात बनाने रिआ मौज करने वगैरह २ में हदसे परे ही है दर हकीकत ये कार खाई लायक पसन्द व आश्चर्य के है. हम कहते हैं कि यह नतीजा रईस की नेक नीयती व प्रधान की समझदारी का है. अगर्चेः महता सालमसिंहजी दीवान साबक को टाढ साहबने किसी के कहने से बुरा तो लिख दिया मगर वह उसवक्त में ऐसे न करते तो जेसलमेर का राज तिके बोटी हो जाता=

चलत — सं. १९९४ आस्वन वदी ६ — सं. १९०६ पोष सुदी ३

चलत: ३ चं. २ श १ १२ ११ ४ १० ५ बृ ६ बु ६ सू. श ७ मं. के ८ ९

सं. १९९४ आस्वन वदी ६: २ १ १२ ३ ११ ४ १० ५ सू. बृ ६ बु के मं. ७ श. शु ८ ९

सं. १९०६ पोष सुदी ३: ६ ४ मं. ३ ७ ५ ८ २ ९ से. बृ ११ १ १० चं. १२ शु.

इन जन्म कुंडलियोंसे जाहिर है कि श्रीमान महारावल बैरीशालजी जेसलमेराधीस का जन्म पोष सुदी ३ सं. १९०६ का और महताजी श्रीनथमलजी साहब मदारुलमुहाम राज का जन्म आस्वन वदी ६ सं. १९९४ बिक्रमी का है परमेश्वर से हमारी प्रार्थना है कि श्रीजी हजूर और उनके प्रधान और सर्वपरिवार हजार साल तक जीवत रहैं॥

शोक महा शोक के यह तवारीख छपकर पूर्ण न होने पाई थी कि श्रीमहारावल बैरीशालजी साहब का फागुन वदी पूर्णमासी सं. १९४७ मुताबिक १० मार्च सन १८९१ ई. को मंगलवार के दिवस को साढे दस बजे देहांत हो गया हाय हाय

श्रीगुरुभ्यन्नमः

THE HISTORY OF JEYSALMERE

श्री श्री १०८ श्री हजूर अनवर महारावल जी श्री
वैरीसालजी साहब बहादुर जैसलमेराधीशों के
अहद में यह इतहास

जिसका नाम



सेवक **लखमीचन्द** जी ने बहुत बरसों की महनत और प्राचीन
समय के इतहास व सरकारी कागज़ात से इकट्ठा करके श्री महता
नथमल जी साहब बहादुर मदारुलमुहाम अर्थात प्रधान
राज्य जैसलमेर की आज्ञा अनुसार व सहायता से तैयार किया
और सम्वत १९४८ विक्रमी में ग्रन्थकर्ता की आज्ञा अनुसार

चिराग़ राजिस्थान व राजपूताना गज़ट यंत्रालय
अजमेर में मोल्वी मुहम्मद मुराद अली होशि-
यार कार्य्य धकर्ता के प्रबन्ध से छपा

اول بار ۵۰۰ अव्वल दफे ५०० कापी

॥ श्री ॥

श्रीगुरुभ्यो नमः

कबित स्तुती

धन्य वल्लभाधीस धन्य विठ्ठल गिरधारी
मातू धन्य स्वरूप-सर्गो भवपार उतारी ॥
धन्य वैष्नवा धर्म धन्य जे जंन उर धास्यो ॥
कृष्न नाम द्रढ कियो सबै जंजाल निवास्यो ॥
पुष्टि प्रकास प्रगटे प्रभु आप कृष्न श्री अंस को
दासनुदास मैं हूं सही श्री बलभ के वंस को

दोहा

मेरे मन में तुम वसो ऐसी क्युं कहि जाय
याते यह मन आप के लीजे चरन लगाय॥

दफ़े १ दीवान म्हता नथमल जी के खान्दान का इतहास ॥ व कार्रवाई का हाल

इतहास

ज़ाहिर हो कि भरथखंड के दखन गुजरात देस में हलवद मोरबी नामी स्हर में सोम वंसी क़ोम झाला मकवांणा गोत्र के राजपूतों का पुराना राज॥१ श्री जैगोपाल जी ने छोटे भाई को देकर आप जैगोपाल गढ सहर बसाय राज्य धानी करी इन के कुं. ॥२ धर्म पाल जी वो देस ही त्याग कर गढ किरोहर में भारीराव श्री केहर जी पास आये और गढ नानणा नन वांणा बहोरों से लेकर राज बाधा ॥३ देहराय जी के दीवान ओस्वाल

श्री महारावल बैरीशाल जी साहब की फागुन
... लतार के दिवस को साढे दस बजे देहान्त हो गया है यह

कुलद्दरिया ॥ १८ देवचंद ॥ १९ पचानजी ॥ २० सूरजमलके मंझलेबेटे वंद्रावन के केई घर आगरे में हैं जैशलमेरियां से सगपिण नहीं रहा पर गोयंदाणी कहाते हैं ॥ तीसरे भागचन्दके भी गोयंदाणी हैं ॥ २१ गोयंद जी मेजे नेहड़ाई में क्लोचों के कटक से विलक्षुझाय वाकोमार के आपही काम आये उहां तलाई पर दो बड़ी साल व चौंतरा सं० १६२८ में नथमलजी ने बनाया दो बेटे घहारूदास व अषैराज के गोयंदाणी हैं ॥ २२ ॥ घहारूदास ॥ २३ धनजी ॥ २४ दामोदरदास ॥ २५ बालकिसन जी ने श्रीबालमकुन्दजी की सेवा पधराई सो विराजे हैं जबसे हर पीड़ी में वसीहूत करते हैं कि श्रीठाकुरजी की सेवा व श्री हजूर साहबको भी ईश्वर समझ कर वंदगी तन मन से करनी और सालमचन्दजी ने इतनी वधती कही कि किसी की बुराई मत करो अगर कोई बुरा करै तो भी उसको भलाई करके शरमिंदह करना चुनाचे सेवाके धणी ने आजतक तो ऐसे ही निभाई है ॥ २६ सरदारमलजी ॥ २७ अजबरामजी के बड़ा सालमचंदजी व कोरा ॥ २८ किशनचन्दजी ॥ २९ नथमलजी जो ९ वर्ष की उमर सं: ३ से नोकरी अच्छी देने लगे तो इज्जत व कदर पाते २ सं० १७ में बड़ा बाप की जगे दीवान होकर सं० १९ में असतेफा दिया फेर १ महीना कैद व डंड हुवा बाद कनाय कर्तां साहब बहादुरजी पास वकील गये साहब मदद पहुंचाय खुश हुए सब हाल किताब व रपोट में लिष कर सनद खुशनूदी व राजकी सच्ची और खैरख्वाही का खरीता व खत लिखा दिया फेर सं० २१ से दीवान का काम करते करते सं० २७ में कोडा तरफ श्रीजी साहब की उमर - दराज हो कदरदानी व निरंतर म्हरबानी से दीवान इन कोई परता और जनाब रजीडंट साहब से सलाह व सिफारिश करके हैरीश मीर मुनशी को बुलाया जब फेर सं० ३० जेठ सुदी १२ तीसरी दफे दीवान होकर बमूजिब हुकम आका यनामदार सं० ३१ के मिघर वदी १ से महसूल सायर का नये कायदे मूजिब जारी किया कि जबसे खजाने में नगद रुपये आने से दीवान को कामका बड़ा ही आराम हो गया फेर मान्न ओहदों के अगले हिसाबका तो चौपानीया बनवा लिया और आयंदे नया हिसाब हर वक्त तैयार रहने की तजवीज बहुत ही सुगम कर दी - फेर

आमदनी आबादी में तरक्की और रईयत के आसूदगी व सुधारे की बाब में सदहा तदबीरें कई तो जारी करीं जिनका खुलासा मौके पर लिखा है व कई लिख रक्खी कि मुनासिब वक्त पर जारी की जावेंगी ज्युंई इस साल प्रभु की कृपा से मुराद बर आई कि पर्वाबाब जाट-नि तनोई चमार वगैरे हज़ारों घर दक्षेर से आकर आबाद हुए और बहुत दूर दूर के-लोग आने को त्यार होगये चुनाचे केई तो आकर मिलगये व केई अरजी व कागद मोजूद हैं त्यार होंजा में बहुतसे नये कुवे व बंधा त्यार हुवे ॥ व आमदनी में भी पातर्पुवा तरक्की भई क़र्ज़ा भी करीब १ लाख रुपये के उतारा गया इस की हाज़री जनाब रजीडंट साहब कर्नल पोवलट साहब बहादुर जी को मालूम होने पर साहब मौसूफ ने साहब वलां बहादुर जी की रपोट में अपना फ़्यरज़ाहर किया कि हम ने नथमलजी को दीवान किया जिससे यह नतीजा भ्या इस बात से खुदपसंद या मुतफ़पी व बदख्वाह लोगों को रक पैदा हुवा तो खाई नखाई शिकायतां व काम में हरकतां करने लगे उनका भी किसी तरह से इतक वहरजनहीं करके फ़ायदा हांकिया जिससे दीवानी फौजदारीका काम सुस्त चलनेलगा इस का तो बन्दोबस्त जनाब साहब मन्दूह से मदद लेकर करना चाहा-परन्तु ८ सालतक मुतवातिर क़हतसालियां और १॥ वर्ष से तो माल कारवाई ही अवतर हो गई तो भी बहुतसे निकलगये बगाएचे माल परसांत तुंताऊका वगैरे के रुपये क़रीब १ लाख लोगों में लेनाईं मौज़मांनां अच्छा आने से वसूल होंगे लेकिन बिलफ़ेल तो आमदनी घटने व खर्च ज्यादे लगाने वगाय बिराहोने कर्ज़ा क़रीब ६० हज़ार के होगया ॥ लाचारी है और कहावत सच है कि नरची की रीती रहे दरची तीत तत काल । जिस क्रिये स्वर्ग लोक को वस पहोंचे पाताल ॥ मगर कारवाई की तरफ़ इन्साफ़ की निगाह से गौर किया जावे तो बखूबी मालूम होता है कि मुलाज़मांन आलव अर्दनजकी सं ४० के दिननरवा के सिवाय बधताई व अगली खर्ची में कितने रुपये मिले हैं तथा हर एक काम व कारखानों में और हर एक देहात व क़ौम व ज़मीन षडीन वगैरे में कहां

तक निगाह पहुंचाकर वो सी नीयत से उम्दा २ तदबीरें सोचीहैं और षेती बढ़ाने — व रइयत को इ। गैरसे बुलाने व सार वालों को बुला कर के वां के वास्ते देहात दषाने व विसा पूनमचन्द को भेजकर करसा बुलाने और ऐसेही वेपार की तरक्की में और बहुत वरसों की गई हुई रियाया पलीवाल साहूकार सुनार वगैरे की आमदरफ्त में सरकारी षाष व आपस के करजे वगैरे तकलीफात मिटाने में वगैरे २ कहांतक कोशिशें की गई मगर श्री दरवार के सहे वांजैसे सब उपाय भाग से सेवा व महेसरीयां की आमदरफ्त के काम आबी हासिल न हुई जिसका सबब ऊपर लिखा ही है अब भी श्रीईश्वरनाथ जमाना अच्छा करें और हाकिम वक्त सिदक दिल से काम में मदद देकर लोगों को हुकुम व कायदे फेयावन्द और खैरख्वाही व सुधार की तरफ रजू करें तो उमेद कवी है कि रोज वरोज तरक्की होकर चन्द साल में आबादी दुचन्द व आमदनी सह चन्द बल्के ज्यादः और लोगों को आराम व फायदा व हर तरह का सुधारा भी षातरख्वाह आसानी से होसक्ता है और नथमलजी के सरीर में बहुत मुदत से बीमारी के वायस काम की संभाल जैसी कि चाहिये नहीं होसक्ती और षयाल भी गूंगे को सपनासा होगया है मालूम होता है कि जमाना अच्छा बंध जावे तो इस्तीफे की अर्ज करेंगे शुभं ॥ ३० कलेयाणमलको गोदलिया ॥ ×॥

श्रीगुरुभ्यन्नमः श्रीरामकृष्णायन्नमः

दफे २ तवारिष महाराजगान रियासत जेसलमेर ॥ व जुगराफिया मुल्क माड़

सेवक लखमीचन्द वल्द षेतसी ने म्हता नथमलजी दीवान राज मोसूफ की सहायता व कारबार राज थिानजी दानजी महता अजीतसिंहजी परोहित बुधलालजी व्यास गणेसदासजी म्हता इंदराजजी की सलाह व मदद से वनाई सो सब साहवान पसंद करी सं॰ १९४५ का वैसाख सुद २ वार भृगु मुताबिक तारीख ३ मई सन १८८९ ई॰

यह किताबबांचने व सुनने वालों से बीनती है कि तहरीर वगैरे में नुक्स हो सो माफ़ फ़रमावें क्योंकि अव्वल तो मैं कोई इल्म पढ़ा हुआ नहीं कि १ ज़बान में तहरीर व क़ायदे से नकसा करता, दूसरे तवारीखी हाल भी पूरा पूरा हाथ न लगा - कहते हैं कि सब हाल की ह्यात थी सो जुताब यडसाहब बहादुर मज़्मा करने को लेगये थे उस का खुलासा नदूक्की ही बहुत तहकीकात करके टाड नामे में लिखा है परंतु वो किताब-पोथी नआई सुना है कि मेवाड में-१ जती पास थी सो बीकानेर में जती पास है वो मांगने की तदवीरें करीं मगर पता न लगा लाचार दूसरी किताबों में मुखतलिफ़ हाल देखा व वाक़िफ़कारों से सुना जिसका सोध करके थोड़ा २ खुलासा इसमें लिखा है तद्यपि इतना तो बेशक है कि दूसरी किसी १ किताब में नहीं है।। और जुग़राफ़िया तो नया ही बनाया है जिसमें कुल देस के गाम वढांनी मए आबादी व नीवान मंदिर डुंगर नदी दरख्त घास न्यारे तक वगैरे २ जो इस वक्त मौजूद हैं सब लिखा गया है गांमों की आमदनी का हाल मालूम नहीं हो सका सो आयंदे के लिये तरकीब ठीक निकाली है सो होगई तो मालूम हो जावेगा सिवाय इस के राज बातें जैसे मारवाड़ रपोर्ट में हैं ॥ यह किताब बांचने व सुनने वाले जिस बात के ग्राहक हों सूची पत्र देखकर समझलें और कार मुख़्त्यार को तो भूत वर्तमान की वाकफ़ी के सिवा राज व लोगों के आराम व फ़ायदे के लिये आयंदे बरतने की जो जो रायें इसमें मौके २ पर लिखी हैं गौर से देख कर वाजिब जानें व हो सके सो करें शुभम् ॥

इतने शब्द आदि के एक वर्ण से लिखे हैं सो बांचने में खयाल रहे । इ० आका ॥ कुं० वर । प्रो० हित । म० गरा । सं० वत । वा० रिख । ठा० कुर । ख० डीन । उ० र्फ । को० स कु० वां । कु० ट । मी० टा । त० लाव या तलाई । बे० रीयों । पु० स । पू० र्व । अ० ग्नि । द० क्षिण नै० ऋत । प० श्चम । वा० यव । उ० त्तर । ई० शान । गां० व । ज़मीदार । भो० मिया - कई शब्द अंक याने अदद से लिखे हैं सो तहरीर में हरूफ़ बांचने चाहियें

दफ़े २

अथ बंसावली श्री मद्भागवत अनुसारेण

प्रथम १ श्री आदि नारायणजी के नाभि कमल से ।।२ ब्रह्मा ।।३ अत्रि ।।४ सोम से । चंद्रवंस हुआ ।। ६ बुध ।। ७ पुरूरवा । चक्रवर्ती हुआ । तस्य । पुत्र । छः । श्रुतायु ।। सत्यायु । रय । ज्य । विजय ।। ८ आयु ।। पाटबैठा ।। तस्य ।। पुत्र । च्यार ।। रंभ ।। अनेन ।। रज ।। ९ निघूष । पाट ।। १० ययाती ।। तस्य ।। पुत्र ।। च्यार का वंस चला ।। अनु से । अनवंस । द्रुधु ।। से द्रुधवंस ।। मलेछ हुवा ।। तुरवंस से ।। तुर वंस ।। ११ यदु । पाटवी था । परन्तु । पिता । की ।। विप्रीत आज्ञा । नहीं । मांनणे से । पिता की । गादी । नहीं । पाई । न्यारा । राज । बांधा ।। यादव । कहीजे ।। यदु के । दोय पुत्र । हुवे ।। शाहस्राजीत राजा वांसे । सहस्र । जुध । जीते । १२ क्रोष्ट । पाट बेठा ।। १३ व्रजमान ।। १४ स्वाती ।। १५ उस्तक ।। १६ चित्ररथ ।। १७ सशिबंदु ।। १८ प्रथुश्रवा ।। १९ धर्म ।। २० उषा ।। २१ रूचीक ।। २२ ज्यामघ ।। २३ विधर्भ ।। २४ क्रथ ।। २५ कुंत ।। २६ भ्रष्ट ।। २७ निर्व्रति ।। २८ दरसाह ।। २९ व्योम ।। ३० जीमूत ।। ३१ बिक्रति ।। ३२ भीमरथ ।। ३३ नवरथ ।। ३४ दसरथ ३५ सकुन ।। ३६ कारंभ ।। ३७ देवरात ।। ३८ देवक्षत्र ।। ३९ मधु ।। ४० कुरुवंस ।। ४१ अनु ।। ४२ पुरुहत्र ।। ४३ आयु ।। ४४ सात्वत के पांच पुत्र हुवे ।। भजमान ।। देवाव्रध ।। महाभोज । का । भोजबंशि ।। व्रषण ।। ४५ अंधक । पाट ।। ४६ भजमान ।। ४७ विदुर्थ ।। ४८ सूर ।। ४९ समी ।। ५० प्रतिक्षत्र ।। ५१ स्वयंभोज ।। ५२ हृदीक ।। ५३ देवमीढ ।। ५४ सूरसेन ।। ५५ बसुदेव के बडे पुत्र रामयानें बलदेवजी जो श्री शेष भगवान का अवतार और दूसरे ।। ५६ श्री कृष्णचंद ।। से पिछला हाल मुरवतसिर नीचे लिखा है ।।

श्री कृष्णचंद पूर्ण पुर्षोत्तम अवतार का हाल वेद पुराणादि सब शास्त्रों से जाहर है मथुरा से द्वारका पधार राजधानी करी कुनशापुर के राजा

भीष्मक की पुत्री रुक्मणी जो लक्ष्मी को अवतार के स्वयंवर में मान्न राजा जमां हुवे श्री कृष्णचंद भी पधारे तो सत्कार नहीं होनेसे क्रतकैथ के घरडेरा किया स्वर्गसे इंद्र ने रुवाजमा भेजा वहां ही राज्या भिशेष हुवा जरासींध के सिवाय सवराजावां भेटां दी वाद सवाजमा पीछा भेजा। १ मेघडंवर छत्र रखलिया कि यह रहेगा जवतक राज वरण रहेगा सोमोजूद है इसी से छत्राला जादम व राजावां मेशिरोमरण है तथा कुलदेवी का खिका को साहणी कहते हैं श्री कृष्ण की साहिता में जरासिंध से स्वांगसे आई जवसे स्वांगयहियां व स्वागीयां कहीजी। २ प्रद्युमन कामदेव को अवतार। ३ अनुरुध। ४ वज्रनाभ को अर्जुन के साथ- भेजा सो मथुरा में राज वैठे वाकी सवयादवां को लेकर प्रभास गए जहां यादवा- स्थल हुवा। ५ प्रतिवाहु। ६ उग्रसेन। ७ सूरसेन। ८ सुखेन के गोद प्रतिवाहु के दलवाहु के वाहु वल का वेटा। ९ नाभवाहु वैठे। १० सुवाहु शिकार को गए सुवर के पीछे पाताल पधारे वहां वाराह भगवानु का दर्शन हुवा जवसे सुवर की तलाक है और नाग क- न्या परन्या जवसस नागमरण व नाग मरणपां का हार देकर कहा कि दूजा विवाह मत कीजे फेर कुंवर रज हुवा वाद दूजा विवाह सेभर में राजा की बेटी सुभागसुंदरी से हुवा जवजस से रवा पाताल गई और कुंवर को वरदान दीया जिस से पश्चम - समुद्र तक तुरकों से जीत धरती लीवी फेर ६ पुत्र हुए १ खीर का जूदा समा सरवर या सोरठ देश गुजरात में भोमीयां जादम हे पहिले गिरनार में राजया दूसरे जदभा- ण का जादव माता अंवा की कृपा से वे याने डांग वहेडे का राजा हुवा अव करोली हैं। ११ रज कुवर राणी सुभाग सुन्दरी उजेन के राजा वैरसी की पुत्री स्वप्ने में गज- सिंगणीया देखा राजा कही कुंवर गज प्रतापी हुसी ॥ खुरासांन के वादशाह फ- रीदशाह से दो जुध जीते श्री स्वांगीयांजी की कृपा से फेर ३ कुंवर हुए भीमजत सराव सैन विक्रसैन। १२ गजवाहु श्री स्वांगीयांजी की आज्ञा सें युधिष्ठर संवत

* अवरस मुकाम को डांग कहते हैं क्यों के यह वही डांग है जो इसाके भरथपुर में है॥ [illegible]

२०८में गजनी वसाई गढ वरणाया दोहा ॥ तीन सत्त अतथक धरम बैशाखे सित तीन । रवि रोहिणी गजबाहु नै गजनी रची नवीन ॥१॥ खुरासान की मदद रूम से फौज आई कुंज सहर में लडाई हुई ३०००० तुर्क ४००० हिन्दु खेत रहे फौजसाही भागी गज की फते हुई जब से पश्चम का पातस्हा कहीजे ॥ कंद्रपकेल राजा कश्मीर से जुध जाच्या सो न हुआ कन्यां परन्या फेर श्री स्वांगीयां जी कही तुरकों का खून बहुत हुआ है सो अब वह वधेगे तेरे पोते से गजनी छुटेगी । १३ रुज्ज सैन । १४ प्रतिबाहु से गजनी छुटी । १५ दृत्तबाहु । १६ बाहुबल । १७ सुभाग । १८ देवरथ । १९ प्रथीस्हा । २० महीपत । २१ म्रजादपत बहादुरी व दातारी में नाम मशहूर किया ७ लाख सवार थे गजनी भी लीवी थी ।जेहल भाट को क्रोड पसाव दीया ॥ मात्र राजा जमा कर के जिग किया सगपण की म्रजाद बांधी पंजाब में हकूमत जमाई थी । २२ सेवात सेन । २३ सूरसेन । २४ उदीपसेन । २५ अप्राजित ने गजनी व पंजाब व काबुल में आध यवनां से लिया ॥ अवधास सहर वसाया ॥ मथुरा लाहोर मुलतान गजनी वगेरे बहुत से मुल्क में राज रहा । २६ कनकसैन । २७ सुगनसैन । २८ मघवानजेत ने मथुरा में राजा जमा कर के जिग किया और अवधास में श्वावडी व बागात महलात वणाया । २९ क्रतसैन । ३० भगवानसैन । ३१ विदुर्थ । ३२ विक्रमसेन ने पिंडीरां को निकाल कर लाहोर में राजधानी करी मथुरा खालसे रखवी । ३३ कुमोदसेन के कुं० गजसेन का वेटा । ३४ लूजपाल राज वैठे पंजाब में वनपुर गढ वनाया और बंगाले के राजा हरिसिंह से जुध जीता ॥ यवना को हिन्दोस्थान में आने नहीं दिया । ३५ वजीतजी के कुं० ८० में २७ का वंस चला पांचवां कुं० । ३६ मूरतपाल राज बैठे । ३७ रुकमसैन । ३८ कनकसेन । ३९ उन्नासैन गजनी में पाट लाहोर खालसे । ४० शोवायतसैन । ४१ प्रतसैन । ४२ रामसैन । ४३ स्हदेव । ४४ देवसवाय । ४५ शंकरदेव । ४६ सूर्यदेव । ४७ प्रतापसैन । ४८ अवनीजत । ४९ भीमसैन से गढ

नन्पुर व गजनी छूटी लाहोर मथुरा अवधास में राज रहा ॥ यवनों से जुध में सतलज पर काम आया । ५० चंद्रसैन यवनों से वैर लिया । और पंजाब के राजायों को तावे किया। ५१ जगजवात लाहोर में पाट । ५२ वैरा । ५३ देकनस के कुं० नहीं था जगसवात के कुं० काकलदे का पोता । ५४ मूलराज मथुरा में राज । ५५ रायदेव । ५६ सतुराव के कुं० नहीं था अवधास से काकलदे के वंस का । ५७ देननंद लाहोर में राज । ५८ नराभूप । ५९ जुध । ६० रोहतास । ६१ प्रतसेन । ६२ महोतन । ६३ वासुदेव । ६४ अलभाण । ६५ वीरसेन । ६६ सुभेद मथुरा में पाट । ६७ सूरसैन । ६८ गुणपयोध लाहोर । ६९ जगमाल के भाई भार्यसैन को मथुरा में धर्मा सती दान ने चूक किया और बयाने के राजा अजपाल को मथुरा दी उन्होंने ३१ पीढी राज किया । ७० भीमसेन के कुं० अरसिंह का बेटा । ७१ तेजपाल । ७२ भूपतसैन । ७३ रसान्नप के गयाबें कुं० रत्नसी यवनों से गजनी लेकर पिता की आज्ञा से न्यारा राज बांधा रत्न के कुं० सालवाहन ने स्यालकोट सहर बसाय रहवास किया । ७४ चंद्रसैन । ७५ मूलमन । ७६ लालमन । ७७ सारंगदेव । ७८ देवरथ । ७९ जसपत । ८० जगपत । ८१ हंसपत ने विक्रम सम्वत २ में हंसारगढ वसाय राजधानी करी ॥ तीर्थां पर घाट व बाग बणाया । ८२ देवाकर सं ४६ । ८३ भारमल सं ७१ । ८४ सुमांण सं ९५ । ८५ अर्जुन सं १२६ । ८६ नुजसेन सं १५२ । ८७ गजसैन सं २६० कुलदेवी की आज्ञा से कुं० सालवाहन को श्री ज्वालाजी की यात्रा के बहाने भेजकर सालवाहणगढ बनाय राजधानी कराई और हंसार में हकूमत जमाई ॥ पिंडी गजनी में रहे ॥ सहर से ५ कोस पर यवनों से भारी लडाई हुई बादशाह १ लाख आदमियों और गजसैन ३० हजार लोक साथ परलोक को सिधारे पीछे बादशाह का शाहजादा जलालुदीन बहुत फौज लेकर आया जब गजसैन का भाई सहदेव कई दिन लडे व शाका कर मरे गजनी में बादशाह का सूबा रहा ॥ सालवाहण सं० २५१ सालवाहण में राज बैठे-

तस्स पुत्र १२ में बड़ा रिशालु तो फिरताही रहा बहुतराजावों से जुद्ध व चोसर जीता-वाजू २ की कन्या परन्या पर० १ राजा भोजकी पुत्री सिवाय सबका त्याग किया कि जिसका जिससे शक हुआ उसको उसके हवाले की दोहा: फूलवती हठीयो धस्यो धारू धस्यो सुनार। सांगादे सत राखीयो राजा भोजकुमार। १ इनसे रिशालु ने बहुत से प्रश्न किये सब का माकूल जवाब दिया प्रश्नोत्तर छप्पः कोन तूलते तुछ- मंगन कोन काजलसे कारो-कोन लोहते कठन-कोन सोनासे सारो-कोन बिछु परडंक-कोन कलंक सूम सपूत कुस्यन काम मदराते मातो-कोनरवि परतेज-कोन अग्नि से तातो-कोनदूधते ऊजल-कोन जिभ्या ज्ञान क्रोध जस सृजन अमृत भरी अर्थ बतावो इणत्तिरा सकरेलेपहिली कवनगरी ॥१॥ दोहा गरज कहा न अग्नि में जले कहा न सिंधु समाय। कहा न अवलाकर सके काल कहा नहीं आस मन पुत्र नाम खाय॥ कोन पुर्षजननी बिना कोनमोत विनकाल। कोन सागर पाल बिन कोन अलख नींद विद्या पवन फूल बिन डाल ॥२॥ की घीया चोपड़ी की वाल्होवीरा। की कपासा कां वलो- आव वर कर कीठंढो नीरा ॥३॥ अलाहाजुलकयास बहुत से पुश्नोत्तर होचुके तो कुंवर बोला नेह कि चुन्दड़ी का पल्ला पानी में भिगोय चिराग पर जलावो सो पानी जलजावे चुनड़ी को दाग न लगे चुनान्चि ऐसा ही किया फेर कुंवरराणी ने भी कहा कि आपही पघड़ी का पल्ला ऐसे जलावें जब कुंवर ने भी ऐसा कर दिखाया इसकी वार्ता बहुत लम्बी मशहूर आम है कि चारण डूम वगैरह सब जानते हैं ॥ दूसरा कुं० वालबंध राज वैठे - वाकी धर्मांगद - सीहवछ - कालक - पार्ब - रूप - सुखा - लेख - जसकरण - नेभ - भभाट - नीपक - गंगेव - जोगेव - यह १३ ही दूसरे राजावां का मुल्कलेकर राजा भये सो पंजाबमें पटियाला - कपूरथला - नायरा* महेसर वगैरह पहाडी राजा हैं कईका तो ठिकाना बहाल है कई बीत गये और जो हैं पटियाला - कपूरथला - वगैरह अगरचे शिष वगैरे मत के वाइस राजपूताने में रिश्तेदारी नहीं रही ताहम जेसलमेर को अपना बुजुर्ग जानकर ऐसा ही बरताव रखते हैं और यह रियास्तें-॥

* अबसहीलफ़ज़ सरमोर नाहन है पहाडीरियासत मशहूर है॥ वन्दः मुरार अली अफ़ी अनहू

होशियार ज़माना साज़ वहुत हैं चुनाचे बादशाहाना दिल्ली व सरकार दौलतमदार अंगरेज़ी की मदद व हाज़री करने से खिलत खिताब व तग़मा बलके मुल्क बहुत सा पाया है ॥ जोगीराज गोरषनाथ व पूर्णां भगत की कृपा से अटक पर भारी महल्लत व बाग़ात व क़िला बनाया पिता का बैर लेने ग़ज़नी में दखल किया जलालुदीन का सूबा ग़ाज़ीखान १४७०० लोक से और १०००० हिन्दू खेत रहे ॥ कुं० बालबंध को गजनी में बैठाय आप पीछा आय स्वर्ग पधारे जब बालबंध साल वाहरा आए कुं० भूपत को गजनी में रक्खा जिसके पुत्र चिगता के ७ पुत्र देवसी • भारू • खीमखां नहम • जुपाउ • धारसी • बीजल भए बाद मुल्क लेने व यवनों की सोहबत से बुखारे के कवक बादशाह की शहज़ादी से शादी करी उस काल बुखारा शाह मुहम्मद बुखारे का बादशाह और चिगवे के आठ ही बेटों का चिगता कोम मुसल्मान हुआ फिर बीजल के बेटे गोरी ने बलख से ५० कोस गोर शहर बसाय बादशाह हुआ और कोम गोरी कहीजे दिल्ली में गोरियों ने अब्बल बादशाही करी ॥

।८९ बाल बंध सं० २९१ दिल्ली के राजे जेपाल की पुत्री राज कुं० व सेभर के राजा की पुत्री बिलेकुं० च्हुवान वगैरे १२ रानी थी ॥ पुत्र १० बडे नामी भए एक पाटवी श्री भाटी जी दूसरे समा जी सिंध देश में गढ सम्बाहण बमोमेर बनाया पडिहारों को जीतकर जाम पद वाली कोम समात में मोज़े नगरथटे किले कोट में सं० ९०१ लाखा फुलाणी हिन्दुवां सूर्ज कहीजिया नेक बख्त व दातार ऐसा हुआ कि आज तक सुबह को लाखे फुलाणी को बेला कहते हैं इनके वंस में कोम जाडेजों का देश कछ व नगर भुज में राज है उन्हों के इतिहास में दूसरी तरह लिखा है जिसका हाल अलग लिखा गया ॥ तीजे मंगरीये के ५ बेटों के कोम मगरीये कहीजे ॥ चोथे कलूराव कालूरकोट कराया ५ बेटों के कालर हैं ॥ पांचवे जंभ जंभला कोट कराया ७ बेटों के जंभ ॥ छठे भैसडेच के भैसडेच ॥ सातवें लघड के लघड ॥ आठवे जेहूजां बधकोट

कराया जेह हुआ ॥ नव में भूपत का हाल ऊपर लिखा गया ॥ दसवें मसूरावका पोता भाट गिरराजके खोले दिया भाटीजी से आदि जेह तक आठों ही के वंस के भाटी कहीजे आगे यादव कहलातेथे ॥×॥ ९० भाटीजी सं० ३३६ लाहोर- ७ रानी पडेहार मंडोर के राजा भीमदे की पुत्री हंशावती व राजे पुनपालकी पुत्री करुवाई व पंडेहार अनडजांम की पुत्री वगैरे ॥ छोटा कुंवर सिंगराव ने कस्वा सरसा उर्फ सरसा पंजाबके कांठे आवाद किया ॥ सं० ३४२ में गढ भटनेर वनाय राजधानी करी ॥ बघेले राजा बीरभान को मार कर दारुरा जुद्ध जीत कुनरा पुरलूटा और १४ प्रवाडे जीते ॥ कुं० मसूरराव के सासों का मारा जाट हुआ और अभैराज अभौर गढ कराया अभौरीये भाटी हैं ॥×॥ ९१ भूपत सं० ३५२ भटनेर रानी राठोड राजा चंद्र की पुत्री गढ महोबा - पुवार राजा सूर्ज की पुत्री गढ आबू - ॥ कुं० भांभरा सी व अतेराव का अतेराव भाटी है ॥×॥ ९२ भीम सं० ३९५ भटनेर रानी ५ दइया- रांगे राजा मेघ की पुत्री दयापुर पटरा गोडराजा मांराकदे की पुत्री गढ श्रीनगर - चावडी राजा लखरासी की पुत्री कछवाई राजा पालरादे की पुत्री नरवर बडगूजर राजा हरीसिंह की पुत्री ॥×॥ ९३ सतोराव सं० ४१६ भटनेर ४ रानी चहूवांरा राव सियाजी की पुत्री कछवाई राजा आसलदे की पुत्री चावडी गोड गेहलोत कं० फूलराव भांरासी ॥ श्रीस्वांगीयाजीके वरदान से गजनीलीवी तथा पंजाब में हकूमत जमाई शहर मुलतान वीरान था सो आवाद किया महलात व दो मंदिर- श्री आदिनारायराजी व श्री नरसिंहजी का तथा लाहोरमें भी भारी मंदिर वनाया- भटनेर में ४ वावडी व बाग वनाया श्रीगंगाजी पर सदावर्त वगैरह बहुत पुन्य किया ॥ ९४ खेमकर्या सं० ४५४ भटनेर ३ रानी गेहलोत पुवार राठ पूगल की मक- वांरा गढ विठंके की ॥ कुं० मांडरा जूहड ॥×॥ ९५ नरपत सं० ४९२ लाहोर ३ रानी सोलखरारा- तुवर दिल्ली की - तुवर ॥ कुं० गजू व बजू दोनों के राज का

तकरार हुआ हज़ारां मनुष्य मरे जब सब की सलाह से मेघडंबर छत्र तो गजू के-
और राज कजू के रहे नामी सरदार छत्र के साथ बुखारे गए सुवर मारने से बादशाह
नाराज़ हुए जब अर्ज़ कराई कि भाटी व पडेहारों के सुवर की तलाक़ है पूजा के-
लिये जीता पकड़ा है फिर श्री स्वांगीयांजी की कृपा से सुवर जीता दिखाया, जब ख़ुश
होकर, फ़ौज साथ दी सो कजू से मुल्क लेकर गजनी, लाहोर, अवधासमें राज किया-
और हंसार व भटनेर कजू को दिया। बाद कजू के जो गढ नरवर के काछवाये रा-
जा पालशादे का दोहता कुं० मूलराज व भंडु डांगवेहडे वालों से जुद्ध जीत कर-
मथुरा में राज बैठा ॥*॥ ९६ गजू सं० ५२२ लाहोर २ रानी पडेहार राणा सुमे
र की पुत्री गढ मंडोर मकवाणी राजा मांघ की पुत्री दइयाणी राजा सूर्ज की पुत्री
व ८ दूसरी। लाहोर का राज कुं० लोमनराव को देकर आप गजनी बैठे ॥ कुं० सात ॥
९७ लोमनराव सं० ५३९ कुवरानी पुवार राजा वीरसिंह की पुत्री गढ लुद्रवा ॥ कजू-
का कुं० भंडु बुखारे से बादशाहजादी को ले आया जब ईरान, ख़ुरासान, बुखारे से.
फ़ौजां आई ७ लड़ाई के बाद गजू गजनी में लोमनराव लाहोर में मूलराज मथुरा
में भंडु हंसार में जगसवाय भटनेर में शाका करके काम आये दुतर्फ़ा लाखों आद
मी मरे व घायल हुए पांच गढ छुटे। यवनां व यादवां के दरम्यान में बहुत सी लड़ा-
इयां हुईं और यादव जीतते रहे यवन हिन्दोस्थान का मुंह देख न सका इसका हाल
किताब शाहनामे वगैरह में लिखा ही है आख़िर कई यादव हीज़ मुल्क के लालच से
यवन हो गए बाद वो चड आने से अब फ़तेमंद रहे। फिर समा मंगरीया लघड।
कलर। जंभ वगैरह बहुत मुसल्मीन हुये कई हिन्दु रहे व कई भाटी वेपारी व जाट
वगैरे आन जात हुए। लोमनराव का कुं० रैरासी मेघडंबर छत्र व आदिनारायण का-
स्वरूप जो श्री कृष्णचंद्र के सिव्य है लेकर भाग निकला था वह स्वरूप हमारे श्रीगढ
जैसलमेर टीकमजी के मंदिर में विराजे हैं* हरराजोतों की बार तक तो हर दस मी को

* हम जब सन १८८६ ई० में जैसलमेर को गए थे तब श्रीजी हुज़ूर महारावल वैरीसालजी साहबों के हुक्म से - इस
मेघाडम्बर छत्र की भी ज़्यारत (दर्शन) की थी ॥ मुहम्मद मुराद अली होशियार, सुपरिन्टेंडेंट राजपूताना गज़ट अजमेर

रेवाडी यानी भूजन काठाउ दशेरे मूजिब होताथा पेरही मुजरा मालुम वगैरे रीत थी अवतो सिर्फ पात्र मंदिर में गावें तथा श्री दरबार साहिबां के प्रोहित तिलक कोजव पंचशब्दीया साथ होवे हैं ॥ भाटी का मुल्क गजनी चकतो को - मथुरा वेयानें केया दवों को - दूजा देश पंजाब टाकों पडेहारों पिडिरों वाराहों भालों वगैरह कोदेकर फोजां पीछी गई ॥ ॥ ९८ रावरेरा सि सं० ५३५ ॥ ९९ भोजसी सं० ५५६ १०० मंगलराव सं० ५७६ विरवें में मुमणावाहरा गढ़ वनाय राज बांधा दोरानी पडेहार रांणा मूंज की पुत्री गढ जूना पुवार राजा सांवत की पुत्री गढ मंडोर । ७ कुं० हुए यवनों की फोजां आई जब मंगलरावजी कुं० मंडमराव को ले भागे दूजा कुं० सेठ श्रीधर के घर में छिपे टाकसती दास की चुगली से बादशाह तलव किये जब सेठ ने कुं० खालरसी मूढराज शिवराज को तो जाटां के फूल की नाईयां के केवले कोकुंभा रां के परनाए सो खालरसी का खील हुए मूढ का मूढ जाट केवले का केवला कुंभार हुआ ॥ १०१ मंडमराव सं० ६१६ पुवारां की धरती किनारे दरीयाव रूकडे के सं० ६५६ में गढ मरोट वनाय राज बांधा । पुंगल से पुंवारां जांधे से भुटां लुद्रवे से लोद्रा पुवारां विठंडे से वाराहां वगैरह राजावों टीका भेजा और धाट से सोढा राजा ने कुंवरजी के विवाह का नारियल दे तावेदार हुए जवसे सोढा अव्वल दर्जे के भाटीयों मूजब उमराव हैं और हर पीढी में राजा सोढें परणीजणों से खांपलायक वनी रही वरना - यवन होजाते क्यों कि उनको परनाते थे सं० १९०८ में ठा । राज श्री केसरीसिंहजी साहवां तलाक लिखवाई कि अब कोई यवनको परनावे तो दूजा सोढा - उनको जाति वाहर करे नहीं तो भाटी जाति सोढां से सगपण न करवें । तथा जो पडोसी पुवार वगैरह अदावतरखते थे उनको नेस्तनाबूद किये ॥ १०२ सूरसेन - सं० ६६७ मरोट ७ राणी । चहुवांण राजा सुजान की पुत्री गढ से भरमकवाणी राव सिंघल की पुत्री ५ दूजी ॥ १०३ रघुराव सं० ७०२ मरोट ३ रानी । सोलखणी

राजा मांडरा की पुत्री गढ विरनाल गोयल राव जाम की पुत्री गढ खेड झाली रा-
जा आभड की पुत्री गढ हलवद ॥ १०४ मूलराज सं० ७१२ मोट ३ रानी रईयांणी
राव धारु की पुत्री द्रोणपुर पुंवार राजा उदैराज की पुत्री गढ मंडोर तुवर राव शंकर
की पुत्री गढ सातलमेर । कुं० गंगेव घोटड का घोटड हुवा । मुमरावा हू शा-
व भटनेर पीछा लिया ॥ १०५ राव उदैराव सं० ७३९ मरोट ७ राणी-चोडा राणी राणा
केसव दास की पुत्री गढ पाटण सोलखणी राव देपाल की पुत्री गढ तोड़ा ५ दूजा-
कुं० सिंगराव का सीगराव है तीजे जालणसी ॥ १०६ मंझमराव सं० ७०६ मरोट
दो राणी १ झाली २ वाघेली राजा समन की पुत्री गढ थराद की । कुं० जेगो गली तीजे मू-
लराज के बेटे लउवे का लग्वा चूहल का चूहल चोथे राजपाल के बेटे गोगी के खंगर
का खंगर धूकड का धूकड़ कुलरीये का कुलरीया वगैरह उभेचडा मुसलमान है।
परन्तु नवरात्रिमें स्थापना वगैरे हिन्दुपणो की रीत करे हैं । कुं० केहर व मूलराज ने
सोवत के ५०० घोडे पाड़े सो जालोर के देवडे अरुणसी की पुत्री परनी जेजयत्या
गमे दिये मूलराज की पुत्री बाराह राव जसाथ के कुं० जूने को परनाई ॥ १०७ राव-
केहर सं० ८२६ मरोट ४ राणी सोनगिर झाली पुवार सोलखणी-पाटवी
कुं० तिणूजी हुवा । छठे कुं० जांम के वंश का वारीयां भाटिया जो साहुकारां
में लायक है हाल अलहदा लिखा है । दूजे कुं० उतेराव के सोमकासीम और स्हे
मे जीये वीखे अजे काउतेराव भाटी है । तीजे कुं० चनहड़ के केलड़ भारू भो
जा शिवदास का चनहड ॥ चोथे कुं० खापरीये के दो बेटों का खाफ़री
या व पहीमके २ बेटों का पहीम हुआ - कोट किरोहर सं ८२७ जेष्ट वदि ५
कराया बाद देवी तिणोटीयों की आज्ञासे बडे कुं० तिणू के नामसे कोट
तिणोट बनाय शहर बसाय राजधानी करी व तणोटीयो देवी का मंदिर बना
या सो मौजूद है सं ८८७ प्रतिष्टा पुर कोट वणातां बाराह फ़ोजां लाया सो हार

गया ॥ १०८ राव तरफजी सं० ६२ तरागोट ९५ रांणी सोलखणी राव उदयादत्त की पुत्री गढ जांधे गेहलोत राव भोगादत्त की पुत्री गढ चीतोड १३ दूजी देवी बीझासरणीयों की कृपासे कुं० विजेराज हुआ इन्मवताये गढ की आज्ञाकरी सो सं० ७३ में गढ बीझरागोट कराया तथा फोज कर चडे सो बिठंडे के वाराह बहुतसे मारे बाकी भागे फतह पाय बिजेराव पीछे आए फेर वाराह लांगाह वगेरह फोजकर आए तब श्री स्वांगीयों जी चूड दीवी जिससे जुद्ध जीते चूडाला बिजेराज कहीजे फेर वाराह ... जूने के पुत्र नाई ये साथ हुसेन साह की भेजी गजनी के बादशाह की फोजां मुल्तानसे आई जब देवी पालंब के रूप विजेराव के घोडे की किनोती बीच में बैठ जुद्ध जीताया फोजां सारी हार वलाक खाय पीछी गई जबसे पारवी घोडे पर पालंब का चिन्ह मंडे है बहुत से भाटी काम आ सब भागे तथा आनजाति हुये । कुं० मावड के मोल्हे व महेपे का माकड सूथार और आलके ४ बेटा देवसी थिरपाल भूरासी देवीदास बीझरागोट में सांढाचार रो से रहवारी तथा खेंचे के राजपाल का ५ बेटे गजहथ कल्पांरा धनराज नांढे हेमराज कारखेंचा साहूकार और मुला फागा चूडा तीनों ही का महाजन मटे है श्री मुला फागा चांमक हुआ । कुं० जेतुंग के बेटे रतनसी बच्चाहड ने कोट बिकमपुर सूनाथा कबजे किया फेर चाहड के बेटे कोल्हे गा० कोलासर व-गिरराज ने गा० गिरराजसर वसाया जेतुंग कहीजे और प्रतापी हुआ केई गांव बसाए सो हिनोज है । तरागोट में श्री लक्ष्मीनाथजी का मंदिर कराय तराफ जी तो सेवा अरखतेयार करी बिजैराव राज बैठे ॥ १०९ कुं० बिजेराव सं० ७७ । ७ कुंवरांणी भुटीराव जजे की पुत्री गढ जांधे दईयारांणी राजा भोजकी पुत्री गढ धार कर पडेहार राणा जीवण की पुत्री राठोड राजा लाखण की पुत्री वाराह राव भाराजी की पुत्री गढ विठंडे । ४ कुं० देवराज मांगलराव गाहड थोरड हुए

चूड़ के प्रताप १००० तलवार गैब से चलती थीं ईरान खुरासान के बादशाह
व झालां बाराहां वगैरे से २२ परवाड़े जीते झाला पुवारां वगैरे को ज़मीन दबाई ॥
गढ़ तरणोट मरोट किराड़ू भटनेर मुंमराबाहूण वीझरणोट में राज रहा
पुवारां झालां बाराहां वगैरह ने सलाह कर भंवर देवराज को नालेर भेजा जान
बिठंडे गई वहां चूक हुआ १३ सौ लोक से बिजैराव काम आये श्रीस्वांगीयां जी के
हुकम से देवराज को रई का नेग ले भागा सो खेत में प्रोहित देवायत को सौंप गया
सोने दान करन लगा पीछे से बाहर आई पाणी बोला यहां से सांढ़ ईकबास हुई
बाहारूवां पूछा चोर यहां रहा देवायत कही ५ पेटे कठा में हूं वह हाठ बोले भेले-
जीमो जब दो रानेने पेटे देवायत का बेटा रतनु देवराज भेला जीम्या जिस से रतनू
चारण हुए सो पोण पात पाटबा है और दूसरे बेटों का प्रोहित आज तक जीइज्जत
व मुसाहिब रहे और दूरों पर रहते हैं । बाराहां पुवारां झालां वगैरे की फोजां तरो-
ट आई तरणजी साकोकर काम आए लुद्रवगढ़ छुटे सं० ८९८ में ॥ तथा रई-
के नेग के कहने से देवराज की माता श्रीआदिनारायण का स्वरूप व मेघाडंबर छत्र
ले कर बाहर गढ़ जांधे गई देवराज भी वहां आकर १० वर्ष छिपे रहे फेर देवायत बिठं
डे गया देवराज की सासू रवासे मिला और बाराहां से बचन राबल जोगी रतनाथ-
सिद्ध की मारफत ले देवराज को वहां ले गया जोगीराज तो कश्मीर गये थे झरर कं-
था व रसकूंपा की झोली उसकी मेड़ी में थी जहां देवराज सोता था ५ महीने वहां हु-
रखवाली कीनी जब झोली छुरा के मेड़ी को आग लगाय जाधे चले आये पीछे से जो-
गीराज बिठंडे आये बाराहां व खा कही झोली जल गई सिद्ध बोले नसीब में थी उ-
सको मिली । देवराज ने उपवास कर कुलदेवी आराधी जब प्रसन्न हो राज तेज
बढ़ने का वरदान व शत्रु जीतने के लिये खड़ग दिया उससे ५२ प्रवाड़े जीते पीछे ही
हर पीढ़ी में फतह पाई जुनाचे घड़सी जी से दिल्ली में इस खड़ग के प्रताप बादशाह

महरवान हुए सो हाल थोड़ा सामओं के पर लिखा है और वो ही रकड ग घड सी जी-
का खांडा नाम से मौजूद है मेघाडंवर छत्र जैसा ही मुबारके जानके दशेरे दीवाली व
गैरह की पूजा होती है ॥ फेर रावजजे से भैंस के चमडे जितनी ज़मीन मांग के गढ की नीव
दी भुटा मनाई की जव देवराजकी माता जाकर कहा ॥ दोहा सुण रावजा इक-
विनती वेगा न पछालेह । का भुटां का भारीयां कोट अडावणा देह ॥१॥ परन्तु
नहीं मानी भुटा फौज ले आए कि गढ छोड देश से निकलजाओ । पीछा कहा कि
फलां २ सरदार आकर बचनदे चुनाचे इसबहानेसे १२० नामी सरदारों को गढ-
में वुलाकर वहां ही रकखे जब फौज भाग गई फेर आदमी भेज भाटी वगैरह जो
दूरथे वुलाए और किले कोट लाखेजी से १० हज़ार फौज व २५ तोप गरतनुला-
या । तथा और ही वहुतसी फौज रकखी ५२ वुर्ज से गढ देरावल सो देरावर है व-
नै यार हुआ और जोगी रतन्नाथजी मी आये देवराज बहुत ही सत्कार किया जब
प्रषण होकर महारावल का खिताब बसिद्ध देवराज नामदे के दरवाजे आसनवधुई
कर वैठे ॥ भुटासे जुधकर रावजजे को मार गढ जांधा मरु मुल्क दखल में लिया॥
फेर बिठंडे जाने की सलाह करी सो १ सी कोतरी मन्नो के रूपमें सुनकर खबरपहुचा
वे मन्नी को मारी तो गंगा ही दूरड थी पेट मे कुं० कैने को निकाल धाय को सोंपा वाद फौ-
ज ले गए सो भाला पुवारों वाराहां को मार के वैरलिया किते आन्जाति किये - व-
हां म्ला गौरतों के पेरच्याक करनेलगे जबसासू कहा सोरठा० स्डीनकीजे अत
देवराज तुरवाक है । जुग रहसी वत नीत अनीत न कीजिये ॥१॥ पीछि आवलंगा
हांपर चंडे अलीपुरमें ९७सो को मार प्रवाडो जीते इ० कालसकर को धाकतल प-
ल परवेपर मारा डुवी रूठे देवरज धारा काली धार ॥२॥ गढ नांनरा के भाला राव-
देहराय जी की पुत्री केसरकुं० परने और शाला माधोराय जो बंदगी में रहा जव
टावर की पटै दी जिससे कीम यावरी हुए । विजेरावके कुंवर गाहड के ९ पुत्र कर्मा

मेहता पन्चायरण लखमरण के गाहड और कुं॰ घोटड के २ पुत्र गोरधन मेहा नाथ के घोटड कहीजे ॥ श्रीदेवराज सिद्धसे पीछे राजावों के नाम व सनजलूस और राणी-साहीबा की कोम व नाम व उस के पिता का लकब व नाम व ठिकाना तथा कुंवरों के नम्बर व नाम व खांपा हुई सो तथा बाईराज के नाम व किस ठिकांने किससें शादी हुई और दीवान का नम्बर व नाम नकशे मे लिखे हैं ॥

११० महारावलजी श्री सिद्ध देवराजजी सं॰ ९०९ गढदेरावर

राणी साहबां					कुंवरजी		बाईराज		नाम दीवान
नम्बर	कोम	नाम	पिताकाउक व व नाम	ठिकाना	नम्बर	नाम वखांपा हुई सो	नम्बर	नाम व सगाई	
१	वाराह	हूरकुंवर	रावअमराजी	गढखिंडे	१	केनोजी के पंवेटों	१	सुगनकुं॰	मह्ता पुरुषोतमदास
२	भाली	केसरकुं॰	रावदेहरापजी	गढनालरो		का केना भाटी			
३	पुंवार	चंपाकुं॰	राजासखधारण	गढलुद्रवा		वस्तंग-कला			
४	से॰	सूरजकुं॰	से॰	से॰		सूजा-काक्लसी			
५	से॰	रामकुं॰	से॰	से॰		खीमकरन-			
६	गिहलोत	सूरजकुं॰	रावसूरजमलजी	गढचीतोड	२	सतरगदेव	२	लालकुं॰	
७	चहूवांन	राजकुं॰	राजामंडलीक	चीतलमारे					
८	गिहलोत		रावजगमाल	रैवड			३	चंद्रकुं॰	
९	तुंवर		वछूपाल	सातलमेर					
१०	दईयारणी	पुनकुं॰	राजासारणदेव	पाटरण					
११	चावडी		राव भांरण						
१२	से॰		रावदेसल						
१३	सोढी		राणाभोज	रातेकोट					
१४	कछवाई	सुजानकुं॰	रावभीमदेव	दोसा					
१५	वाघेली	बिलेकुं॰	राजासांगाजी	रेवी					
१६	सोनगरी		रावधूहड						

मनजुम्ले महल ४५ सिवाय पासवानों के थे जिस्में १६ के नाम नकशे में लिखा है ॥

राज्य बिराजे दोहा सिद्धू वचन वर पायके सिद्ध भए देवराज । रतन्नाथ हथ तिलक किय कह्यो भूपति शिरताज ॥ १॥ जबसे आजतक राजराभिषेक में अव्वल भेष जोगीका मुद्रावों चोला आसा खड़ाउ वगैरह धारे सो तो आयसजी आस के अड़की हैं फेर दान पुन्य करके राजा परो की पेशाक पधराय श्री आदिनारायणाय ने श्रीलक्ष्मी नाथजी व श्री स्वांगीयां जीका दर्शन करके आम दरबार में तखत बिराजे जब खूंनका तिलक भाटी करे बाद कुंमकुमका तिलक पाट पुरोहित करे और तोपों की सलामी व भैरे धाव व नज़र नोछावर हुवे है तथा इत्नी निशानी जोगी की मौजूद है कि गढ में कोठा २ अन्नपूर्णा के नीचे रतन्नाथका थान और तंबूकिनात व घोडे कोटापुर व हरकारे की छडी दूरंगी का फूंदा भगवा और दो ठकाराग १ आयस का मठ श्री दरबार साहिब के गुरु २ दरीया नाथकी बावडी वाले राजवीयों के गुरु हैं पाट उत्सव में व ग़मी के कार्य्य में नाथोंका सत्कार सब से पहिले होता है । देवराजजी बडे ही प्रतापी हुए नवकोट पुवारों के लिये जब से नवगढ नरेस कहीजते हैं फेर तो और ही वहुत से गढ व प्र॰ लीये तथा ज़रीद किये सो नीचे लिखे हैं ॥ तरोगढ के सेठ जस कर धारके राजा के ग़रूर पर जवाब दिया कि मेरे मालिक देवराज पास स्वेत हाथी वगैरह वहुत ठाठ है राजा ने सेठका घर ज़ब्त किया और गलेकी हडी में वाली डालके कहा कि हाथी लायां छूटेगा सेठ ने आकर सब हाल कहा सुनते ही देवराज ने प्रत ज्ञा की कि धार लूटके पानी पीऊंगा फोर्न फ़ौज कर चढे १२५ कोस पहुंचे जब हमराहियों की अर्ज़ से आटे की धार बनाय उस में सेली के वज़ैरे १४० पुवारों को मार जल पिया वहां धारवी नाम से गांम आबाद किया सो मौजूद है फेर वहां जाकर लड़ाई जीत धार लूटी पुवार अज भान को साथ लाये । लुद्रवे के राजा जस भान का प्रधान पुरोहित विमला की सलाह से शादी के बहाने १२ से जानी श्री दरबार सक सो शहर लुद्रपुर पटरा में दाखिल हो लुद्रों को मार के राजधानी मुकर्रर करी और बिमले को

किलेदारी व गंगाजल की नोकरी और ब्रह्म भोज में दक्षिणा कड़दोरा बंध परोहित पैठों को भी देनेका तांबा पत्र कर दिया सो आजतक है बिमले की औलाद कोम आचार्ज पुष्करणा ब्राह्मण है फेर महाप्रबल सबल सिंहजी गांम मोकला तथा पांसते दिया ॥ गढ़जालोर सोनगिरों को देरावर भांनेज दईयों को मंडोर पडेहारोंको दिया नवकोटी मारवाड में आंण फेरी दूजा गढ लुद्रवा पूगल जातलमेर फिरोहर भटनेर- बीकूपणोर मुमणावाहण मरोट किराडु पारकर राहडी भखर वगैरे खाल से रक्खे थे ॥ **कूप्पा** ॥ देवराज थपे दुरंग लुद्रवां आप घर लास संमबा हरणा- त्रय सिंघ जूनों पारकर जमास. भड़ जालोर हु भंजे मारे नृपमंडोर गढ अज- मेर हु गंजे पूगलगढ लीधो प्रथट कतल थिठंडे की जिये देवराज भूप चढते दिवस रतनु आज्ञा धरलीजिये ॥१॥ ऐसे ही दातारी में सानी नहीं रक्खा चुनाचे तालाब प्र० रामगढ में दादा तराकजी के नाम से तराकसर व पिता क्जिशकजी के नाम से क्जिडासर व आपके नाम से देरासर तथा प्र० देवा में कोट से पश्चिम को सेडेट राणीजीके नाम से लखीसर व वेशाले से ४ कोस किराडु के नज़दीक देरासर- जहां अव देरासर गांव है सिवाय इसके और ही परगनों में कहीं तालाब व गढ व कुवां व गाम बनाये और प्रतिष्ठा याने बड़ा जिग करके एक दिन में इतना दान किया ॥ **दोहा** ॥ क्रोड़ इजारे अर्ब इक पैंसठ लाख पसाव । दीधा सिद्ध देवराज सी रीधे भाटीराव ॥१॥ (**कुप्पा**) रीधे भाटीराव अर्ब इक रत्तु अपे रीधे भाटीराव क्रोड़ देड़ गाथपे रीधे० क्रोड दोय भाटां दिधी सात क्रोड इक साथ तिका पिरा विप्रां लिधी कोट एक दूजा कवि करि कवित इम उच्चरे एता दान भाटी विना कौन भूप दूजा करे ॥२॥ कई गांम शांसन वपटे दिये तथा मुतफर्क दान दिया सो कहां तक लिखा जांव क्यों कि इसइस कंथा व रसकूंपा के बाहस द्रव्य चाहें जितना हो सक्ता था ॥ १२१ वर्ष राज्य किया बाद शिकार गये थे को मचन्दके कटकसे सापली में

मुक़ाबिला हुआ १४० भाटी व राव मालदे जी भाला साथ सं० १०३० मिघर सुदि स्वर्ग पधारे ॥ राज गादी मंधजी बैठे और ४ बर्ष राज किया यहां ज़्यादः बर्ष गुज़रनेका ख़याल हुआ और तलाश करी तो सुना गया कि जोगी राज का वरदान था - तथा १ पोथी में संवत जैशालजी तक पीढ़ीयों में कमबेश भी लिखा है सिवाय इसके यह भी क़रीन क़यास है कि देवराज के पाटवी कुंवर छैनाजी था शायद मंध छैने का पोता होगा कि हक़दार वाजिब गादी बैठने से बेटा हुआ तथा इसी ज़माने में नंद अनंद के सम्वत् का फ़र्क़ ९१ बांहु बर्ष का प्रथीराजरासे में लिखा है ज्यूं होगा ख़ैर क्यों ही हो यहां तो श्रीदरबार की पोथी मुजब लिखा है ॥

१११ महारावल श्री मंधजी सं० १०३० इनुइबे

									१ मलकुंपौतमहाराज २ हमीरजोधावतो
१	पुवार	हंसावती	रावगजशाजी		१	वाळुजी			
२	सोनरारी		रावबिसलजी	गढ़जालोर					
३	चावड़ी	राजकुं०	रावभांगासी	पाटरा					
४	सोलखराी	शिशेकुं०	राजा साजन		२	राजपालके वंश कालोहा बुध पहोड़ -			
५	सोढी	बिलेकुं०	राराा म्हेरावरा						
६	सीसोद्राणी	रामकुं०	राराा अडसीजी	गढ़चीतोड़					
७	चौहान	मालराकुं०	राव मांरा						
८	पुवार	रंगकुं०		गढ़जूना					
९	गेलोत		रावकल्यांरा	खेड़					
१०	पुंवार	हेमकुं०	रावधारूजी						

अबल चंनों पर चड़े - १८०० को मार कर वैर लिया कई भाटी खेत रहे बहुतसा विल-लाये पीछे राज बैठे । राव मालदे के बेटे हमीर को सबनर हसेलायक राजकाज के -

समझा परन्तु दूर अदेशी से मुनासिब जान कर दीवान मल्ल पुरुषोत्तमदासकी बेटी परनाय महाजन महेसरी याने टावरी मुंता किया और वचन दिया चलके तलाक करी कि भाटी के राजमे दीवान तेरी ही औलाद का होगा जबसे मुसतयार नो भाई वगैरे औपी हुवे लेकिन दीवानतो टावरी ही रहा नाम हरपीडी के नकशे में लिखे है बाकी हाल अलहदा लिखागया मगर अब यहर हाल आयंद: कोउमेद नहीं है तथा हमीरजी ने खुर्दयाले में लाख रुपये की हलदी पैदा करी जिससे कोट वखडीन का नाम लाखीणा हुआ तथा मलकी औलाद के ४० घर मलव कोठारी हें और जबसे वाजे २ राजकी नोकरीमें तवेला व हकूमतों पर रहे हें ॥ सिंधमें नाले पर मुंध कोट बनाया कई दफे लीं बाद अमीरों सिंधने लेकर उघड का कोट किया सो हिनोज़ है॥ यहांहाकम व्यास था कोट खोय आया जब देशपार किया सो मेड़ते जारहा ॥ ४॥

११२ महारावल श्री बाछूजी सं० ११९२ लुद्रवे								
१	सोलखणी	राजकुंवर	राजा वल्लभसेन	पारण	१	दुसाज	१	सूजंकुं० अटचीतोड़०
२	पुंवार	कवलवती	राजा नोधण		२	(सिंहराव का सिंहराव)	२	राजकुं०
३	चोहान	हंसकुं०	राजा भैरुंजी	अजमेर	३	बपेराव का पाहु		
४	पडेहार	जामकुं०	राणा वीसलदेजी	मंडोर	४	दुराणेघ का दुराप		
५	देवडी	पवेकुं०	रावनाडाजी	सीरोही	५	मूलपसा का मूलपसा		
६	सोढी	विलिकुं०	राणा नवंदजी	अमरकोट				

वाछुटी नामी कोट बनाया था जिस्का निशान शाहागढ़ से पश्चिम ४ कोसपर मौजूद है ॥ कई घोडे सोदागरसे खरीदे उसके कहनेसे कुंवर दुसाज व दुराघ नगरथटे जाकर गाज़ीखांन बलोचको जो बहादुरी में इक्का था मारके १४० घोडी औरा की लासे ॥ फेर गांम बरडे के राजा जड़ा को नो सो खीचीयों समेत मार –

बिकमपुर केजैतुंगां का बैर लिया और शहर लूट बहुतसा बित्तलाए ॥
दुसाज्ज डूगाघा सिंहराव तीनों भाई खेड के राजा प्रतापसिंह गोयल-
के परने ॥ सिंहराव के नामसे कस्बा सिंहरासजो रोहोडीसे ८ कोस है आ-
बाद कर मय परगने बकार याने गाम २४० सदू यदों को खैरात में दिया सो हिने
ज़ उन्होंके पास हैं । तथा सिंहरावके पुत्र सचेराव का बेटा भालेराव केबैरे
रत्ना व राजहथने मंडोर के पंडेहार जगन्नाथको मार सांढां वगेरा वहुतसा
माल ले आये ॥ कुवर बपैरावके पुत्र पाहू व मांडण और पाहू के सोढल
का वीर्मसी तलपसी को महारावल कालण ने देश पार कीये सो सीरोही
गए वहांवीर्मसी पहाड़ में जोगीरत्न से पोरसापाय पीछा आय बिकम
पुर से फोज लेकर चढे सोरवोखरों से खार बारा मय १४० गामों के बजोईयों
से मुल्क लिया तारिख्य जाल जो पूगल से ८ कोस है हद कायम कर रहबास
किया जबसे वह देश पाहूबेरा कहलाया ॥ तथा पवेरावने प्र० रामगढ़ में ब-
पडासर नामी तालाब बहुत भारी बनाया सो मौजूद है ॥ पंडां बाछु जो ब्राह्मणों
की फ़रयाद पर चढे सो खाडाल में करीमखां को मय ५०० बलोचों के मारे दो सौ
भाटी खेत रहे फ़तै पाई ॥

११३ महारावलश्रीदुसाज्जजी सं० ११५५ लुद्रवे

१	सीसोदणी		रावलकर्णजी	डुंगरपुर	१	जैसलजी	१	मानकुं०	[illegible]
२	गोयल	लषमादे	रावजैतसी	खेड					
३	चौहान	राजकुं०	रावजैसिंह	सांभर	२	बिजैरावजीपाट			
४	तुवर	मानकुं०	राजासुदपाल	दिल्ली	३	पवोजीकापबा सरा	२	सतूकुं०	
५	दईयाणी		करणजी	देरावर	४	पहोडजी			
६	चावडी		रावजैतसी						
७	सोढी								
८	राणावत		राणामोकलजी	मालवे					

सोढादेश लूटेथा पिंडांनाकर गांमबुहडी पास ठा० हमीरको ७०० सोढासहित स्वर्ग भेजे॥ जोगी राज की कृपा व पहू सादलकी सलाह से छोटे कुं० किजैराव को राज दिया जब बडा कुंवर जैसलजी गजनी के साह अलाउदीन गोरी के भाई शहाबुदीन पास नगरथटे जारहे ॥

११९ महारावल श्री लांझो बिजैरावजी सं० ११७९ - लुद्रवे

१	पुवार	राणकुवर -	राजा तिलोक चन्द	धारनगर	१	भोजदे पाट	१	राखो दीनोंरा लांग तको शक्तिमों को समाजभेजा वेथो स्कदिन भोजदे जीपी के गये जब आ पदियो कि निचे भाहोसु कह गई आकाशमें	[illegible]
२	सीसोदणी	शिवकुं०	रावलकरणसम सीजो पोत	गढचीतोढ	२	रहाडजी का राहड वडे भूपतका ह० हाजावेमेअसेहराजका ह० बीकानेर में कोटकरोंकापक्का ह० सिंधगांवरोहड कीनो ह० सेरपुरसे १॥ कोस रहे जमीसारथाह मोहमद अबहै	२		
३	चौहान		रांणाजालणसीजी	बीव	३	हटेजी का हटा			
४	न्यावडी		रावलुणाजी	•	४	मंगलजी का मंगलीया कोथली जमीन में कोट चानरा व जहां अब सहागढ है व रवसा			
५	सोलपणी		राजा सिंघजैसिंहजी	अनहलपुर पटण	५	भीपरा भीया भीटी			

धार के राजा तिलोक सिंह की पुत्री परन्यां वहां सीसोदिया राणाजी व सोलंखी जैसिंह का कुं० जैपाल भी परनीजन आये थे रांणाजी की झारी में कपूरियाजल पर नोरवचोरव होनेसे कई मन कपूरबा व्हीपों में डलाया व अपार द्रव्यखर्च नेसे लांझा कहाया॥ और पांचवां बिवाह पाटण सिद्धराज जैसिंह सोलंखी की पुत्रीसे हुआ जब सोलंखीयों पुवारों सीसोदीयों वगैरे ने बादशाह के खौफ़ से उत्तरभड किवाड कहा सो बिडुद हनोज़ है॥ मौजे शिरले के पास बिजडासर नामी तालाब व शिवका मंदिर सहस्त्रलिंग बनाय बडा जिग वदान किया जब दोहा कहा ज्योंही है दोहा यह सर हाले पांखती भूप अनेडनभाल

आयो धरणी बंधायसी किज़ड़ा सररी पाल ॥१॥ कुंवर मंगलराव का मंगलीया मुसलमान हुआ **दोहा** तेसुं वेडगे सूंमरा लांझो विजैराव । मागणा ऊपर हथड़ा वैरीऊपर घाव ॥१॥

११५ महारावल श्री भोजदे जी सं० १२०४ लुद्रवे

१	सोलखणी	विलेकुं०	राजागहलदेव	गढपाटण		कुंवर नहीं हुआ			मजन्साल
२	सोढी	श्रुभकुं०	राणा जांम						
३	चोहान		राजाविजैपाल	नीमराणा					

नगरथटे से शहाबुदीन की फौज मनूंजरखान व करीमखान साथ गुजरात में सोलंखियों वगैरे पर जाती से उत्तर भड किवाड़ के लिहाज़ से वनांनणां के बचाव के लिये लडाई करी जोगी के बचनां व बाई राज लाछ व लांग के आप के बाद स-७०० लोक साथ शाका करके भोजदे जुझार हुए सो हनोज़ पूजीजे हैं बहुत यवन व मनूजरखां भी फोत हुए श्री जैसलजी फौज आयथे सो राज बैठे जब शहरको लूट फौजसे पीछे ली **सोरठा** गोरी शहाबुदीन भिडियारावल भोजदे । नाम उमर रखलीन बारेसैनव लुद्रपुर ॥१॥

११६ महारावलजी श्री जैसलजी सं० १२०९ लुद्रपुर पटरा

१	सोढी		राणा हंशराज	पारकर	१	कालराजीपाखीवा परपाहु वीरमसी-तलपत्तीने छोटेकुण	२	सामकुं०	८ राणीजसी
२	पडेहार	उरेकुं०	राव भांण	गढनागोर					
३	चौहान	विलेकुं०	रावचनड	नीमराणा	२	शालिवाहण को पाट बैठाया			
४	वाघेली	जांमकुं०	राव नोघण	गढपावा					
५	पुवार		राव धारूजी						

सं० १२१२ आंवण शुदि १२ लुद्रवे से ८ कोस पूर्ब गोरहरे पहाड़ पर गढ की नींव दी जिससे गोरहरा और सं० १२१९ में राज धानी करी जैसलराजा का नाम मेरव

कहै हैं पहाड को सो जेसलमेर व तीन खूणो पहाड के बाइस त्रिखूणा कोट व त्रिकुटाचल व त्रिकुटगढ भी नाम है। गढ लुद्रवा तीन दिन में टूटा था जिस से भाटि गढ बनाना वाजिब जानकर डूंगरी मोलासर पर काम जारी किया था जब ब्राह्मन ईसाने जो १२० वर्ष की उमर व विद्या में भी बड्ढ था ॥

यह जगा बताई कि श्री कृष्णचंद्र व अर्जुन ब्रह्मा के निमित्त ब्रह्मकुंडों पर आए जब इस पहाडी पर आकर चक्र से जेसलू नामी कूंवा किया सो हिनोज़ है*॥ तथा पत्थर पर दोहा लिखा कि ॥ जेसलनामा भूपती यदुवंशी इक थाय । कोई कालरे अंतरे रहसी आय※ ॥ १॥ दिखाकर कहा कि श्री कृष्णचंद्र के बचन हैं कि यहां राज अचल रहेगा जेसलजी बहुत खुश हुए ईसा को गढ से पश्चिम आध कोस पर ज़मीन दी थी सो ईसाल कहीजे है ॥ चांनीया व बलोच भारी कस कले देश लूटने को गाम खूहडी आये की खबर होतांही पिंडां पधारे कटक के मांझी वगैरे को मारे और दूसरे दोरी २ कहने व मुंह में घास लेने से जिन्दा बचे ॥ जेसलसर तालाब बणाया ॥

११७ महारावलजी श्री शालिवाहनजी संवत १२२४ गद्दी जेसलमेर

१	सोढी	पिलेकुं॰	राणा नागोदर	अमरकोट	१	वीजलदे पाट			मूलचंदजी
२	चावडी	उदेकुं॰	रावजांझणसी	गुजरात	२	चांदरजी का चांदरणांव ड्राभले ॥			
३	राठोड़	भांणकुं॰	रावचूंडा		३	हंसराजका वेरागन रूप पहाडी राजा गहलोत के गोद गया			
४	सीसोदणी	राजकुंवर	महाराणा जैसिंह जी	गढ चीतोड़	४	मोकलजी का गोकल गा॰ मोकले			
५	वाघेली	सूरजकुं॰	रावकुंनाजी	गढ पीरागढ		चंद्रका कपूरथले राज है† पास वो शिवेडायरे व रूपसी सुपारी पत्नी जंदादाला तथा सलूरा सूथार हरा			
६	देवडी		रावभूरामसी	गढ सीरोही	५	मालदेजी का महाजल गा॰ रसा अलार			

* इस कुंवे को सन १८८९ ई॰ में हमने भी किले के अन्दर देखा था ॥ बन्दः मुहम्मद मुरादअली सुपरिन्टेंडेंट राजपूताना गजट अजमेर-
※ यानें जेसल नामी एक राजा जो यादों वन्शी खान्दान का होगा कुछ अरसे के बाद यहां आकर रहेगा ॥ म॰ मु॰ अ॰ ही॰
† वही कपूरथला जो पंजाब में वाके है ॥ म॰ मु॰ अ॰ ही॰

† जिस तरह लफ़्ज़ अजमेर है कि अजा नामी राजा ने बसाया था - अजा राजा का नाम और मेर पहाड़ को संस्कृत में कहते हैं इसलिये अजमेर कहलाया ॥ म॰ मु॰ अ॰ ही॰

छोटे कु॰ चंद्र का कपूरथले राज कोम शिष्य है श्रीदरबारसाहिबां को बुजुर्ग समझकर ऐसाहीबरतावरखते हैं टीका नूंता सोगात वकील वगैरे आना जाना बखूबीजारी हैं सं॰ १९१४ सन १८५७ ईस्वीके ग़दर में सरकारदौलत मदार अंगरेज़ी की खैरख्वाही व मदद दिलोजांन से करी किसरकारने महरबानी व कदरदानी से फ़रज़िंदखास का खिताब व तग़मा औार रू॰ लखनऊ में कईला खका मुल्क इनायत किया चंद्रसे आज पर्यन्त गादी धणीं के नाम अलग लिखे हैं पांचमें कु॰ हंसराज काबेटा मनरूप नायराँ[*] के राजा वछराज की गोद गया सोशासे में फ़ोत हुआ कुंवराणी हामला थी पलासके पेड नीचे पुत्र पैदा हुआ सोगादी बैठा जिससे पलासिया भाटी पहाडीराजा वाजे हैं बाकी नस्ब नामावहांहोगा जालोरके सोनगरों से जुद्ध जीते और चोयले के काठी जगभान को वफ़ात दे बहुत सा वित्तलाये गाम डाभले से पश्चिम १ कोसपर तालाव व ऊपर ठकानां बनाय बहुतसा दान किया ७ गामउदगदिस । और सुना है कि गांम कोटडे का ठाकुर बुध भाटी चंदा मुल्क लूटता था रवेड में राठोड॰ रायपाल ने कैद किया याने रोहडीया इसी अरसे में वरसंडे॰ मावल की बेटी झीमां ने चारनसे सादीकी तलाक रवाई जब रायपाल ने अपनी बेटी करके धोखेसे चंदे को परनाय रोहडीया चारन किया उसकी औलाद का राठोडों का पाट बारट रोहडीया मशहूर है इसका बदला लिया कि तालाब की प्रतिष्ठा पर सब राठोड को बहुतसा द्रव्य देके अपना ढोली डगाके जोमथुराजी से साथ है शामिल कीया । बलोच खिदरखान से खाडाल में जुद्ध हुआ खिदरखान घायल व ५०० बलोच खेत रहे व ३६० लोक साथ पिंडां स्वर्ग पधारे । कु॰ बिभलदे पाट बैठाबाद दो माह के धभाने चूक किया तब जेसलजी का बडा कु॰ कालराजी राज बिराजे ॥

[*] याने सरमार ना हून जो जिले कांगडे में है और इन दिलों वहां के महाराजा श्रीशमशेर प्रकाश साहब-जी॰सी॰एस॰आई हैं ॥ मुहम्मद मुरार अली होशियार अफ़ी अनहू ॥ याने मारकर ॥ म॰मु॰अ॰ ह॰ ॥

११८ महारावलजी श्री कालराजी सम्बत १२४७

१	वाघेली	भाराकुं०	रावहंसराज	गढथराद	१	चाचगदेजी पाट	१	रैणाकुं० रामपुरे	
२	चोहान	सोनकुं०	रावधारूजी		२	पालणा के जसोडजी कमलपूजा से शिव प्रसन्न होकर पुत्र वस एक पीढी इनको वरदान दिया ॥ इनके पलिवाकरो ॥ राजसिया ॥ सांगिरा ॥ चांगणा ॥ छकने नयनदास ॥ इन चारूंके वंश का जसहड़ मय हुए है -			
३	सीसोदणी	सजनकुं०	राणाप्रद्युम्नजी ॥	गढचीतोड़ -			२	गंगाकुं० चंद्रावत कुंपरनाथा	[illegible]
४	सोढी	रत्नकुं०	राणाआसलजी	अमरकोट					
५	गोयल		रावजेतमाल	खेड़	३	जैचन्द के एक पुत्र गणका जैचन्द है इनसे कमलोके लासका ठोहडू के देसमारिकमसो - चगमसी का पीढी है			
६	चावडी	सूर्जकुं०	राव दूधाजी	भाद्राजण *	४	सयराजका भाणा कामल			
					५	पिथम			
					६	चंद्र			

शालिवाहनजी के बैर लेने की सलाह करी सो सुनकर माथेलैसे खिदरखान ५००० कटक से चढ आय खाडालका बित्तलीया जब कालराजी बहुत फौज ले चढे - सो खिदरखानको मय ५०५ बलोचों को मारे और ९०० घायल किये २०० भाटी काम आए परन्तु बित छुडाय परवाडो जीत बहुतसा घोडा पडाउ ले फते का डंका बजाने पीछे पधारे

११९ महारावलजी श्री चाचगदेजी सं० १२६४

१	गोयल		रावहदफ	खेड	१	तेजसी कुंवर पदे रहलत फरमाई दो पुत्र हुए एक जैतसी ॥ दूजे करण पाट - कुंवरराणी अमरकोट आरही थी सो करण राज बैठा जब आकर बेटे से कहा कि कुंवरां से मेरे पुत्र रावनी और मालसर के पत्ता यों पाली जाता है मारना क्यों कि - गादी बैन नहीं दिया था पुनावे से ब्याह किया	१	राजकुं०	पुं०
२	सीसोदणी	हंसकुं०	रावल पूंजा	डूंगरपुर					
३	हाडी	सूर्जकुं०	रावसतरंगदे	मांडलगढ					
४	सोढी	जामकुं०	राणाहमीर						
५	राठोड		रावतीडाजी	खेड					

* शायद यह वही भाद्राजून है जो अब इलाके मारवाड में है ॥ महम्मद मुराद अली होशियार ॥

सोढा व चांनिया व बलोच मुल्क लूटे था चुनाचे नगर थरे के रास्ते में भाटिया-बुलाकीदास का माल रुपये ५ लाख का लूटा जब फौज कर पिंडां पधारे १६०० चांनिया व बलोच को मारकर माल मुदई व खर्च दंड में माल मवेशी पीछा लिया फेर अमर कोट के सोढे (१३००) को वफ़ालदी वाकी ताबेदारी में हाज़र हुए अर्जी करी कि राठोड़ों ने गोयलों से खेड छीन ली व राव छाडा हम से भी अदावत रखते हैं फ़ौरन वहां पहुंचे तो छाडा जी ने बसलाह कुं० तीडाजी फौज खर्च दे बेटी परनाय सुलह करली। कुं० तेज का वड़ा बेटा जेतसी तो बादशाह की नौकरी में अहमदाबाद गया और करण अमर कोट से आकर राज बैठा ॥

१२० महारावलजी श्री करनजी सं० १२९९

१	सोढी	हंस कुं०	महपाल	पारकर	१	लखरासेनजी पाट	१	भानकुं० नरवरके रांजा	[illegible]
२	पडिहार	कंवलावती	राणा झुजा						
३	राठोड़		राव छाडा	खेड़					
४	वाघेली	केसवकुं०	राजा म्हेरावराजी	गरवांधो			२	जस [illegible] कुं० के	
५	झाली		भगवानदास		२	सतंगदे का लूणाराव		कछवाया	
६	चौहान		राव धारूजी						

नागोर वाटी के बाराह भगवती प्रसाद पर मुज़ाफ़र खान सूबेदार ने ज़ुल्म किया कि जबरन उनकी बेटी परन्या व देश से निकाला सो यहां आया जब पनाह दी और पिंडां पधारकर मुज़ाफ़रखां को मारा ५०० पठान १३०० भाटी काम आये शहर नागोर लूटा और भगवती प्रसाद वगैरे वाराहों को पीछा आबाद कर उसकी छोटी बेटी परनीज पीछे पधारे ॥

——थाने मारकर ॥ महम्मद मुराद अली

१२१ महारावलजी श्री जखणसेनजी सं० १३२७

१	सोढी	सुगणदे	राणा हेमल	अमरकोट	१	पुनपालजी पाट			आसकरणजी
२	चोहान	प्रेमकुं०	राणा दोहट	बाव	२	कल्याणा			
३	सोनगरी		रावकानडदे	जालोर					
४	सोढी								
५	से०								
६	से०								
७	से०								

काकलुद्र जानतेथे गढजालोरके कांनडदे कोरांणी व कुं० के जहरसे (५) पंहरके वापरे ओठी भेजके बचाया । श्री स्वांगीयोंजी के श्रापसे सांनिये होवं राणी सोढी के बसी होने से सोढे ही सोढे पास रहतेथे वेईमानों ने श्रीजी को चूक कारके सोढीजी से कहा कि तांहने भाईयों में चापैजे ना राजद सोढीजी हिकमत अक्लीसे ७ बीसों सोढों को बुलाके १ महलमें बंध किये और भाटीयोंको श्रीजी की लास देखा कर कहा कि एक २ सोढा एक २ गधा बांधके कोटडी के कूवा में डाणे चुनाचे एसाही किया ॥ ४॥

१२२ महारावलजी श्री पुनपालजी सं० १३३१

१	पडेहार	पेपकुं०	राणा उदेराज जी	बेलवा	१	लखमसी के राणगदे			[illegible]
					२	भोजदे जीका पूगलीया			
२	देवडी	जामकुं०		सीरोही	३	परबेजीका चरडा			
					४	लुणरावजीका लूणराव			
३	सोढी		राणा राजपाल	पारकर	५	रणधीरजी का रण धीरोत			
						चाचगदेजी के कुंवर तेजजी का बेटा जैतसीजी राज बेठा ॥			

राज नीत नहीं चलरणे से मोहड बिकमसी ने जैतसी जी को अहमदाबाद से बुलाय राज दिया और पुनपाल जी किसी गांम में जारहे ॥ फेर कुंलखमसी का बेटा रांणागदे आली हिम्मत हुए जमीयत कर चढे सोगठमरोट जोईयों से व पूगल भीलों से व मुमरणा बाहरालेकर रावबणा बैठे दूजे कुंवरों की औलाद के टू॰ बीकानेर में हैं तथा रावरांणागदे के कु॰ सादो जीबडा ही बहादुर हुआ मुफ़स्सिल हाल अलहदा इतिहास में लिखा है ॥

१२३ महारावलजी श्री जैतसी जी सं॰ १३३२

१	सोढी	रामकुं॰	रांणासोभम जी	पाकर	[illegible]
२	राठोड	फूलकुं॰	रावतीडी जी	खेड	
३	सोलषणी	सिरणगारदे	रावदेपाल जी	पोरबंदर	
४	चौहान		राव झीवा	गढपाबा	
५	सोढी				
६	से॰				
७	से॰				
८	बाई		रावशिवनारायण		

१ मूलराजजी पाट
२ रतनसी काकुं॰ घडसी जीतो पाट बैठे अरकानड देका कांनड उनड सचा कीता हमीसोगारे खांधांहुई राव हाबूर वमता वकाता वगोगदे वहमीरो में हैं ॥

राज याने हकूमत कु॰ मूलराज व रतन्सी करते थे नामरखने के लिये मुल्कों में धाडा पडने लगे बादशाह की ५५० खचरों पर मोहरें नगरथट से मुलतान व माजी साहिबा मक्के जाती को लूटली जब सं॰ ३९ में फ़ीरोज़शाह खिलजी की फ़ौजें १५ लाख नवाब महबूबखां दिल्ली से और कासिमखां अलीखां मुलतान से ले आये १२ साल लडे मूलराज का कु॰ घनराज फ़ौज पर धावा मारता व रसद पाडता रहा सं॰ ४९ में जैतसी जी मरे

गढ़में ही दाग हुआ इसज़माने में प्रधान व सरदार जैचन्द गहलोत जैतुंग पाहु भयाकमल सीहड़ तथा जसोड़ आसकर्न वगैरे बड़े ही अक़लमंद व सूरवीर थे आसकर्न कारमुख़तार था मं० व कारका रु २५०००) उडाने की झूठी चुगली पर तिलोकसी ने मारना चाहा तो व सलाह श्री मूलराज जी की माजी साहिबा आसकर्न नाराज़ होकर ईडर जा रहा था सो ही आकर आ कामें ख़ालि हुआ ॥

१२४ महारावलजी श्रीमूलराजजी सं० १२४९

१	वाघेली	रामकुं०	रावपावलजी	पराह्	१	देवराजजी के कुं० हमीर का तो अर्जुनोत व दूनीरोत और दूदाके- हर जो था सो पडऩ्छी जी के पाट बैठा	३	राजकुं० सामकुं० वगैरे जो कंवारीथी	[illegible]
२	चौहान	राजकुं०	ठाकुर केहरजी						
३	सोढी	जसकुं०	राणासलषाजी	अमरकोट	२	धनराजजी		राठोड़ साथ	
४	पडिहार	सूरजकुं०	राणापाकतजी	मंडोर	३	चतराजजी		बोपजो तावेदारी	
५	कछवाई	राजनदे	रावकसांण					लेपेशाका की सलाह होने पर शादी करी उनके हाथों से कतल हुई॥	
६	सोढी								
७	से०								

बरस १॥ में सामान हो चुका तो कारमुख़तार सीहड़ विकमसी ने मोती दलाय मुर्ग़ियों के दूध में मिलाय गढ़ से फेंके फ़ौज वाले खीर समझ निरास हो पी के रवाने हुए थे भारी भीमदे ने १ लंघे से सुनाई में कहाया कि तोत है फ़ौरन लौट आसे रतनसीजी नवाब महबूबखां से पघड़ी बदल भाई थे हमेश रात को सलाह करते थे कुं० घड़सी व कान्हड़ का बाज़ू सोंपा सो दिल्ली ले गये मूलराज का कुं० देवराजके पुत्र केहर व हमीर नानेरे मोंने ठायरा में पडिहारां रो रूपड़े

पास थे सो बचे बाकी सब शाका में काम आये हज़ारों औरतें कतलकरके
दूजे दिन मूलराज रतनसी व कांवर भांवर प्रधान वगैरे कई हज़ार लोक
केसरयाकार गढ से निकले अद्भुत जुद्ध में स्वर्गगामी हुए नवाब करीमखां-
अलीखां व फ़ौजशाही के लोग बेतादाद मरे व घायल हुए गढ में बादशाह
का थाणा बैठा **सोरठा** शाह फ़ीरोज़ जलाल मूलरत्न जेशान गढ। शाके
की धकराल तेरह से इकावने ॥१॥ जसोड़ कावेरा दूदा को तिलोकसी-
इस मन्शा से ले निकले थे कि फेर शाका करेंगे पारकर में बैठ कर रोड़नेलगे
रसद व कागज़ गढ में न जाने दिया जब पांच में बर्ष थाणे वाले गढ छोड़ गा-
ये की खबर १ फ़कीर जो नवाब के साथ था पोहकरण से बिछड़ उनसे सुनते
ही राठोड़ जगमाल खेड़ से ७०० गाड़े सामान के रवाना कर के पिंडा गांम भू:
पार वपंडे में जो शहर से ५ कोस है देपारा ठालने को रहाथा और रतनुं आस
राव के इत्तला देने से दूदा व तिलोकसी पारकर से रवाना हो रस्ते में पाहू तोले
के पास बहुत सवार थे आधाराज देनाकर साथ ले गढ में दाखिल हुये-और
गाडा भी पहुंचा सामान ले के जगमाल को कहलाया कि आपजेसे गनायत
हो सो ऐसी मदद दें- गाडों वालों को पेटीये का गेहूं एक २ धोवा सहाज-
नीसेर २॥ होगा दिया जब से भू: वगैरे गांमों में इस तोल का माप मांणा
नाम से जारि है और भू: का बेथारा भी कहावत रह गई ॥ फेर जगमाल-
भी आकर मिले और पीछे जाते गांम सांगड़ व ओलेचा चारों वीठु को देग
ये सो सही रखे पर लेत लाल थे कई पुस्तों बाद महारावल भीम दिल्ली से-
पीछा आकर तांवा पत्र कर दिया ॥ तिलोकसी ने तोला को वफ़ातदी ॥
और रत्नसी ने रत्नसर तालाब शहर से १॥ कोस वासणपी के रास्ते में बनाया

	१२५ महारावलजी श्रीदूदोजी सं॰ १३५६								
१	सोढी		राणा षडसी	अमरकोर	।	रत्नसी जैतसी होतका कुं॰ धड सीजी राजगादी विराजे ॥			अमरकोरसिंघजी
२									
३	मांगलीयांणी								
४	राठोड॰		ठकुरराजसी	सेतरावे					
५									
६									
७	कर्मसोत			रवीवसर					
८									
९									
१०									
११									

नगर थटे के पहाड़ में कुंगरा बलोच जो रहेवथा मारकर लखी घोड़ियों और शहर जालोर व सीरोही लूट के बहुत सा माल व गुजरात से ५००० भैंसां व पारन से वर्ग तथा हांसी हंसार व भटनेर से सांढां वगैरे माल लाये, अलाहाज़ुलकृ या सदिल्ली के नज़दीक मौज़े रेवाड़ी से थंभा पकड़ी अजमेर के थांणों से जुद्धजीत नागोर का देस लूटा और मुकाबिले में तिलोकसी ने कहीं पीठ नहीं दिखाई जो जो माल लाया दूदेजी ने फ़ौरन दातारीमें देदिया मुराद कि दूदे तिलोकसी ने बहादुरी व दातारी में नाम किया ॥ दूदेजी का शाला मौज़े सेतरावे का राठोड़ हापा राजोत से तिलोकसी चौसर खेलते हाथमें चूड़े की चोल करी- हापा नाराज़ हुय कराह से सांढां लेगया, पीछे से तिलोकसी गांम ओटीनीयें पहुंचकर १५० राठोड़ो साथ हापे को मारा दूदोजी नाराज़ हुआ कि शाका का

वैरा पूरा करो जब तिलोकसी ने मुल्कों में यहांतक लूट मचाई कि मुकाम-अजमेर में एक गूजरी दूध लेकर बादशाह अलाऊदीन खिलजी के जाती को लूटी और खासा घोड़ा लाया जिसपर नवाब कमालदीन लखनऊ व मलक काफ़र मरहट्टा बहुत फौज ले आये ६ साल लडने के बाद अर्ज हुई कि अब कालवी जुवार रही है याने गढ में रसद न रही जब राणी कर्मसोतके सिवा-मात्र औरतों हर कौम की को अगाड़ी खाने कराय पीछे से ५५०० लोक साथ शाका कर स्वर्ग पहोंचे यवन बेतादाद खेत रहे जसोड़ उन्होने बडी बहादुरी करी कि शिर पडे बाद कई यवन मारे फेर गुली नोखने मे धड पडा सो-देवली बिला माथे की दरजी पूजे हैं राणीजी ने चारण हूंफेजी आदू से जो बरदाई कवीसर था कहा कि खीवसर मे आप साथ आवे कांचली देने का वचन लि-याथा सो अब दो याने श्री दरबार का शिर लावो हूंफेजी ने नवाब से दूदेजी-का शिर मांगा नवाब बोला सागी पहचानलो हूंफेजी कहा शिर बोलेगा चुना चे बिडदावने से मुंड हंस्सा **दोहा** सांदू हूंफे शेवीयो साहब दुर्जन सल्ल। बिडदां मायो बोलीयो गीतां रूहा गल्ल ॥२॥ माथो लाया जब राणी साहि-बा सत्ती हुई और गढ मे बादशाही दाखल हुआ ॥ **सोरठा** ॥ खिलजी-अलाउदीन दुर्जनशाल तिलोकसी । शाको भारी कीन तेरै से अठसंठ मे ।१। ऐसे ही दूसरा मुल्कों में भी बहुत जगह शाका किया गढ चीतो ड सं० १३३१ में सीसोदीया राणा गढलखमराणसी वकुं० रत्नसी आदि ले १३ पीढी झडी गढ पावे मुल्क गुजरात में पत्तेजी चोहांन गढ आबू में अडसी पुवार गढ जालोर में वीरमदे सोनगरे गढ पाटण में अर्जनसो-लंखी गढ गागरुण मे अचले खीची वगैरे २ ॥ दिल्ली से घडसीजी दू केला भाटीयों से मिलने को जेसलमेर आते थे मंडावर से १ नाई के साथ

होनेसे मौजे खेड़के बाग़में जाकर कुं॰ जगमालसे मिले बाद मलीनाथ जी पास कई महीना रहे खेड़ पर बादशाह की फ़ौजें आई अर लड़ाई हुई फ़ौजें तो हार कर पीछी गई इसका हाल मुफ़स्सल वीरमाण में लिखा है घड़सी जी ज़ख़्मों से अचेत था मलीनाथजी की बेटी विमलादे जो शीरोही परना थोडी यहां ही थी इस बग़लकरी तो चैन हुआ तब विमलादे ने अर्ज़ करी कि मैं ताबेदार होचुकी हूं घड़सी जी कही मैं कुंवारा हूं जब जगमाल की पुत्री कमलादे से शादी करके विमला दे को भी रखली फेर मलीनाथजी की सलाह से दोनो रांणियों को खेड़ में छोड़ी और जैचंद के बेटे लूणराण को द॰ बीकानेर से बरहाड़ कंवराण के बेटे पनराजको जेशलमेर से बुलाकर साथले दिल्ली गए दोनों ही बरदाई आजान बाहु जोधार तो थे ही किसमत की खूबी से गज़नी बुख़ारे के बादशाह के इक्का को जीता व मस्त हाथी को ज़ेर किया व कवांराजो करामात की थी च्हडकर तोडिनी और बादशाह को पकड़या जिस पर दिल्ली के बादशाह महरबांन होकर गजनी का जेतवार ख़िताब दिया और कहा मांग तो घड़सी जी ने माफ़ मांग कर जैसलमेर मिलने की अर्ज़ करी बादशाह ने फ़रमाया कि गुजरात वग़ैरे दूसरा मुल्क ले भूखल मेर में क्या है मगर घड़सी जी ने कहा कि बुज़ुर्गों का ही वत्न मिले जब नव महोरा फ़रमान व ख़िलत व दोरास घोड़े अराकी व फ़ील जंजीर व तलवार कटार वग़ैरे इनायत किया सो लेकर जेशलमेर से पूर्व कोस १ मगरे पर डेरा कर फ़रमान नवाब को भेजा नवाब बोला तीन हुकम आने से गढ़ मिलेगा एक शकुनी बोला कि आदमी भख दिये काम सिद्ध होगा इतने में दिल्ली से ख़बर हुकम लाया कि गढ़ मत देना घड़सी जी ने काग़ज़ लेकर ख़बरों की क़बरें यहां ही करीं सो ख़बर मगरा मशहूर हुआ फेर नवाब के बेटे को कुंभारी के घर में पकड़ा जब नवाब ने

गढ़ तो खाली कर दिया पर बचन लिया कि बाद आइन्दह नाराज हुआ तो मैं यहां आ रहूंगा चुनान्चे नवाब पीछा आया जब वज़ीर का खिताब व नहवर कोट व नक़ारा वगैरे कुर्ब दे कर उमराव किया सो श्री अखैसिंह जी के अहद तक तो आठ मिसलों में रहा मगर शक होने से हाकम भी रखा गया था श्री मूलराजजी के ज़माने सं० १८२० में हाकम व्यास सत्तराम व वज़ीरों ने किल्ला दावर पोत्रों याने बहावलपुर के नवाब को देना चाहा तो फलोधी का थानवी जैतसी ने कहा कि खर्च मैं दूंगा किल्ला मत दो परन्तु दे ही दिया जब से वो मवज़ीर लायक न रही नहवर-किशनगढ़-मूलागढ़ नाचणो बरसलपुर वगैरे में कोटवाल कहलाते हैं और जैतसी को बुलाकर नगोत में बसाया फेर शहर में सगपण कराय नोकरी में रखा जब से थानवी आज तक ज़ी इज़्ज़त अहोदों पर मोजूद हैं ॥

	१२६ महारावल जी श्री घड़सी जी सं० १३७३							
१	राठोड़	विमलादे	रावमलीनाथजी	खेड़-	।	कुंवर कोई हुआ श्री मूलराजजी के कुं: देवराज का कुं: केहरजी राजबैठा ॥		[illegible]
२	सो०	कमलादे	कु० जगमालजी	सो०				
३	वाघेली		रावथहारुजी					

शाका के समय मुल्क वीरान कर बहुत से कूंवे व तालाब बुराये तोड़ाये थे सो पीछा आबाद करने की पूरी २ कोशश की पर अाजैसा न हुआ ॥ जसोड़ के बेटे पोते वगैरे भाटी फरंट रहे जिस से मलीनाथजी के कु० कूंपा व जगपाल को जो श्री दरबार के साले थे खेड़ से बुला कर पास रखे और कोटड़ा व बहारुमेर व गिराब मस परगने देकर आठ मिसलों में नगार बंध उमराव किये

व शहर में हवेली बनवादी श्री दरबार के अदीठ पछ्या चार
णी शक्ति देवलने मिटाया और कहा कि कुंमर की धार देखो जहां
पाज बांधजो तो अखै पुन्य व कुंमार नाम रहेगा चुनान्चे घडसीसरता
लाव बणाया वहां जसोड़ तिभे के बेटे आसकरन चूक किया सो शिर
गिरने बाद घोडा भगाय गढ में आगिरा जब दाग में रांणी कमलादे
वदो खवास सती हुई और रांणी विमलादे ने बडी हिम्मत व होशि
यारी करी कि जसोड जाति का नाम भाटीओं के भाट की वही से निक
लाया व तिभे की औलाद का गढ में रात न रहे की तलाक कराई । और
गांम छांपरा से केहर को लडका पंने में जंगल में सोते पर सांप ने छत्र
किया था प्रतापी जानकर सबी सब बुलाकर राज बैठाया तथा सब
तरह राज का बन्दोबस्त करके छः महीने बाद तालाव की प्रतिष्टा करा
य सती हुई सं० १३९२ में ॥ मुल्क दक्षिण का तो सालों को दिया
पूर्व जसोडों दबाया कि शिकार ही नहीं लेने देते उत्तर जैतुंग महेषे
को कि जिसने विखे में तन मन वधन से हाजरी करी थी भेजा कि दबा
सके सो तेरा है पश्चिम का लूणाग व पनराज को देना चाहा तो अर्ज
हुई कि कुछ राज को भी रखेंगे या बस जब महेषे को तो लिखा कि १
कागज़ पूगों पीछे अगाडी दबावे सो तेरा चुनान्चे मोज़े चनुसे आगे रास
सीये की सांढ पर सवार होकर वीठनोक तक पहोंचे थे। लूणाग व पन
राज को कहा कि एक दिन में घोडा फेरले बीच की ज़मीन तुमारी सो लू
णाग तो गांम पारेवर के चोकोसी में रहा और पनराज ने ४० कोस के घेरे
में जो रहाड की मशहूर है लेली जब पुरांना गाम वालों ना खालसे रख

१२७ महारावलजी श्री केहरजी सं० १३११

१	सोढी	सूजकुं०	रांणा गोघराजी	
२	चौहान		रांणा अलसीजी	पावा
३				
४				
५				
६				
७				
८				
९				
१०				
११				
१२				
१३				
१४				
१५				
१६				
१७				
१८				
१९				
२०				
२१				

१ सोमके तेरे पुत्रोंका सोम हुआ १ रूपसी २ देवराज ३ रतनो ४ जेतमाल ५ भोजदे ६ जीवो ७ पर्वत ८ राजो ९ खेतसी १० जेसो ११ महाजल १२ हरखो १३ वीर्मदे ॥

२ लखमणजी पाट

३ केलणके २४ पुत्र मध १३का वंश चला जिसका हाल अलग लिखा ॥

४ कलकरणके जैसेका जेसा भायी मारवाड मेंउमरावगाम लवेरे-वावडी वगेरे तथा सांवतसीके एपीया व सांवतसी हुआ

५ सातल

६ किजो

७ तणके गोपालदे का गोपालदे दूजे राजपालकेल खणपालकीर्तिसिंह साधार

८ तेजसी का तेजसी

१ राजकुं० महाराणा लाखाजीको परनाया गढ चीतोड

२ किजेकुं० देवडे रावको परनाया गढ सीरोही

३ कल्याणकुं० खेडके रावल जगमालको परनाया

महारावलश्री

छोटा भाई हमीर के कुं० जैतसी व लूणकर्ण को पास रखाथा मेवाड में कूंभलमेर के रांणे कूंभेकी बेटी से जैतसी की सगाई हुई सो परनीजण जाते शकुनी साले के भ्रमाणे से नाई को ओर्त का लिबास कराय लाल मेवाड़े की खबर मंगाकर १ मनजल ओलीतर्फ वड वरसाय पीछा आते गांम सूर्ज्जडे राव रांणगदे के प्रधान सांखले म्हैराजकी बेटी परनी जे यह खबर होने से रांणेजी तो बेटी की शादी गागरूणके खीची अचले से करी और यहांसे श्रीदरबारने कंवरों को कहलाया कि मुंह मत दिखावो - जब दोनो साले १ तो शीरोही देवड़ राव रतनसी व दूसरे सांखले आलणि ये को साथले पूगल जाय रावरांणगदे से कहा कि १ कोट देगे ज्युं ही लेंगे - इसपर तकरार हुई - जैतसी व लूणकर्ण व दोनों साले वगैरे ४ सो मनुष्य दुतर्फे मर्ण गए रावजी काला ओढ तीर्थ न्हाय यहां आए श्री दरबार श्री देगरायजी के दर्शन को पधारे थे रावजी को गामरासलों में बैठाय आप मात्मी को पधारे काला उतराय फरमाया कि कुंवर आपही के थे बेवकूफी से मरे अन्देशा मत करो फेर जेशलमेर लाय शरोपाव दे सीख दी जब पूगल गए सो सांखला म्हैराज अलणिये के मरने व रावजी के बोलबाला से विलाई घणी मरे है से नाराज हुय राठोड़ अर्ड कमल पास जा रहा ॥

कुं० केलणजी राठोड़ मलीनाथजी की पुत्री परनी जे वहां साले जगमाल से आपके बैन की सगाई करी श्रीदरबार नाराज हुए जब लुद्रवे में आबाद कर के केलणजी यहां से रवाने हुए सो शहर से १२ कोस पूर्व आशणी कोट की नीवदी फेर सिंगराव सातल महपालोत की सलाह से ७ सौ सवार साथ मुल्क का बन्दोबस्त करने को गए सो गढ मए परगना कई तो हुकम अदूलों से और कई अजमेरे नो कबज़े किये चुनाञ्चे अबल तो

विक्रमपुर में दखल कर बड़े भाई सोम को कोट की एवज़ गाम ग्राधी दी तथा पली वालों का गाडा साथ था सो भोजा व बाप वगैरे कई गाम वसाए फेर खबर लागी कि राव रांणगदे की सोढी मुलतान के नवाब को बुलाती है जब हिकमत अमली से गढ़ पूगल में क़ाबिज़ हुए सोढी को भीत में चुनाई और सोढे सादी करने की तलाक करी सो १८ पीडी बाद जूझार सिंह राव बिक्रमपुर व धनराज राव बर्सलपुर का परनी जे- कोट मरोट व खारबारा में पका अमल करके कोट नांनरा व मुंमरा बाहरा में थाणा बैठाय क़िले देरावर में दाखिल हुए दरीयाव तक हदूद जो आगे थी क़ायम करी पीछे कोट किरोहर व माथेला व मुंमरा बाहरा भी ताबे किया तथा गढ भटनेर दखल में लेकर किसी क़दर प्र० हिन्सार में भी अमल किया- अलाहाजुल क़यास कारस्वाई का मुफ़स्सिल हाल अलाहदा इतिहास में- लिखा है ॥ १ केलणजी के बहादुरी व अकबाल की खूबी कहां तक लिखी जावे बादशाही फ़रमान में राव किलजी लिखा है बडे ही प्रतापी व- स्वाम धर्मी हुए केलणजी के छोटे भाई तणूजी का कुं० राजपाल वा उम्मर साथ रहा उसको १ गढ देरावर कहा था परन्तु दोनों स्वर्ग वासी हुए केलणजी का बड़ा कुंवर चाचाजी राव हुआ सो भी बड़ा बहादुर था चुनाचे वज़ीर कालू से भारी जुद्ध जीता फेर राजपाल के बेटे कीर्त सिंह ने षोषरों का घोड़ा ४ चुराय जो इये लूणे को सोंपा खोखरों का कटक लूणे का ५० घोड़ा व बित्त ले गया जब चाचे ने खोखरों के राव कालू थिर पालोत को वफ़ात दी उसकी पुत्री किर्त सिंह को परनाय मुल्क ले दीया फेर कीर्त सिंह के बेटे पोते मौज़े बूर कपूरथल सलेमपुर अर्ड कपुर वगैरे में रहे बादशाह अकबर ने इन्हों को तुरक किया तदपि कई पीढी तक भाटी पैकी रीत

बरते था याने दीवाली होली आखा तीज दसेरे को जैसलमेर की त-
रफ सलाम कर गादी पर बैठे था । चाचाजी जैसलमेर हाज़र हुए श्री
जी से सलाम कर रावपिंगो का भार पावले गया बाद जंझ बाघेकी नाल-
सपर सहता से कुमक लेकर गढ सातलमेर के राठोड अजांग के तीनों कुं-
वरों को पकडा कई राठोड मारे गये तथा ३ सौ घर साहूकारों के लेजा
कर पूगल देरावर मुमराबाहुरा में बसाए और अजांग के तीनों पुत्रों
को परधानों के परनाय पीछे सातलमेर भेजे । केलणजी के २४
पुत्रों में १३ का वंश चला और बडे प्रतापी हुए केलण बरसिंघ खीया-
कि सनावत वगैरः खापों मशहूर हुई तथा बरसलपुर- बिकमपुर वगैरराज सर
ग्रांधी बांगडसर सिरडा बावडी वगैरे बहुत से गाम जो इ० हाज़ा में
हैं आज्रे व नकशे में लिखे अलावे इसके इ० बीकानेर व मारवाड़
में पहुंत हैं । कु० विक्रमायत भी बिकमपुर के राव बडे ही दातार सूर्य
का इष्ट दबरदाई थे १ दिन तालाब पर इकेले खडे थे १ चारन दुश्म-
नों के सिखाने से आकर कई घोडे मांगे कि इसी वक्त दें जब सूर्य का आरा
धन किया तो १४० घोडे आमौजूद हुए जब १ साल का खर्च भी देकर सब घो-
डे चारन को दे दिये

१२९ महारावलजी श्री लखमणजी सं० १४५१

१	सोढी	भीमकु०	राणाराजपाल	(अमरकोट)	१	वैरसीजी पाट	१	राजकु०	सुजानसिंह
२	वाघेली	नर्वददे	रावजसपाल	सारंगपुर	२	रावतरूपसी का रूपसी इसके कु० महेलोकि काजेमलने दिल्ली में हाथी को हाथसे पकाड़ दिलाया जब- बादशाह ने इका कहा जिससे खाप इका कहीजे सो प्र० पोहकरणि फलोधी में रहते हैं ॥			
३	झाली		राजानैसस	हलवद	३	राजधरका रायधर			
४					४	सादूलका परवत	२	चंपाकु०	
५					५	कूंभेका कूंभा			
६					६	अमरजी			
७							३	मोतीकु०	
८									

श्रीलक्ष्मी नाथजी का स्वरूप मेड़ते में ज़मीन से प्रगटे और सेवग सेरापाल के गाडे पर यहां पधारे तब गढ में मंदिर बनाय सेवा महाजन महेसरीयों पर रखा नित खर्च का राज से मुकररि के अलावा न्यात में शादी गमी व ज़मीन के बिकाव वगैरे पर लाग व मनोर्थ भेट वगैरे का पैदा खर्च का भंडार व हिसाब का संभाल १२ ही सेठ रखते हैं परन्तु चंद सालसे हिसाब नहीं हुआ हज़ारो रुपये लागों में है सो अब ऐसी तदबीर होगी कि पैदा बधे व हिसाब हरवक्त साफ रहे ऐसे ही टीकमजी रणछोडजी आदि का भी होगा - और पूजारा सेवक मज़कूर के बंश का १० ही धुडा हर महीने बारी से करता है सं० १४९४ में प्रतिष्ठा याने भारी जग व बहुत दांन पुन्य किया जबसे राज का मालिक श्रीलक्ष्मी नाथजी व उनका दीवान महारावलजी है जैसे उदेपुर में रावलबापाजी से आदि ले मालिक श्री इकलिंगजी और दीवांन महाराणाजी । व्यास राम रिष देवरिष दिल्ली से आस श्रीजी के अदीठ पञ्च मिटाया जब पुरोहित पेलाजकी बेटी लखुवी रेकी वेन वगडी से देवरिषका विवाह कर पाट व्यास कीया उसके ४ बेटो का करीब २२०० घर है १ पोपे का जोधपुर शहर व इलाके में १००० व दूजे जूठे का बीकानेर ३२५ व तीजे नउं का यहां व देशावरे ८०० व गदा धर का इलाके किशनगढ में है नउं के परपोले हरखे व्यासाई छोडी और भतीजा मधुबन काशी जी से विद्या पढ आया जब महारावल श्री अमरसिंहजी ने पाट व्यास किया उसकी औलाद के हनोज़ हैं ॥

१२९ महारावलजी श्री वैरसी जी सं० १४९६

१	सीसोदणी	अगरकु०	रावपूंजाजी	डूंगरपुर	१	चाचोजी पाट	१	भांणकु०	बसराजी
२	सोढी	सज्जनकु०	राणा नोहट		२	ऊगेजी का केलायचा			
३	राठोड़०	पेंपकु०	राणा भोजराज	गुडे०	३	मेलेजी का भेसडेच -			
४	चावडी		राव देसल		४	वरसिंहजी			
५	झाली	राजकु०	राव झलसी	बढवांण					
६	चोहान	सूजकु०	राणा भोजराज	वाव					

मंडोर के राठोड राव रिड मलजी तो गढ चीतोड में मारे गए कु० जोधाजी भाग कर यहां आरहे मंडोर में सीसोदियों का दखल हुआ था यहां से फौज साथ देकर मंडोर लेदी जब जोधेजी कहा **दोहा** सुपहन वांगढ वैरसीपिड अरि देयपरा प्रबोध। राव मंडोवर राखियो जेसरणा गत जोध ॥१॥ तवे कमधवरव मरा सुतन नरपति माड नरेश ।। निजऊपर कर जोधने दीध मंडोवर देश ॥२॥ राणियों के नाम से मंदिर सूर्यजी व रत्नेस्वर महादेव जी का व कूवा वूलीसर उरफ़ बुला वरांगीसर गढ में बनाया ॥

	१३० महारावलजी श्री चाचोजी सं० १५०६							
१	राठोड	दूणभैकु०	शेखाजी	गढईडर	१	देवीदासजी पाट	१	पेमकु०
२	चौहानहडी	विलेकु०	रावजेतसिंहजी	मांडलपठ				
३	राठोड	रूपकु०	रावजोधजी	मंडोवर				
४	देवडी	विलेकु०	रावसांईदास	सीरोही				
५								
६								
७								
८								
९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]		[illegible]
१०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]		[illegible]
११	सोढी	जामकु०	राणाप्रियाग	अमरकोट	२	[illegible]		[illegible]

अमरकोट परनीजरा पधारे सोढां चूक कियादोसौ भाटी साथ पिंडां स्वर्ग सिधारे कुं० देवीदासजी फ़ौज कर गए रांणा मांडरा मए सोढा ५ सो को मार बैर लिया और गढ पाड ईंटां लाय महल द्वार में लगाई पीछे राज बैठे और सोढा तावेदारी में रहा

१३१ महारावलजीश्रीदेवीदासजी सं० १५१३

१	सीसोदणी	दलकु०	रांणाकुंभाजी	गढचीतोड	१	जैतसिंहजी पाट	१	पहोपकु०	
२	सोढी	सदाकु०	रांणासुजाणजी		२	घडसी			
३	झाली		राजाजोगीदास	झालावाड	३	भातलका भातलोत			
४	चौहान	दाडमदे	राव कांनड		४	पातल			
५	गोडं		राजामालदे	अजमेर	५	मदेकामदा	२	रामकु०	
६	चौहान	भांराकु०	रावजसवंतजी		६	ठाकरसीका ठाकरसोत			
७					७	रामुंकादेवीदासोतगाम ससाधरी मे			[illegible]
८					८	दुदेकादूदा गामडा			
९						चरी याने सोमेरी			
१०						पर षेडनवकुवाथा			
११									
१२									
१३									
१४									
१५									

चानियावबलोचमुल्कलूटेथा पिंड़ापधार १३०० कोवफातदीभारी प्रवाडे जीते । बाहड मेरावकोटडीयों को चश्म नुमाई करके महेचोंसे दंड़ वड़ोला-लिया वहांही खबरलगी किराठोड रावबीकाजी — पूगलकी ज़मीनमेंगढ बनाते हैं फौरन वहांपधारे बीकाजीतो भागगये गढ मिसमार कर किवाड़ तो वरसलपुर के दरवाज़ेमें लगाया तुलाट यहांलाकर सदर सायर में रखी - बाद पूगल रावजो श्री दरबार कोतो धोखा देता रहा किगढ नहीं होने दूंगा-

मगर शक्ति करनीजीकी मरज़ीसे वीकेजीको मना नकिया जिससे ग
ढ वीकानेर वनगया ॥

१३२ महारावलजी श्रीजैतसिंहजी सं० १५५३

१	वाहडमेरी	लाछमेरे	रावत रतीजी	वाहडमेर	१	कर्मसीजी दिन १५ रा- जवैठा	१	मानकुं० सी- रोही राव मा- लदे को परना- या -	
२	सोढी	सिणगा कु०	वैरसी	-	२	लूणकरणजी पाट			
३	राठोड	सूर्जकुं०	रावत वंशीदास	ईडर	३	नरसिंहदास			
४	भाली	जसकुं०	राजा भांरा	नीवडी	४	म्हेरावरा			
५	चावडी	रूपकुं०	रावसांवत	जसपुर	५	मंडलीक का जैतसी होत	२	वीरकुं०	[illegible]
६	हाडी	- -	राव कांन्हडदे	मांडलगढ	६	म्हेराज का स०			
७					७	वेरीसालक स०			
८					८	प्रतापसिंहजी का स्थाट			
९					९	भांनीदास का स०			
१०									
११									

भाटी सोढे वाहडमेरे मुल्क तोलूटे होथे खासकर रवरींगेमें नजैत शारसेकु
जी आघोडाहीले गये तोभी दरवार नेकुछ नकिया कुंवरजी नाराज हुए नव
वअलीखां पासरव, थारास और पगडी वदल भाई हुए इस आरसे में वीकानेर
की फौज आई शहरसे ३ कोस त० राजवाईपर कईदिन रही फेर गामसोम
ले आई लूट कार पीछी गई १ दिन श्री दरवार शिकार पधारे थे १ वहाला जहां
जीरंगा है वाहडमेरे रावतके तानेपर सं० ७० में तलावकी वुनीयाद डाली
जैत बंध वंधेका नाम दिया काम शुरू होथा कि पिंडां स्वर्ग पधारे कर्मसी
जी गादी वैठे बाद दिन १५ के लूणकर्नजी स्वंधार से ८ सोपठान साथ लाए

कमसी जीको उठाय आप राज विराजे पठान यहां रहे सो सिपाही खवनधारी मशहूर हैं ॥

१३३ महारावलजीश्रीलूणकरणजी सं० १५८६

१	राठोड	हंसकु०	रावजैतमालजी	गढईडर	१	मालदेजीपाट	१	रामकु० जोधपुर मालदेजीको पर
२	सोढी	जामकु०	राणाकुंभकर्ण		२	हीगलीदासकारावलोत लूणकरणोतभरोटीवा		नाया
३	राठोडबीकी	अमृतकुं०	लूणकरण	वीकानेर	३	रायपालका स०	२	उदेपुरम्हाराणा
४	झाली	सूर्जकुं०	राजाचंद्रसेन	वीकानेर	४	सूर्जमलका स०		उदेसिंहजीकोपर
५	सीसोदणी	शारसकुं०	महाराणासांगाजी	गढचीतोड	५	रायमलका स०		नाया
६					६	दुर्जनशालका स०	३	ऊमांदे जोधपुर
७					७	शिवदासका स०		महाराजमालदेजी
८					८	दूदोजीकादूदा		कोपरनाया म्हा राजकहीमें तो भा
९					९	हरदासजी		रमली के वास्ते आए थे जिससे
१०								महाराज साथ न हीं गई नाना से
११								गढचीतोड जा बैठी
१२								सो महाराज फोत हुआ जब सती हुई

(हाशिये में: बेटी / औलाद)

भाटी सरदार सायरके रुपये वांट लेते थे सो रुजगारकर के सायरमें आना ही बंद किया । जैत बंध त्यार हुआ परन्तु वेत बना रहा जब गढमें कोठार भव राडा वडन खीरसर वीरसर विलावल अंनपूर्णा मेडी वगैरे बडे ही नामी बनाये । गुरु पलीवाल हरजाल था इस वक्त पुरोहित खेतसी खेतपाल के इष्टसे वेदी के नीचे गध्धेका मुंड बताने से पुरोहित गुरु हुआ सो है ई प्रतिष्टाका मुल्कों में इशितहार भेजा कि जो जो हिन्दू ज़माने की गर्दिससे मुसल्मान हुए हे इस जिगपर आवेंगे हिन्दू कर लिये जावेंगे चुनांचे सोसाही

हुआ और वाहर मेर से रावतजी हाथों में अर्जीयों डालकर हाज़िर हुआ श्री दरबार ने फ़रमाया कि अंदेशा मत करो तुम्हारे ताने से यह भारी काम तुरत बनगया । बंधके दूसरी तरफ़ वाग लगाया सो बडा वाग व बाडी का हीजे है बंध के नीचे रामाल नामी नाला में ज्यादे वारिश से पानी भांवरखाय गिरने की अजब कैफ़ियत होती है और ज्यादे वर्षा की सिफ़त है कि वाडी भवरीये आई परन्तु बडी कवाहत है कि वंध का पत्थर अनघडके कारण पानी निकलजाता है सो रोकने को अगाडी दूसरा वंध घडे पत्थरों का वंधा था परन्तु नरुका अब गौर करने से मालूम हुआ कि दोनों वंधों के वीचमें पत्थर भरे हैं सो निकाल कर वीचमें या अगाडी मिट्टी भरादी जावे जब रुकेगा तो नेवायश के सिवाय बाग व बाडीयों के कूवों में पानी ज्यादे रहने से वडा फ़ायदा राज व मालीयों वगैरे का होगा इसकी लागत भी कुल ५. छः हज़ार रुपये तक है जिस्मे तालाब बहुत खुदेगा व वाग भी मिट्टी गिरने से वच जावेगा सं० १९४१ में इसकी तजवीज भी करी थी परं कहतसाली यांने नहीं होने दी रामनालकी हवा सरद व वाग़ की सवज़ी आबू जी से भी वढकर है मगर जगह वहुत तंग है इस बाग का आंव जोधपुर महाराज मालदे जी कार गये थे वदलाले ने पूगल राव जेसिंहजी को भेजे सो मंडोर के बाग में ३ दिन रहे फेर हर पेड के नीचे तो १ कुल्हाडा और ऊपर १ कपडा रखकर चले आये गात है कि वादीया नहीं ब्रह्म वैरावत ओदाडे कीधो उपगार तथा कोठार ऐसे हैं कि जोधपुर महाराज प्रीतखत सिंहजी साहिबां भी देखकर फ़रमाया कि ऐसा किल्ला व कोठार दूसरी रियास्तो में नहीं है सं० १६०७ में नवाब अलीखां जो श्रीदरबार के पगडीबदल भाई थे खंधार छूटने से यहां आय कि ग्रानघाट रहे और कहा कि हुरमें रानी साहिबां से मिलना चाहती हैं दरबार ने कहा अच्छा जब महाजांन गढ में आई तो दगा था फौरन राणीयों कतलकी गई

और कई अधर्मीयों कोमारकर औरदरबार दो सो भाटी दो सो खंधारे १सो दूसरेलोग चारों भाट पुरोहित कामदार वगैरेसाथ स्वर्ग पधारे इस असें में कुं मालदेजी वागसे आये नवाबकोमारे वांकालोग जोबचे थे किल्लेसे निकाल दिये॥**गीत**॥ अली बिनाकुरा दुरंग आंगमें माल बिना कियम अली मरेः॥ यह शाका आधा हुआ कहते हैं कि इसगढ में साढातीन शाका होगा जिसमें १मूलराज रत्नसीका दूजा दूजे तिलोकसी का और आधा यह हुआ १फेर ज्ञानी जाने कब होगा पुरानी सारवी है किःहलचल दुनी हैकंप हुय होसी- दईकाफेर।वाधोरुधो जावसी जादवां जेसलमेर।१। ऐसे ही सारवी थी कि॥ आथुराउ ऊगुरो पांचेकोसे गांव । ओपालटे औमंडे सोजेसानगढनांव॥ २॥ सोतो मिली ज्यों ही सिंध की सारवी मिली॥के कारा के कहरा उभरदेंदा जडें तडें सिंधडी लोंखो भूरा भेरींदा ॥ तथा शहर मुल्तानकी सारवी है कि ॥ हंसपुर जगपुर सोमपुर चौथापुरमुलतान । बल्लभजते घडेसी आरासुर मुलतान ॥ अबकहते हैं कि ॥ आथुराउ ऊगुरो पांचको सेगाव । एपालटे ओमंडे जैरो औलापतनांव ॥

१३४ महारावलजी श्री मालदेजी संबत १६०७

१	बाहडमेरी		राव पनराज	बाहडमेर
२	बीकीजी	राजकुं०	रावजैतसीजी	बीकानेर
३	झाली		देवीदासजी	
४	जोधीजी	सूजकुं०	राव मालदेजी	जोधपुर
५	सीसोदणी	चैनकुं०	राणाउदैसिंहजी	उदैपुर
६	सोढी	नवलकुं०	राणासूर्जमलजी	
७	देवडी	जैतकुं०	राव हमीरजी	सीरोही
८	चावडी	मांणकुं०	भीमदेजी	
९	मेडतणी	लाछकुं०	ठाः जैतसीजी	मेडता
१०	चौहांन	पेमकुं०	रावमांडणजी	कल्याणपुर
११				
१२				
१३				

१	श्रीहरराजजी पाट	१	कनककुं०	अमरजी
२	भानीदासजी			
३	खेतसीजीकाखेतसीहोत			
४	नाराणदासजीकानाराणदासोत			
५	सेसमलजीका सेसमलोतव- मालदेयोत			
६	जैतसीजीकाजैतसीहोतःगाम रतनरीवसी	२	सोनकुं०	
७	डुंगरसीजीकाडुंगरसोत गाम पांचू इ० वीकानेर			
८	पूरणमलजी			

मांगाकराव कोठार परधोलेर महल से उत्तर घोडों का तबेला बनाया बीच में नाल के पत्थर में लिखा है कि हाथगी करावी गासेच्यारे नीपनी श्लोक न्च्यो रहरिज्वं पगार निन्व: राज ग्राही सर्व धना प्रधान: तथा खंधारी सिपायां को इतबारि समझ कर १ शख्स को गुप्त खजाने की कुंजीयां सौंपीं कि शिवा वक्त ज़रूरत के भेद न खुले उसने भी ऐसा धर्म रखा कि मरते वक्त १ बेटे को वाकफ करता था कई पुस्तों बाद मूलचन्द राऊ वांनी ने बेटे को १ जगा जीते ही बतादी उसके कहने से म्हेतेजी ने भेम से नीकपूर निकाला जब दूसरी वाकफी न करी अब कोई वाकफ नहीं है शायद यह साखी मिलेगी ॥ पाघा और पघार बिच सो नई यालरवच्यार । कालयसे वूटी वाकरी कालयसे कारद्कार ॥१॥

१३५ महारावलजी श्री हरराजजी सं० १६१८

१	सोढी	चंपाकुं०	राणा वरणभीर	पारकर	१	भीमजी पाट	१	गंगाकुं० बीकानेर राजा रायसिंहजी को ब
२	बीकी	गानकुं०	राजा कल्याणमल	बीकानेर	२	कल्याणमलजी भीम के पाट		
३	जोधी	हरखमदे	रावमालदेवजी	जोधपुर	३	भारवा सिंहजी	२	चंपाकुं० राजा के भाई मथुरा ज को परणाया
४	मेड़तणी	साहबकुं०	रा: विजेराव	मेड़ता	४	सुलतान सिंहजी		
५	सीसोदणी	पेपकुं०	महाराणा माधोसिंह	उदेपुर				
६	झाली	लालकुं०	राजा मानसिंहजी	गढ़ग गूंद			३	लाछुबाई नांनाणो गढ़ जोधपुर रही
७	चौहान	मयाकुं०	रावनाडाजी	गढ़ पावा				
८	वाघेली	म्होकमकुं०	रावजसवंतजी					
९	कोरंडनी	किसनकुं०	रावपुहोमल					
१०	चांपावत	रूपभावत	विजैसिंह					
११	चावड़ीन	सोनकुं०	गजसिंह					
१२								
१३								
१४								
१५								

कुं० सुलतानसिंह जी दिल्ली गए वादशाह अकबर शाह ने कसबा फलोधी मए परगने इनायत किया नेरावत चन्द्रसैन जी १० हजार सोनइया ले कर ठिकाणा पहोकरण गिरवी रखाथा जिस पर जोधपुर की फौज आई सो हार के पीछे गई कोरडा खालसे करके फेर बाधजी को राणा थापीया। अमरकोट का राणा गंग को ज़ेर हुकम कर ताबेदारी में रखा सो जेसलमेर में ही फौत हुआ। बाहड मेरों को नसीहत दी। धोलेर के आगाडी सतीयों के पगथ्यां ऊपर म्हल बनाया सो हर राज जी का मालीया मोजूद है। तथा खवाकडीयों की हवेली शहर में बना दी॥

१३६ महारावल जी श्री भीम जी सं० १६३४

१	वीकीजी	फूलकुं०	राजा रायसिंह जी की बैन	वीकानेर	१	नथुसिंह जी ७ वर्ष का था श्री दरबार देवलोक पधारे रानी वीकीजी कुं० को लेकर फलोधी जा रही चेचक या ज़हर से कुंवरजी फौत हुआ वीकीजी वीकानेर गई फलोधी में वीकों का दखल रहा यहां से तो वीकी जी के नाराज़ होने का लिहाज रखा जोधपुर वालों ने फलोधी ले ली जब से मए परगने उनके कबज़े में है॥	
२	मेडतणी	लालकुं०	ठाः पातलजी				
३	सोढी	हंजूकुं०	ठाः राजसिंह				
४	महेची	राजकुं०	रावल कल्याण मल	जसोल			
५	चौहान	विलेकुं०	राणा प्रथीराज				
६	वीकी	अजबकुं०	नाराहदास				
७		सुजानकुं०	राजा नारणदास	ईडर			
८	कछवाई	रतनकुं०	राजा भेरूदास	आबेर			
९	राठोड़	हीरकुं०	राजा मानसिंह	किशनगढ़			

पिंडो सं० ३६ में दिल्ली गए वीकानेर महाराज रायसिंह जी के भाई प्रथीराज जी कहा **दोहा** दूजा राजा शाह रे कर में लेहारी॥ भाटी भीम छोडायदी नवरोजे नारी॥ चुनाचे ऐसा ही किया कि वादशाह अकबर शाह ने नवरोजा लेने की तलाक लिख दी और कसबा रोहोडी मंध किले बंखर व परगना किनारे

सिंधतक बरवशिश करी सरहद का नाम रगवल दंग हनोज कहीजे है। तथा
खिलअत भारी व हाथी व घोडा तलवार कटार अता फ़रमाया। जैसलमेर में
पका गढ बनाना शुरू किया था सो ३ दरवाजा सूर्जपोल व गणेशपोल उर्फ़
भूतापोल व रंगपोल उर्फ़ हवापोल व वैरीशाल आदि ७ बुर्ज व कमरकोट
व म्हलात वगैरे में ५० लाख रुपये लगे फेर आप दिल्ली से पीछे पधारे जब का
म बंद किया कि दूसरा कोई भी आवे तो मैं मैदान में बैठा जवाब दे सकता हूं और
दिल्ली का धनी आवे तो कैसा ही गढ होरह सके नहीं फेर चंदोसर पर नीलकंठ
महादेव का मंदिर बनाया बाद मनहरदासजी ने ९२ बुर्ज पका कच्चा बनाय
कुल ९९ बुर्ज से गढ सम्पूर्ण किया सो मौजूद है सानीन्हीं हुवण का गीत है कि
गीत संसार कहे पतसाह सभलो शिरपाकड निकोसमसेर आज बनै
दुनियान ऊपरे मानकवर नै जेसलमेर ।१। कवरी गुर वडगातकलाव-
तू जगसुड नयरा पतीरा जोय गोरहरे सारीख निको गढ नृप मनहर-
सारिख न कोय ।२। वाह प्रबल जोध अतुलीवल मोजस मद जादम मनमोय
मान मछूर सिर हरमंडली का कोटा सिरै तिखुणा कोट ।३। खाग त्याग
मीरछता नवखंड जादमसारीखो जेसांणा मनहर तणा भुजाडंड मो
टा मोटा बुरजों तणा मडाणा ।४। ॥१॥ नगरथटे बादशाही
फ़ौज खान खाना साथ श्री दरबार व बीकानेर महाराज कु० दलपतसिं
ह जी रहे सिंधदेश का बन्दोबस्त अच्छा रखा बारह हरपीडी में दरबार
के भाइयों में से कोई साहब नौकरी में बना रहा आखिर में श्री जसवंतसिं
हजी के भाई हरिसिंहजी राहडी से आए श्री तेजसिंहजी को चूक करके
आप भी मारे गये की ख़बर पहुंचते ही वसदेश वालोंने २० थाने १ दम
उठा दिये ॥

महारावल कल्याणदासजी नामके राजा हुए कहवत है कि मनजांणो कल्याणरो - अजां मंडाई अध - कु० मनहरदासजी राजकाज कीया

१३७ महारावलजी श्री कल्याणदासजी सं० १६८०

१		पारमदे			१	मनहरदासजी		
२		अमृतदे						
३	कोटडेची	मरघकुं०	करमसी	कोटडो				
४	भयेची	लाडकुं०	रावल दूदो	जसोल				
५	सोढी	सिरेकुं०	ठाः मानसिंह	अमरकोट				
६	वाहडमेरी		रामसिंह	वहाडमेर				
७								
८								
९								

१३८ महारावलजी श्री मनहरदासजी सं० १६९०

१	जोधी	उदेकुं०	ठाः केसरीसिंह	भाद्राजण	१	कुंवर नहीं हुआ - महारावल श्री मालदेजीके कुं० भोनीदासजीके संगजीका कुं० रामचंदजी राज बैठा ॥	१	उदेकुं० जोधपुर राजाजी गजसिंहजीको परनाया
२	मेडतणी	सदाकुं०	ठाः केसवदास	रेयां				
३	सोढी	अतरंगदे	रांणा भोजराज	अमरकोट				
४	चोंपावत	सुजानकुं०	ठाः गोपालदास					
५	कोटडेची	सींहादे	रांणा जोगीदास	कोटडे०				
६	पोकरणी		राव नीवाजी					
७	झाली	गुलाब	दुरगादसिंह					
८	बीकी	रतन	सुरजमल					
९								

जब श्री भीमकी रानी कुवर कोलेगई तो सीहड़ रघुनाथ व हमीर दुर्गदास वगैरे सरदारों ने श्री कल्याण दासजी से गादी बैठने का कहा सो नहीं माना और कुंवरजी रजू हुआ परन्तु जती खिलवत में था इस के हुकमसे बोला कि १४ वर्ष गढ़ से बाहर न रहं ॥ वलोच वंगुलखान विकमपुर राव के भाई हुआ वेरखो फ़ मुल्क लूटथा । रवत सिंहजी के बेटों ने राज लेने की सलाह विचारी सो दयाल दास जी ने अर्ज भी करदी परन्तु रघुनाथ की सलाह से दयाल दासजी को बाडी में चूक कराय-पग के अगूठे से खून का तिलक किया कि काके जी के राज तिलक की मन में थी इस से राज का हक़ सबल सिंहजी का वाजिब हुआ कि मन हर दास जी पगायता दिया ॥ वर्ष १४ के बाद मन हरदासजी पिंडा नाचणे पधारे त० राज वांणीपर ५ सौ वलोचों सुधां बंगुलखां को मार मांमे सादूल व भूपत खावडीये का कि जो दिल्ली से आते को वंगुलखां ने मारे थे वेर लिया प्रवाडे जीते दो सौ भाटी मरे ॥ फेर-तो हर ४ तर्फ पका बन्दोवस्त रखा उस जमाने में तरफ़ पूर्व कोस ४२ गांम मडले से अगाडी वारद का गाम व म्हेरु वनाला वगैरे व ओटोनीया उच्च पधरा सांस्न दिये और दक्षिण कोस ४४ गाम हरसानी से आगे तथा पश्चम कोस १२५ सिंध में रावल दंग तक व उत्तर कोस १२५ किले देरावर व पूगल का इलाका और बीच में कमो वेश याने बाहड़मेर जूना पारकर वगैरे २ तक दखल इस राज का था सो आईन अकबरी में लिखा है और हर परगने में बहुत से गाम बसे तथा गाम नीवाण मकानात वगैरे जदीद बनाये बाद हर पीढी में घर की फूट वो बादस फ लोधी पहोकरण आदि बहुत सा मुल्क कबज़े से निकलता गया हां श्री

गजसिंहजी साहिबों के इकबाल से किशनगढ़ व शाहगढ़ मय बछिया-
छोड़-घड़सीया व घोटडु पीछा आया जिसका हाल मौके पर लिखा है ॥
गढ़ में म्हेलात व घरसीसर में सर्वोत्तम भवन महल व बड़े बाग में रानीजी के-
नाम से कूवा मानसर व महल बनाये जोधपुर वालों ने बादशाह का फरमान-
भेजा था कि पहो करां पीछी दे दो मगर जवाब ही नहीं दिया सं० १७०४
में स्वर्ग याने बाड़ी पधारे तो वह जली सूली कुंगर से सवारी देखने लगा उसी
जगह खड़ा २ मरसिया कहता २ ढाई महीने में मरा सोढा कर २ भगवा-
काष देखा लोकिरा नुंदेवां मन भगवों माबाप कर गयो राव कल्यान उत्
॥१॥ इस वक्त सबलसिंहजी तो नानेरे किशनगढ़ महाराजा रूपसिंहजी
पास थे रामचंद्रजी राज बिराजे ॥ मूगरीनि भमे खडीन बुज व मुहार ने
खबर कहा कि दोनों १ घर चाहिये जब छोटा भाई खेतसीजी ने पटा मु-
हार का नज़र किया ॥ इस ज़माने में ३ मंगरीया शबिरडी याने ४ फकीर बि
का यांने करामात दिखाई चुनाचे १ ने तो जो उसकी सांढी भारी चोर ले गये
राज से दाद रसी न हुई जब ६ महीने बाद त्रपोलीये के पास मालीया गिराने का
बोल निकलतां ही दीवार फटी फौरन उसकी बहिन ने रोक दी सो चिराड़*
जूद है दूसरे ने दरीयाव के बीच रेती का टिबा कर के साथियों को बचा लिया
तीजे ने मौसम सरमा में जालीयां पे पीलु लगाया ४ ने तनाज़े पर कोम
रांको दस पार कीया बेत एक बिकीयो इस बांराी जैजा धोरे रमे धक: है:
महडराी जें दरीयाव में कीढिका है: पनु बांराी जें कुम धी कीमक: है:
शाराी जैम्हेरलंघा यालक इन्होंकी औलाद के १००० घर २४
बस्ती मशहूर हैं ॥

* नोट – यह चिराड़ (यादगार) दीवार ... से लेकर ऊपर तक साफ़ तौर पर नज़र आती है सेकड़ों बर्ष
हुए बावजूद फट जाने के दीवार को कुछ नुकसान नहीं हुआ हमने भी सन १८०९ ई० में इसको देखा था ॥ म:

१३९ महारावलजी श्री रामचंदजी सं० १७,०४

१	सोढी	चांदकुं०	ठाः भोजराज		१	सुंदरदासजी	इनच्याकं	१	रामकुं०
२	पातावत	लछकुं०	ठाः देवीदासजी		२	दलसाहजी	की औलाद		बीकानेर-
३	सोढी	अरजनकुं०	राणा आसनसिंघ	अमरकोट	३	चत्रभुजजी	कादेरावरथा		राजाको
४	राठोड	पुरहारे	पा० देवीदास		४	रायसिंहजी	×गोगडीयाले		परनाया
५						×हे और महारावलजी मालदेजी के कु० यतसी जी के दयालदास जी का कु० सबलसिंहजी राज बेठा			
६									

सबल सिंहजी दिल्ली जाकर बादशाह शाहजहां से राजका फुरमान लिखाय फ़ौज ले आये परगने बाप त० सर पर लडाई कर पीछे गये जब रघुनाथ बहुरंगदास वगैरे सरदारों ने सबतरह लायक व वाजिब जानकर राज देने का वचन लिखा कासिद की भूलसे कागज़ नरावत सबल सिंह के हाथ जोधपुर महाराज श्री जसवंत सिंहजी को पूगा जब धोखा दिया कि फ़ोज साथ देवां जैसलमेर आपको आयां पहोकरण म्हांकी पाछी देदी जो फेर सबल सिंहजी यहां आय राज बैठे ॥ जोधपुर की फ़ौज पहोकरण आई यहां दुराजे होनेसे मदद नहीं पूगी भाटी प्रतापसिंह खांप जेतसी होत जो किलेदार था-११ मनुष्यां से काम आया दरवाज़े के आगे चौतडा मौजूद है पहोकरण में मय ८४ गामों के जोधपुर का दखल हुआ ॥ रामचंदजी को देरावर भेने इनके माधोसिंहजी २ के किशनसिंहजी २ रायसिंहजी से देरावर सिकारपुर के कुरेसीयाने दावद पोत्रे खांन फ़तेखांन लेली जब मौज़े गडीयाले इलाके बीकानेर में आ रहे रु २०) रोजका रायसिंहजी के रघुनाथसिंहजी के जालमसिंहजीतक तो नवाब खांन ब्हावलखां दिया फेर भोमसिंहजी २ के बभूतसिंहजी २ के नथुसिंहजी २ के बूलीदानजी

गडीआले रावलहीज है ॥

१४० महारावलजी श्रीसबलसिंहजी सं० १७०७

									५
१	वीकीजी	सवरंगदे	ठाः सुंदरदासजी	भूंकरके	१	रत्नसिंहजीकारावलोत गाम कासोध	१	रतनकु० उदेपुर	
२	मेंडलणी	सुजानकुः	ठाः भोपतजी	बूडसु	२	श्रीअमरसिंहजी पाट			
३	जैमलोत	लाडुकुं०	ठाः बनमालीदास-		३	राजसिंहजीगढ जोधपुर मेंकामआया	२	महाकुः सो०	
४	सोढी	सुजानकुः	ठाः जैसिंहजी		४	महासिंहजीकारावलोतमोही गाम इ० मेवाड	३	दीपकु० सो०	
५	सो:	मानकुं०	ठाः किसनदास		५	माधोसिंहजी	४	कुशालकुः	
६	कछवाई राजावत	बिलेकुः	कानजी		६	भावसिंहजी	५	चांदकुं०	
७	झालीमसता	अनोपकुं	ठाः मानसिंहजी	झालावाड-	७	वांकीदासजीकारावलोतगामपीपले			
८	कर्मसोत	सतुकुं०	ठाः भगवानदास	खीवसर					

काती बदि ८ रवत सिंहोतों के राज आया जबसे यादगारके लिये हरसाल इस मिती और आठमको भेरवजे वस्वांडा स्वांगीयांजी के थानयाने भूंजाई में पधरावे जब पंचशब्दीया साथ पाट पुरोहित तिलक करे वतायफों की-हाज़री होवे और भारी रवतसिंहोतों को बडी ताज़ीम और गामवसीना-याने जागीर व पटे देकर उमराव किया नाम जुदे लिखे हैं - पिंडा अमर-कोट पधारे रांणा ईसरसिंह भोजराजोत को उत्थाप जैसिंह को थापी-या ॥×॥

१५१ महारावलजी श्री अमरसिंहजी सं० १७१७

१	मेडतणी	दीपकुं०	ठाः भावसिंहजी	मेडता
२	झाली	अनोपकुं:	राज आशादसिंह	
३	जोधीजी	प्रतापकुं:	राजा रतनसिंह	रतलाम
४	चांपावत	दीपकुं०	ठाः महेसदास	हरसोलाव
५	महेची	चंपाकुं०	ठाः महासिंहजी	जसोल
६	सोढी	रायकुं०	ठाः जोगीदासजी	
७	कोरंडेची	अमेदकुं:	ठाः गोविन्ददासजी	कोरंडे
८	सोढी	रैनकुं०	राणा गंगदास	अमरकोट
९	मेडतणी	अमृतमामती	हरसिंह	
१०	जोधीजी	प्रतापकुं०	रतनसिंहजी	सेवांई
११	सोढी	दीपकुं०	गंगदास	
१२				
१३				

१ श्रीजसवंतसिंहजीपाटवी
२ दीपसिंहजी का रावलोत गाम उपाय
३ सिंतेसिंहजी का से: गा: सोसायदूमारवाड:
४ किर्तसिंहजी का से:
५ सामसिंहजी का से: गा. विठवि रूदूला के बीकानेर
६ जैतसिंहजी का से:
७ केसरीसिंहजी का से: गा: मोलोसी रूदूला के मेवाड़
८ जूझारसिंहजी का से०
९ गजसिंहजी का से. गाम मजूदूसा के मारवाड़
१० फतेसिंहजी
११ महोकमसिंहजी का से: गाम ओले
१२ जिसिंहजी का से: गा: से:
१३ हरीसिंहजी
१४ रूद्रसिंह के: गा: माय सूरदूला के मेवाड़
१५ म्होकमजी
१६ भीमसिंहजी
१७ जोधसिंहजी
१८ सुजानसिंहजी

१ विठेकुं: उदेपुरकुंमजैसिंजी को परनाया सं० -
२ उदेकुं० जोधपुर अजीतसिंहजी० जावे परनाया सं० १७५१
३ लालकुं: उदेपुरमें गा० अमरसिंहजी को परनाया -
४ सिमकुं: वरोडे राज सूरसिंहजी को परनाया सं० १७५२

सिंधमें चांनीया वलोच्यों से जुद्ध हुआ उन्हों को नेस्तनाबूद कारके फतेमंद रहे दुतरफा हज़ारो आदमी मरे भाटीयों की कई औरतें स ती हुई रोहडी के पास सतीयों की पहाडी मशहूर है चैत्रसुद १५ को भारी मेला व पूजा होवे है मुल्क की सरसबज़ी व रिआया की आसूदगी का हद्दसे कमाल खयालथा चुनान्चे रोहडी व सख्खर के वीच दरीयाव में वख्खर का भारी किला वनाया सिंध में दरीयाव से नाला अमरकस निकलाया - वराणीपुर कसवा आबाद कियासो मौजूद है ॥ तथा अमरसाही वजन् कलदार रुपये ६५ भर का सेर जो भीमसाही स्का १८ और अखेसाही रुपये ७२ भर का वाज़ार जैसलमेर व रोहडी

मे हनोज़ जारीहै सरहद सिंधमें दोहा सखर भखर रोहडी साकोरी मीयां । ओली रावल अमरसी पैली भरमीयां ॥१॥ भाई राजसिंह जी दिल्ली गया बादशाह आलमगीर याने औरंगज़ेब से फ़रमान लेने पहो करणं व फलोधी का हासिल करके बादशाह की फ़ौज साथ ले दिल्ली से चले रस्ते मे नवाब से कहा था कि बडी जंग होगी परन्तु जोधपुर आया-तो राठोड़ दुर्गदास किला छोड़ महाराज अजीत सिंघजी को लेके पहाडो में जा रहे और राजसिंघजी किले में जाकर फौजसे लड़ मरे पीछे नवाब किले में दखल किया कई बर्ष तक जोधपुर व मुल्क मारवाड़ बादशाह के खालसे रहा इस से पहोकरण व फलोधी में जेसलमेर का कबज़ा नहीं हो सका कहवत सच है कि भारी भोला है सो ऐसे बने हुए मतलब को खो बैठते हैं और सिरफ़ इरादे पे बात रखणी व बहादुरी करणे-को ही भारी मतलब समझ रहे हैं ॥ गांमा नंदी साधु इणात रामजी सिद्ध को गुरू मान करहिका नाराम कूंड व मंदिर श्री रघुनाथजी का बनाय सरणा किया सो हनोज़ है ठिकाने में महंत पालखी नशीन नंगर हैं तथा गऊवों का दूध दही व पराया जावे बिलोवणा न होवे वगैरे म्रजादा बांधदी तथा लंगासर त० वरामदडो व भगतालो ती नोखडीन लुद्रवे के कुंवे खनु के नज़दीक है पटे किया और इलाके जात के साधों पर हुकम व जुरमाना महंतजी का है तथा पुरोहित जेठमल व ब्यास पहोकरदास व भाटीया बस्तपाल व चारण देदा वगैरे इस मंडली में थे बस्तपाल ने एक कूंवा व एक छत्री बनाया और देदे ने तलाव देदानसर नींव देकर म्हेता गोविंददास साधों को सुपरद किया सो भारी बन गया व बनता जाता है ※ और खवार ने सिद्ध जी से बीनती कुंवर होने की की तो सिद्ध ने कहा कि ४१ दिन मेरे पास मत आना पछ ठहरे वही

※ इसी देदानसर तालाब पर जो जेसलमेर से मग़रबी गोशे में है महेता जी श्री नथमल जी साहब दीवान रियासत-व मुसन्निफ़ किताब हाज़ा ने पुख्ता घाट और उम्दा २ इमारतें बनवाई है जिन में सैयाह और साधु वगैरे आराम पाते हैं तालाब को भी महेता साहब मौसूफ़ ने ओंडा कराया है चुनांचे बारह महीने निहायत शफ़्फ़ाफ़ पानी इस में रहता है। राम: मुराद अली

दिन पधारे सिद्ध जी कोटडी में मंत्र साधता था व तप में भी धूजता था सो तप तो ओटने की गूदडी को दिया कि राजासे बातें करके पीछा लेलूंगा गूदडी धूजने लगी सो हनोज़ पूजी जैहै और दरबारसे कहा कि मो आद तक नहीं आते तो एक पुत्र प्रथ्वीजीत होता अब होंगे तो १९ परन्तु एक देसी राजा रहेगा चुनान्चे ऐसाही हुआ ॥ रमता गुसांई हरबंस गिरजी आए नाथों सेज़्यादे सिद्धाई दिखाकर इकरार कराया कि अब किसी साधु अतीत वगैरे को यहां रहने से मना न करो इनके चेला लाल गिरजी महंत हुआ ११ पीढी हुई नंगरहते हैं शहरसे बाहर काज़ी का तकीया था जहां भूतेस्वर महादेव स्थापकर मठ बनाया सो सहरज्यादे आबाद होने से अब म्हांतों के पासहै है ॥ ता॰ अमरसागर का बंध व ऊपर अमरेस्वर महादेव का मंदिर व महेलात व अमरबाव नामी बावडी बरानीजी के नाम से अनोप बाव वगैरे ठकोंना सं॰ १७५६ में बनाय बडा दानपुन्य किया ॥ बीकानेर पर फौज लेगए

वरसलपुर विक्रमपुर राव साथथे दो लडाई जीते मौज़े जनुतक हद मुक़र्र करीथी और पूगलराव हाज़िर न होने से सज़ा देकर आयंदे ताबेदारीमें हाज़िर रहने का पक्का बन्दोबस्त कराया फेर कोटडीयाद बादहड मेरा हुकम अदूलीसे पेश आए जब वहां पधारे गोशमाली करके कदीम मूजब ताबेदारी करनेकी नविश्त लिखवाली- ॥ पदम्यात के चालेसे ऊबनाथ सीहड को चूक हुआ घरलूटा सांढीं दगाई जब पाली का गाम ८४ द्वानी बीरान कर तलाक़ खाय रूवारीदेस से निकले थे जबसे आलके वंशमें रबारा खांचाला चूडा नहीं पहरे है सं॰ १९ १४ में ठाकरों राजश्री केसरी सिंहजी न्हाने बाचनी सीहड को भेजकर तलाक़ भंजाय रहवारीयों को पीछा- बुलाय गाम रावत्ते मोढे बसाय बगसीया फेर तो बहुत सा राईका देस में-

आरहा तथा षापसीहड दीवालीका तिवार नहीं मानते हैं कोमचारणों की परवरश व खातर यहांतक थी कि १ बार कहतसाली में चारणों करक कर काराह से सरकारी बगैलेगए तो पिंडां पधार फीसादरुप्यावीसखुरीकांदे पीछी लीं तथा १ चारण के वैर में गाम वेसाले के बाहड मेर साहवें को मरवाया - अलाहाजूलुकथास आखिर वसीयत में महाराजकुमार कोचारणों वरिआया की भलांवरा दी -॥

	१४२ महारावलजी श्री जसवंतसिंहजी सं० १७५९								
१	मेहची	रूपकुं०	रावलभारमलजी	जसोल	१	जगतसिंहजी कुं० पदरहलत फरमाई १ भाबुधसिंहजीपार- २ अषैसिंहजीपाट ३ जोरावरसिंहजी-कागामसतोयएवलोत -	१	बदनकुं० उदेपुरराणासगरामसिंहजीको परनाया	अषैसिंहजी
२	सोढी	सूर्जकुं०	राणाजेसिंहजी	अमर्कोट	२	सुरतसिंहजी का गाम भरडीयेरः	२	सुरतकुं०	
३	कोरडेची	जतनकुं० मासती	राणाहरीसिंहजी	कोरडे	३	ईसरसिंहजीकागाम लाठी -			
४	सोढी	राजकुं०	ठा: गंगदास		४	तेजसिंहजी वकुं० सवाईसिंहजी - बुधसिंजीके पाटवैठाथा गामलुहारषी			
५	षावडीयाणी	रंभाकुं०	ठा: सादुलसिंह	गेराव	५	सरदारसिंहजीकागामषारीयेवमार-	३	इंद्रकुं०	
६	चौहांन	लाडकुं०	राणागजसिंह	बाव		वाडमेरावलोतभगवानसिंहोत			

भाटी व सोढा मुल्क लूटने वहुकमअदूली करने व अनीत चलने में धुंधमचाई जब अवल तो भाटीयों से सोढा नारणोतों को मरवाया बाद भाटी बलूहाखोत-व अचले महासिंह सूरजोत व पीथे पचांनोत व दुर्जनका नरसोतव कमलकेसोत व मूलचंद राजसिंहोत वग़ैरे कोतो त० सरपर केलरणों दरसीगों से और तेजमाल रामसिंहोत को गाम हाबूर में वफात दिराई और उदेसिंह रामसिंहोत सरसे भागनिकला भीलमाल वग़ैरे के भीलांको साथ लेकर मुल्क लूटता रहा फेररामकुंडा के महंत इरातरामजीरी मारफत करमेलगा ॥ खेड के राठोडों को शिकस्त दे फौज खर्च लिया - बडाकुवर जगतसिंहजी के ३ कुं० हुए पीछे सातवीं शादी उदेपुर महाराणा जेसिंहजी की पुत्री सूर्जकुं० से हुई

वहां रखावास में कुंवरजी के तसवीर की तारीफ़ हुई कि मानो कामदेव को अवतार है जब महाराना जी बोले कि श्रीर तो सब बातें ठीक हैं ठिकाना कादीमी है पर रिज़क़ याने ख़जाना नहीं है जिस पर कुंवरजी ने गाम कुलधरों के पलीवाल पर १ कोट रोला- स रुप्ये की हुंडवी लिखी राणेजी साहिबों डाक वैठा के ओठी भेजा तो पलीवाल कही- मेरी मेवाड में दुकाना हैं वहां ही रुप्ये लेलेते इतने के लिये यहां क्यों भेजा मगर ख़ैर जिस सिके का हुकम हो लेजा वो कोटडी खोलकर रुप्ये दिखाये ओठीयों पीछे जाकर अर्ज़ करी तो महाराने जी फ़रमाया कि ऐसी रईयत है सच्चा ख़जाना उनका है पीछा पधारकर कुंवरपदों में महल बनाये थोडे ही दिनों में स्वर्ग पधारे ३ कुंवरानी दो खवा स सत्ती हुई ॥ महता अर्जन सिंघ को जोधपुर की मदद भेजा था पर रिया के बीच में- डेरा कर अवल महाराना जी वालो उदैपुर से मिला फेर महाराजा जी से मिलकर हिक मत अमली से दोनों रईसों की सुल्हे कराय आया पीछे से भेद खुला तो दोनो राजा वों ने अहसान मानने का ख़रीता भेजा जब अर्जनसिंह को दीवान किया ॥

फीदरवार का देहांत हुआ जब तेजसिंह जी ने ईसरसिंह जी से कहा कि बुधसिंह दाब रहे नाजरो डावडियों का हुकम उठाई जे नहीं आप राज बैठे इन्होंने इनकार किया तो आप मुंह धोया लेकिन सवारी साथ वाली गया पीछे से बुधसिंह जी राज बैठे जब तेजसिंह जी बागी हो बावडी से वाला २ सिंध में जा रहे और देस लूटते थे ॥

	१५३ महारावलजी श्रीबुधसिंहजी सं० १७६५							
१ सोढी	रुपभाव	नहारखां			कुंवर नहीं हुआ			फतेसिंहजी

बाद १२ साल के तेजसिंह जी गाम कुलधरों से अरज़ी लिखी कि क़सूर माफ़ करावे व महेताजी आकर वचन दें तो क़दमे हाज़र होय जब अर्जन सिंह जी को भेजा सो ज़िं दा मारकर पीछे सिंध चले गये फेर दो वर्ष बाद भीतर से बुधसिंह जी को ज़हर हुआ और तेजसिंह जी आप राज बैठे सो नावाजिब जानके देहडी भखर से काका हरीसिंह जी आये•

श्री अखैसिंहजी को राज्य बैठाने की सलाह बिचार सं० १८ आषाढ़ बदि १३ घड़सीसर पर तेजसिंहजी को चूक किया जबसे तालाब की लास में श्री दरबार नहीं पधारे हैं हरी सिंहजी भागे पीछे से नायक लगा पहुंचा श्री तेजसिंहजी के चेत होने से कहा काकाजी मरे नहीं पर जांमडे जाकर फरारी दिखाई से पहिले ही गाम मूलाने में मारे गये और तेज सिंह भी फ़ौत हुए बाद कुं० सुवाई सिंहजी राज बैठे जब अखै सिंहजी भागे गाम छोड के पास घोडा थक गया सो छोड के वड के पेड पर चड बैठे और दरबारी कुसला वग़ैरे जा पहुंचा मगर पिंडा कीतपस्या व कुसले की ख़ैर ख्वाही से यह तो पीछे चले आये पिंडां पैदल गाम खूडे के डूंगर में जाकर पोकर्णों शिवदान को बुलाय लारवरा के खंधे सपार हो साकडे पधारे जबसे पोकर्णां कहते हैं कि ऊंठ हां साकडे से मोज़े ऊजलां होकर घाटे में जा रहे फेर १ बर्ष में सरदारों के लिखने से पीछे आ राज विराजे भेर घाव सुनते ही सुवाई सिंहजी हाथ बांधकर हाज़िर हुए तो १ महल में रह वास दिया थोडे ही अर्से में सरदारों की बेवकूफ़ी के कलाम पर देवीकोट से यहां पधार सुवाई सिंहजी को सुधाम भेज सवा सब पीछे गए सरदारों से कहा कि चाहो सो कर सको हो सरदार समझ कर डरे और अर्ज़ी करने लगे फेर तो मुल्क का बन्दोबस्त व रिआया की परवरी ख़ातर ख़्वाह करते रहे १ बकरे की चोरी पर ही पिंडां पोशिश करके मुद्दई की हक़रसी व चोर को सज़ा फ़रमाते थे जिस से मुल्क की सरसबजी व रिआया आसूदह हुई और चोरी धाडे का नाम ही नहीं रहा परन्तु पहिल खवेडे रहने से सिंध का मुल्क बहुत सा मियां कलोडे ने दबा लिया ॥ तथा रावलोत दौलत सिंह के वैर में चेला मार पर सुंदरदास वग़ैरे सोढों को मारकर कहा कि उन के भाई में हूं फेर राजसिंह की बेरी पर नीजे और शादियाने बजवाये ॥

---

१५४ महारावलजी श्री अखैसिंहजी संवत १८७९

१	सोढी	वनेकुं॰	ठाः राजसिंहजी	
२	से॰	भीमकुं॰	राणा हमीरजी	अमरकोट
३	कोरटेची	सरूपकुं॰	ठाः भैरूंदासजी	कोटडे
४	सोढी	चपतकुं॰	से॰	खुहडी
५	मेहची	नदनकुं॰	रावत रूगनसिंह	जसोल
६	जोधी	सरूपकुं॰	ठाः सूरजमल	पाटोधी
७	चौहान	सोनकुं॰	राणा पचाणजी	गाव
८	से॰	लालकुं॰	ठाः मानसिंह	होथीगां
९	जोधी	फूलकुं॰	महाराज दौलतसिंहजी	जोधपुर
१०	कामसोत	चपतकुं॰	ठाः जसकरनजी	तातुवास
११	सोढी	रंगकुं॰	ठाः -	लाखधीर माले
१२	सोढी	हरकुं॰	रूसवदासजी	
१३	वाडमेरी	वनेकुं॰	रावत लालसिंघ भारावत	वाडमेर
१४	सोरी	वरजुकुं॰	मनवरदास	-
१५				

१ श्रीमूलराजजी सं॰ १८०२ में जन्म
२ परमसिंहजी सं॰ १८०२ जन्म गाम रोद
३ खुसालसिंहजी
४ रतनसिंहजी
गामलाठी गुमानसिंहजी के गोद लिया

१ अमरकुं॰ नागोर महाराज वखतसिंहजी को परनाया सं॰ १८०१ जान में सतर हजार लोक था फिर सेग परमार मिरा होगये ॥

२ चांदकुं॰ बीकानेर महाराज राजसिंहजी को परनाया ॥

३ श्रीरवनेकुं॰ महाराज कुं॰ राजसिंहजी को सं॰ १८१८ में परनाया सं॰ १९ में आंणो आया

४ किनेकुं॰ जोधपुर महाराजकुं॰ फतेसिंहजी को सं॰ १८१२ में परनाया सं॰ १० में आंणो बुलाया ॥

पाट परोहवाई वालजी को दीजवसे वालजी के पोते पाट पुरोहित हैं बीकानेर से महाराज चांदकुं॰ व भाणेज राजवीसिंहजी सं॰ में यहां आरहे जोधपुर महाराजश्री वखतसिंहजी का जनाना व कुं॰ किजेसिंहजी तो यहां आरहे और श्री दरबार यहां पधारे सो पिंडां तो गढ का बन्दोबस्त रखा और मेहता फते सिंह को श्री वखत सिंहजी के साथ भेजा सो दक्षिणियों से लडाई में मुदवे पर काम आया छत्री मौजूद है मुंड कटाई में जोधपुर से गाम हासीयाडा रुप्ये पांच हजार का मिला था ॥ वाडमेर के ठाः साहिब को

बिकमपुरराव हरनाथसिंहजी के वचनों से बुलाकर मरवायाथा जबसेक हवतहै कि वचन
जिके रावजीका इसबाबत महाराजबखतसिंहजी राठोडों से रावजी कीनिसबत इशारा
किया कि यह वह है रावजी अर्ज करी कि धणीके हुकमसे बापको भी मारनेमें दोषनहीं म-
हाराज साहब सुनकर चुपहोगये पलीवालों साहूकारों वगैरे रईयतसे सालियाने के रुपयेले-
नेकी तादाद बांधदी मनमते कालेना छोडा सिक्का महम्मदशाहीथासो अखैशाही संवत
१८१२ में मशहूर हुआ इसका हाल टक साल के ज़िक्र में लिखा है मोज़े गिरराव में कोट व-
वे साले तथा सेतराउ में गडी बनाई और सं० १८१४ में धनराजोतों को खारज किया सो मंहे
वे गया अब आरंग में हैं और कोटडा खालसे कर के सं० १८१९ में स्वर्ग पधारता जेसागर
सिंह व बीरम को पीछा बखशा और आधी पैदाशल में लेराणी कर शिव में कचेडी कायम हु-
कम रखा फेर गरीबनाथका थान बनाया तथा नागुडदांके नाथ को नवरात्रीका लगमांन
आसबा बडीके नाथां मूजब करा दिया सो हनोज़ जारी है तथा डाहाली में सोटेजी व राजको
गढी बनादी ॥ और चौहोटणियां ने खोखरों का बिगाड किया जब पिंडां पधारकर सज़ा
दी फेर तावेदार जान कदमें लगाया और श्रीकांकलका थान बनाय दूधवी नाडी खुदाई-
केलामे घराज के बिखे में चाकरी पूगाया सो केले हेमराज की बदली में सेठ किशनजांने-
में घरे पधार कुरबदिया ॥ बिकमपुर राव हरनाथसिंह फ़ौतहुए बाद कुंभकर्णजबरन
रावहोबीकानेर से साज़िश रखने लगा सं० १८१६ में कुंभाको वफ़ात दे कोट खालसे कि
या सं० १८ में सरूपसिंह लाडखानोतको दिया ॥ खुदाआबाद सिंधका कल्होडा मियां
नूर महम्मद बेटा यार महम्मद का सं० ११६७ हिजरी तारीख १२ सफ़र मुताबिक विक्रम
सं० १८१० में बहुत से फ़ौज ले आया कि जैसलमेर व जोधपुर लंहीगा शहर से ७ कोस गाम-
नेहडीये आतेही सवारी का घोडा मरा फेर मिये के पेट में दर्द हुआ श्रीनेमडेरायके भोपों
से कहने लगा कि बीवडीयां झल्लो और चावो सोलो मेंपीछा जाऊंगा परन्तु मरही गया जना
ज़ा ले फ़ौज पीछी गई की खबर आई जब महाराजकुमार श्री मूलराजजी रस्ते से लौट आये

हवापोल आगे न पोलिवाला पर अरवै विलास महल व राड विलाव अरवैपोल वगैरे मकानात शहर में व मंडप वाडी में और गदी मोन्ड़े देवे व रवाभे में बनाया ॥ वाहडमेर सेजो सीभाचोरो को बुलावे गाम दे हीये व लुद्रवे में वसाये कि देसावरी मालकी कोताही का- दुःख रईयत को न हो ॥ राज विगजे जवगढ व मुल्क के सिवा खज़ाना व सामान कुछ भी न- था क्योंकि मुद्दत तक राज में गडवडरही जब ईसरी सिंहजी वगैरे ने खूब हाथ मारा था सिरफ़ हिम्मत व होशियारी से लाखो रुप्ये वालाई खर्च होने पर भी आगाला कर्ज़ा उतारा और सब तरह का दारू व सामान के सिवा खज़ाने में २५ लाख रुप्ये नक़द छोडकर वैकुंठ पधारे ॥

१९५ महारावलजी श्रीमूलराजजी सं॰ १८१९

१	चांपावत	रूपादकुं॰	ठाःसिरसिंह		३	१	श्रीरायसिंहजी सं॰५०मे ढाई महीना राज किया - महल १ वाहडमेरी २ किसनगढ़ महाराजकी पुत्री सं॰१८२९ कुंवर १ अभैसिंहजी २ जालमसिंहजी	१	रामकुं॰	[illegible]
२	कोटडेची	फूलकुं॰	ठाःवीरमदे	कोटडे						
३	चौहान		राणाजैसिंहजी	वाव						
४	चांपावत	फतेकुं॰	ठाःमानसिंहजी	पडोकाण	५	२	लालसिंहजी नाने रघोडे से गिर मरा	२	महाकुं॰ रतलामके राजा परमसिंहजी को	
५	जाडेची	लाडकुं॰	ठाःनथराज	पाटोधी			जैतसिंहजी के परिवार-			
६	मडेची	साहिबकुं॰	ठाःईसरसिंह	जसोल-	८	३	कानकशानीचे लिखा है	३	कल्याणकुं॰ रतलामकुंवर प्रतापसिंहजी को सं॰१९ ५०में परनाया	
७	जोधीजी	रूपकुं॰	राजाबहादुरसिंहजी	किसनगढ सं॰१८२९						
८	सोढी	मयाकुं॰	ठाःसुलतानसिंह							
९	चावडी	पुमानकुं॰	ठा॰रुघनाथसिंह							
१०	कोटडेची	सिरेकुं॰	ठाःदूल्हनसाल	कोटडे॰						

पासेवांनां आठ पावां मदु जीव जेठा अभु मूलां हरतु सहजु ख्यातों के देखने व बातों के सुन्ने से साफ़ २ जाहिर है कि हर पीडी में राज के धणियों तो भारी यों की पर वरभाव मुल्क की तरक़्क़ी में हदसे परे कोशिश की है और भारी मुल्क बरवाद करने या ने राज को स्वागत देने के लिये ज़मीन दूसरे राज की करते रहे हैं खासकर इस वक़्त में तो राजही

गमाने तक नौबत पहुंचाई थी कि सरदार तो मुल्क लूटने में यहां तक रहे कि छोटा भाई खुद पदमसिंहजी भी बगावत का डंका बजाते थे ऐसा मौका पाकर पड़ोसियों ने मुल्क दबाना शुरू किया चुनांचे देरावर का जागीरदार जो न्यारा राजसम्म भता था यह देस लूटने व आपका बंदो बस्त रखने को दावदपोत्रे नोकर रखे थे उन्होंने किले देरावर व मुमगा बाहनवर्वीझ गोठ व मरोट वगैरे लेकर सं० २० में नहवर तक आपहुंचे और केहरांणी दावदपोत्रे बुटे बहादुरखां ने दीनगढ़ नामी किला इलाके दाज़ा में बनाकर क़सबा आबाद किया था और अमीरान सिंध ने पश्चिम ४० कोस पर चानराव की जगह सं० २२ में किला सब्जगढ़ व परगने में धड़सी या बलीया छोड़ तथा म्होरावरी में तले धोरड पुर कोट धोरडु सं० ४७ में बनाकर बहुत सा मुल्क दबा लिया था और इधर जोधपुर वालों ने भाटीयों के चाले व कोटडीयों की बदमाशी से सं० १८२६ में परगने शिवकोटड़ा व सं० ३७ में खावडीया रावत धनराज की बेईमानी से कोट गिराव वगैरे में यहां के हाकम म्हांता भानीसिंह को निकालकर क़बज़ा किया यहां से फ़ोज गई तो महाराज श्री बिजैसिंहजी ने आधदेणा किया मगर कई वर्षों के बाद महाराजकुंवर व भाटियों के फ़ितूर रहने से उन्हों का दखल जम गया हर चार तरफ़ से मामला और तलब हुआ जिससे फ़ोज करनी व लफ़ुरसत पर मुनहसर रखी और अव्वल भाटीयों को रस्ते पर लाना विचारकर सं० ३८ में विक्रमपुर राव सेरसिंह को जो बीकानेर की हिमायत से हुकम अदूली करते थे पिंडा पधारकर स्वर्ग भेजा और नहारसिंह के बेटे जूझारसिंह को राव किया इसी तरह दूसरों के लिये भी मनशा थी पर बाज़ों ने और ही बढकर हरामखोरी की कि सं० ४० में मकर शंक्रांति के रोज़ भाटीयों के बहकाने से महाराजकुंवर रायसिंहजी महता सरूपसिंह को मार कर राज बैठा श्री दरबार को महल छवा निवास में कैद कीया बाद महीने ढाई के सरदार आपस में फूटे गाम बारू ठाकुर अभैसिंहजी के कुं० मेघजी साथ जंझून आली वगैरे कई सरदार व तसोरवै उनड वधांरणारो के वंभरे वगैरे ने श्री दरबार को राज बैठाया और कुंवरजी व कई सरदार बागी होकर मुल्क लूटने में धुंधमचादी सं० ४१ में पूगल पर बीकानेर ने क़बज़ा-

किया अगरचे राक्जी ने तलवार नहीं बांधी वलेकि फ़ौज आई जब कजकर काम आये पीछे गढ़-
ख्वाल मे रहा सो सं० ५१ में सरदार कदमे लगा वाद सं० ५३ में कुवरजी को जोधपुर से बुलाया पर
दुतरफ़ा मनरवां मिलने नहीं दिया कोट देवे में जा रहे तथा भंवर अभैसिंहजी व जालमसिंहजी
को बाहडमेर पिंडां पधारवद माओं को सज़ा देकर साथ लाय कोटरामगढ़ में रखे तीनों हीने
रहलत फ़रमाई तो श्री दरबार के दिल में कुंवर व भंवरों के दुःख व भाईयों के फैल से ऐसी नाउमेदं
ग़ालिब हुई कि मान्नकारखाने राज के अहर होगये खुलासा हाल टाड नामे में हैं सं० ४० में व्या-
स मनजी दास जो वेगाड़े वेया के श्री पुज्य के सिस जो वसका अचलदास को अहमदाबाद श्री
पुज्य पास ५६ विद्या सीरवरों को भेजा श्री पुज्य ने इष्ट के परताप व्यासजी को देखते ही-
नाम से बतलाया फेर कुंडली देखकर नृप व कुंवर व दीवान की थी ज्यों ही कही कि दीवान-
को तो मार डाला नृप को कैद कर के कुंवर राज वैठा है परन्तु राज तो नृप ही करेगा कुंवर की
उमर कम है पीछे व्यासजी को विद्या सिखाई सो वन रही है ॥ महाराज श्री विजेसिंह
जी के डर से भंवर भीमसिंहजी व चांपावत सुवाईसिंहजी ठाः पहोकरण जोधपुर से भाग
कर सं० १८४९ में यहां आये श्री दरबार ने वहुत खातरदारी से रखे और कहा कि आप तुर्त-
राजा होंगे चुनाचे कः महीने मे महाराज के फ़ौत होने की ख़बर आई जब भीमसिंहजी को श्री
रायसिंहजी की बाई सगाई गारकुं० परनाय साथ जावते के जोधपुर पहुंचा राज व नविश्तलि
खदी और धाभाई सेरसिंह को रख गये थे कि शिवकोटड़ा गिराव आपका पीछा लेलें-
जिसपर यहां से म्हेता भानीसिंह को भेजा सो गिराव की गडी पाडी फेर रावत जीवराज को
पीछा कायम कर एक बुरज व एक कूवा करा दिया और शिव में भी हुकम मुजब क़बज़ा होता
ही परं० जोधपुर से श्री मानसिंहजी तो गढ़ जालोर में जा रहे और राठोड़ सरदार सब बाग़ी-
हो यहां अरज़ियां धर्म इष्ट वहुत सी लिखके भेजीं कि आप की मदद से बचाव होगा और आ-
पका परगना व गांव पीछे देवाया हम महाराज का सलाम करेंगे जब श्री दरबार ने बीकानेर
महाराज श्री सुरतसिंहजी को भी सलाह में शामिल कर के खातरी का जवाब भेजा था-

ओर कहलाया कि श्रीमानसिंहजी राजा होंगे तथा श्रीमानसिंहजी को भी दस हजार रुप्ये खर्ची बारट मयाराम साथ भेजकर यही कहलाया था इस सबबसे उवगरखाली गया कि घोरवे में आके शिवसे फौज पीछी बुलाली पीछे संवत ५१ । ५२ में चोंडावत बहादुरसिंहजो धपुर का थाराग लाया और भीमसिंहजी साहब अहसान व अपना वचन भूलके यह बदला देना चाहा ॥ कि फौज भेजके जैसलमेर ही लेलेना मगर नियत का फल मिला कि सं० ६० में फोत हुए श्री मानसिंहजी सा० राज बिराजे ॥ जोधपुर की फौज अमरकोट खाय पीछी आती गाम वीझोराई लूटी जब यहां से फौज गई सो गाम सावरीझ लूटकर मंहे चांव गेरे से फौज खर्च लेवा हडमेरों को भी गोशमाली करी ॥ पुष्टिमारग श्री वल्लभकुल के सेवक हुए जब मेथा- इर में ब्राह्मण पुष्करणों वसाचोरे और महेश्री भायीये वगैरे श्री हरराय जी की अष्टी हुई और श्री गिरधारी जी आदि शेवाप धरायने ग वगैरे म्रजाद बांधी ज्यूं ही होवे है ॥ तथा जीव दया- ऐसी रखाई कि नवरात्रि में देवी की पूजा में भैंसे व बकरे बेतादाद होते थे सो सिर्फ ७ महिष व कई बकरे के सिवा मारने की तलाक बतां वा पत्र लिखकर रईयत को सोंपी ॥ श्रीनाथजी का दर्शन सं० १८५० में व श्री गंगाजी पर सन् सं० ६१ में पधारे: जोधपुर महाराज श्री मानसिंहजी से मिलना हुआ और आपस में बहुत ही मोद रहा भंवरजी श्रीमहासिंहजी के तीसरे कुंवर- श्री गजसिंहजी को बलंद अकबाल जानके सं० ६१ में युवराज कर कुंवर पदे बैठाये बाद राज पर तबीयत रजू हुई और सं० ७२ में पशीनगोई करी कि ७ ही कुंवरों की जन्म कुंडली देखकर फ़रमाया कि नम्बर १ । २ वैष्णव होंगे ४ । ५ का आयु कम है व ६ । ७ राजकाज करेंगे ज्यूं ही हुए व्यास लखमीधर को दिल्ली भेजा सो माई मुरत वाले आया सं० ६६ में फौज रवाना करी तो फज़र अली खां वल्द वहादर खां यहां आय रुपये ५० हज़ार किला दीनगढ व ४९ हजार से सामान दीया जब किसनगढ नाम रखा श्रीलक्ष्मीनाथजी का मंदर बनाय कोट में थाणा का- यम करके फौज नहवर गई ५ महीना लडी किला कूटने पर था इस अरसे में खबर लगी कि दिल्ली आगरे वगैरे मुल्क में सरकार अंगरेजी का पक्का अमल हो गया है यह सलाह ठानकर फौज

पार्की सुलाली कि अहद नामा करके जितना मुल्क गया है सरकार दौलतमदारकी-
मदद से सबपीछालेलैंगे ॥ भाटी दौलता सिंहजी तथा नवी मोतीरामजी को दिल्ली
भेजे सं० ७४ मुताबिक सन १८१८ दिसम्बर ता: १२ सरकार दौलतमदार अंग्रेज़-
कम्पिनी बहादुर से अहदनामा-जनाब नवाब मोअल्ला अलक़ाब मारकुइस आफ़ हेस
टिंग्स गवरनर-जनरल बहादुर के हुक्म से चार्लस व हाफ़लस मटकलफ़ साहब बहादुर
टिगाज़ ॥ रियाया परवरी का हदसेपरे ख़याल था व्रसनों आदि शहर के मातबरों में
लेन देन व्यवहार कजगो ज़मीन के झगडे व शादी गमी में ख़र्च वगैरे रीत रस्म रूपक के साथ
पड़पावके लिये मुज़ादवांधी सो हनोज़ जारी हैं और दाना व गरीब लोग दुवासें खैर से याद कर
रहे हैं हां बहुत मुद्दत पाने ज़मानेकी हवानदलने व कई रीतों औरतों के अख़तियार में रह
नेसे बिगडी हुई हैं सो अब उमेद कवी है कि श्रीजी साहबों की उम्मर दराज़ हो सब तरह से ख़
याल फ़रमाकर रईयत के सुधारे व ख़र्च के निभाव वग़ैरे रकी तजवीज़ें कराव हींगे वरना-
पूरी ख़राबी है तथा लावारस का माल राज में लेना अलीन किया कि उसके गोद लेना या पुन्य
लगाना सो अब मुफ़्त ख़ोरे खाते हैं उसके का़र्ज़े तक भी नहीं देते सो मुनासिब है कि राज ने तो
लेना अलीन ही रहे परन्तु मुफ़्त ख़ोरे न खावसकें जहांतक होसके घर चसे तो खूब ॥ वरनाक्षु
हूतसे सेलगें किसबका भला हो ॥ मकानात जदीद की वडी सोक थी नकासीकी भांत नवी-
वज़े हाथों से वना देते थे तफ़सील ज़ैल कमठा हुआ ॥ गढ में रां का दोय पांनी का व
म्हल सभानिवास मय पाई बाग़ जहां अमर म्हल व अत्तर बाग़ था ऊपर मोती महल व भूल
विलास व सर्वोत्म विलास वग़ैरे व कुंवर पदों में तवेला व महलात व कुंवर जैत सिंहजी का
डेरा और तलेटी में भंवर म्हासिंहजीका डेरा व शहर पनाह मय कई बुर्ज व श्रीदेवचंदेसर
महादेव का मंदर और घडसीसर में गढी सं० ३५ में ॥ तथा श्री गिरधारीजी व बांके बिहारी
जी आदि ११ स्वरूपों का मंदर वल्लभकुल के व म्हलात बहुत उम्दा व मंदर देवी अंबका व-
गोरखनाथ वगैरे का सं० ५४ में तथा ख़वास आठ ही की हवेलीयें ॥ तथा शहर से बाहर-

पश्चिम दरवाज़े से १० कदम पर श्री हनुमानजी का मंदर और पौन कोस त० गंगासागर मय महलात सरकारी व कई ठिकाने और लोगों के व श्री गणेशजी का मंदर सं० ५५ में और दो कोस पर तालाब व कुवां झालरा वगैरे व नीज़ मूलराजसागर मय महलात व बंगला मंदर वगैरे सं० ३६ में जहां पुरोहित जगांनी व माली बसाये तथा जीरांन पर बड़े महाराज का मंडप व मल्के वो दरवाज़े पास राधाकुंड उर्फ़ मूल तलाव व पौन कोस दिस ईसान सं० १९२९ में किसनघाट जहां बंधाबंधने से कई बेरे व मालियों का गाम हुआ ॥ तथा माजी श्री सोढी जी साहिबा की तरफ़ से सं० १९२९ में कूंवा रामसर मय चौकी कोठा बंगला व श्री सीताराम जी का मंदर जैपुर के उस्तो से बनाये और मीठा माजी श्री चुहानजी के नाम से कूंवा चुहानसर व महेता सालमसिंह जी की हवेली तथा इलाके ज़ात में कोट मूहनगढ़ व मंदर श्री लक्ष्मी नाथजी का कोट देवी कोट व गा: वीभोराय में कोट फ़तेगढ़ व कोट लखा व मंदर देवी जी गडी हिंगलाजगढ़ गाम महाजलार में कोट खुईयाला कोट रामगढ व मंदर श्री बलदाऊ जी का समके ताडे व सोभ व मंडाई व खाभे में गढ़ा और तीर्थों पर श्री गोकुलजी श्री मथुराजी श्री द्वारकाजी श्री पुष्कर जी श्री गिरराजजी की तलेटी श्री सोरंभजी श्री ब्रंदाबनजी में जगा वो सं० ६२ वैसाख वद २ ॥ म्हेता सांमसिंह ने अर्ज़ करी कि रुप्ये ८० लाख सालमसिंह जी व १० लाख धीरतसिंह व दो लाख मेरे पास हैं सो लेरावे वरना मेरा जीव सालमसिंह लेवेगा या खाने ज़ादों का घर बिगाडेगा श्री हज़ूर ने फ़रमाया कि यह धन तो तलेटी के कोठार में है सं० ७३ में सांमसिंह कोट किसनगढ में जा बैठा और हुकम नहीं मांनने लगा म्हेते जी अर्ज़ करी कि कोट ही गमावेगा जब राजश्री तेजसिंह जी सदा फ़ौज ले गये सांमसिंह को जीवदान का बचन देकर निकाला सो मोज़े रामदेहरे में जा रहा फेर म्हेते जी ने श्री महाराजकुमार श्री गजसिंह जी साहिबों की खातर से बुलाया सो कुंवर पदे में मारा गया श्री जी साहब सब शास्त्र ज्याता नीति निपुण बड़े ही दातार थे पंडितों व कबीयों ने मूलबिलास आदि कई ग्रंथ बनाये जिसमें से मुख्ते नमूना अज़ ख़बर वारे याने कीरत लिखों का संबार इसमें लिखा है ॥ यह महारावलसाहब इन्साफ़ परवरी में मशहूर थे

सुनाने दो मुक़द्दमों के इन्साफ़ का अहवाल जो आपने फ़ैसल किये थे नज़ीर के तौर पर हम निहायत इख़्तसार के साथ ज़ैल में लिखते हैं॥ १- सिंघ के दो लखपती सेठ थे १ ने १० हज़ार रुपे रोकड़ बही में दूसरे के लेखे मंडे हैं दूसरे की बही में जमा नहीं सो झगड़ते २ दोनों सेठ बीकानेर दिल्ली जैपुर पाली वग़ैरे होकर यहां आए और कहा कि हम सिर्फ़ सही इन्साफ़ देखने को ही झगड़ा उठाया है सो चिट्ठी लिखनाया आधे आधे करने वग़ैरे ऐसे न्याव मंज़ूर नहीं जब ओसवाल † की सलाह से दोनों की बही के पाने कांटे में तुलवाए तो मुद्दायलेह की बही का १ पाना जो उसी तारीख के मेल का था १॥ रत्ती भारी हुआ व हरूफ़ भी २ ही क़लम से नये लिखे मालूम होने से वा हागया कि बेखाब रक़म जमा थी सो उड़ाने के लिये नया पाना मिलाहै॥ मुद्दायलेह ने सच्चे इन्साफ़ की हद से परे तारीफ़ करी और दोनों सेठ शुक्र करते २ अपने घर गये॥ श्रीजी साहिबों ने † को क़ाज़ी का लक़ब व न्यात सम्बंधी तहरीर क़ाज़ी के हाथ से लिखे जाने का कुर्ब अता फ़रमाया सो ता हनोज़ जारी है॥ २- गाम काठोडी का १ पर्नीवाली से खेत में १ साहूकार ने रुप्ये चूकता लेकर खत पर कोयले से लकीरें खींची थीं - सो कपड़े से साफ़ करदी फेर पर्नीवाली का बेटा परदेस से आया जब खत देखा कर रुप्ये मांगे उसने कहा मेरी म्हाने दे दीए हैं अदालत में दोनों की वातें सुनकर ख़त का पाना पानी में भिगवाया तो लकीरें दीख पड़ीं साहूकार की बही खारिज की गई ॥

नक़्शा महारावलजी श्री मूलराजजी साहिबों के कुंवर जैतसिंहजी के परवार का

ठाकुर				महल					बाईराज			
नम्बर नाम पिता	कौम नांनेरा	सन पैदा	सन फ़ौत	नम्बर व कौम	नाम	लक़ब व नाम पिता	ठिकाना	सन शादी	नम्बर	नाम	सन शादी	किससे किस ठिकाने
जैतसिंहजी	चांपावत्		[illegible]	१ सोढी २ कछवी	हरिकुं: चांदकुं:	रूपसिंह भैरूंसिंहोत सामसिंह	हरसोला कांगोडे			०	०	०
महासिंहजी जैतसिंहोत	सोढा			१ नरूका २ सोढी	दलकुं: राजकुं:	मूलचन्द वीरमदेव	पारो डाहला		१ २	चांपाकुं: गुलाबकुं:	० १९०० फागुनबद २	० कोटे महाराव रामसिंहजी

नाम		जन्म	देहान्त	विवाह	कुंवराणी	पिता	ठिकाना	संवत्	संख्या	पुत्री	संवत्	विवाह किसके साथ
३ तेजसिंहजी महासिंहोत	नरावत्	१८५४ मिघर सुद ४	१९३५ सांवरा सुद ११	१ सोढी	जीवाकुं:	वीरदास	सुरताना उ		२	किस्न कुं:	१९१०	वीकानेरमहाराज श्रीसरदारसिंहजी
				२ राणावत	सणगार कुं:	महाराजशिवदानसिंहजी	काचोर	१८७६	२	हुकम कुं:	से०	से०
४ देवीसिंहजी से०	से:		१८९९ आसो ढ	१ वाहड़ उमेरी	से० ०	रा: पदमसिंह	वाहड मेर		१	जतन कुं०	१८९६	जेसुरचंद्रावतवलवंतसिंह अर्जनसिंहोत
									१	मदन कुं:	१८९६	वूंदीराजजेसिंहजी
श्रीराजसिंहजी साहबराजविराजे		१८५७ म्हा	१९०२ आसाढ सुदी ५									
५ फतेसिंहजी से०	नरावत			२ सोढी	पनुकुं:	सरूपसिंह	सुरतान उ		०	०		
६ जोधसिंघजी से०	से:		१९०१	१ से:	राजकुं:	सेरसिंह	डाहली		१	अजव कुं:	१९०१	झालरापाटराराज रांणामदनसिंहजी
७ केशरीसिंह जी से:	सोढा	१८६९ सावण सुद ६	१९२६ पोष वद ६	१ मेहची	अभैकुं:	मालसिंहजी	जसोल	१८८९	१	उदेकुं:	१९१८ भाद्रसुद ८	जोधपुरमहाराज श्रीतखतसिंहजी
				२ सोढी	विलैकुं:	मदनसिंह	चलेहाउ	१८९४				
८ छत्रसिंहजी से० सेरसिंहजी के गोद	से०	१८७१ पोष सुद २	१९३७ फागुण सुद ८	१ मेहची	पनैकुं:	मालमसिंह	जसोल	१८८९	१	फूलकुं:	१९१८	जोधपुरमहाराज कुवारप्रतापसिंहजी
				२ सोढी	वादल कुं:	गजसिंह	राणागदेर	१९०१	२	रायकुं:	१९३२ वै: सु:	से: भंवरफतेसिंहजी
९ भीमसिंहजी तेजसिंहोत	से:	१८७४	१९०७ मिघर सुद ९	१ सोढी	०	आनडसिंह	सुहडी		१	मानकुं:		बाघोरमहाराज समर्थसिंहजी
				२ से:	मोलुकुं:	से:	से:					
१० मानसिंहजी से:	राणावत	१९०० मिघर सुद ३		१ वीकी	गोपालकुं:	भगवानसिंह	महौ	१९१५ फा: कृ: ४	२	जड़ाव कुं:	१९४४	कुंडलेझालाराव सवाईसिंहजी
				२ राजावत	सिरेकुं:	किसोरसिंह	जगरूपदेसर	१९१६	३	हरकुं:		

				३ मेड़्ती	ताग्कुं॰	अलैराज	नथोल	१९२७				
				४ छोदी	गादलकुं	सिरेसिंह	तुरना	१९३८ म्हा				
११ उमेद सिंह जी देवीसिंहोत	लाहड मेर	[illegible]	[illegible]	१ भाटी	अम्रतकुं	उदैसिंह गुमहोत	राजसा	१९०१				
				२ सोदी	जनककुं	यांनजी	डाहाली	१९१०				
१२ अनाड़ सिंह जी मु॰ जोधसिंह जी के गोद	से॰	[illegible]		१ भाटी		हरिसिंहजी	राणाव		२	शपकुं		
				२ से॰	गुलाबकुं	से॰	से॰					
१३ सरदारसिंह जी उमेदसिंहोत	नीबा	[illegible]	[illegible]	१ चांपावत	न्हलकुं	यमान जी	दणाक	१९२४				
				२ सोदी	चांदकुं	बिस्नसिंह	पुहली	१९२७				
१४ सालमसिंह जी से॰	से॰	[illegible]		१ से॰	गारन्कुं	न्हेहसिंह	चूणार	१९३२	१	हपकुं		
									२	मालकां गंकु		
१५ खुमाणसिंह जी से॰ रूपसिंह जी के गोद	सेरा	[illegible]		१ का॰	एजकु॰	भभूतसिंह हमदानोत	पुहडा	१९३६ म्हा				
				२ चांपावत	गुमानकुं	मेघजी	पांलवे	१९४२ मृगसुर				
१६ सिवदानसिंह जी मनरूपसिंहोत	से॰	[illegible]		१ हाड़ा	राजकुं	पदमसिंह	करडावन					
				२ सोदा	रायकुं॰	सरवजी	काहली	१९२५ पोष				
१७ मानसिंह से॰ रूपसिंह जी के गोद	से॰	[illegible]		१ पत्रा गौत	०	धीरवसिंह						
१८ जसवंतसिंह जी सरदारसिंहोत	से॰	[illegible]										
१९ जुवारसिंह जी से॰	से॰	[illegible]										
२० सुलतानसिंह जी सालमसिंहोत	से॰	[illegible]										
२१ छानसिंह जी खुमानसिंहोत	से॰	[illegible]										
२२ दानसिंह जी से॰	बापावत	[illegible]										

होने से अपमान हुआ था सो खार भी अब निकालेंगे चुनांचे देस का बिगाड करती हुई फौ
ज १० हज़ार बीकानेर मए जमीयत ठाः पहोकरां जेसलमेर से ५ कोस गाम बासणपी आई
और कई आंचल कर गाम भोजक व बडागाम व देवी कोट व हढा वगैरे लूटा जब मुकाबले को
फौज भेजाई सो लडाई में श्री स्वांगीयांजी के अदीठ चक्रों से ५ सो आदमी व
सूरांरा नम्बर दो मारे गये छत्री मौजूद है तथा कई घायल हुए जब फौज तोपें छोड के भागी
इस तरफ का सिर्फ रामचंद सोढा व बोलसिंह राई मरा और खोसों के जमींदार साहबखां का वेटा
मिठुखां घायल हुआ जमादार खोला ऐसे हंगामे में कई मिठु फटेगा मुंह कि वैरे का कुछ खया
ल न कर के खूब लडा जिस पर नकारा व पालखी बगसा गया बाकी फौज पीछे गई कि पोहकरां
लूट ही ली नी पर० ठाः बाघजी खेतसिंहोत ने व बाई सरिस्ते दारी के बचारी गाम थार पर
लडाई कर फ़तेका डंका बजाती हुई पीछी आई ॥ **दोहा** जातां जुगां न जावसी आ
सी के दिन याद । भडकम धां नही भूलसी बासणपी को बार ॥ १ ॥ जब से बीकानेर में
कहवत हो गई है कि कोई किसी पर किसी तरह से ज़ोर ज़ुल्म करे तो उसको कहे कि साला वा-
सणी की लडाई में किठे हो ॥ सं० ९१ में सरकार दौलतमदार की तरफ़ से करनेल त्रवलीयम-
साहब बहादुर ने श्रीजी साहिबां व बीकानेर महाराज के मुलाकात वांकडे के गाम गिरराजसर
वगडियाले के वीच में कराई जब रुप्ये दाई लाख देस के बिगाड किये के ठहराये थे सो तो श्रीजी-
साहिब नहीं लिये और म्हाराज से पूगल का ठिकाना राव राम सिंहजी को पीछा देराया ॥
साहबान युरुपियन अव्वल जनाब कलां करनेल लाकट साहब बहादुर सं० ८८ में यहां रौनक़
अफ़रोज़ हुए जब से यहां का वकील कलां साहब की खिदमत में रहता है बाद आज तक जो थ
साहिब बहादुर जेसलमेर शाहर व इलाके में तशरीफ़ लाये सो अलग लिखे हैं ॥ साहिब कलां
को सलाह से सं० ८९ में डाकुवों को सज़ा देने के लिये ५ सो सवार साथ पुरोहित सरदारमलजी
को भेजे सो मौजे सराधरी में रहे बाद डीसे व भुजीये से फौजां व जमीयत राज मारवाड़ आने ही
हल्ला किया-रावल भूपसिंह वगैरे बाहड मेरों को पकड ले गए और किले भुजीये में कैद किये थे

† बदीतायानोट - अभैसिंह व चौकलसिंह को ज़हर देकर मार डाला - तेजसिंह देवीसिंह फतहसिंको जिलावतन किया और
इस्तमरज़ी खुद गजसिंहजी को नरक पर बिठाया म्हेता सालमसिंहजी ने सात खन्ड का एक अजीब और ऊंचा मकान अप

जैसलमेर का उमराव ज्ञानकार कछु भुज महाराओ श्री देशलजी ने ज़ामनी कर के-
छुडाये और भारी सरदार जो जो बाग़ी थे यहां दौड़ी हाज़र होने से बख्शाए गए मगर जब से-
कारवाँ व धाड़े का नाम ही नहीं रहा इस बाबत खरीता ख़ुशनूदी मए ख़िलअत व फ़ील-
ज़ंजीर एक श्री सरकार दौलतमदार की तरफ़ से आया ✓ और मुल्क मालानी का सरकार
के ख़ाल से होकर एजंट साहिब बहादुर के मात्हत बाड़मेर में हाकम रहता है और बाड़
मेर बेशाला च्होटन जो क़दीम से जेसलमेर के ताबे है सब तरह से बरताव विक्रमपुर व ब
सलपुर राव याने उमरावां मुजब चला आया फेर नमालूम क्यों कर अलम समझा गया है
सं० १८९४ में मौज़े बाप इ० हाज़ा व फलोधी इ० मारवाड की सरहद जनाब   लडलु साह
ब बहादुर निकाली और पत्थर सींव पर रखवाए फेर जोधपुर वालों दूसरा पत्थर औली
तरफ़ रख कर झगडा डाल दिया है सो हनोज़ सफाई नहीं हुई तथा गांसरा वडी इ० हा
ज़ा व हडवा इ० मारवाड की सीव मालीयट साहब बहादुर निकाली पत्थर मौजूद है ॥
काबुल का बादशाह सुजावल शाह सं०   में यहां आये किसन घाट डेरा किया श्री जी
साहब डेरे पधार बहुत ही सतकार किया था फेर सं० ९१ में आये जब हींगलाज में याने घड
सीसर पर मुक़ाम कर रवाना हुए सरकारी फ़ौजों काबुल पर गई जब यहां से ऊंट साथ रेने
वग़ैरे हर तरह से मदद दी गई और अमीरान सिंध ने बे मदद बीकारी फ़ौज पीछी आई जब लडाई
हुई हैदराबाद व मीरपुर के अमीरों को पकड़ ले गए मुल्क सरकार के ख़ाल से किया खैरपुर
का अमीर अली मुरादखां खैरख़्वाही करने से बचने रहे व इंगलस्तान जाकर क़रमवोसी हा
सल कर आए बाद कई वर्षों के सं० २७ में सरकार दौलतमदार ने सनद दी थी कि जो मुल्क
अब मीर साहब के क़ब्ज़े है नसलन बाद नस्लन रहेगा ॥ सं० ९९ में सरकार दौलतमदार के
हुकम से ठाः राजश्री छत्रसिंहजी फ़ौज ले गये क़िला घोटडु मए सीव आषाढ में क़ायम कि
या बाद मीर अली मुरादखां का ख़ास खेली सुमार यहां आकर कूंचियों वोट स्हागर घडसी
या व छीपा छोड मए परगने सं० १९०० के मिघर में दे गया जब से ख़ाल में है स्हागढ का

† बक़ीया नोट - जैसलमेर में बनाया था जिसके तीन हिस्से राज ने बाद इन्तकाल म्हेता साहब उतार कर जमीन पर रख दिये
जब सन १८८९ ई० में हम जैसलमेर को गये थे तो वह तीनो हिस्से म्हेता जी की हवेली के रोबरू पडे देखे थे बाक़ज़ूद तीन खन्ड उतर जाने के †

नाम वलेखगढ व घोरडु का नाम देवगढ रखा दोनों जगह हाकिम रहते हैं व कोट की किलेदारी व म्हसूल में कनोती का परवाना पुरोहित सिरदारमलजी को कियो बडे साहब के-वकील थे करा दिया तथा कोटखवारे में खांन साहब व मीर साहब का आदमी रहता था सो उठाय गया ॥ सं० १८९६ तथा सं० १९०० में श्री नाथजी के दरशन व श्री गंगाजी पर्सन्न को पधारे-सरकार दौलतमदार की तरफ़ से युरूपीन साहिब विलंजर साहिब सं० ९६ में और बरवट साहिब सं० १९०० में साथ थे श्री रावावतजी साहिबा श्रीजी दुवारे से उदेपुर वास्ते मुकांण अपने भाई महारांणा श्री जवानसिंहजी की गए थे ॥
मकानात जदीद किले में गज बिलास महल मय आरायश ईरों चीनी के व सर्वोत्तम बिलास मोती म्हेल में आरायश व मुसाहब आचारज ईसरलालजी की हवेली व तलेटी में पासवांन की घर थार व दीवांन म्हेता उत्तमसिंहजी का मकांन तथा मांणक चोक में बावडी और सं० ८४ अमरसागर में म्हेलात व गजरूप सागर बाग़ जिसको नीचला बाग कहते हैं व बावडी गज बाव बनाई थी सो तलाव का पानी जाने से बूराई गई और बाग़ के रस्ते में ईसरलालजी का तलाव तथा वाडी में मंडप वग़ैरे बनाए ॥ सं० १८९२ में सेठ गुणेसदास बहादुरमल ने राज की कुल पैदा काठ का फ़ी साल रु० ११६०००) में अलावा नज़राने व रु० ५००) से ऊपर जुरमांना राज का व हासल म्हसूल में विधा बंधांन कनोतीया व करावार पल्ला वग़ैरे २ लाग जो हकदारों का क़दीमी है ज्युंही रखकर ३ शाल का लीया था फेर घासचारे लकड़ी पर मोलों की लाग वग़ैरे कई बाबां बढती लगाने पर ही १ शाल में छोड दिया ॥

	१८७ महाराजाधिराज महारावलजी श्री रणजीतसिंहजी साहब सं० १९०२								
१	बीकीजी	गुलाब कुं०	ठाः अमरसिंहजी	महाजन इः बीकानेर	१	हरीसिंहजी सं० १७ भादवा जन्म बर्ष १।। रहलत फ़रमाई ॥			[illegible]
२	सोढीजी	सदा कुं:	ठाः साहिबदांनजी	खूहडी	२	लालसिंहजी सं० १८ में ६ माह के रहलत करी			
					१	छोटा भाई श्री बैरीसालजी राज बिराजे			

[१] नकीया नोट – अब भी यह मकान शहर के कुल मकानों से ऊंचा है म्हेता सालमसिंह के पोते म्हेता रनजीतसिंहजी से जो एक लायक आदमी हैं हम मिले और उन्होंने हमको इस मकान की सैर कराई तो सब दरवाज़े याने कंगूरे के आठ मे ताक नज़र आया इस ताक पर

बड़ा हुजूर की वसीयत बमूजीब रांगावतजी साहबा के गोद लेने से नाचने से आकर राज विराजे जब १॥ वर्ष के थे ठा: राजश्री केसरी सिंहजी साहब कुलमुखतार रहे म्हेता सालमचंद जी को दीवान किया ॥ श्री रांगावतजी साहिबा का धाभाई ववाभी जी को तो उदेपुर व ईसरलालजी को कैद में पहुचाया ॥ और म्हेता लछमनसिंहजी साथ फौज भेजकर भारी तेजमालोत वगैरे जो चोरी में सरगर्मथे पकड़ाय या वजोसां कैद किये बाद चोरी का नाम ही उठगयाथा ॥ फेर बमूजब राजनीत के पिछली छः घडी रात से पिंडो अपोटी होकर डेढ पहर रात गयां सुख फरमाने तक हरएक काम नित व निमंत के वक्त पर कराते थे यानेमात्र कांम का इन्तज़ाम ऐसा किया कि सिंह बकरी साथ रहनेलगा **दोहा** धज ध ड बल केहर सधर दुझल अरी घड दाट । वे हुसना हूर बाकरी पाया एकण घाट ॥ १॥ खासकर आबादी व आमदनी की तरक्की होने में हद से कमाल कोशिश की कि कोटे से किरसा बुलाकर अफीम व सिंध से सारी पांम गावकर चावल पैदा कराया ऐसे ही सैकडो किस्म के बीज व पौदे मंगाय बागों में लगाए और रसाजीत सुरा वहाला बूचली वगैरे बहुतसे कुए त्यार कराये कि कई तो पुरांना गांमों में आबादी बढ गई कई गाम नये आबाद हुए - सो नकशे मे लिखे हैं तथा काकनय कल्यांनघाट रांमघाट किस्न घाट बंगवाडी किजड सर वगैरे बंधा बंधवाने में लखुं रुप्ये लगाए मगर कुछ भी हासल न हुआ सबब यह कि ज्यादे बारिश होने से कुल बंधे टूट गए तथा रईयत को रूलाके गैर से बुलाने में हद से ज्यादे उपाय किये कि पलीवाला वगैरे को बहुतसी लागें माफ कराई और ब्राह्मन लछमनदास - व जेसंगदास साथ बवाला २ इज्जत के परवांने भेजे ऐसे ही महेसरीयों के लिये चोवा बिठल जी को भेजाया और दूसरे आदमी भेजकर सैकडों जाटों विस्नोयों वगैरे को बुलाकर घर रोपाव पेटीया देने के सिवा जिसतरह उन्हों ने चाहा खातरी के परवाने करादीये चुनाचे बहुतसे लोग आए भी मगर कहतसाली योने रहने नहीं दिये जोधपुर से अगिन होत्री सिरीमाली जग्गेस्वरजी को बुलाकर कई वर्ष इष्टी कराई कि कहत न पडे - परन्तु

† वकीलकी नोट - परदा पडा हुआथा हम ने उठाकर देखा तो खुद म्हेता सालमसिंहजी के हाथ से यह इबारत हिन्दी में लिखी हुई नजर आई कि "मे वहुत जोर हूं जिसको गऊ मारनेकी इल्लत लगाकर यहां के लोगों ने हलाक किया था अब मैंने अपने दुस्मनों के +

उपाय [illegible] गया सिरफ़ [illegible] ९ तो कुंवा बनाया सो गाम पक्का हुआ दूसरा चौ-
पाये का काम ठीक हुआ ॥ ऐसे ही हुकम का ख़याल था कि अव्वल तो वेजा हुकम नहीं देते
थे और जो हुकम दिया तो सब ने माना ही परं० जिस किसी ने नहीं माना और नाकारके शहर
वदेस से बाहर गया तो किसी काम नांगा नहीं हुआ उन्हों ने ही लाचार होकर हुकम मंजूर की
अरज़ी भेजी तो फ़रमाया कि भलाई आवो जब पीछे आगए चुनाचे भाटी उदै सिंहोत तेज
[illegible] व केलण [illegible] जसोड़ा कछो सी साचोरों का तो हाल खुलासा लिखा गया है और राजश्री
उमेद सिंह जी व उंनडों का जांम आम दरवां व सिपाही खंधारी व मुवा व चुहड़ा म्होर व रूपसी
व [illegible] पल पन्नु व सुहार का सिपल आदि ले शहर के पींजारे चमार व भंगी व देवी कोट वी-
[illegible] के दंड भी निकले थे हां शहर के साहूकारों ने हरताल डाली जब पिंडा पधारे खालरी-
फ़रमाय उन के कोर मूजब २२ कलमां का परवांना उसी जगह लिख दिया था सेठ वी सानी-
सदाराम जी को दिल में होल हो गया तो परवाना ही पीछा नज़र किया फेर श्री गिरधारी जी
का मंदर जो दया था बनाने के लिये [illegible] लाने को चौरा भी सहर पर कर दिया वहरतारों
ख़ैर ख़्वाई हाज़री देखाई कि किसी तरह फ़ितूर किये की माफ़ी हो अगरचे ठा: साहिब
भी नसक्षी देते थे परं० [illegible] नहीं लिया जब पर देश गया और [illegible] पुष्करों आमने से ता
ल्लाव पर जारेंद्र तो हजूरी गंगादास को भेजकर पीछे बुलाये थे ॥ सं० १९०४ पोस सुदि
[illegible] नवाब कलां साहब करनेल सदरलेन साहब बहादुर यहां तशरीफ़ लाए श्री दरबार को सर-
कार दौलतमदार की तरफ़ से खिलअत यहां हीं से जेकर दिया दिन २० मुकाम बहुत ही खुश
मज़ा खानगी ॥ सं० १९०८ में जोधपुर जैसलमेर के मुकदमा चोरी धाड़े के फ़ैसल हुए पुरो
हित सरदारमल जी गये थे दूनरणा नूंना मुकदमा रद कर के रुप्ये ८ हज़ार दिये ॥
नाहरसिंह गजसिंह के बेवदकोका [illegible] पक्का हुआ जबठा: रा जश्री रूद्र सिंह जी सहा फ़ौज
लेकर सांगीदास गांव कन्नु [illegible] बीकानेर में जार ह्राथा बाद करें
[illegible] गाम नन्नू का आधरा: जेदमल जी गिररा जसरखानों को बखशा सो भारी गाम है ॥

[illegible]

सं॰ १९०५ में कछभुज मिरजा महाराओ श्री देसलजी से दोस्ती हुई बाड़मेर केरा: बभूतसिंह
की मारफत नजीबका आया सं॰ ८ में टीका गया बादतो पूरी चरखट याने वकील सो गानरीका नुंवा
आनाजाना बनरहा है फेर मागमल जी विशेष प्रीती बढाई चुनानचे बाई रूपकंवर का विवाह बसलाह
श्रीजी साहिबां सं॰ ३३ में बीकानेर महाराज श्री डूंगरसिंहजी साहिबां से प्रो॰ गिरधारीलालजी
की मा: हुआ और श्री खेंगारजी भाग्यजी साहबां को अपना बुजुर्ग समझ रहे हैं ॥ बीमारी
सं॰ ६ के आषाढ में हैजा व सं॰ ९ के संनाले में तप की से सदहा आदमी फौत हुए ॥ सं॰ १० में
किलाणा वगैरे के केलणां ठिकाना पारी खोखां हूलोया विरदीया किस्यारान बारू व
कंदे सिंहोत तेजमालोत जो पट्टे रखते हैं जबरन ज़मीन छीनते हैं सींव निकाली जाने तब बारू की
तरफ़ से राज श्री छत्रसिंहजी साहब व बसीयां की तरफ़ दीवान सालमचंदजी गए तो कंदे सिं-
होत तेजमालोत हुक्म अदूली से पेश आए और बागी हो जोधपुर व आबूजी नालसी गए
जनाब पोल्टिकल साहब ने हुक्म दिया कि श्री दरबार का हुकम उठालो जब पीछा आय अरजी लिखी
कि सींव निकासवारी व मुकदमों का रुप्या भरना मंजूर है और आयन्दा चोरी व हुक्म अदूली
नहीं करेंगे जब कुदमे लगाये मगर उस साल सींव नहीं निकली बाद सं॰ १५ में श्रीजी साहिबां
देवीकोट लाठी नाचने को तशरीफ लाए देवीकोट में दीवान सालमचंदजी फौत हुए और नाचने से
श्री छत्रसिंहजी सा: बारू पधारे सींव निकाली सो केलणां ना मंजूर कर बागी हो निकले बीकानेर
में रह कर देश लूटा कांना विस्नोई को मारा ॥ सं॰ १७ में सींवां व कल्लणां ना मंजूर कर पीछे आए
तथा सं॰ १५ में दासनाणी व सींवां की तरफ़ म्हेता नथमलजी जाकर खोखरादी की सींवां निकाली
और कोठां समूल ७ गा॰ की ज़मीन बापनीकां दबाई थी सो खालसे कर गाम गेहूं लिखदिया
सं॰ १२ में मौने बाप के खडीन थी गांगाव कांधलोंके गेहुंवां पर जोधपुर की फौज आई तो भी
जमीयत वाके म्हेता विस्नसिंहजी ने गेहू ले ही लीया फेर सफ़न्दी से चपड़ासी आया लडाई न
होने दी और जोधपुरीओं की ज्यादती की रिपोर्ट करी ॥ जैपुर से वैद्यराज भट्टजी गोकुलनाथजी
को बुलाय ग्रंथ राज्योन रत्नमाला तयार कराय व्यास भीमजी व देवीदास को पढाया ॥

सं० १२ में मौजे ललुवाले के रावर पोते खांनसाहब के मांमे आकिलमहम्मद सरदारखां ह सदखां वगैरे नाराज़ होकर आये उनसे कहाकिरहनाहो तो रु० २५) अरबेशाही किजिनके रु० ४५) हुए रोज़ व १ गांवलेवें व २५ घोड़े अलग नौकर करालें और खांनसाहब से भी राजीपाकरादेंगे पर० १ सो रुप्येराज़ से कम मंजूर नकरके दो महीने ही न रहे बीकानेर होकर पीछे गये ॥ सं० १४ में ठा: अमरसिंहजी जागीरदार महाजन इ० बीकानेर कुंवरों का विवाह ठा: मानजी जगमालोत कीबेटीयां से करनेको गांमडांगरी आयेथे सोयहां आकर दोनो बेटीयां वडीतो श्री हजूर से छोटी श्रीबेरीसालजी से सादी करने की अर्ज कराई सो मंजूर हुई उनकी बाईयों के नानेरे गाम कोठा इ० हाज़ा मे फागन बद ७ को विवाह होना ठहरा जब शादी नज़दीक आया सबतरह से तयारी होगई तो जोधपुर महाराज श्री तखतसिंहजी साहबां डाकबैठाकर लिखा कि अवल जोधपुर पधारवाई को सरकुं० से सादी करावे जवाब लिखा कि अव्वलतो यहां होगी क्योंकि लेलन्चढगया फेर वहां आने में ढील नहीं होगी पर० मंजूर नहीं हुई इसी अरसेमें बीकानेर महाराज श्री सरदारसिंहजी का वकील जैतुंग भाटी खीवकरन आया कि म्हांरे ध्धराजीयें कीबेटी डोले मतपने बीकानेर के गढमें विवाह करेंगे ठा: अमरसिंहजी की अरज़ी आई कि महाराज के फरेबमे धोखे न रहे शादी करही लें जब वकील से कहा कि डोला नहीं है नांनांराा दादाराा में फरक क्या और इतने अरसे में बीकानेर पहुंची जे भी नहीं फेर आबूजी से जरनेल लार्नस साहब बहादुर का खरीता आया कि बीकानेर महाराज लिखते है कि जबरन डोले पर लीजते हैं सो ठीक नहीं सादी मुल्तवी रहे जवाब में लिखा कि डोला क्योंकर लिखते हैं नांनांराा दादाराा इकसां है और जबरन के जवाब मे ठा: मौसूफ की अरजी ब जिन्सही भेज के शादी कर ली फेर करनेल गडन साहब बहादुर जीने मिसल दफ्तर दाखिल कराकर बीकानेर वकील को हुकम दीया कि आयंदे ऐसी धोखे की तहरीर नहीं कीया करे बाद सं० १५ के आश्वन में ठा० अमरसिंहजी बीकानेर से भाग कर यहां आए फेर कुवर व कबीला भी बुलालीया जब गांम लांगोला रहने को दीया और श्री दुकान पर खर्च की सदर हुवाती दी कि चाहें जितना उठावें सं० १७ में पीछे गये और जैतुंग खीवकरन

भी महाराजके निकालने से यहा आया जब गांम चंतु बिरवादिया था ॥ सं० १७ का जेष्टमें राज्यकाकाम व्यास धनुजी को सौंप कर श्री ठा: साहब अपने डेरे तलोरी पधारे आषाढवद २ को काम म्हेता नथमलजी को सौंपा व श्रावण सुद ७ दीवानी कासरोपाव दियो दूसरे दिन नथमलजी के घरे पधारे रुप्याकी चौकी व जेवर पारचेकी किस्ती नजर हुई वाद आरोगकर पीछे पधारे सं० १७ का फागुण में बडा ठा: साहबतो देवे होकर रामगढ पधारे वहां नवा कोट बनाने की नींव दीवी पिछाडी श्री जी साहबां ने रवूडी का ठा: साहब दानजी सोढा की बेटी से सारी मंदरो में कराई ॥ सं० १८ भाद्रवासुद ८ ठा: राजश्री केसरी सिंहजी सहा की बाई राज उदे कुं० का विवाह जोधपुर महाराज श्री तखतसिंहजी साहबां से व श्री छत्र सिंहजी सहा की बाई फूल कुं० का विवाह महाराजकुंवार श्री प्रताप सिंहजी सहा से हुआ ॥

पडोसी रियास्तों से सरहदात निकलीं तफसीलजैल

सं० १९०६ में कपतान बीचर साहब बहादुर आकर सीव देख गये सं० ७ में चौहद्दे वधी वावली मौजे महाजलार से ७ कोस नेऋत से सरू करके सिंध दू० खेरपुर व रू० सरकार दौलतमदार व ई० वहावलपुर से तिहद्दे राज बीकानेर जो वासलपुर से ५ कोस है वाडके तक लंबी कोस निकाली साहब मौसूफ मुनसिफ थे किसी तरह किसी से तकरार न हुआ ॥

सं० १९०८ कपतान शिवल साहब ने पड़ोकरां रू० मारवाड से सीव निकाली सो सरासर जुल्म किया कि गाम ओढांनीया वासरत्नुवांका व उनडाका जूना खेडा मय सीव व और ही वहुत सी जमीन कई गाम की गमाई जिसपर पुरोहित सरदारमलजी का मरना हुआ और बरडगोंके भाटी सगतसिंह तीनो को भाटों की बही से नाम निकलाय न्यात से खार्ज किया ॥ सं० १८ या १९ में हिमलटीन साहब ने राज बीकानेर से सरहद्द तिहद्दे वाडके से तिहद्दे जदर तक सीव कोस निकाली वासलपुर का राव जो हमेशा से सामधर्मी रहे हैं कि राव मानसिंहजी फौत हुए जब साहबदान लडका था साहबदानजी की माजी यहां आकर बखौफ बीकानेर के श्री दरबार में अर्ज कराई जब वास्ते हिफाजत के म्हेता सामसिंह को वहां भेजाया था और इस वक्त राव राजीत सिंहजी-

कच्ची सलाह से बदल गया कि ठिकाना ही बीकानेर का है पर ऐसे कहने से क्या होना था ॥ साहब मौसूफ़ ने बरसलपुर जैसलमेर का रखकार सरहद्द निकाली सो मक़बूजा ज़मीन तो इस तरफ़ रखी और बंजर ज़मीन बहुतसी गई चुनाचे गाम वीठणोक की वाड- वल कि कूवे में भी आधका दावा था सो बहुत ओली तरफ़ निकली और गिरराजसर की सीव में नं० धनीरी पर बीकानेर की फ़ौज सं० १७ के माह में आकर धोखे से कई आदमी इस तरफ़ के मारे व घायल किये सो तलाई इस तरफ़ रही बीकानेर पर कसूर साबित हुआ जब जनाब कर्नल साहब बहादुर ने कई हज़ार रुप्ये खूं बहाके तजवीज़ किये थे सो नहीं लिये कि जब ही उबार आवेगा बदला लिया जावेगा - सं० १४ में गाम रराधा पर फ़ौज गई ठाः प्रथीराजजी बागी हो प्र० शिवगाम को टडे जा रहे गडी में राज का थाना बैठा सं० में ठाः कदमे हाज़र हुआ जब थांना उठाया ॥ सं० १४ सन् १८५७ में सरकारी फ़ौजों के काला लोगों ने कारतूस में अधर्म के गुमान से बलवा किया और ग़दर हुआ तो राजपूताने के मालिक रईसों ने सरकार की खैरख्वाही व मदद दिलोजान से करी यहां से भी जो जो साहब लोग यहां आए उन्हों के कहने व साहब कर्नल बहादुर व साहब एजंट बहादुर के लिखने बमूजब हर तरह से मदद दी गई सरकार का इक़बाल बलंद था ही थोड़े अरसे में बखेडा मिट जब रईसों की खातर वक़ दरवस्ती और मैहरबानीयां की सनदां व रिवाज मूजब गोद लेने का अखतयार व खिलअत भेजा ॥ सं० १५ में जसोडाटी आदि ले मान्न भोमीयां के गामों पर नज़राने व नैतरे के रुके किये जसोड देश छोड गए थे सं १७ में रुप्ये मरासूर भरने क़बूल कर पीछे आबसे ॥ मकानात जदीद - गढ में सर्वोतम बिलास नीचे नयामहल मय आराधशा व नपोलीये का चौक छवाय ऊपर महल और गजबिलास ऊपर बारे दरी व ज़नाना महला में नयामहल तथा यांके मे गौशाला ऊपर रसोवडा वगैरे ठिकाना और चौहटे में दशेरे के दरबार की जगह व घंटीयाल का थांन व अगाडी गुंजार ऊपर परसाल वज़नानी जगावां बनाव नसारू हवा पोल पास परसाल मय कोठार तथा पोल अगाडी परसाल - और नक़ारखाने की जगह वशी छत्रसिंह जी का डेरा वगैरे वगैरे और अखैपोल पास कारखाना व दुकान में भांवरा कोठार तथा ठाः राजश्री केसरीसिंह जी का डेरा बहुत भारी कि हनोज़ काम जारी है

बनाया तलाव घडसीसर पर गजरूपेस्वर महादेव का मंदर और गजरूपसागर तालाब जिसकी नहर पहाड के अंदर ही अंदर निकाली गई सो अजब कैफ़ियत हुई है डूंगरी पर श्री स्वांगीयोंजी व चंद्रमओलेस्वर का मंदर और तलाव के बंधमें रामनाल व पीछाडी बाग व कूवा और बाई राजश्री गुलाबकुं० के नाम से किस्त घाट में कूवा गुलाब सागर व बाग व तलाव गुलाब सागर व मंदर रामदेवजी का बनाया तथा किस्त घाट व राम घाट व कल्यान घाट का बंध व ऊपर बंगला व गाम बसाय कुवां व पिछाडी बाग लगाया था ॥ बाडी में मंडप श्री बडा हजूर का बहुत भारी व श्री गणगायतजी साहेबा का मंडप व बाग अमरसागर में बंगला व रस्ते में धाडीव धाई और कावनय घडीसर में ज़नाने घाट पै सठ हज़ार रुप्पे लगाए देवे में कोट पक्का पत्थरों का व नाचने में कोट चुंने के खंभों का बहुत व मंदर और कूवा नोमाबा व ऊपर कोठा बंगला जैस लमेर के पत्थरों का और समू में कोट ॥ तथा श्री ठाः साहबां के पासबान रासांजी ने तलाई व ऊपर परसाल व गजधर सरूप मूसे की तलाई व ऊपर ठिकाना बसहर से दख्खण २ कोस दरोगा गरीबदास की तलाई को रामसर भी कहते हैं व ऊपर बस्ती तथा वैशापी में फ़तेपुरी जी निर्शिं पुरी जी का ठिकाना दुकता व कुंड पानी का नव बंगला वगैरे बनाए नया संवत विक्रमी तो चैत्र सुद १ से देसाडंग का हर जगे जुदा जुदा है चुनाचे यहां ७॥ महीना पीछा मिगसर बद १ से लगता है और बस्तुं में हिसाब दीवाली व कन्ना है ८० बिदामपुर में मारवाड बीकानेर मूजब आषाढादि था सो सं० १९०४ से मिगसर कराया मगर वाजिब था साद है कि नवो वर्ष व फ़सले भी १ साल में हो जावें ॥ पट्टा वगैरे सनद का तांबा पत्र या परवाना लिखने का दस्तूर है कि सिध श्री महाराजाधिराज महारावल जी श्री जी लिखावतं या वचनात् पैरनाम वह क़ी क़त के बाद दु: श्री गुरव हुकम या मुग़त्यारकार आदि जन की होलिखकर संवत मिती पीछे दस्त ख़त महेता धनराज या भेजनां में जो हो नीचे सही सहाय दीवान की होती थी जब से सालम चंद जी गोयदांनी दीवान हुए वो सालम सिंह जी दीवान साहब के पोता अजीत सिंह जी कही किस हाके नीचे सही मेरी चहीजे सो अब पूंहोती है ॥ सही सहा मिठालाल या जोसगंवी सही है

सही म्हेता नथमलजी ॥
सही म्हेता अजीतसिंह ॥
सनद के ऊपर श्री जी साहबां की सही या म्हौर या दोनों और गोशे पर ३ का आंक जो इसराज-
की निशानी होती है ॥ तथा जेवर शस्त्र वगैरे का भंडार खुले जब श्री जी साहब तो पधारैया
नहीं परन्तु म्हेता व सहा व थईवाल व हजूरी जो इरोगा हो यह चार ही होते हैं सो चीज़ निकाली
या रखी वही में जमा खर्च करके बाहर निकले जब झाडा लिया जाता है भंडार में बधावके लिये
म्होरें थान नज़र हुए सो व सहर सायर रकसालसे कइ रुप्ये समूर्त वे लेते थे सं० २७ से कोरां से
भी स्मूर्त लिया गया फेर सं० ४१ से मात्र आमदनी में फीसदी रु: ३) लेणा किया परं० मन्या
थी कि कोई १ आमदनी जो ५ हज़ार से ऊपर हो इस तालके की जावेगी जैसे कि श्री जी साहबा-
का हाथ खर्च तालके नज़र के रुप्ये व कोरा नोचने की आमदनी वगैरे है ॥ बडी ही दूरअंदेशी है-
कि दीवान जी ने नीचे सही और भंडार में दखल नहीं रखा ॥ तथा जमा खर्च का दफ़तर भी सहा-
म्हेता पास है लखा में लाग वंधी जो पुस्तों से है मगर अब यह भी चलने की सूरत नहीं ॥

१४८ महाराजाधिराज महारावलजी श्री बैरीशालजी साहिबांकी उम्मर इराजर हो सं० १९२० जेष्ट सुद ११

१	वीकीजी	दुरगदकुं:	ठा: अमरसिंहजी	महाजन					नथमलजी
२	सोढीजी	तखतकुं:	ठा: बिसनसिंहजी	अंरागदेर					
३	सीसोदणी जी	मणगारकुं:	रावलजी उदैसिंहजी	डुंगरपुर					

ब वसीयत श्री बडा हजूर व मनजूरी श्री वीकीजी साहिबा व सलाह सलाहकारान राज बिराजे ॥
सं० २१ चैत में श्री ठा: साहब आंख के आराम होने से पांव प्यारे राम हे हरे आस जब श्री जी साहब ही
पधारे थे ॥ राज का काम व मन्या ठा: राजश्री केसरीसिंहजी साहब के ठा: राजश्री छत्रसिंह
जी व म्हेता अजीतसिंहजी करने लगे और म्हेता नथमल को बडे साहब बहादुर जी पास भेजा श्री ला
ट साहब की मंजूरी का खरीता भी आ गया पर श्री जी साहब राज से इनकार कर किले से डेरे पधारे-
तो जोधपुर से सजन्द करने ले निकस्त साहब बहादुर जी सं० २१ मिघर में आकर बहुत सा कहा-

पा न रहीं मांना बल्कि एक चिट्ठी हाफ़िज़ जी को दीयां कि पेशगाकारदे मगर साहिब मौसूफ़ तो ठंडे हो गए और इन्दी साहब बहादुर यहां आए उन्हों ने नक़ीली गैर जनाब कर्नल साहब कारनेल इन्द्रनसाहब बहादुर जी सं॰ २१ कातीवद अ़ाबू जी से तशरीफ़ लाए कोट फतेगढ में दाः साहब से मुलाक़ात हुई फेर यहां आते ही श्री जीसाहिबों को तख्त नशीन किये सरकार दौलतमदार की जानब से खिलअ़त इक्कीस किरतों ज़ेवर पार्चे व मज़ ज़ंजीर फ़ील व दोय रास घोडे सो नज़र साफ नजर करके खिरच देकर इसपीच सुनाया तथा श्री पडा रावकों साहब को पद दस्तूर मदारुउलमुहाम कर के याददास्त लिखदी और मेंता नथमल जी को काम न्यावत का सोंपणो वगेरे शिफ़ारशी ख़ते लिखे जिस में सनदरखुशनूदी साहब ममदूह व रिश्तेदारी हीराजी की व अमानतदारी वगेरे हाल लिखदीया और वकालत के काम पर मेंहता अ़नंत सिंह जी को लेगये ॥ श्री जी साहिबों के इक बाल की ख़ूबी व श्रीदाः साहिबों के बड़ाई की तारीफ़ कहां तक लिखी जावे कि मुफ़सदों याने बखेडे करनेवालों की कुछ भी पेश न चली पर सब को बदस्तूर बना रखा किसी का किसी तरह से इतकच व हरज नहीं कियाया सं॰ २२ में सापुरे राजा जी गज सिंह जी की बाई लछमन सिंह जी की वहिन के सगाई को राजवर से कामदार व पुरोहित वगेरे सोगात ले आए पर मंज़ूर नहीं हुआ तथा सं॰ २३ में नरसिंहगढ से पर्णाया रदुमस ओरत का पेशकीया और सगपणा की बात चीत करी सो भी न बनी तथा इलनी रियास्तों से टीका आया जैपुर उदेपुर जोधपुर कोटा बीकानेर कछभुज परीयाला कपूरथला न्हागलपुर खेरपुर नरसिंहगढ (और नगालूम करौली से क्यों नहीं है) सं॰ २३ बैसाख सुद १३ राज्याभिषेक हुआ जोगी का भेष वगेरे मामूली रस्मों के बाद राजगिर में आमदरबार करा य तखत बिराजे जब भेर घाव व तोपों का फेर होने पीछे नज़र नोछावर हुई श्री ठाकर साहबों घोडा नज़र किया ॥ बाकी उमरावों सरदारों से घोडा व भोमीयों से घोडे की कीमत का रुप्या वगेरे रियाज़ का मुफ़स्सिल हाल अलग लिखा है ॥ सं॰ २५ में बहुत भारी कहत पडा मारवाड वगेरे कां रियाया मुल्क सिंध व गुजरात व मालवे गई श्री लछमी वर की क्रपा से यहां तलाव घडसी सर भर गया और ईंधन भी बनी रही श्री ठाकर साहबों ने महुवाडों के सिंध पहुंचने व कतारों की-

आमदरफ़ के लिये रस्तों परजा बजा थाणेव नये कुवे वकोटां में सदावर्त वगैरे कराये और खास शहरमें १४ सदावर्त वगरीबों के लिये षीचड़े के कड़ावे चरतेथे तथा विधी पूर्वक दानपुन्य हर सेंपरे कराया त्युनाचे हजारों सांमीव कई साधुमन पिरूतपागए और नागां की जमात के म्हेंत सरेवभारथी को जो रिधीवालाथा कई बर्ष रहकार तलाव गजरूपसागर पर हो मरा त्या इस साल रम्तागुसाईं षेमानाथको घड़सीसर पर रख कर हज़ारहा रुप्ये उगाये ॥ सरकार दौलत मदार की तरफ़ से रसालदार अबास अली कतारां की निगरानी को आयाथा सब हाल देखा सो लिखा जिसपर साहिबकलां व साहिबरज़ीडन्ट बहादुरने सदर में तो रिपोर्ट करी और नेकनामी के खरीते यहां भेजे तथा हासिल बाबत जनाब कलां साहिबने मोतमदों की कमेटी से मान्नरियासतों में यह ठहराया कि इससाल व आयंदे ही १० सेरनिरख होने पर बिलकुल म्वाफ़ और हमेशा फीमन दाई आने लेवें और जैसलमेरमें अबभी लेवें और आयंदे भी निरख ७ सेर से कम होतो छूर करे तथा हमेशे भी फीमन साढ़े च्यार आने लेवें तदपि बनज़र रईयत परवरी व ग़ुरबा नवाज़ी बहुतों को तो छूट और बाकी से भी आधा लिया ॥ सं० २६ पोष बद ६ श्री ठाकर साहब मौसूफ़ स्वर्ग पधारे तो शिवा खासे की सवारी के मान्न कार्य बड़े हजूर श्री गजसिंहजी साहिबां मूजब बलकि पुन्य ज्यादे कराया इस साल तपकी बीमारी से शहर में हज़ारों आदमी मरे ॥ सं० २७ में श्री जी साहिबां मुल्क का दौरा करायासो कोट समसहागढ़ घोटडू खारा खुईयाला तणोट किसनगढ़ बूयली नाचणा मुंहनगढ़ देवा देखाके म्हासुद शहर दाखिलहुए ✻ इसीसाल चैत्र सुद १२ म्हेता नथमलजी की तरफ़ से न्यात में थाली मिश्री की लांवणा कराई और ज्येष्ठ बद ९ नथमल जी के घरे पधारे भाद्र सुद नथमलजी कामका इस्तैफ़ा दिया काती बद जोधपुर से जनाब इनपीसाहब बहादुर यहां तशरीफ़ लाए ॥

डूंगरपुर बिवाह का हाल सं० २७ में ठाकर गोपालजी सगाई का पैगाम लाया फेर गांधी शिवलालजी आके सेठ हिमतरामजी की मारफ़त रस्ता खर्च वगैरे की पकी करगए सं० २९ म्हा में म्हेता पुनमचंद प्रो - टीका लाया चैत्र बद नालेर झेलीया सं० २९ भाद्र व में पंडित भगवतीप्रशाद

✻ यहांलों यह पुस्तक छपनेपाई थी कि श्री महारावल बैरीशालजी साहब के परलोक बास होने के समाचार हमको मिले ९ मार्च को १०½ बजे दिनके श्री जी हजूर स्वर्गलोक पधारे - शोक ! महाशोक !! - म० मुराद अली दीरी

आया सं० ३०, पोषवद् १ जानचडो ४ दिनमें आबूजी पहुंचे पोषसुद १ गाम वेडीवाडे ५कोस रावलजीऊदेसिंहजी सांमे आये दूजे दिन शादी हुई बाद १ लाखरुप्ये त्याग के जिसमें ८० हजार तो वहांकेकामदार नेहालचन्दजीकोसोंपे और २० हजार मुतफ़र्कि वहां वरास्ते में नकदवपाच्चे वगैरे दिये दोहा चवंदे हाथीचारणा नूरापुर दीधा । परनीजे नेसानपालेकविअभरीकीधा ॥१॥ १० मुकाम रहे बाद सीरवधोवी वेडीवाडेलवा रावलजीसाः पहुंचागये ॥ गामवेडली में ईडर महाराज केसरीसिंहजी आये कुंरसिंघोंकी मुलाकात हुई और अपनी बहिनकीशादी करनी चाही थी परं० महाराजके मारई जीज्जो भुजमहाराओजी श्री देसलजीके बाईराज हैं उनके मनाकरनेसे मंजूर नहुई फेर आबूजी पधारे सिकत्तर वेजीसाहबबहादुरसे मुलाकातहुई और बंगला १ आलीशान मय बाग़ व कुवा खरीद कराया तथा बम्बई देखनेकी मन्शाथी परं० सकुनारास्ता नहीं दीया ॥ श्रीरांणीजीसाहिबा अपने नानेरे सीरोही रावजीउमेदसिंहजीसे मिलआए ॥ महासुद १२ बागमूलराजसागर दाखिलहुए फेर अमरसागर ७ महीने बिराजे इसीसाल रयानसाहब वेलात से खरीता व सोगात आनेजानेका शरवता हुआ ॥ ठाः राजश्री छत्रसिंहजी म्हादीसलाह व मेहता अजीतसिंहजीकी कोशिशसे तलाव घडसीसरके खाडकी पाळोंमें तंदुल से देरे व ऊपर मकानात व बागात होनेसे जेवायश के सिवा आराम हुआ कि पानीकी तकलीफ़ नरही और तालावपर मार्गीकी वस्ती होने व कुत्ते वगैरे रहने से पानी खराव होता है ॥ सं० ३१ में जोधपुर महाराजश्री तखतसिंहजीसाहिबके भंवरश्री जोरावरसिंहजीके कु० श्री फतेसिंहजी यहां आकर ५ महीने बाग़ रामसागर रहे जलावे दूसरे खर्चके रु० १ हजार हरमहीने नकद शयखर्च को दिये गये और वैशाख सुद १२ ठाः राजश्री छत्रसिंहजी मह्ता की बाई राजश्री रायकुं० से शादी करी टीका रायजा वगैरे दस्तूर मूजब दीया जेष्टवद ८ मेहता नथमलजीके घेरे पांवणा कीया फेर रावलोत मानजीकी सलाह से सीरवलेजोधपुर पधारे ॥ सं० ३२ में श्रीजी साहिबां की तबीयत अलील हुई जब जनाबहजीऊन्ट वालटर साहिबबहादुर मय डाक्टर साहिब तशरीफ़लाए ॥ सं० ३३ में माघवद सन १८७७ ई० ताः १ जनवरी को मलका मअज्ज़मा कुयईन विक्टोरियाकैसरहिन्द

वाख़िताब लेने को दरबार दिल्ली में मान्न रईस इकट्ठे हुए श्रीजी साहिब नहीं पधारे तो रज़ीडेन्ट साहब की सकज़ फौजका अफ़सर कान्लेसाहिब और नपुर से यहां आके आमदरबार कराय सरकारदौलत मदार की जानिब से इसीन्च में इसख़ान्दान की बडाई व बहादुरी की तारीफ़ करी जवाबमें सरकार की म्हेरबानियों का शुक्र अदाकरके काम पडे हाज़री करनेका कहा तथा आतशबाज़ी रोशनी वग़ैरे ख़ुशी के सिवा यादगारके लिये क़ैसरहिन्द का मेला हरसाल तलाब गंगासागर पर होता है और प्राय साहिब बहादुर वटार्न साहिब बहादुर जो पैमायश के कांम पर आए थे दरबारमें थे इसी साल भाद्रावद में नमक के कांम वास्ते म्हेता नथमलजी जोधपुर गये थे क़ैसरहिन्द की म्हेरबानी व यादगारमें वावटा याने निशान जनाब रज़ीडन्ट साहिब मौसूफ़ पास आया हुआ था इनायत फ़रमाया सो लाया जब बडी ताज़ीम से वधायके लिया ॥ सं० ३४ में भारी क़हत पडा ॥ सं० ३५ के फागुणमें अजंट करनेल वार साहिब बहादुर फलोधी से तशरीफ़ लाए उस वक़्त सरकार की चढाई काबुल पर थी बारबरदारी के लिये यहां ऊंठ ख़रीद किये इसी साल कातीबद कलां साहिब करनेल ब्राड फ़ोर्ड साहिब बहादुरजी तशरीफ़ लाए सो श्रीजी साहिबसे बहुत ही ख़ुश व रज़ामंद रहे ॥

श्री बीकानेर महाराजश्री रतनसिंहजी सट्टाने बडा हुज़ूर श्री रामजीन सिंहजी साहबां री के कीरस्मे बंदकरी थी सो श्री सरदार सिंहजी महा सिरदकादिलसे जारी करनी चाहिये चुनान्चे सौग़ात ख़रीता के चाह सं० २९ में टीका आयागया वकील पीछे भी नहीं पहुंचे थे कि महाराजश्री डूंगरसिंहजी म्हाराजाबिराजे जब यहां से फेरटीका भेज के सोग़ही मंगाया पर बडा महाराजके दिलमें प्रीती थी सो न रही ॥ सं० ४३ के भाद्राबद ३० को स्वर्ग पधारे जब छोटा भाई गंगासहाजी राजबिराजे ॥

सं० ३९ के जेष्ट सुद १३ इतने ठिकानों की प्रतिष्टा हुई बडे बाग़ में मंडप श्री बडा हुज़ूर साहिबां व ठाः राजश्री केशरीसिंहजी मए दो ज़नाना व राजश्री छत्रसिंहजी व दो ठकराणियों व बाई चांद कुं० - और तलाव गजरूपसागर तथा कोट देवा नाचणा लाटी हरजगह ब्राह्मण भोजन मए दक्षणा फी आदमी १ रुप्या व पार प्रोहितों को पहेरावणियों और कामदार राज धरों दरोगों महेंनतियों वग़ैरे को सरोपाव दीए ॥ सं० ४० के पोह में रोहोडी का पीर हिज़बुलासहाजो सं० १५ में

भी आये थे आपेई सालमें श्रीजी साहब डेरे पधारे हदसे परे कादर खरुज़लत बढ़ाई १२ मुकाम कि
ये हजारों मुरीदो के लिये खाना शामिल होता था और मुरीदों की तरफ़ से दावत की नागा होती
जब श्री दरबार से खाना दिया जाता था जब से पीर साई सिद्क़ दिलसे दुआ गो है ॥ सं० ४० में-
मुक़ाम साकडे एजीडंट कारनेल पावलट साहिब बहादुर से श्रीजी साहिबां मुलाकात करी एजन्टी
का मीर मुन्सी महाजन जी खास महसूल आबकर व दीवानी फौजदारी वग़ैरे काम क़ायदे से करने
की सरदारों मोमीयों व सब रईयत के मुखीयों वग़ैरे से मंजूरी कराई और जेठ सुद १२ म्हेता नथमल
जी को दीवानी का सरोपाव हुआ जब साहब ममदूह की तर्फ़ से मुन्शी जी ने ख़ास व आम लोगों को
इस्पीच सुनाया फेर मुन्शीजी व नथमलजी साहब मौसूफ़ पास गए काम की बाबत सलाह करके
पीछे आते मौजे महाजन इ० बीकानेर का ठा: रामसिंहजी जो डावरी और नरपुर सरकारी कैद में थे
बड़ा साहब को श्री दरबार साहिबां की तरफ़ से जामनी देकर साथ लाये और मौज़े गरेली ठा: मेघसिं
हजी को भी साथ लाने की साहब ममदूह से अर्ज़ करी तो फरमाया कि महारावल साहब के लिखने
से सदर में रिपोर्ट करी थी सो मंजूरी भी आगई है लेकिन जैसलमेर जाने से इनकारी हैं फेर बहादुर
सिंहजी तो अजमेर व मेघसिंहजी इ० जैपुर और रामसिंहजी जैसलमेर में रहे खर्च के लिये रु० १५०)
माहवारी मा: एजीडन्टी दिवाने से मिलता था परं० कुछ खर्च ४॥ वर्ष में राजके लगे बाद
मी आये बीकानेर गए ॥

श्रीजी साहिबांकी उम्मर दराज़ हो दातारी में हदसे परे नामवरी हासिल की है कि भाटों वग़ैरे को
लाख पसाव वग़ैरे जो हर पीडी में देने का दस्तूर है सिवा हज़ारहा ऊंठ व सेकडों घोडे व कई हाथी और
गाम ज़मीन व नक़द रुप्ये व जेवर पारचे वग़ैरे २ बेशुमार चारणों भाटों व मूसीयों वग़ैरे को दीये जिसकी
साखा में बहुत से गीत कवित दोहा वग़ैरे छंद बने हैं सोरठा जीतलता कमलांरा सोघकरू
री आवतां । लेसी लांची तुडलांरा सुख्व आडी देवरसल ॥१॥ रतनु शिवजी दानजी को क-
विराज का खिताब व तअ्ज़ीम और गाम भू: दुसारपीपा व हवेली गढ में म्हेता प्रतापजी वाली
तथा लाख पसाव पैर में सोना तक माल जेवर ख़ास पोशाकी व हाथी घोड़ा ऊंठ व तलवार कटार

बंदूक वगैरे अता फरमाय सरदारों मूजब तनख्वाह करादी अलाहाजुलकयास एसेही सरदारान पर नवाज़िश फरमाई चुनान्चे ठा० राजश्री तेजसिंहजी म्हाको पैंतालीसवें बर्ष बीकानेर से बुलाय गाम सराबसी व खडीन लांरोला पटे दिय तथा वरसिंह खेतसिंहजी शिवजी सिंहोत-जो तीन पुस्त से ना उमेद रु० वीकानेर में था सं० २५ में बुलाके कोर बिकमपुर मय आठ गाम थल कोरके व खिलअत पैर मे सोना व घोडा व नकारा व छडी वगैरे तथा दोवडी ताज़ीम दे के राव कीया और लिखत करालिया कि कोर व गामों की मौकूफी बहाली अखतेयार श्री दरबार के है रु० दो सो ट्रक सठ हासालेरख का भरदें व दीवानी फौजदारी श्री दरबार की रख के कोर से हाकम को उठाय मौज़े नोख में कचेडी रखाई और बरसलपुर राव का ठिकाना वरावपिराग होरहना दुशवार था सो कसूर माफ कराय सरोपाव पैर में सोना व छडी वगैरे इनायत किया बास उन्होंने ओली तरफ ज़मीन में कई गाम बसाए हैं तथा दूसरे सरदारों वगैरे को गाम व ज़मीन बख्शा सो गामों के नक़शे में लिखा है सिवा इसके बहुत से मुलाज़मान् राज को शादी व ग़मी पर हद से परे बख्शिशें फ़रमाई बहाथी पालकी वगैरे कुर्ब दिया तथा रिआया के भी अच्छे रकिरियावर होने पर खुशनूदी व मेहरबानियां ज़ाहर फ़रमाते हैं जिससे हर कौम में लायक शख्स है सियत से बढ के नामूजके शुभ काम चुनान्चे ब्राह्मणों पुष्करनों व ओसवालो व महेसरियों ने पंच परबीयों बराबोडा व मंदर व मंडप व बेरा बगेचा तालाब व मेला मिश्री की लांवरणां वगैरे २ कर रहे हैं एसेही पल्लीवालां में उजारणा व भिलावदों में राजधर मूलाब सरूप के सबूत होने से म्हांमदी खारणा ७। ० हुआ और मौसरो में खांड गलनी तो चमारों तक हो गई मुफ़स्सल हाल कहांतक लिखा जावे खाना पहिनना व शादी वगैरे में खर्च बढने से अन्देशा रईयत के टूटने का था परंतु श्रीजी साहिबां की नेकनीयती की बरकत से लोग बहुत आसूदा होगए और होते जाते हैं कि ज़माने साबिक़ याने-सं० १९०२ से पहिले लोगों पास जितनी बकरीयें थीं अब सरकार दौलत मदार अंगरेज़ी के तुफ़ैल के बाइस अम्न होने से उतनी सांढां व गायां भैंसां हैं सं० २५ व ३९ में भारी कहत पडा था इससे पेस में मवेशी ज्यादे बढी थी सं० ४४ में बेशुमार मवेशी मर गई तो भी ज़माने साबिक से कई दरजे

बढ़तीहै तथा खेतीपरभी पूरी२ तवज्जह है जिससे सैकड़ों बंधे व कुवे हुए व होते जाते हैं ॥ कि
केलणवाटी में जहां घासभी नहीं होती थी गेहूं होता है और ८० पुर्य कुवा खोदने से एख निकलो
थी वहां ४१०७ पुर्से मोज़ेए गारी वगैरः में मीठा पानी की हज़ारों देरीयां होगई हैं अलाहाज़ुल कृप
स देश में कई जगह तेरीयों का पारख कुवा गांव बना हुआ व गामों में गेहूं होने लगा सो गामों के
नक़्शे में मालूम हो सकेगा॥

श्रीजी साहबों की उमर दराज़ हो - दीवाली. सालग्रह. वसन्त. अखातीज, दसहरा वगैरः को
आम दरबार का ठाठ आनंद और दीवाली होली के बाद कई दिन शिकार को पधारने व शुदी ५
हर महीने बड़े बाग़ व कई मेलामें सवारी मय लवाज़्मे होने व गोठं खेल होला चौथ वगैरः के
शहर व बाग़ में खुशी का समाज होता था सो रुं - ३ के बाद तबीअत नासाज़ रहने से वग़ैरह नाम
के रहे हैं तथा देखी सुनी बातों की याद हृदान हरहै कि तवारीखी हालात भादो ज़ान व देश में मा
न क़ौम के संगपणे सुधां तो ठीक पर • रजपूतों ना के रईस व पांपों के ठाकरोंके नाम गाम मर-
त्वा वगैरः की वाक़फ़ियत अज़हद है और खास व आम लोगों पर नेक नज़र से हरएक की क़
दर व इज़्ज़त का लिहाज़ हृद से परे रखते हैं - अलाहाज़ुल क्यास हर तरह दूर अंदेशी व होशिया
री वगैरः की सिफ़तें कहां तक लिखी जावें मगर शरीर की लाचारी से राजका सुख न होनेके
अलावा दिल में नाउम्मेदी ने तरक़्की सुधारे को ताक में रख कर मान कारखाने अबतर करादिये
हैं • हां - दई नमधान थाने इक़बाल की खूबी से चलरहे हैं॥ ॐ

ॐ ज़मीमा तवारीख़ हाज़ा नम्बर (१)

चूंकि महता नाथमलजी साहब दीवान राज मोसूफ़ की ल्याक़त व सामधर्मे व दूरअन्देशी
व वाक़फ़ियत वगैरह वगैरह, दानाई से कारवाई याने नेकनीयती के बरताव का हाल जो
मुफ़सल लिखा जावे तो १ जिल्द में भी पूरण हो सके वास्ते मुख्तसर नमूना जो इसमें लिखा गया
है उसकी तसदीक़ के लिये चंद्रन सी दलीलों व सन्दों में से दो सनद का खुलासा लिखना वा
जब हुआ सोयह है कि महताजी मोसूफ़ को सब तरह से लायक़ समझ कर ४० बर्ष तक बड़े -

हजूर श्री रनजीतसिंह जी साहब व ठा॰ राज श्री ब्रवसिंह जी साहब और खास कर महा रावलजी श्री बैरीसाल जी साहबों ने क़दर अफ़ज़ाई से जो जो मह्रबानियें व निवाजसें फरमाई सो तो मशहूर आम हैं फेर वसियत नामा में भी राजकाज चलाने का पूरा भरोसा इन परहीज करके अपने श्री हस्त की सही से लिखा दीया अलावा इसके हर्क् काम बक्त भी खुस व मह्रबान रहे चुनाचेः जनाब कर्नेल ईडन साहब बहादुर जी ने सम्वत् १९२१ के मुताबिक सन् १८६५ ईसवी में खरीता व खत लिखा दीया उसकी पुस्त पर महारावल जी साहब ममदूह ने अपनी रजामन्दी की सनद लिखवा कर खरीता व खत महता जी साहब के हवाले किया जिसकी नक़ल लिखता हूं॥

खरीते में मामूली अलकाब आदाब के बाद लिखा है कि महता नथमल जी वकील आपका जबसे मैं अजन्टी राजपूताना में आया मेरे पास हाज़र रहा और उसकी खैरख्वाही जो वास्तेः काम अपने राज के अमल में लाया मैं खुस हुआ अब जो मैं जैसलमेर में आया और बहुत शिकायत अजीतसिंह की सुनी मुनासब मालूम हुआ कि महता नथमलजी बजाय महता अजीतसिंह कामदार ठाकुर केशरीसिंह जी का रहे और अजीतसिंह हमारे साथ कार वकालत पर हाज़र होवै और जब यह शिकायतों की गरमी ठंढी हो जावे तो जैसा मुनासिब हो कीया जावै इस वास्ते महता नथमलजी को खिदमत में आपके रुखसद दी और यह खरीता बतौर सनद रजामंदी आपनी के हवाले उनके कीया कि आपकी खिदमत में पेश करे और उम्मेद है कि आपभी उनकी नेक चलनी से खुस और रजामन्द रहैंगे और उन पर मह्रबानी रक्खेंगे फ़क़त ज्यादह मसरत बाद अलमरकूम २२ अक्तूबर सन् १८६५ ईसवी व मुकाम लाठी दसखत अंग्रेजी में॥

इसकी पुस्त पर बमूजब हुक्म श्री मुख

जो कि ये सनद वास्तेः सनद हमारी रजामन्दी को कि इस मूजब बन्दगी बजाने थाने

हमारी मरजी मूजब हीज बरताव रखने से महर्बान होकर नथमलजी को रोबरू इनायत कराय है और आयन्दा को ही पूरा भरोसा कीया गया सम्वत् १९४४ का मृगसिरवदी ३ गुरु द॰ मु॰ इन्दराज.

खत

स्वस्ति श्री सर्वोपमा ठाकुरां राज श्री केशरीसिंहजी जोग्य कर्नेल वालियम् फरीडरीक इडन साहब बहादुर अजन्ट गवर्नर जनरल्ल राजपूताना लिखावत सलाम बांचजो यहां का समाचार भला छे राजका सदा भला चाहिजे अपरंच महता नथमलजी जबसे मैं अजन्टी राजपूताना में आया वकालत पर जानिब राज जैसलमेर से मेरे पास हाजर रहा और अपना काम मेरे रोबरू राज की खैरख्वाही के साथ अच्छा अंजाम दीया कि मैं उनसे खुस रहा और उनकी वजाय और तोर से मालूम होता है कि उसकी चालचलन अच्छी और ब सबब सुनने शिकायतों केकि जो निसबत महता अजीतसिंह कामदार के बहुत कसरत से थी ऐसा मालूम हुआ कि महता नथमलजी उसकी जगह - कामदारी पर मुकर्रर हो और महता अजीतसिंह को वजाय महता मोसूफ के वकालत पर मोइयन कीया जावे और उम्मेद है कि महता मस्तूर अच्छा काम देयानत से अंजाम देगा और आपको खुस रक्खेगा अब जो हमने महता नथमलजी को रुखसद कीया है खत बतोर रजामन्दी अपनी के उसकी चालचलन से आपको लिखा गया और उम्मेद है कि राजभी उसके हाल पर महर्वानी रक्खेंगे तारीख २२ अक्टूबर सन् १८८७ इसवी॥ दसखत अङ्गरेजी

पुस्तपर बमूजिब हुक्म श्रीमुख

यह खत बखरीता वास्ते: सनद रजामन्दी के नथमलजी को सोंपा गया सम्वत १९४४ का मृगसिरवदी ३ गुरु॥ द॰ मुं॰ इन्दराज

इसके सिवाय दीवान नथमलजी की ल्याक़त इसी बात से ज़ाहिर है कि उन्होंने अपने अहद दीवानी में रईस और रैयत दोनों को खुस रक्खा और इस थोड़ी सी आमदनी पर (कि उसमें भी ५ साल बराबर अकाल पड़ने से कमी आगई) राज के सारे कारबार को चलाया और दूसरी रियासतों के इखराजात को भी जिनसे इस राज्य का संबन्ध अथवा रिश्तेदारियां हैं निभाया महनत और जफ़ाकशी ज़ाहिर ही है कि पूरा डेढ़ वर्ष तक आखों की सख्त बीमारी पर भी राज्य का काम बराबर चलाते रहे कभी हर्ज न होने दिया इन्हीं के अहद दीवानी में जेसलमेर में सर्कारी डाकखाना कायम हुआ और दीवान साहब मौसूफ़ एक बड़ा स्कूल भी सर्कारी तौर पर जेसलमेर में कायम करना चाहते थे परन्तु शोक कि आंखों की बीमारी ने इनको राज्य के काम छोड़ने पर मजबूर कर दिया तो भी यह एक जिन्दादिल और तजरबेकार क़ीमती अफ़सर राज्य जेसलमेर के हैं इन की सलाह और मसवरे ही से राज्य और रैयत का बहुत फायदा हो सक्ता है सबसे बड़ा सदमा महता साहब मौसूफ़ के दिल पर श्री दर्बार महारावल श्री बैरीसालजी साहब के स्वर्ग वास होने से पहुंचा जिसने सच पूछो तो इनकी कमर तोड़ डाली (हम उक्त दर्बार के वैकुंठ बास होने और सर्कारी बन्दोबस्त का हाल इसी ग्रन्थ के अन्त में एक खास ज़मीमे के अन्दर लिखेंगे) महताजी साहब ने श्री दर्बार स्वर्गवासी के रोबरू बहुत से नये कायदे भी बनाकर पेश किये थे वह बन्न पड़ते तो राज्य और रैयत दोनों को लाभ होता परन्तु बराबर अकाल पड़ने और परजा के बेदिल होने से वह नियम प्रचलित न हो सके जो कि आज दिन राज्य का इन्तज़ाम हमारी सर्कार के हाथ में है और श्रीमान कर्नेल पी. डबलो या पोलट साहब बहादर दिल व जान से इस रियासत का भलाई चाहते हैं इसलिये हमको आशा है कि सब कुछ अच्छा ही होगा उक्त साहब की दानाई और महरबानी इस रियासत के लिये अच्छा फल लायेगी हमको महताजी श्री नथमलजी की ज़ात बाबरकात और अकलमंदी से भी उम्मेद है कि वह भी ऐसे समय में अपने प्राचीन मालिक की भलाई के लिये राज्य और सरकार को नेक सलाह देने में कोई दक़ीक़ा बाक़ी न रक्खेंगे परमेश्वर एसा ही करें॥

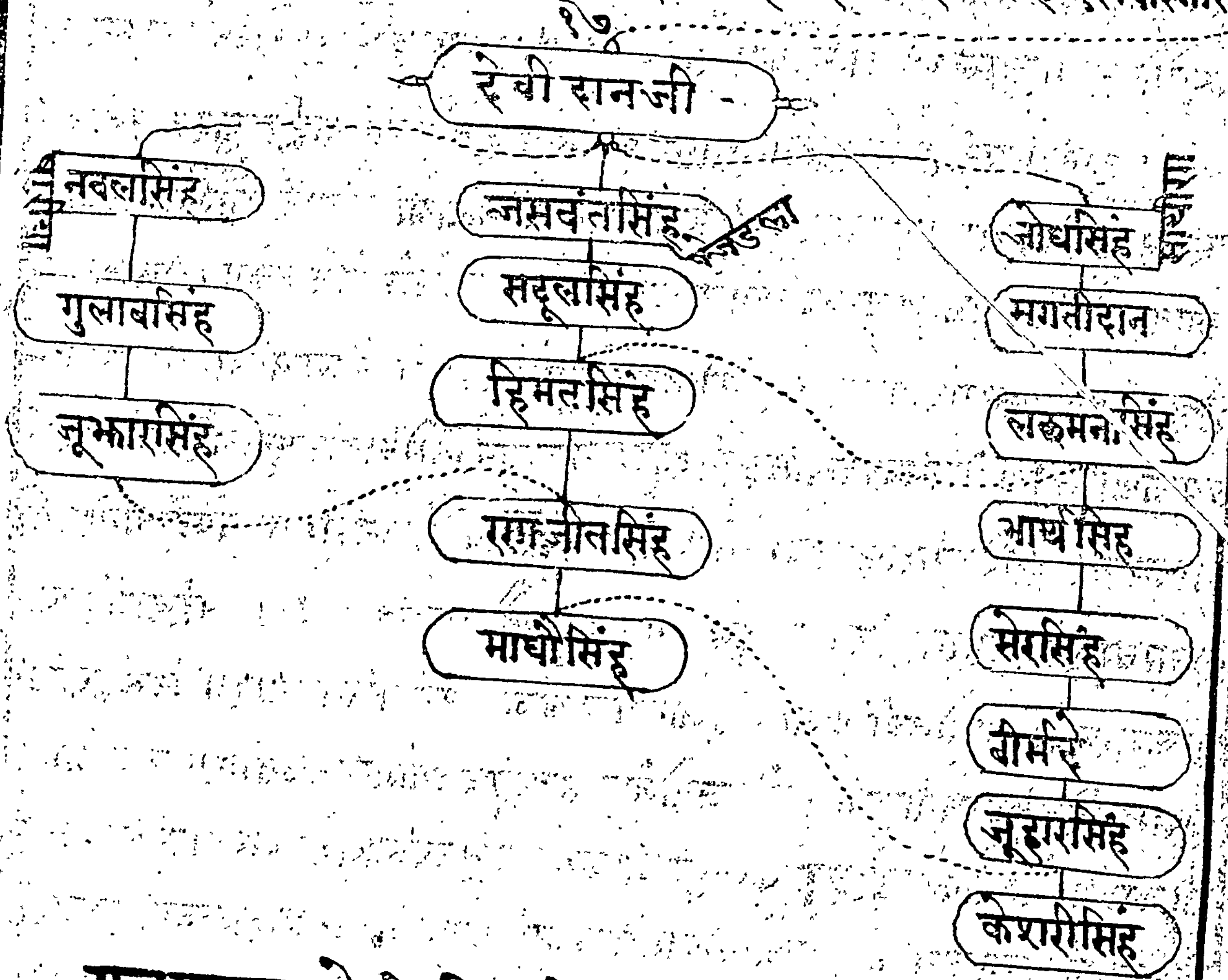
रक़्क़ामुलहुरूफ़ अजमेर मुहम्मद मुरादअली

दफ़े ४

मारवाडमेंभाटीसरदार

महारावलश्रीमूलराजजी जैतसिंहोतके कुं० देवराज का खांप हमीरोत अर्जनोत और महारावलकेहर के कुं० कलकरण के बेटे जैसे का खांप जैसावत महारावल अमरसिंहजी के और कुंवरां का खांप रावलोत और दूसरे वहुत से भाटी ठाकुरान मारवाड में रहते हैं चुनाचे सं० १८९६ में जोधपुर महाराज श्री मानसिंहजी साहब के कुल सरदारों से जनाव रस्जीडेन्ट करनेल सदरलैन साहब बहादुर ने सफाई करवाई जब भाटी सरदारों के गाम रेख के १२७॥। खवपारेके ३५॥। जुम्ले १६०। जिसकी पैदा रु० ११२९७०) रेख रु० ८०५००) वधारे जुम्ले रु० २०३३७०) की लिखी है और वहुत से गाम बिलारेख के जुदे हैं और काई ठाकुर जी इज़्ज़त अवल नम्बर के उमराव हैं अगर मुफस्सिल हालात जो भाटीयों का दिल्ली वगैरे से मारवाड में आना और रियासत का बन्दबस्त बांधना दगदकी नींव देना चौथे हिस्से के हकदार होना और गढ मुल्क का बन्दोबस्त रखना बादशाहों को जवाब देना व लड़ाईयों में मरना मारना चुनाचे रुघनाथसिंह दिल्ली में जसवन्तसिंहजी की लाशों को बचाने में बादशाह के कई अमीरों को मारकर मरा वगैरे वगैरे लिखा जावे तो ऐसी ही १ किताब में पूरा न हो सके - वेहद ही नामी गिरामी दातार व सूरवीर व सरनायां साधार हुए गाम वालरवे ठाकरांका सोरठा पईडा गडेपया - लन्जस रथ कोइ जूतो नहीं ॥ जगरामहजी वरायाल जाद मंडावे जैतसी ॥१॥ दिसे हेकरा - हरदास दिस दूजी सारी दुनी । तोइ जतोलो तास ज्युं हिक भारी कान उठ ॥२॥ वथा गाम पचीयेठाकर भैरुंजी का **दोहा** कलजुग वहे करूर सूमन दी जल सोखीयो । पय रत्ना गा पूर गरजे भाटी ज्ञानउत ॥१॥ और खेजडले ठाकरां जोधसिंहजी तो महाराजश्री मानसिंहजी को जालोर भेजकर आप श्री भीमसिंहजी की फौज से लडमरे फेर सगतीदानजी पीचीन बिहारीदास को पनाह दी जब बहादुरी व दूजे कई कामों में खैरख़्वाही व अकलमंदी वगैरे की खूबियों को महाराज श्री मानसिंहजी साहिबां ने श्री मुख से जस व मरसीये वहुत फरमाये

सो दोहा रजपूतीरुखसत हुई पड मार्ग प्रतिकूल । पाछे आंगी ग्रह पलो सगतै नै सादूल ॥१॥ खुलाहाजुलकयास -
तथा रावलोत सरदारों ने राज मेवाड जैपुर झालावाड नरसिंह गढ वगैरे में पटा पाया है
१ महारावलजी श्रीमूलराजजी जैतसिंहोत वे २ देवराज ३ हमीर ४ लूणकर्न ५ छत्रसाल ६ उर्जन ७ सांवतसी ८ सीहा ९ रायपाल १० आसकर्न ११ गोपालदास १२ कुः दयालदास दिल्ली से मारवाड में आए १३ केसरीसिंह १४ सूरसिंह १५ हठीसिंह १६ किस्नसिंग

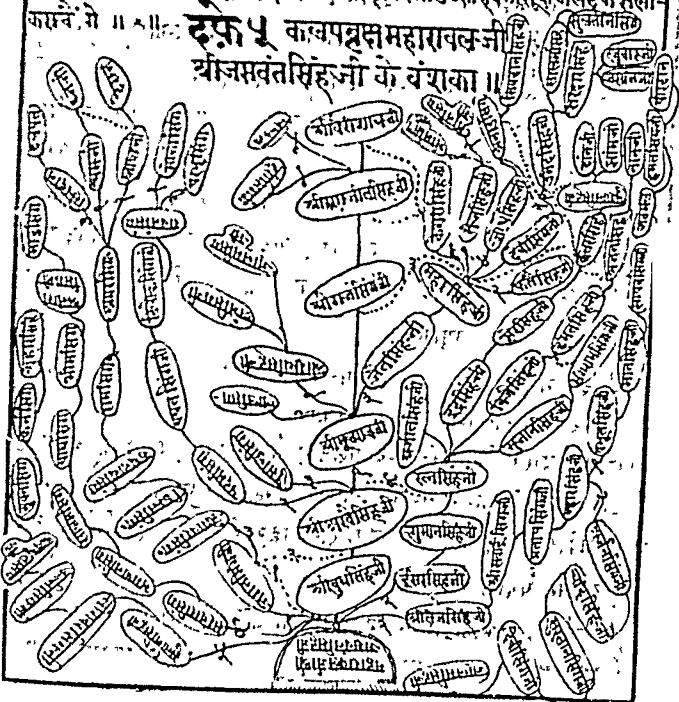


राज मारवाड से सीव निकली व बाकी रही की बिगत

संवत १९४१ में तिरवूंरे पहोकरां से खेजांरो तक सींवखास जनाव करनेल पावलट साहिब बहादुर ने निकलाई फेर राजगढ की लडाई परतकरार करने से अटकी वाद बहुत झमेल रहा जोधपुर की फौज आकर राजगढ का भारी बिडदसिंह को ज़िन्दा मारा फेर सं० ४४

में जोधपुर से महाराज श्री प्रतापसिंहजी साहब व यहां से कुः श्री शिवदानसिंहजी साहब ने सरू करके गाम गौरसे व डांगरी र॰ हाड़ा व धारवी रू॰ मारवाड़ के तिरछूटे पर कोडी ॥ सांवपेट पहोकरण से गाम झापरा के तक कि जहां सेवल साहब ने कोडीयी मोतमिदान महेता धरेराज जी जैसलमेर व मोतीलाल जी मारवाड़ ने सं॰ ५२ में सरू कर के गाम सीहडां सवेंगारी व पहोकरण के लिहद तक निकालो ॥ अब गाम वैगरी से अदर और सौले से वधां ताल्लां तक करीब कोस ८॰ कि रहो है सो भाऊमेर है कि जो डरे साहब मौसूफ जलद फैसला करेंगे ॥ ५॥

दफे ५ वाल्व पत्रस महारावल जी श्री जसवंतसिंहजी के वंशका ॥



दफे. ६ भायों व मोटा सरदारों के नाम व गाम व ताज़ीम व ठिकाने वी-पैदा तरव मोनन् जोरजोडन्ट साहब को सं० १९ ४२ में लिख दी है सो तथा सहर में रहे जब तनख्वाह व्ओ दरबार से मिलने वगैरे का हाल॥

१	१	महारावल जी श्रीकेहरजी २ केलराजी ३ चाचा ४ वरसल ५ सेरवा ६ हरो ७ वरसिंग से खांप वरसिंग हुई ८ दुर्जनशाल ९ डुंगसिंह १० उदैसिंह ११ सूरसिंह १२ वेहारीदास १३ जैतसिंह १४ सुंदरदास १५ अचलदास १६ वाकीदास १७ गुमानसिंग १८ नाहरसिंग १९ जुझारसिंह २० शिवजीसिंह २१ खेतसिंह २२ कुः अमरसिंह विक्रमपुराव रोवडी ताज़ीम नगारो छडी डावी मिसल अवलनम्बर तनख्वाह रु० १५०) पैदा रु० ३०००)
२	५	४ वरसल ५ सेरवा ६ खीमाल से खांप खीया हुई ७ जैतसिंह ८ मालदेव ९ मंडलीक-१० नेलसी ११ प्रथीराज १२ दयालदास १३ कर्नसिंह १४ भानीदास १५ केशरीसिंह १६ अखैधीर १७ अमरसिंह १८ मानसिंह १९ साहबदान २० रणजीतसिंह २१ धनराज २२ कुः मोतीसिंह वरसलपुरावजी व राणी मिसल नाकी विक्रमपुर मुजब पैदा रु० ५०००)
३	७	वरसिंग ८ जैसिंह ९ कान १० आसकर्न ११ जगदेव १२ सुरतान १३ गुरोसदास १४ किशनसिंह १५ दलकर्न १६ अमरसिंह १७ रामसिंह १८ कर्नसिंह १९ रुघनाथसिंह पुगलराव कुर्व वरसलपुर मुजब
४	१४	सुंदरदास १५ लाडखांन १६ सरूपसिंह १७ सेरसिंह १८ रतनसिंह १९ साहबदान-२० वूलीदान ठा० विकासर पैदा रु० १५०)
५	१५	अचलदास १६ किरतसिंह १७ दानसिंह १८ भोमसिंह १९ जोरावरसिंह २० जेठमल २१ अमरसिंह ठा० गिरराजसर ताज़ीम वडी तनख्वाह रु० ३०) घरवैठा पैदा रु० ७००)
६	१६	वाकीदास १७ मूलसिंह १८ मदनसिंह १९ जैसिंह २० वीझराज २१ हठेसिंह ठा० वांगडसर पैदा रु० १५०)
७	८	दुर्जनशाल ९ भानीदास १० मानसिंह ११ भगवानदास १२ राजसिंह १३ अजवसिंह

	१४ पेमजी १५ अनोपसिंह १६ लखधीर १७ सूर्जमल १८ जालमसिंह १९ हीरजी २० मूलजी २१ कुं० कानजी ठाः सिर्ड ताः बडी तनखाह रुः २५) पेदाः ७०)
	तथा १५ अनोपसिंह के १६ नथराज १७ भोमजी १८ रावतसिंह १९ भोजराज २० कुं० कल्यांण ठाः नथराजकी सिर्ड
१८	दुर्जनशाल ९ भानीदास १० गोपालदास ११ सांवलदास १२ जैसिंह १३ जोगीदास १४ सिवदानसिंह १५ संगरामसिंह १६ चैनसिंह १७ दुर्जनसिंह १८ उमेदसिंह १९ प्रतापसिंह २० नवलसिंह २१ कुं० अमरसिंह ठाः जोगीदासकोसिर्ड ताः तनखाह रुः ३०) पैदा रुः १५०)
९।११	सूर्यसिंह १२ भागदास १३ वीरभान १४ अभैराम १५ मुलजी १६ सादारसिंह १७ रुद्रसिंह १८ रुघजी १९ हीरजी ठा० ग्रांधी
१०।११	सूर्यसिंह १२ मूर्णसिंह १३ जैसिंह १४ रामसिंह १५ अनोपसिंह १६ सरसारसिंह १७ लालसिंह १८ ऊमजी १९ गोयंददास २० उदैसिंह ठा० भोजांकी वाप
११।११	११ सू० १२ दलपत १३ साहिबखां १४ विजैसिंह १५ नरसिंह १६ पेमजी १७ सालमसिंह १८ रुद्रसिंह १९ ठा० बावडी
१२।१०	उदैसिंह ११ ईसरदास १२ हाथीसिंह १३ जुगतसिंह १४ नथराज १५ सरूपसिंह १६ समेतसिंह १७ वनजी १८ मघजी १९ कानजी ठा० वडी सिर्ड

महारावलजी श्रीमालदेजी से मालदेयोत व कुं: २ खेतसिंहजी से षेतसिंहोत दनके ३ पचांनको पचानोत ४ रामसिंहको रामसिंहोत ५ उदैसिंहको उदैसिंहोत ऐसे हा खेवसिंहोतों से जो जो खांपां हुई सो लिखी गई

१।५	उदैसिंह ६ कल्यांणदास ७ मूलचन्द ८ अनोपसिंह ९ जोरावरसिंह १० जालमसिंह ११ जैराज १२ शिवजीसिं० १३ वूली दान १४ कुं० परमसिंह ठा० बंऊनसाली ताजीमवडी तनखाह रु० ८०) हमारा गांम कूंडा वनीवली पैदा रु० ३५०)

२ । ८ अनोपसिंह ९ खेतसिंह १० वाघजी ११ भोजराज १२ बिजेसिंह १३ कु० अचलसिंह १४ भं० गलसिंह ऊपरमुजब ठा० गाम गेहूं पैदा रु० ३५०)

३ । ८ अनोपसिंह ९ सरूपसिंह १० जोधसिंह ११ प्रथीसिंह १२ तेजमाल १३ कु० प्रतापसिंह - ठा० गाम सीहडनर तनख़्वाह रु० २०) पैदा रु०

६ कल्याणदास ७ अर्जनसिंह ८ मानसिंह ९ अमेदसिंह १० धनजी ११ जसवंतसिंह १२ लालजी १३ चमनजी १४ भ० किस्नसिंह ठा० माडली ताज़ीम एकेवडी तनख़्वाह रु० ५५) पैदा रु० ३५०)

४ । ६ कल्याणदासजी ७ भीमसिंह ८ सरदारसिंह ९ म्हैराज १० भगजी ११ संभूदान १२ कूलीदान १३ कुं० समर्थसिंह ठा० देवडा ता० तनख़्वाह रु० ३०) पैदा रु० ३५०)

ऊपरलिखेपांचो ठिकाने उदेसिंहोत हैं

२ । २ खेतसिंह ३ पचांणा ४ रामसिंह ५ तेजमाल का तेजमालोत ६ सुलतानसिंह ७ दोलतसिंह ८ सवाईसिंह ९ सरूपसिंह १० जानसिंह ११ प्रथीराज १२ बखतावरसिंह १३ कुं० खुसालसिंह १४ भं० जगजी ठा० रराधा ताज़ीम बडी तनख़्वाह रु० ५५) पैदा रु० १७५)

२ । ७ दोलतसिंह ८ मानसिंह ९ सूरजमल १० संभूदान ११ न्हारजी १२ रराजीनसिंह १३ कुं० ठा० मोठा तनख़्वाह रु० ३०) पैदा रु० २५०)

३ । ६ सुलतानसिंह ७ पदमसिंह ८ जोरावरसिंह ९ रामसिंह १० गुलराज ११ कु० बूजीदान ठा० तेजमालोत तनख़्वाह रु०

१ । २ खेतसिंह ३ ईसरदास ४ द्वारकादास का द्वारकादासोत ५ भागचंद ६ लाडखान ७ अभेसिंह ८ मेघजी ९ सालमसिंह १० भोजराज ११ जैठमल १२ म्होबतसिंह १३ पनजी ठा० गाम बारू ताज़ीम बडी तनख़्वाह रु० ६०) पैदा रु० ५५०)

२ । ५ भागचंद ६ चंद्रसेन ७ राजसिं ८ रतनपाल ९ सुजानसिंह १० रतनसिंह ११ भगवानसिंह १२ हीरजी १३ कुं० बखतावरसिंह १४ भं० बारू ता० बडी तनख़्वाह रु० ३०) पैदा रु० २५०)

३ । ५ भागचंद ६ मूलचंद ७ लालचंद ८ फतेसिंह ९ बांकीदास १० खेतसिंह ११ चमजी १२ कालूब

सिंह १३ कुं० अखैदान गामदेवरा

१ २ खेतसिंह ३ सगतसिंह का सगतसिंहोत ४ हरीसिंह ५ फतैसिंह ६ किसोरसिंह ७ जो
रावरसिंह ८ बांकीदास ९ प्रथीराज १० भगवानसिंह ११ भोजराज १२ फतैसिंह -
ठा० सतेस्रायो ताजीमएकडी तनखाह रु ४०) पैदा रु० १२५)

२ ४ हरीसिंह ५ नाहरसिंह ६ कल्याणसिंह ७ म्होकमसिंह ८ पीरतसिंह ९ जोगराज १० अभ
जी ११ वीरदान गाम चांदियाली

३ ३ सगतसिंह ४ केसरीसिंह ५ रतनसिंह ६ जुगतसिंह ७ सखधीर ८ संगराम ९ जालमसिं
ह १० राजसी ११ हीरजी १२ कुं० वखतावरसिंह ठा० अनासर तनखाह रु ४५) पैदा रु० १००)

४ ५ रतनसिंह ६ रायसिंह ७ अनोपसिंह ८ हिन्दुसिंह ९ नथुसिंह १० कर्नसिंह ११ न्हाम
जी १२ अजीतसिंह १३ कुं० वैरीसाल गा० वासणी पैदा रु १००)

५ ७ अनोपसिंह ८ संग्रामसिंह ९ जेठमल १० न्हारसिंह ११ मेहराज १२ बलवंतसिंह
ठा० आसकने तनखाह रु ३०) पैदा रु २००)

१ ३ पचांणजी ४ प्रथीराज का प्रथीराजोत ५ भोजराज ६ केसवदास ७ रतनसिंह ८ खीम
जी ९ भावसिंह १० सवाईसिंह ११ बुधीदान १२ प्रतापसिंह १३ कुं० म्होवतसिंह
ठा० नवेतले ताजीमहे तनखाह रु २५) पैदा रु० ३५०)

२ ४ प्रथीराज ५ जोगीदास ६ लालचंद ७ पदमसिंह ८ वाघजी ९ सेरसिंह १० बांकी-
दास - ठा० गाम जोगीदासरो -

१ २ खेतसिंह ३ वाघजी ४ गोर्धनजी ५ गिरधरदास का गिरधरदासोत ६ हरनाथ ७ रूपसिं
ह ८ मूलसिंह ९ सवाईसिंह १० बभूतसिंह ११ साहिबदान १२ भोजराज ठा० गाम कोड

१ २ खेतसिंह ३ दयालदास ४ बेहारीदास का बेहारीदासोत ५ जसकरन ६ जैतमाल ७ मूलचंद
८ अनोपसिंह ९ जालमसिंह १० रुघजी ११ बुधीदान १२ कुं० आणंदसिंह
गाम वडेगाम तनखाह रु० ३०) पैदा रु० १५०)

३ ४ वेहारीदास ५ कुसल्लसिंह ६ हरीराम ७ रामचंद ८ पदमसिंह ९ जूझारसिंह १० साहिब दान ११ मतीदान गाम डांगरी ता० है तनखाह रु २०) पैदा रु ३५०)

३ ६ हरीराम ७ सहसमल ८ हंदूसिंह ९ भगवांनसिंह १० समेलसिंह ११ पीरदान १२ हेमजी १३ लछमनसिंह गां० डागरी ता० है तनखाह रु ३०

४ ५ कुसल सिंह ६ शिवदास ७ बिनेसिंह ८ जोगीदास ९ राजसी १० खेतसिंह ११ जोधसिंह १२ हीरजी १३ कुं० गां० राजगढ तनखाह रु ३०) पैदा रु १००)

५ ४ वेहारीदासजी ५ जसकर्न ६ जैतमाल ७ मूलचंद ८ अनोपसिंह ९ सुरतांनसिंह १० लखजी ११ मोडजी १२ कुंवलवंनसिंह गाम लषासर तनखाह रु १५)

---

१ ३ पचांणजी ४ रामसिंह ५ दुर्जनसाल का दुजावत ६ गजसिंह ७ अजबसिंह ८ उदैभांण ९ सुवाई सिंह गामवसायो १० बभूतसिंह के खोले पदमसिंह कोबेटो ११ प्रथीराज १२ हेमराज गामचेलक ता० है प्रधानगी तनखाह रु १५)

१ ४ रामसिंहजी ५ अखैराजजी का अखैराजोत ६ भावसिंह महारावलजी श्री अखैसिंहजी गाम टावरकी दीयो विखेकी चाकरी से ७ जोरावरसिंह ८ थानसिंह ९ आसकरण १० हुडन्वंतसिंह ११ मोड- गाम टावरकी

२ ५ दुर्जनशाल ६ गजसिंह गामवसाया ७ दलकरन ८ खीवजी ९ सोभजी १० ज्ञानसिंह ११ बूलीदांन गांम गजसिंह का

सुवार उर्फे सोढा अमरकोट का खांप सुरतांन सो पारली है और नारनोत याने नारांज का बेटा- वैरसी गंगदास रांम हमेसां से तावेसरी में रहे श्रीमूलराजजी साहबों ने गंगदास- दौलत सिंह गाम ढोल वाले को जागीर गाम रनूहडो सं० १९५२ में दीया और राम मदनसिंह होतो सुलतानाउ वालों को गाम लूणार रहवास तो सं० १९ में और वसी सं० २७ में लिखदिया ॥

तथावाडे कूपजा जोड सूजे वगैरे में मोटा रहते हैं परन्तु वसी गाम नहीं तनखाह रु २५ है अव ५० भी कर दीगई है ॥ १ गंग दास २ हींगलोदास ३ भैरवदास ४ जोतो ५ दोलतसिंह ६ हाथी सिंह ७ मारुयदान ८ राणा जीतसिंह ९ कुं० रायसिंह १० भं० पना गाम खूहडो ताजीम पट्टा तनखाह रु ५०) पैदा रु ५००)

१ गंग दास २ हींगलोदास ३ जेठा ४ भीम ५ रतनसी ६ गजसिंह ७ विशनसिंह ८ राणाजी तसिंह ९ कुं० धनजी मदारजलार की सीव में ज़मीन वख्शाई पर कुवनहोने से गाम न हुआ ताजीम तनख़ाह रु ५०)

१ राम २ उदेकरन ३ अमरसिंह ४ सुंदरदास ५ सुरतानसिंह ६ जोधसिंह ७ भोजराज ८ मदनसिंह ९ मोडसिंह १० म्हेराज ११ कुं० ताजीम तनखाह रु ५०)

जागीरदारों व भोमीयों के गामों की पैदा वावत रेख या तिरयाला वगैरे कोई लागराजकी नहीं है बल्कि हुमेशा की जोकरी भी नहीं ली जाती जो कोई सरदार या भोमीया खास शहर व हकूमतों में नोकरी करते हैं सो तनख़ाह पाते हैं सबब यह था कि गामों मे पैदा ही नहीं थी क्यों कि गेहूं पैदा करने व किरसा वसाने की तो मनाई जथी और नवा कुवा भी राजकी इजाजत से बनाया तो भी लाग रीजाज़ वधाया गया और रवासाज भाउजी ठा० धनजी गेहूं कराया सो ज़बत हुआ जब ठाकुर सूफने घोडी १ नज़र करके माफी कराई लेकिन आयंदे गेहूं नहीं करने का लिखत करादिया तथा साख सोचाय भी बर्षा की कमी व कहत धाडा वगैरे के खौफ़ से खेती कम ही करते थे जिस में भी रजपूतो सिपाहियो वगैरे से हासल मुकाता नहीं लेते थे हां यह लोग सरदार की शादी में नोता और मोसर में खांड० वारस वग़ैरः दरबार में घोडा नज़र करें जिसकी कीमत के रुप्ये हैसियत मुजब देते थे और काम पडे पर पहोतों सुधां नोकरी करते हैं और साहूकार वगैरे रईयत से ढूंपी साडी हासल वगैरे की पैदा भी सवारी खिवार वांपवासीगो के सब भाई बांटा कर लेते हैं यह रस्म आ यंदा बंद करने के लिये भी दरबार साहिबों यहांतक धणीयाप फ़रमाई कि कई गाम नये सर पायकी

लागबरो की सरत पर दुनायत कराये बांटा कोरें तो गाम रवालसे कीया जावे परन्तु बिलफेल तो वांया कर लीया है पारवी पिरणां सिर्फ़ राज से तनरव्वाह व ताज़ीम मिलने का है मुहाकि न तो गाम में पैदा यी श्रोर न हु मेशे की लाग मुकर्रर कीगई जो सरदार फोत होते हैं तो भी कुंवर से कमर बधाई की लाग नही लेकर सरोपाव दीया जाता है जिसकी मीताज एक ऊंठ व पांच रुप्ये थई याल व जामडे को रले हैं फ़र मात्मी को पधारे जब रावजी तो एक घोडा एक ऊंठ व मोहर थान एक नज़र व रुप्ये पांच नोछावर करे और दूजा सरदार नज़र नोछावर आन व रुप्ये ही जकरते हैं तथा उस ज़माने में खेड मुहीम वगैरे की नोकरी बहुत ली ज्याती थी याने हर एक गाम के कई आदमी मय अस्त्र व पुन हाज़र रहते थे उनको दरजे मुजब बल पेटिया व अमल राज से दीया जाता था सो सरकार दोलत मदार की तरफ़ से राजपूताने में अजंटियां होने बाद ऐसी नोकरी का काम ही नहीं रहा मगर बखेरीयों के खर्च से विकाल लो वग़ैरे का खर्च राज को तो ज्यादे ही लगता है इन्हों से तो सिर्फ़ घोडा या कीमत का रुप्या नीचे लिखे मौकों पर लेने का रिवाज बन रहा है ॥

एक श्री दरबार साहबों के राज्याभिषेक हो जब दीलाडे का दूजे श्री दरबार साहब या महाराजकुमार का विवाह हो जब त्याग का तीजे श्री बाई राज की सादी हो जब दायजे का चौथे श्री दरबार साहब गांमे पधारे जब नज़राने का ॥

ऊपर लिखी लाग भोमीयों से तो रुप्ये वसूल हो गए और सरदारों से सं० १९१५ पीछे घोडे रा० ९ चाहिये जिसमें किसी ने एक दो किसी ने तीन चार नज़र किये बाकी बाकी है तथा सं० १९७२ से पीछे कई गाम जागीर व रकड़ीत पटे बरवशे जिसका भी घोडा किसी ने नज़र नही कीया सिवाय इसके चोरी धाडे के मुकदमात का हज़ारहा रुप्या अजंटी जोधपुर में राज से दीये गए सो सूद से लरहु होते हैं तथा पडोसी रिआस्तों से सरहद्दात निकली जिसके सरफ़े के रुप्ये जो उन्हों के गामों पर वाजिब है लेने बाकी हैं बाज़े गाम भोमीयों पर घोडे के ठांसा का फ़ी गाम साढे पाच रुप्ये सालियाना वसूल होते हैं ॥

श्रीजी साहिबा की उम्मर दराज़ हो मान्ने सरदारों व भोमीयों व सांसन वालों को आबादी आमदनी में तरक्की करने की साफ़ २ हुवाती देकर ताकीद फ़रमाई जब से बहुत से गाम नया कूवा व बंधा त्यार हुआ

और कितेही गांम गेहूं व तिल क पास होनेलगाहै तथारवांपचीसीगोंके गामोंमेंजाट विसनोई वगै रे बहुतसेकिरसे आवाद हुए जहांपैदाभी बहुतवढगई औरवढती जाती है मगर भाई बेटे केगाममें जहांतरक्की नहीं होसक्ती इस वीये इस देश सरदार भी अवदिलसे चाहते हैं और हकीकत मेंबहु तही मुनासव ववाजिव है कि गाम का एक सरदार पाटवी मालक व ज़िम्मेवार है जैसे कि और रिया स्तों में है ताकि आवादी आमदनी मे खातर ख्वाह तरक्की व चोरी धाडे काबन्दोबस्त वगैरे हरएक काम आसानी से हो सके लेकिन यह तजवीज और दरवार साहिब व जनाव रज़ीडन्ट साहब बहादुर सलाहकरके करेंगे जवहोगी वगैरे दोनों साहिबों की सलाह के कोई तजवीज पेश नहीं चलने की क्योंकि सं० ४१ में महेसूलमें सरदारों का हक इस मतलब से रक्खा था कि दंगा चोरी भी नहोगी और पाटवी को हिसाव श्री दरवारसे मिलेगा तो सव तरह से उनका फायदा होगा लेकिन अलावा वरसंगां के दूसरे सरदार इसवातको कुछ भी नसमझे जिससे राजका दंगा भी मारा जाता है और ठाकुरको भी सिवाय परेशानी के हासिल नहीं होता है ॥

अथ इतिहास

दफे ७ रावरांणगदे व कुंवरसांदे वकेलणजी का इतिहास

पूगलराव रांणगदे के कुं० सादे का घोडा सूर के शिकारमें मारा उन्होंने कहा पाया पाटीया है जिसपर कुंवरसांदे ने जैतुंगसेंदे रांदलोत राकसीये सोमलूणावत जंझवीके त पाहू लखमसी रेदावत साथ ३५० मनुष्यों से आडेवलेके गगड निर्वाण की १४० घोडी लीवी गगड वहार चडा सो ८ कोस से पीछा गया सादे गाम के तलाव पर आया मोहलराजा मांणकराव की पुत्री कोडमदे बहुत सहेली साथ तीजरमणको आई जब सादे ने घोडे को रानों मे उठाय हा थों से कडकी सारव पकड हींडा लीया कोडमदे मोहित हुई पीछा जाकर माकी ज़बान से वाप को कहा कि इसको हीजपरनावो हरचंद समझाई कि छोड अर्ड कमल चूंडावत से सगाई की

हुई है दोनों घर बिगडैंगे परनहीं मानी लाचारकुं० सादे को नारेल देकर कहा कि विवाह कर लो-सादा बोला जानकर आऊंगा चोरी नहीं परनों फेर पूगल जाकर रावजी से कही सो नहीं तुली मुरत-तक मोहलों के कागज छिपाये आखर को कोडमदे का पैगाम एक ब्राह्मन ने सादे को दिया जब हठक रके ज्याऊं जो धार नाम ऊपर लिखा है जिनकी खुराक भी असमभवथी साथ लिया और चार सेलोगोंसे चढे शकुन अति विप्रीत भए पर कुछ खयाल नहीं किया बडे ही उतसाह और दुतर्फा मोद से विवाह करके डेढ महीना वहां रहे रूपीया एक लाख त्याग दिया और रुप्या चालीस हजार का दायजा लेकर पीछे आते जान का डेरा कुवे तिद्रुणा देसर पर हुवा की खबर बसैडे कारा मर जासूसों से सुनते ही-भूंड भूंडेलसे अर्ड कमल ४ हजार फौज मय खेतसी आदि पांच भाई व महराज सांखला व भोजराज भगवती दास चोहान व जेठी मुंगोत वगैरे जो धारां के चढ आये ४ कोस छेटे दिन उगां सेढे को सूता-देख मारना चाहा परमहाराज के कहने से रोखवास भेज ढोकाडी दे जमाया सेढे ने कहा मेरा खडीया-रस्ते में गिर गया है किसी के हाथ आया होगा लादो दूसरा अमल नहीं लूंगा अर्डकमल ने ललाअकर खडीया भेजा जब अमल लेकर बेधडक पीछा सो रहा पीछे उठकर घोडे का तंग ऐसा खैंचा कि चारुं पांव जमीन से ऊंचे हुवे फौज वालों को हैरत हुई फेर मोर पर सवार हो बोला कि आगे चलूं या पीछे-अर्डकमल के कहने से महराज बोला कि घोडे का पग तो दिखावो जब घोडा उड गया सो भोजराज भगवती दास को मय ५० आदमी के यदमपुर भेजकर कुंवर सादे पास गया कि फौज आगई है कुंवर बोला कि रावजी ने वचन लिये थे सो आप तो पूगल जावो मोर घोडा मुझे दे दो मो ढोजी वो अलग जा बैठा और फौज आप हुंची अव्वल जुद्ध सो मने किया ३८७ मनष्यों को स्वर्ग भेज कर मूंछे ताव दे रहा है बीसा वाला मोर घोडाव उमाही के सवार को जोखा नहीं जब तरवार घोडी के चारुं पैर एक तल-वार से उडाय पैदल लडने लगा और घायल हुआ॥ कुंवर सादा कोठी के अंदर वहेली में कोडमदे से स्वर्ग या मती पुर में सुख करने की वातें कर रहा है जेठी मुंगोत आया कोठी गडे को चीरकर पीछा-लौटा सादा बोला जीता न जावे बीके कहीं उमाही नहीं रही जब सादा मोर पर चढकर जेठी को मार आया और ललख मसी से कही एक वार तो मैं आपके देखते जुद्ध करूं ललखमसी कही जैसे मरजी-

सुनांचे १५० भंड० सुरलोक भेजपीछावहलीमेंआबैठा औदीकेने अड्डुलजुद्ध किया ५१३ प्राद्मीयोंकोमारकर आपभी अपछ्रा साथ स्वर्ग पहुंचा फेर लखमसी सेनापतिहो एक वकडा ४१७राठोड कई भाटी कामआये अर्डकमलके दो भाई वगैरे घायलहुये लखमसी मारा गया बाद कुंवरसादेने कोडमदेसे सांखले मोरपर सवारहो अर्डकमलके भाई खेतसी वगैर-५०० कोवफात दी महराज वगैरे घायल हुए जवएकमंगतजो आगे पूगलगयाथा मोरकी चाल जानताथा अर्डकमलको कहकर एक ढोली से मदकी का दोल वजवाया तो मोर नाचनेलगा लाचार सादेने घोडेको पूराकर के पैदललडनेको खडा हुआ तब अर्डकमलभी पैदल मुकाबलेको आया दोनों के पहले हथवाकी मनवारें हुई आखर अर्डकमलने तलवार मारी शिर अलगपडा बाद सादेकी हथवासे अर्डकमल घायल हुआ औरदोनो तरफ के लोग बहुत से आपसमें लडमरे व घायल हुये लडाई खतम हुई राठोड २२०० मरे जिनको दाह किया औरघायलों को डोलीयेंघात राठोड पीछेगये बाद सेदेने भी ३९७ भाटीयोंको दागदीया और सादेकी लास व घायलोंको उठाय डेरे लाया जबकोडमदेने राव हाथकी चूड मंगत जनो कवाल्ने और एक हाथकाट कर सुसरे व सासू के पांवलागने के लिये ऐदे को दकर कहा त्यारीकरो देरी पडती है मुझे कि चितामें दैठकर सादेका सिर गोदमें ले सती हुई सेदेने पूगलजाकर सवहाल एकजी से कहा हा हाकार मचगया फेर एकजीने एकचूड तोजैसलमेर मंगतेको भेजी और एक-चूड व बहुतसे रुपये जगाकर कोडमदेसर तालाव जो बीकानेरसे ८ कोस पश्चिम है बनाया॥ तथा एकसीयासोम के आराम हुआ सो ही अर्डकमल पासजारहा॥ वहां खावलामहराज तो बचा और अर्डकमलफौत हुआ इसके तेयाके दिन सादेकी छःमासीथी॥ तवारीखोंद्वारा व सुना है कि रावरांगदेने कुं० सादेके वैरमें राठोडों का मुल्क लूटकर बहुतसा वित्त लीया और वांजगांह लडाई भीजीतकर सिरडां की तलाई पर आये कटक तो धरगया थोडे आदमीयों सेएकजी बैठेथे पीछेसे राठोड चांडाजी फौजले आया लडाई में सहद्रा आदमी दुतरफ़ा और एकजीमारेगये परन्तु यहबात करीनकयास नहीं क्योंकि सादेका बैर रहा ही नहींथा राठोडोंने

अपनी मांग के दावे में सादा वगैरे को मारे तोभी सासने खेतसी वगैरे वहुत से राठोडों को मारा और राईकमल भी जीता न रहा ॥

दूसरे बीरमांण में लिखा है कि राठोड वीरम के बैर में कुंवर गोगादे ने दलाखा वगैरे जोईयों को मार कर तलाई पर आउतरे और घोडे ढील दिये थे पीछे से दलाखां के बेटे ने आकर अबल तो घोडे- लीये जब से कहावत है कि ढलीया हाथन आवसी गोगादे घोडा) बाद लडाई में गोगादे जीको पूरे घाव किया २ उस वक्त राणागदे जी भी शिकार खेलते उस तलाई पर आये थे गोगादे जी ने खलखला तलवार जो दुर्योधन के हाथ की गोरखनाथ जी ने दी थी रावजी को देने के बहाने नज़दीक- बुलाकर मारडाला और हंसकर कहा साढु जीता डीगदो अब दोनों बहनां लांबीयां पहने रहेंगी- रावजी का बैर लेने को कुंवर तराक व प्रधान महेरो हमीरोत मुलतान के नवाब पास गये कि फौज ला कर राठोडों को मारेंगे इसी अरसे में बिकमपुर से केलराजी ने महेरे का सुख पूछने आदमी भे जा उस ने लिखा मैं तिराक साथ जाता हूं आप चोहांन बिकुपाल को अपनाय पूगल लेलीजो जब आठी पांच से रावजी की मोकांण को गया बिकुपाल को मिलाया ही था रावजी की सोढी को घर में रखने का धोखा देकर गढ में मालिक हुआ पीछे से कुंवर राणगदे तीन सो मनुष्यों से आया जब गढ में रखकर आप बिकुपाल को साथ ले कोर मरोट का कबज़े किया फिर बिकुपाल की सलाह से पाहुओं को बुलाया कि रावजी का बैर लेवेंगे पाहुओं ने बखुशी मालिक मांना मुदा कि खारबारा मगरा हापा- सर मोटासर वगैरे १४० गांवों के भी ताबे हुए यह खबरें तिराक को लगीं जब महेरे कहा रावजी- का बैर लेंगे आपको १ कोट में दिलादूंगा अंदेशा मत करो फेर केलराजी ने कुंवर चान्चे को सिखा कि इत्तलाई अरज़ी जैसलमेर भेजो और जमीयत ले आवो चुनाचे एक हज़ार लोग से चान्चो मरोट आया बाद चूंडे जी को डोला देने के बहाने जाकर गाम मेंडेरा किया चूंडोजी बींद बनकर आया सांदगादे रनपीछा भागा केलराजी घोडा पीठ लगाय चूंडे जी के वगल बीच में बरछी निकालकर कहा कि पीठ में भी निकल सकती है मगर सामना करो तो धर्म रहे पर चूंडो जी तो भागा ही गया आखर नागोर के दरबाज़े जाता केलराजी घोडे की वाग खेंची सो जब आया जब बरछी मारी चूंडे जी की गर्दन

से सारावदन व पोंड को खिलत फ़रमान से गडा चूडे जी ने शिर लटकाया केलण जी सामने आकर
कहा सदा जी लटका जुहार उस वक़्त एक जाट श्ववणी बोला कि गांड में लकड न रखोगे पर रहो
गे तो सन्मामो सों रोवे ही है यानी राव पूगल महाराज बीकानेर के तावे हैं दुतरफ़ा बहुत आदमी-
काम आये केलण जी बैर लेकर फ़तहमंद हो नागोर लूट पीछे आते थे कि मुलतान से फ़ौज आई
जब केलण जी ने राठोडों के कहने से सुल्ह करके फ़ौज शाही को शिकस्त दी और एक ज़ाना व-
तो पांच घोडा लेकर फेर तिरा व चमरहेरे को भी साथ ले पूगल आये यह दोनों मुलतान में नवाब के क
हने से मुसलमान हुए थे यहां न ठहर सके भटनेर जाकर अभोरिया भाटीयां सामिल हुए तिराके
बेटे मुंमण के मुमाणी चमरहेरे के हमीरोत कहीजे केलण जी के इकनासके की खूंटी में देरावर में भा
लक दईया अजा न प्रधान पाहु भाटी के दरम्यान नाइत्तफ़ाक़ी हुई और दईया विक्रमपुर का
विलले गया केलण जी ने आदमी भेजा तो दईया बोला कि दूसरा धार जो जब भाटी ने मौक़ा पाकर
केलण जी को लिखा कि महा सुद १४ दईया तो हैडाउ की जान जावेगे आप आवें तो मैं गढ दे दूंगा
चुनान्चे पांचसो ओठीओं से जाकर गढ में दाख़िल हुए दईया आया कि गढ से निकल जावो ॥
जवाब दिया कि आप ही दूसरा धार जो फेर कुंवर रामलको गढ सौंप कर आप मरोठ आस पीछे मात
पडोसी भोमीये तावेदार हुए और गढ तानरणाव बिझुरोट में भी अमल दख़ल किया फेर केलण
जी शिकार के बहाने सिंध में उतर नदी के पार जा रहे वहां ख़ुवाब में एक देव के कहने से दोनो नदी
के बीच गढ किलोहर जो मुलतान से ३२ कोस पर कड़े केहरका बनाया हुआ मिसमार था सं. १५४ ऐ
बनाना शुरू किया पडोस में एक तरफ़ कौम समा का राज था कोट करने से मना करने लगा जब
केलण जी ने जाम दूसमाचल खां पास गए उनकी बेटी से आपकी सगाई करी टीका घोडे ले
कर पीछे आए तब दूसरे पडोसी लांगाहां ने मना किया तो ख़याल ही नहीं किया लांगाहां ने मुलतान
के शाह फ़तह अली लांगाह का आदमी भेजाया कि गढ मत करो केलण जी जवाब दीया कि यहां रहूं
गा तो बंदगी करूंगा यह ज़मीन भोमीयों ने मुझको दी है चुनान्चे गढ माथेला बसुंधरा वाहण भी
अपने क़ब्ज़े में लेकर नदी बिहाय सींध क़ायम करी याने दूसरी नदी का पेला पार दूसरों का एवकार-

मुल्क आताद कीया ॥ बाद पडोसी कौम जइया वरवोरवर वलांगाह वगैरे शंका मानते रहे फेर इसमा-
यलखां की बेटी परन्या आपसमें वडा हेत बांधा इसी अरसेमें कुराई अमीरखांन बलोचने नजदीक
में गढ बनाना चाहा केलराजीने हस्चंद मनाकीया परंतु कुराईयोने गाल मारा कि जमीन तलवारों
से है जब केलराजी समासे मदद लेकर पांच हजार फौजसे चढ गये कुराई भी तीन हजार फौज
से मुकाबले को आये बहुत भारी जुद्ध हुआ २३५ बलोचों साथ अमीरखांको बहिश्त भेजा १०० आ-
दीव समा काम आये पर वाडो जीत बहुत सा बित्त लीया और गढ सिसमार कर कुराईयों को ता बे-
किया फतह मंद हो पीछे फिरो हर आये ॥ जाम इसमाईलखां फोत हुआ दोनो बेटे राजकी
तकरारसे लड मरे केलराजी मातमी को गये सासू के कहने से मुल्क के बंदो वस्त को एक हजार फौ-
ज रखकर पोता सुजाहदखां जो १० बरस का था साथ लाये सो वडा हुआ जब राज सौंपा परंतु बंदो
बस्त अपना बना रखा फेर यह भी मर गया तो समाका राज भीयाने दे इसमाइलखां भय मुल्क कब-
जे में रहा मुलतान के शाह से दोस्ती रही और मुल्क सिंधमें अच्छी हकूमत जमाई फेर गढ भटनेर
लेकर किसी कदर फरगने हंशार में भी दंका बजाया और इरादा आगे कोथा लेकिन महारावलकेहर
जीके वैकुंठ वास होने और छोटा भाई लखमरा राज बैठने की खबर लगतां ही जेसलमेर आए
लखमराके मोतीयों का तिलक करके कदमबोसी हासिल करी और जो जो गढ व मुल्क फतह कि-
या था नजर किया लखमराजीने मेहरबानी व कदरदानी से मुनासिब जान कर एक गढ देरावर
तो खालसे रखा बाकी सब बखश दीया और राव का खिताब व नगारा छडी वगैरे लवाजमा अता
फरमाया कई महीना यहां रहे फेर पीछा जाकर आपतो गढ सुमराबाहरा में रहे और कुंवार थिरे-व
रखुमाराजो पठानी से पैदा हुए थे गढ भटनेर दीया सो भाटी मुसलमान हैं कई पुस्तों तक तो ताबेदा-
रीमें रहे फेर ही अरजी नजराना भेजता था बाद बीकानेर का दखल होगया ॥
तथा कुंवर रणमल को मरोटमें गादी बैठाकर सब मुल्क सौंपा चाचा वगैरे को दूसरे कोटों में रखे
केलराजीने फेर ही थोडा सा मुल्क दबाया और ६२ बरसकी उम्मर पाकर स्वर्गधाम पधारे थोडे
ही अरसेमें रणमल को बीमारी सीतांग की हुई सो विक्रमपुर आकर फोत हुआ जब सबने सलाह-

करके चान्चे कोगादी का मालिक किया इस अरसेमें बादशाह महम्मदशाहका वज़ीर कालू-मुलतानका बादशाह हुआ जब लांगाहा ने अर्ज़ करी कि भाटीयोंने बहुतसा मुल्क हमारा व सरकारी दबा लीयाहै सुनतेही हुकम दीया कितुम चढजावो औरमुल्क छीनलो सुनाचे लांगाह अमीरखां चढआया सो चाचेजी से हार कर पीछा गया जब खुदवज़ीर कालु मय लांगाह अमीर खांन २९ हज़ार फौज मुगल पठांण बंगाल वग़ैरे लेकर आये चाचाजीने भीजोईयां पाहु जैतुंग वग़ैरे २० हज़ार फौज से दुनीयापुर में मुकावला कीया अव्वल युद्ध में हज़ारां आदमीं दुतरफा-व अमीरखां काम आये और कालु भाग गया चाचोजी परवाडो जीत दुनीयापुरमें कुंवर वरसल को बैठाय आप पीछा आकर इत्तलाई अर्ज़ी जैसलमेर भेजी जब महारावल लखमण ने घोडा व तलवार कटार खंजर पारचे शिरोपाव भेजा ॥ फेर रहना सुमारखांकीबेटी सोनलपरण्या-तथा कुंवर ७ १ कुंभा रोहेता को हीयोंका ॥ २ वरसल । ३ । मेहेरावरा । ४ भीमदे । नवासे । सोढां के ॥ ५ रता । ६ । रणधीर । भारोज चौहानों के ॥ ७ । गजसिंह । रोहलीसे हुआ ॥ केलणजीके राठोडोसे । सुलह हुई जिससे अके को नथुनेमारा दोहा

केलचवंडा मारीया सो आदु आखारा ॥ नथु अकामारीया सो सिकावगारा ॥ १॥

अब अके कादेर कोई लेनहींसका क्योंकि सुलहमें सब शामिल रखेगयेथे ॥

केलणजीके कुंवर रूपे का घोडा चराई पर जोइयां पासथा सो मौज़े कबुलेके भईया रुके दुली थिरपाल मेहपालोत च्यार पंडवोंको मारकर लेगया जब चाचेजीने थिरपाल को बाहिरूप पहुंचाय बहुत बिचलेकर मांगलोंकादेदीया ॥ फेर लांगाहांके वीहा देने से ग्रांसवेग पोहडोलगा हज़ार फौज लाकर दुनीयापुर का थित्त लीया चाचाजीको पहिलेही खबर लगीथी सो चार कोसपर जगअज़ीम हुई दुतरफा आदमी बहुत कटे आखर ग्रांसवेगको चाचाजीने थमपुर भेजकर अपना थित्त छुडाया और दुशमनों का घोडा शस्त्र लेकर साथीयोंको बखशा प्रवाडो जीत पीछा पधारे । बाद चाचेजी के बीमारीला इलाज हुई जब कुंवरों व प्रधानोंको वसीयत नसीहत करके जुद्ध में मरने की नीयत से मुलतान से कालु को मय फौज बुलाकर जरीदा मुकावलेको गया ७००

रजपूतरेहीकासंकल्पकरकेसाथथेरुनीयासुरसेदोकोसपरजुद्धमेंस्वर्गदाखीहुआ॥ ४ गद्द मेथेला मुंमगाबाहुया किशोहर अटनेर हुआ ॥

श्री गणेशायनमः

हरिओम अथ कीर्तलिछमीरो सम्वाद लिष्यते

दोहा श्रीलंबोदर हुय सुप्रसन्न दीजेउक्त दयाल ।कीरतलिछमीरोकह्यो वरगासंवाद वि-शाला॥१॥ एकदिवस हुयएकठी कीर्तलछकुंवर ।अंगवडाई आपरी आपोआपउचार॥२॥ कीरतना लिछमीकह्यो जबरबचनकरजोर ।मुझसरीखी जगतमें आछीवसतनओर॥३॥ उचरीकीरतलछसां बधताबोलसबोल ।बड पड महरोवखता ताहरोकामों तोल॥४॥ लछकह्योइणलोकमें हुईज वडी हमार । वडोनकोरत हुवडी आदिअनादिउचार॥५॥ लछकह्योकीरतमलड जोतुंन्याबमगजाय । आछाजहांरा अंगसुं सपारिसे सोय॥ ६ ॥ म्हारां अंगांसुं सुरे सोभरह्योसंसार । जिकेगिणाउं जुजुवा सुणाकीरतसुविचार॥७॥ **छप्पै** सपतधातसोवर्न आदइणलोक अपंपर । चुंनीकणीचुरणीर हीरमाणकजवाहर लाल रत्न लसणीया महामुगता फूलमाला । पीरोजापरचंड पना पुखराज प्रवाला ॥ मर कत फटकवे हुयमिणा सीमंतक वासव अरूप । महरा अंग मायाकहै जिकांहुंत सोभैजगत॥ ८॥ **दोहा** उज्जलमहल भड हस्त अस दलबल अमलदिसंत ।जलहल रूपसोभै जिका वयमो सकलवसंत॥ ९॥ नैकहीलीधाना हुए अंग लिछमी दूनराय । म्हारांअंगां बिणमुरे थिरसोभा न्हुयाय ॥१०॥ ज्यांसुं सोभा जगतरी जुगजुगनामनजाय ।वैमाहरा अंग आपनें आया कहुं समझाय॥११॥ **छप्पै** अनवाउक्त अनूप जुगत कविता रसजाणा अमल ग्रंथ उजला पिंगल छंद प्रमांणा कायवगीत कबित्त दूहा गाहानी सांणी कहैवातां कहूक वडाकविमुखां वगांणी लोकीकवाह भसव्दलरस कहै एमकीरतकंवर म्हारा-अंग मृतलोकमें अमनरखां राखेअम्मर ॥१२॥ वोकिणविधहैअखर- कारणकास्ज स्मरण

किम मायाहीरा मनभ सकलजीवतांमृत्कस्म वमतै नगर विसेख ग्रहसुनागगात्यांर आवेकारवार आस जांयनिरास त्रिकांरा स्त्रनहो गिरोत्याने सजन दुरजंगान्हीं माने रस्त संसार मांह जिरांसुंसदा माया हीज मोटी वस्त ॥१३॥ मोरासंत म्रत मोटी त्याकारणी कथावान हूंजकेईक केइक पिंडरा व्याकरणी जंत्री मंत्री जती कवराय वीकेईका रूकवंधस्तपूत औरहुनरी अनेकां । दोलतवंतरे द्वार गुमरजिनरपै गेला दुत रांरी आवजर्ड पांन दिनउगा प्हेला रावअरांक भलीकारा पलक रात दीहां पसत संसार मायजिरा सुंसदा मायाहीज मोटी वस्त ॥१४॥ **दोहा** मायातूं गोवांदरी निपस्बुरी नवनिध कीरत कहे सुणकानदे वरामजेरी विध १५ **छप्पै** कीरतहींरांकनें जिकामाया सुंजांणी साकारदूधसवाद स्वांनदीकारी समांणी उजलतर आचार जन्म चंडालीकूखमें स्वांतबूंद अतिसार पडी विखधरामुखमें गंनसदा भलोपण अरकजमें आवें किरा कारज अनें जांणवेगभमायाजिका कीरतई रापुरखांकने ॥१६॥ मोटी हीज इकमन षधरा सुगत्री व्रतधारी आछे कुल अस्तरी बिम्न बंधु हो कविभत्यारी ॥ गंगा जलरो कलसमां यमदरारो रवको, मुख फूदरामजार एककुष्टरो बबको एवाक असुध भोजन भिले दुन्चित हुवेमत देखने अंगलोभ मिल लिछमी दूसी कीरतहीरा पुरखांकने ॥१७॥ मोविणा तोसुंमिंता नेहराबैकेईकन तोरा कीरतबरा कहो जैमोटा कंजर न्हलेत्यांरोनांम प्रात दरसण न्हपेखै सोक देह सहरया सोदारा लगसू लिये जीवता कहे द्रगादृगजगत मुवांमिलेपरवीमडां कालंद्रसर्पहुइ नरकेईक दागलहु चलटकेकडां ॥१८॥ **दोहा** लिछमी बडा कुलाभदोय तोरा हुंनहु वांहा अफ़ कसभेलां जीवतां मेलेनरकमुवांह ॥१९॥ कीरतरासुणीयाकवरा धीठवचनमस्तु पेष । मायातोपिण गुमरमें बोलीबोलविसेष ॥२०॥ मायाहीणामानवी देसीकासुंदत्ता आगो चोपनिच्योवसी कासुं कहकीरत ॥२१॥ मायासुंचायासिलै आदरआपअपार । मायाहीणोभं नपने कोंनहीं करतार ॥२२॥ ऊंचाकुलरोपुरष अफ़ अलंगांपडीयोहोय । वप तूटे

मायाबिना कुसलनपुछेकोय ॥२३॥ तुळकुलमायावंतरे कारोतुभसीकोय । नरमास मिलनगरस सुखपुछसीस्हकोय ॥२४॥ विध विधहुं मोटीवले मोटा आदर मंन मोटाम् रणाकायरा पषमोटा परचंड ॥२५॥ परवांबडाई पांमजे पषा बधे कें पत मायाकहैं पषमाहरा कांनां सुणकीरत ॥२६॥ छप्पै पीहरषरसमंद जिको सारो जग जांणो । ललन्नलोक जीवन पितामो सकलपिछांणो अमलकांतऊजलो भांणऊचंद जिसडा भा ई रण प्रथवीऊपरा अवेंइमृत सदाई सुख सात देणहु आपसुज सरबबिधसारा सिरे सुभसुंराममायाकहे कीरततुंस्मबड करे ॥२७॥ दोहा कीरत कहे कहणो किसुं पष मोटासांप्रत । लिछमीनेलीधीभली परवां तणी परकत ॥२८॥ जलरी बेटी जिकरा सु- अंगथारेगत अह ऊंचमना नर छोडअरु नीचमना सुंनेह ॥२९॥ बंधवतो बहु रूपियो- रूपलिखेकर हाथ तुपरा नुगरी वहनतम जग मेंधवर वधजाय ॥३०॥ उजलगुण ज्यारा- अनंत परगट कहे सुरांण भाया सांभले माहरा परवगिर मेर प्रमांण ॥३१॥ छप्पै ताले मोटोलाल मालसुक्रतकमाई कीरत राजकुंवार जिकां हुत हुंजाई साचसील तप सत भ्रात मो पांचमो दांनभण दयाबहनदूसरी सर्वपुन्यरी सिरोमण सुणभेद पषमाहरांसदां बेरब डाई विसतरें तुंलछजि कुंण मोछ्तसुं किसी रीत स्मबडकरें ॥३२॥ दोहा माहरां भायां सुंकीयो जाझा हेत जणांह बेजगमें रहीया अमर सुण लिछमी अवणांह ॥३३॥ छप्पै साच हुतयुधिष्टर नांमनवखंडरहायो गेहरसीलगंगेव कपनधन२कहायो भागीर थतपकोरे ईलामंझ गंगा आणी राषे सतहरचंद धरामुंकीरजधाणी बलत्रिलोकदीया दान हरीतिणतलहथमंडे दीयो न्रपतमोरधज रवाग आधोतन खंडें पचासक्रोड जो जन प्रथी धरेंऊदक फासीधरण अमांमदांन दीयकरण अति छतअमर नांमाकरण ॥ ३४॥ दोहा कीरत तोदीनां करें देकीमो विणदांन बिणलछमी कीरत बधे जाणोस कलजहान ॥३५॥ दयाबहन दुनीयांनमें रखो चिरंजीरांम मनेंबधावे बासुदे का सुण थारो कांम ॥३६॥ जिकरा दयारो जोयतुं अबेंकेहुं इतहास । सोपालीराजासबर

नगवधीचेन्नसवास ॥ ३७ ॥ रुत्नमीपा सवत्याग कर रानडिगंम्बरीत नपकुन्नव नरेठोहुतो सरणोनृपसवरें ऊडेंनकंपत आयो पगोसुरवसुं आपीचो म्हांजोबनमें मंतीं भप्रसूत गसती वारछाडी विलपंती निरदोपचुंगाकनजनी कल्यो उगाकीरूपरउव पली रापीयांमने रहसी अमर रम्जा पन्नवटगवली ॥ ३९ ॥ जरनृपरो भयजांग क ल्योसींचांगाजोडकर त्रीयामुझप्रसवती धांमसूतीदेइडधार नयदिनहुवावितीत भषजा घोन्हभांमघां उगारापथवास्तें आजमोन्वडीघोहथां पलन्यार अमहां कीधा प्रभु मुपभयसवरनिनं मंडहां सवजीवआपउवारहो तन्यारजीवतनछंडहां ॥ ४० ॥

दोहा सरणागतीसुष्यारथी उभैरथा ऊरआंग निजतनकाटेसवरनृप संतोपे सींचाण ॥ ४१ ॥ कीधोविराकपोतनां जीवदांनदेजास इणविधकीरतऊजली प्रथमीकरी प्रकास ॥ ४२ ॥ सवरतणीउगादिनम्रीया सीकोडीन्हसंग कुगणी सोकीरतवरें ऊणहीतरे अभंग ॥ ४३ ॥ कीरतपुराणांकथकही श्रीयानहीविस- वास पडपणपूछणानांविहु म्हीतीब्रह्मापास ॥ ४४ ॥ कीरतलछ दोनोकह्यो अजजा करताआप म्हांमेंघटवधकुणमुदें निम्भैकरो निसाप ॥ ४५ ॥ वातसुणीब्रह्माकह्यो झगडाहुआजाझारह न्यावकरणनरलोकमध रचेपामेंराजाह ॥ ४६ ॥ इंद्रपुरीसुं अतिअधिक निगजेसांणातखत राजावांरोरूपहे मूलराजम्हपत ॥ ४७ ॥ माया- कीरतमो हुकम जेसांगोसतजोय न्यावकरेसीनरिंदरें रहजोराजीहोय ॥ ४८ ॥ की रतइंदोसाथकर मायाजेसलमेर ब्रह्मानेरेवचनसुं हितकरआईहेर ॥ ४९ ॥ कीरत लछ दोनुंकहो रावलन्नादमराव सगलोजाणीफेरसो नरइंदकीजेन्याव ५० जरपत कहेयोजदो श्रीयाकीरतसदाई वेहुवेंजगतवराव विहुवांवडीवडाई, विहुवेभारीवस्त अष्टसारीसिधसोहे नागअसुरसुरनरां मागवेहुवेमनमोहे कीरतदुतीभगतनवधाकही व्यासादिकसंतावचन संप्रदाउचायेचारसतकीरतप्यारी श्रीकृष्ण ५१ कह्योनृपव- लछकीत प्रगटमतावेदपुराणां वडभहरिनेवस्त जिकोसगलांसिरजांणां भयव

वल्लभ भागवंत सतभाषत सदाई भारवेजा भगतिमें नामलछमीरो नांई कीर्त दुतीभ क्त नवधा कही वासी जग संतांवचन संप्रदान्या ऊचारी सुलत कीरत प्यारी स्त्रीकृष्ण ५२ मोसु प्यारी महिपती कीरत कही किरा साख कीरत पवनि कहे किसन लिछमीपत कहे लारव ॥ ५३ ॥ सारवां श्रीमद भागवत श्रीहरिवचन सुजांरा ऊरा सगला जग ऊधरा - वेद व्यासरी वारा ॥ ५४ ॥ किसन पोढीया थांकनें ग्राह ग्रहो गजराज लिछमी सुतीमे लड्या कीरत हरे कान्ज ॥ ५५ ॥ राजहु कामे रुषमराी सोक्योंवीसरीयाह कीरतरै कीहिये किसन यालां हुय वरीयाह ॥ ५६ ॥ इरा कीरतरो आपसिर श्रोमोयो आसांरा कोरीनती क्रीत सुं मनमत धरो गुमान ॥ ५७ ॥ श्रीया भागवत सारव सुंरा मनरी छाड मिजाज - कीर्त्त पगलग कह्यो बोमो सुं सिरताज ॥ ५८ ॥ कीरत हुता हेत कर ऊधरीया दूरा - पार ग्रेहलोक परलोकवां सूधरीया संसार ॥ ५९ ॥ दोनुं लोक डुबोय दे लिछमी हेत हुवांह अपजस भेले जीवतां मेलेनरक मुवाह ॥ ६० ॥ ब्रह्म कह्यो श्रीहरिवचन वेदपुरा नविच्चार सान्चा मानव सोकरै कीरतरो इधकार ॥ ६१ ॥ वेकुण्डान्यारै होये लिछमीं सकलरवाय त्वकलि सोभा सिकारारी मनषन मन रवां माय ॥ ६२ ॥ तीनलोकरा नाथरें वलभघरणी विसेस सो कीरतसारा सिरै सदा कहत सुरसेस ॥ ६३ ॥ रीझावरा छपती यां तरकराछ्न विधतांम कीरतलछ संवाद कह सादुकवि सगरांम ॥ ६४ ॥ कीरत नेसा चीसरी सोराछीसुं बिसेष राजी हुई लिछमीरही सांचोन्याव संपेरव ॥ ६५ ॥ रावल राजामूधरज जादवगढजेसांरा ओवारां उपदेस सुं मै गुरा कीयो प्रमांरा ॥ ६६ ॥

इति श्री लिछमी कीरतरो संवाद संपूर्ण



ततम्मा नम्बर १ (रावलोत सरदार)

प्राज़रान सब ज़ोर इस तवारीख़ में छपा है- इसमें महारावल जसवंतसिंहजी तक के ख़ान्दान का ज़िक्र है मगर शजरा मज़कूर के छप जाने के पीछे मुसन्निफ़ किताब ने एक दूसरा शजरा हमारे पास भेजा है जिससे महारावल **सबलसिंहजी** याने जसवंतसिंहजी से दो पुश्त ऊपर तक का सिलसिले ख़ान्दानी अज़ल रवसूस **रावलोत** सरदारान पादवी-क़ाबिज़ देहात का हाल मालूम हो सक्ता है हम बख़ौफ़ तवालत तमाम शजरे को दुबारा नहीं छाप सक्ते लेकिन महारावल सबलसिंहजी व अमरसिंहजी व जसवंतसिंहजी व अखैसिंहजी की औलाद में देहात इलाके जैसलमेर पर जो पादवी सरदार रावलोत क़ाबिज़ हैं उनके नाम मय तफ़सील देहात जागीर सिलसिलेवार ज़ैल में लिखते हैं नाज़रीन तवारीख़ इस सिलसिले को भी शजरा नसब के साथ मिलाकर पढ़ें ॥

१ महारावल श्री सबलसिंहजी २ बांकीदास ३ चंद्रसेन ४ कल्यानमल ५ कीर्तिसिंह ६ खेतसिंह ७ जीवराज ८ कुं० मोतीसिंह , गाम पिथल

१ श्रीसबलसिंहजी २ रतनसिंह ३ किस्तसिंह ४ प्रतापसिंह ५ रामसिंह ६ अर्जुनसिंह ७ सरूपसिंह ८ बभूतसिंह ९ भैरवसिंह के गोद जीवराज का कुं० माधोसिंह था सो फ़ौत हुआ जब १० लालसिंह है गाम कानोध -

१ श्री अमरसिंहजी साहब के २ दीपजी ३ पदमसिंह ४ प्रथीराज ५ सवाईसिंह ६ बहादुरसिंह ७ चैनसिंह ८ सांनसिंह ९ बख़्तावरसिंह १० मोडसिंह , गाम बवाय तथा श्रीजी के दूजे कुं० . का भी इसी गांव में है

१ श्री अमरसिंहजी के २ जैसिंह ३ संगरामसिंह ४ सांवतसिंह ५ जालमसिंह ६ बिसनसिंह ७ सबलसिंह ८ धोंकलसिंह , गांम भोला

राघजी जीके कुं० म्होकमसिंहजीका भी इसी गाम में है
१ महारावलजी श्री जसवंतसिंहजीके २ कुं० जगतसिंहजी ३ जोरावरसिंह ४ किस्नसिंह
५ रुघनाथसिंह ६ रामसिंह ७ अमरसिंह ८ चमजी ९ धनजी गाम सतोय
१ भोजजी २ सरदारसिंह ३ भगवानसिंह के भगवानसिंहोत ४ सालमसिंह ५ वाघजी
६ भीमजी ७ अजीतसिंह ८ मोडजी गा० षारीया
१ मोजी २ सुरतानसिंह ३ जोरावरसिंजी ४ दुरजनसिंह ५ अबधूतसिंह ६ मुकनसिंह
७ करनसिंह ८ कुं० जुहारसिंह गाम भरडीये
१ श्रीअखैसिंहजी साहब २ पदमसिंह ३ बखतावरसिंह ४ तिलोकसिंह ५ रावलसिंह
६ कुं० मोतीसिंह गाम टोरा

नोट — बडीही खुशीकी बात है कि हिस्सा अव्वल तवारीख अर्थात इतिहास यादौ बन्श वालियान जेसलमेर परमेश्वरकी कृपासे यहां समापत होगया पूरा २ हाल और कुल इतिहास और हरएक महारावल साहबके जीवनचरित्रका कुल अहवाल लिखाजाता तो यह हिस्सा तीनगुना बढजाता परन्तु हमको मालूम हुआहै कि ग्रंथकारता निलोसरी ने भाटीयोंके इतिहासका मूल निकालकर खास २ बातें सिलसिलेवार इस इतिहासमें लिखी हैं तोभी यह ग्रंथ अपनी खूबीकी आपही साक्षी देता है क्योंकि ग्रंथकरताने मूल निकालने परभी मतलब हाथसे नहीं जाने दिया अब रियासत जेसलमेर (या मुल्क माड) का जुगराफिया शुरू होता है वह भी देखने योग्य है॥

मुहम्मद मुराद अली होशियार सम्पादिक राजपूताना गजट अजमेर

نوٹ ۔ الحمد للہ کہ حصہ تواریخ خاندان قوم یادون والیان جیسلمیر خدا کے فضل سے بخیر و عافیت تمام ہوا ۔ جو مسودہ مصنف کتاب ہذا نے پہلے پہل تیار کیا تھا اگر تمام و کمال شایع کیا جاتا ۔ تو تین گنی ضخامت اِس کتاب کی بڑھ جاتی ۔ لہذا احتیاط لائق تحریری سے تہیں مرتبہ اِسکو مختصر کیا ۔ اور باوجود اختصار کسی مطلب کو فوت نہیں ہونے دیا جس سے اونکی لیاقت و معلومات کا پورا ثبوت ملتا ہے اب دوسرا حصہ اِس تواریخ کا شروع کیا جاتا ہے جسمیں ریاست جیسلمیر (یا ملک ماندہ) کا جغرافیہ ہے ۔ یہ بھی قابل دید ہے ۔ بندہ محمد مراد علی ہوشیار ایڈیٹر راجپوتانہ گزٹ اجمیر ۔

हिस्सेः दोयम

जुग़राफ़ियामुल्कमाड़

(रियासत जैसलमेर)

दफ़े ६ शास्त्र पुराणादिक में प्रथ्वी ५० कोर योजन लिखी है सो याती १४ हीभवन और नवखंड सर्व सूर्य के नीचे की होगी और जो मृत्युलोक मे ७ द्वीप ७ ही समुद्र के घेरे मे २५ व लोकालोक पर्यंत ५० होगा तो किसी कलप में थी सो श्रीमद वल्लभाचार्यजी ने भी आज्ञा करी है त्युंही अनुमान होता है कि अब ५ खंडों में अमरीका जो नवी दुनिया थोडे ही वर्षों से ज़ाहर हुवा है तो दूसरे भी दोय खंड याने द्वीप होंगे ॥ तथा हर खंड में ज़मीन कम ज़ीयादे है सो ज़मीन का सुकडना व जल मग्न होना भी सम्भव है कि जो मुल्क व गाम अगले ग्रंथ जित्ने अब नहीं और बहुत जगह शहर वगेरे ज़मीन पर जल फिर गया ऐसी कई दलीले हैं ॥ खैर क्यों ही हो यहां तो पांच खंडों में ज़मीन व राजधानी व धर्म व आदमी जो सन १८७७ ईस्वी में मौजूद थे सो लिखे गये ॥

नम्बर	नाम खंड	मील मुरब्बा व धर्म: ईसाई	यवन	बौद्ध	हिंदू	नाम राजधानी व तादाद मील मुरब्बा ज़मीन
१	योरप में १६ राज	३४१००००	१२०००००	५	३५००००००	१ इंगलस्तान २ फ्रांस ३ रूस ४ हालेंड ५ विलज्म ६ जर्मन ७ आस्ट्रीया ८ ईटैली ९ स्वीटलेनड १० इसपीन ११ पोरटुगाल १२ डैनमार्क १३ सुइडन १४ नोरवी १५ यूनान = १६ तुरकी रूम मुसल्मान पास ज़मीन दो लाख मधे ३ सूब्हास्ने ७७ रूस मे मिलने से १० हज़ार कम हुई बाकी सब ईसाई
२	एशिया में	३३५०००	१८२५५०००	३३५००००	२१५०००००	(बौधि) १ हिन्दोस्तान १६ लाख में २ अंगरेजी ६ दूजे रईस १ स्वाधीन राजा - २ चीन ५५ लाख । ३ जापान दो लाख ७ हज़ार ४ दूसरे राज छः लाख तयालीस हज़ार में लंका ब्रह्मा कोचीन मलाका

						तातार वगैरह (यवन) १ तुरकी रूम - २ ईरान - ३ बलोचस्तान - ४ अफगानस्तान १४५००००० ५००००० १५०००० २००००० - ५ षेवा कोकन तुखारा षान वगैरे - ५००००० (ईसाई) १ रूस ५६ लाख - २ दूसरे रापू ८ लाख ५० हज़ार
३	आफ्रीका	१००००००	११००००००	×	१२००००००	१ अबासीनीया २ गीनी - ३ सीनगीमीया - ४ केप ५ कालुनी ६ नटाल- अलगेरीया ईसाई बाकी सब यवन -
४	ओसीया	१२०००००	१८०००००	१००००००	४००००००	
५	अम्रीका	१५००००००	×	×	१५००००००	
कुलजोड़						ईसाई २८२००००० यवन १५७००००० बौध ८३००००० कुल ५२४००००००

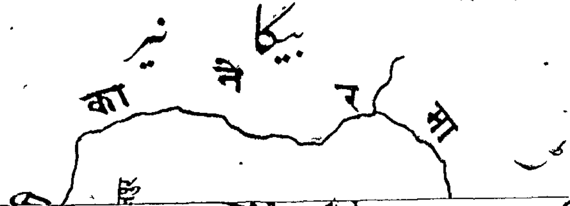
तथा कुल मनुष्य ० सन ७७ में १ अडब ※ ३२ कोट जो ७ वर्ष में ११ कोट बधने से ये फेर बधे हैं सो ५।६ वर्ष पहिले १ अडब ६२ क्रोड अखबारों में लिखे थे अब मर्दुमशुमारी होने से ही मालूम होगा ॥

और इस जम्बुद्वीप भर्तखंड के पश्चम मुल्क माड रियासत जेसलमेर जो यदुवंशी राजपूत कौम भाटी का राज है जिसका हाल जुगराफिया में खुलासा लिखा जाता है ॥

※ [illegible]

पूरब پورب

मुतअल्लिके सफ़ा १२७ नकशा इलाके जात रियासत जैसलमेर याने २२ ही परगनों का - अंदाज़न बनाया गया है - तथा नाम परगने का १ जैसलमेर से २२ लाठी तक - नम्बर य१ हर्फ़ के अदद से रक्खा है क्योंकि ज़्यादे हरफ़ लिखने की गुंजाइश - नहीं और पड़ोसी इलाकों के नाम नक़्शे के बाहर जहां जहां जो है लि - खा गया





पच्छिम

दफ़े १० देबाचा याने सम्भोता

इसवक्त यह मुल्क कुल २२ परगनों मे बटा हुआहै तफ़सील नक्शे मे अवल नाम परगने का जो जैसलमेर शहर से दूरकोस व दिस फेर गामका नम्बर जो उस परगने मे वस्ताहै सीगे की अलामत अठानी की ० विंदी सूने गामकी ✕ चौकडी जो गाम नहीं होसका या होकर वीरान होगया की है फेर गामका नाम तथा खालसे या जागीर या भोमीया या पटेया सासरा डासरा है तथा संवत लिखा सो नवा सवत १९०२ से पिछला है और नही सो सूना फेर गमम को दूरी व दिस परगने याने कोट से और टानी की दूरी व दिस उस गाम से कि जिसकी सीव ने टानी है फेर फ़सल १ या दो जिसमें भी नवी हुई सो आक नीचे लिखे है ॥ फेर तादाद नीवांण कूवा पका कचा व बेरीयां पकी कची व तलाब पको जिसमे पानी कम होने से ऊपर है और कची ने काम और नचे कुवों का आंक भी नीचे लिखा है फेर मर्दमशुमारी - व घर घरों की तादाद जो कि मनुष्यों की सं० १९२७ मुजब है सो गामों वालों ने कम ही लिखाया - पीछे आये सो ज्यादे है ॥ सिवाय इसके कैफियत मे हाल थोड़ा सा लिखा गया है तदा गांम के मंदर विष्णु व शिव व जैन व देवी का है खाने मे तादाद लिखी है ॥ और जब से बाहड मेर टंटा और कच्छ धाडा न रहने व अमन होने से हकूमत मे ज्मीयत बहुत ही थाम है ज्यादे काम के लिये यहां से सवार व किसी वक्त गामों के खेडु भी बुलाये जाते है ॥ तथा खास शहर के अंदर व बाहर बडे मंदिर विष्णु शिव जैन देवी मतरूआ जो है देखने लायक मकानात में लिखे हैं और छोटे २ हैं सो कहां तक लिखे जावे क्योंकि गढ व शहर के मोहल्ला वगैरा मे १ से १० तक मंदर बयान हैं और इसी शहर से बाहर चोतरे भैरव जोगनी पितर प्रेत पीरवग़ैरे के बहुत हैं ॥

दफ़े ११ गढ व शहर में पका कुंवा जो गहरा फूट दो ढाई सौ हैं पानी षारा था सं० १९१९ से कोई मीठा हुआ ब तफ़सील जैल

गढ में १ जेसलु मीठा २ रागीसर ३ हरजालु निकम्मा है ४ सुना पानी मीठा पर भारी है

गाड़खिलेमें १ रामदेसर २ लखमणासर उर्फ खुरीवाला

शहरमें १ बावड़ी तीन चार थी अबदोहै पानी मीठा मांसाक चौक में २ रामसर चौतीणा मंदरों में ३ चुवानसर पु० २५ मीठा सींपायां में दोतीरा ४ चैनपुरे में ठा० राजसीके सरीसिंहजीने सं १९२५ में बणाया दोलावा

शहरसे बाहर १ महाजनसर चोलावा पश्चिम दरवाजे पास २ सतीकदेसर चौलावा दरवाजे से दषरा निकम्मा ३ खाईरीबेरी ईसान प्रोलसे पां १०० । ४ सुजानपुरीका बेरा पु १० मीठा पर पानी कम यहां बेरीयांथी सो सुकगई

इतना कुवां अब नहीं रहा गढमें १ गुसाईसर २ कोरडीवाला गाडखिले में - १ बारीया जहां जेलखाना सं० ७३ में हुआ १ कारखाने में १ गुलासतला म्हेतेजी हुराया १ बंधारीयां में म्हेतेजी की पगवा नहीं हुई ॥

दफै १३ नकशा खास शहर जैसलमेर व कुल परगनात व देहात व वैरान मसपकाहानियों जो बारे ही पुनम बसे है वगैरे हालात का -

[illegible]	नाम गाम वर खालसे तथा जागीर या भोमीया पटे या सांसन डोसन तथा संबत नवे का	कोस दिसा सहर से	आबाद वा वेरान	तादाद जीवान पकी			तादाद मर्दुमशुमारी सं० १९२७ मुजब । घर । मनुष्य	तादाद मंदर शिव या जैन या देवी याने जिसमत का है	कैफियत
				कुवां	बेरा बावडी	तलाई			
१	खास शहर जैसलमेर			१२१/२१	/८०	१५१२० ५१९	३४०४ १२०९५		
२	अमर सागर खालसे	१ पश्चि:	वास						गांवमें पुस्करनी ब्रा० व कलाव माली रहते है केडू का खेल कलां नुं बगसाउ छे

३	वाडी ७वास से॰	२ व॰	से॰						वास: लोला: वीका: वदूरीन: धर्मो: - वका: मादा: मदा: मादु नुद्रवा से सहा में आरहेथे ज्हां रालीपाड़ी है फेर कावाव मालीयां को यहां वसायेवहरिनको शहरमें आ का रात कोयहां रहते॥
४	किसनधार से॰	१ ई॰	२						माली वाडीरावपोकनीया रहेहै-
५	रूल्यांरा धाट स १९०८	५ ई॰	१ १	 २।	 ।।	।१			फूटकर लोग वस्ते है
६	सडीया पट	३ पूर्व	१	०	०	।२			सिपाई खंधारी
७	दरवारीराणाम से॰	३ पूर्व	१	०	०	।३			हजूरी गैले रहतेहे
८	लोगा २६ स॰	५ आ॰	२	०	०	५।			रांगा जी मोसीसोदणो जोसहारे- तालकेछे
९	रामसर सं॰१३ से॰	३ द॰	 १	०	०	० ५।			हजूरी गुणेसदाराम जी दासांणीनुसांव मूंदडीकीमें षेत दीना
१०	धजवा स	३ द॰	१	०	।।	।१।			श्रीचुधसिंहजीरे धाभाईउफे धजवा- रामचंद वसाया
११	जीसाई से॰	२ नै॰	१	।।	०	२।४			हजूरी नैणसी भारानुं श्री अभेसिंहजी खास दिया
१२	मूलराजसागम खा॰	२ प॰	वाग						गावमें श्रो॰ जगांणी वमाली रहतेहैं कुरूकजमीन जगांणी यानुं वगसाउ
८	रामकुंवांका लिकाना	४ दा॰	२	कुडववाहला					महता व साधु रहे हैं पगवाव बुरी थोडी है

(क) परगने जैसलमेर

यह परगाना सं० १९४१ मिगशरबदी १ से नया किया अभी कोई जगह कचहरी की नहीं है जैसलमेर से दो हाकम मुं० बिशनसिं व भंडड रामकोउ हास मान्न गावों में दौरा करके कार वाई करते हैं ॥ सरकारी घोडे व फुरकार सवार हैं सो भी इन के तअल्लुक रहे तो बहुत से काम आसानी से होंगे ॥

१	रूपसी भोमीया	५ वा०१	२	०	३	३	९५ ३५१	१ वि० १ दे०	भोमीया रूपसी है आद्रे की ज़मीन में - यह गाजवश अररद्ये की ज़मीन पालसे पलीवालां को दी ॥
२	तेजू भो०	८ से०	२	०	७	१	११ ३८	०	भो० तेजू ॥
३	आसासर ख़ा०	८ बा०	१	०	१०	३	४२ १९१	०	ज़मीदार सूथार घरटीयों घडे है भा सासर तलाव है ॥
४	मोकल भो०	९ से०	१	१ १	८	४	५८ २४५	०	भोमीयां टावरी की ज़मीन में मोकल बसे फेर दुकडे की ज़मीन श्री अखैसिंहजी दी वास ७ मधे ३ है १९४४ में कुंवावीया जद साल्हु से सीवानकली
५	लांगोला तीन वास ख़ा०	७ से०	२	०	५	५	४८ २१८	१ वि० १ म०	ज० पली वाल कोला पीया कूंभा सधा - वीमें ने तलाई व वीरमाणी गाम जुदा कीया - लांगोला पडीन राश्रीतेजसिंघजी को सं० ९ से पटे है
६	सेलत भो०	१० वा०२	१	०	५	३	२३ १००	०	भो० पुंवार उर्फ सेलत
७	बरमसर से०	९ उ०व	२	०	१४	३	८८ २९१	१ जो० १ दे०	भो० सीहड.
८	हड़ीया पहोड ख़ा०	६ से०	२			१	४१ १४८	०	पानी के दूर हसे हड़िया वरजपूत पहोड जिससे सहूया पहोड सं: १९ २५ गाम पालसे किया कि यहां रहे सो अरसात हूं पी भरे ॥
	बेलदार से०						५० २६२	०	खानाबदोश है तालाब बेलासर पास खे ती करे है

सं.	नाम	३	४	५	६	७	८	९	विवरण
॰	ढंढ स	६ उ	१						भो॰ ढंढ जमीनकारा हुसभूप हुई ढंढ पहोडे जा रहा लाग टीरा को मुदत सेनकी है आदस हुके भाडा सायणो की नोकरी कोरहो है ॥
॰	जूणारी ए	७ उ॰ई	१					॰	सेन वाल सूंणव नात सो जूणारी गामहै मे चवान गांम पहोडे जा रहा
९	हवा खा॰	७ उ	२	१	२	३	१४ ७॰		जा॰ पलीवाल म्हेता गुणेशदास उदैपुरवा लो दोडोड गयापीछे खालसे हुआ सं॰१९०४
१॰	घडीपा से॰	७ ई॰	२		॰		१२ ४८		सं॰ सं॰१९०५
॰	रांगा रुं॰	७ ७				११	॰	०	पलीवालथा सं॰४२में ढालथीया भाटीकोरहा है सो जमीचा से आबाद लिखीजसी ॥
॰	टेईपा उर्फ जोसी परे	६ उ						॰	खडीन टेईपा पर जोसी साचोराथासो सं॰ १९१६ में जुद्रके जा रहा
११	कांणोध जागीर	१॰ उ॰ई	२	॰	१२	१	५८ ९९६		भो॰ देवडा पा राज श्री रतनसिंहजी के रहते सं दसीयाने जागीर हुआ नमकवास खालसे है
१२	कांणोध नीरमाणी सं॰१९१२ भो॰	११ स	२	॰	३	१	३२ १५१	॰	देवडा कु॰ राज श्री वेरीसालजी की पाघ बांध न्यारो वास किया
१३	जेसूरांणा दोवास खा॰	९ ई	१	२ १	॰	६	२८७ १११		जमी॰ पलीवालथा कुवा १ मधे ९ पूणिये डाहे सांने नरे नसे ठाकरो के पटे था पलीवाल जसु बारोने बसाया ॥
१	भोजासर सं॰२० भो॰	३ अ	१			३		०	जेसूणो के पलेवाडो का तलाव व थोडो सीव- रांड धरा चैनजीरो को वास सीव १ कुवा यानजी रांको बरवसा -
१४	चारदू से॰	७ उ॰ई	२	१	॰	१	२५ ९॰	०	भो॰ हमीर

१५	हमीर वढुवालो स	६ ई	१	१	२१	२	११६ ४८३	१ वि० १ म०	वढुवालो पार है भोमीया हमीर
१	गजीया से०	७ ई०उ	१	०	२		हमीरे	०	भाटीगाजी या कटनेसे वीरान खालसेथा राउ धरायानजीको दीया दानी सं० ३२ में हुई ॥
१६	रिद्दु प०	६ ई०पू०	१	१	०	१	१२ ४१	०	पलीवालां का गाम था सेठ सवाई रामजी को पटे संबत में हुआ मुसलमान रहे है ॥
१७	थईयात से०	५ पू०	१	१		२	२० ८६	०	चौहान है थईयाने तीसारखां नेकी नोकरी से अहीयात कहा ॥
१८	मोकलात सांसन	५ से०	२		०	१	११ ३६	०	ब्राह्मन पुस्करणाें आचारजी को श्रीसबलसिंहजी दीया ॥
१९	वासरापी लोहारी की प०	६ इ०पू०	२	४	७	८	२७ ११६		दोनों गाम पलीवालों का लाठी ठाः राजश्री ईसरसिंहजी को पेटे ॥
२०	से० फारसे की से०	से०	२	।	।	।	।		से०
१	भैंसडेच खा०	६ ६	१	०	१	११	०	०	भो० भैंसडेच सं० २० में करने से खालसे हुआ सं० ४१ से घटीवाल रहे है ॥
२१	भागूरो गाम भो०	७ पू०	१	०	५	१	२७ ११३	०	चांधन के जमोडों की ज़मीन में मुसलमान नायकों की वस्ती ॥
२२	भोजका सांस्न	१० से०	१ १	१	०	३	५० १४८	१ दे:	से० ठांनकी सकज कासीरीकाह(४) वाकीलागपुन्य सांस्न तो श्री दरबार से उदग दीया जहां तलब नहीं होवे और आसामी जबरन नहीं पकडी जावें और ठास्न गाम जो जागीरदार का दिया या रोलपोल चारां बस्ते है वहां तलब का जाना व आसामी को लाना हो सकता है ॥

२३	जांवध प॰	९॰ पू॰ ग्र	१-				१८ ७८	॰ त्रि १ दे	पलीवालोंकागाम भटडीयेकेरावलोंका कोपटे -
॰	जांवध	पू॰						॰	भी साहुकारमहेश्री सहरमेंआरहातना दुतीयो सीरमें
२४	वडोगांम खेप जा॰	८ पू॰	१	२	॰	३१६	१३२ ५९१	१ दे	रुपीया भाटीयां फेरवेहारीदासोतोंका वरवशा -
२५	आसायच नो॰	७ से॰	१	१	॰	२१२	३२ १२२	॰	आसायच सीसोदिया महारावलश्रीभीम सीधीयतसोधायसरवपावूजीकोथानवनाया
२६	जैरात् से॰	५ से॰	१ १	॰	८११	११२	३१ १११	॰	भाटीजैतसिंहोत
२७	डाभलो से॰	४ पू॰ ग्र	१ १	२	४	३१२	९६ ३८९	१ वि॰	भाटीथानर तथा झालाउर्फ रतोड॰
२८	आवाल से॰	६ से॰	१	॰	॰	२१३	४२ १६३	॰	चौहांवान,
२९	जोधा से॰	६ से॰	१	१	॰	११३	२९ १२९	१ म॰	से॰
॰	सांगीरणीं ख॰	८ पू॰	१	१	॰	११	॰	॰	भी अडगातूटा आकलमें वस्या सं॰ मिरवाल्सेहुआ फेरखेतत्थार्त काहे
३०	धनवो से॰	५ ग्र	२	२	५	६११	३४ १२६	३ वि॰ १ म॰	पलीवाल आगे रा॰ भगवानसिंहोतों के पटेथा
३१	कीता ख॰	७ से॰	१	१	३४	११२	३७ १७१	१ म॰	भीं कीतोसैंकई पलटा हुआ रा॰ भगवानं सिंहोत रांणावत गेनजी ११सं॰मेसोटे ऊमजीकोसं॰४१में खाल्सेहुआ -

०	सेरवा	से०					०	०	कीतोंका भाई इ० मारवाड़ थलमेंजारहे -
३३	नू: सां०	५ इ:	२		१ ३	३।१	३५ १११	१ वि ० म	गामपलीवालोंकासं० ३३ में भाटीवेरीसालतपुवालोंकोबरवसाथा छोडगया सो कविराजजीको दिया सं० ४४ में आगेवारू ठाकरों के पटेथा -
३३	पांचोडाई खा०	६ से०	१ १	१	३।३	२।१	३१ १३७	१ वि	पलीवाल
३४	ऊगव भो०	८ स०	१	१	१	१	४२ १७२	१ म	गोगली
०	से० से०	से		१	१	१	०	०	मुदतसेवीरानवपोलमेंगोगलीयों केकब्जे हैं भोमीयाभडगथा सुयारसीरवी -
३५	सोभ से०	१२ से०	१	४	०	२	२८ १३२	०	गोगली
३६	आसलोई से०	१० से०	१		१।३	१।३	२१ ८२	०	से०
३७	टंमां उर्फ़ कोरुवा भो०	११ से०	१ १	०	५।७	१	१० ४३	०	से० कोरुवावेरीयोंकापारहैसं० ४४ मेंदूजा पारहुआ पु० १२ पानीमीठाव बहुत भीपैरीज्मीं खाल: है ॥
३८	जानरो सां०	१२ इ: ने	१	०	१९	२	२७ १०८	१ मालण	मालणका भोपा तुदर उर्फ़ जागा मौसम्में मिचीयेआवेकीरखवालीकरे ॥
३९	सोडा भो०	९ इ	१ १	०	६	१।२	२७ १०८	०	गोगली
४०	कोरडी से०	८ इ: ने	२	२		१।२	८५ ३६९	१ वि १ म	सांवतसी

०	मदा से०	९ से०	१	०	०	१२	०	०	गोगलीकोनडीमेंरहे है
५१	पिथल जा०	८ ने	१ १	१	०	११२	२६ ११०	०	रावलोतसबलसिंहोत
५२	सेणग मो०	९ से०	१	०	१	२	२७ १०८	०	मूलपसा
५३	स्तानांपरणरा से०	७ रः	१ १	०	१	१११	११ ५६	०	सतासं०६ मे सेठहिम्मतरामजोगिरवीरखा थासं०१७ में कुडाया-
५४	गाएरो देवास रवा०	से०	१ १	०	१	२१६	२० ७२	० वि०	पलीवालनहींरहा १ मेंरजपूत वोरे वसे हैं
०	पीपरला से०	से०	२	१	०	१	०	०	पलीसानथासं०२३में गुरडेसदारामकोरहा नाम लिखा दियाथापर छोड गया-
५५	भोपा सां०	से०	१	१	०	१	३९ २७१	१ तेम डराय	श्रीतेमडरायका भोपा गोगली
०	नेहडिया सं०१९१९ खा०	से: रः	५ १	१	०	२११	०	० वि०	पलीवालया [illegible] घरपीयाडाईमेजा रहा-
०	लाड भो०	८ से०				१९	०	०	गोगली भोपागें रहे है
०	वाधणा से०	से०				११		०	सेजन
५६	भीयां से०	४ रः	१			११२		०	भीं

०	डोहरी पोलजीरी सं०१९ उदग	सै०	० २		० २	० २		०	व्यास पोलजी को डोहरी पुन्यार्थ दीवी पाबुराचान ॥
४८	आंयरा सै०	सै०	१	० १	१	१		०	व्यासों को सांसरा सिपाई रहे है
४९	हांसु सै०	सै०	१ १	०	१० १०	१		०	भो० हांसुलूदा सं०१६ में व्यास धनुजी-को सांसरा दिया
०	कारीयाप भो	सै:		०		११		०	भो: दास राठोड-था सो कदथा
०	वालेहार	सै०		०		११		०	भो: वालेहार हांसुमे रहे है
५१	कुलधर खा०	५ नेःप	२		३	३१२	३७ ११७	१ वि:	पलीवाल कुधरा वसाया व तलाव कुधरा सरदुराया पहिले दूसरी जगा गाम था सो वीरान हुआ
०	महाजल भाठेरा सं०१९१९ भो०	६ सै०	१	०	०	१	०	०	भो० महाजल कद्या महाजलार टीलाडा भर दिया ठारा वाकी है सूथार सीरवी भूतके डर से गांव कुलधरा में आ रहे है सो पीछे जा बसेंगे
०	मुरांपिया खा०	४ प:	२	०	०	१	०	०	पलीवाल था
५२	काहला सां०	५ प: ने	१ १	०	१४	२	४३ १५४	०	पुवार वारे में गुर आचारजीको दिया था उन्होंने गजे को संकल्प दिया ॥
०	ठावरी	४ सै०	१	०	०	१		०	ठावरी गाम कहाले वगैरे मे जा रहा
०	खडेन्र भो०	६ सै०	१	०	०	१		०	खडेन्र गांम मलखा वगैरे मे है टीलाडा-वगैरे भरे हैं ॥
५३	कनेल खा०	७ प	१	०	३	११३	५२ ५०७	०	भो० राठोड-सूना हुआ थाटेवाल रहे हैं मुमल की मेडी का निशान है जहां अमरकोट से महेंद्रा नित्य आता था ॥

२७	लुद्रवा प॰	५ रै॰	२	.	.		७७ २२५	१ जैन १ देवी	भारोजैतसिंहोतोंको जमीनपुरोहित कृपलालजीसी क्युं दिकसीवजोसी साचोरी करी थकी सेवगुभानचंद केपरे है ॥
॰	वाले खा॰	४ रू॰	२	०	०	९	०	०	वाले कट गया
॰	विस्तोई स्वरींगेरा से॰	७ २ १ वा॰ पा	२	०	०	११	०	०	विस्तोई गाम कानासर जारहे सं॰ १९०३ में
८	सेठको गाम	७ ७				०	०	०	पचोनोंको सेटका सरोदा था सन्दी नि रवावर वर सेरके पड़ने चोरकोंदन वगैरकरनेसे कीयाका गेरो कटगया

(ख) परगने देवी कोट

१	कोर देवीकोट	१२ पू॰ अ	१ १	५।	४।३०	५।०	१२२ ४८३	२ कि॰ १ जै॰ १ दे॰ १ मही	ज॰ पलीवाल। गांव से पश्चिम आपके राम सूरा पर आसराणी याने आसापुरा देवी का मंदिर रहे ज

हां आसराणी कोट था पीछे गांव के बीच गढ़ी बनाई सोही निशान रहा है फेर गांव से उत्तर कुवापर कोट ४ बुर्ज व १ दरवाजा व सालां पत्थर का व सफील मिट्टी की बनाया सं॰ १९१४ में कई ठिकाना पत्थर के हुए तलाव फूलांसर पर १ साल १ मढी व पूरब पच्छम घाट व चौतरा तथा उत्तर की तर्फ पक्का पत्थरों का घाट व चौकी ऊपर बंगला दीवान सालमचन्द जीका सं॰ २८ में नथमलजी ने बनाया। ।

गांव से पश्चिम वेरीयाका पार है मालीयों से बाडीयां कराई थीं ॥

हाकम प्रो॰ उदेभांण प्र॰ मेंघाने व सायर की चोकीयां कभी कठ २ रहे है ॥

१	भारी जैतसिं होनरी सं॰ २३	१॥ द॰ भै	१	.	.	.	.	०	हेमराज हठेसिंहोत बिजुपुरमें राम था जिससे कई खेत भोम सं॰ १९ दीया

२	पुंनासर प०	३ अं	१	।१	।२	१।	९ २८	०	भो· जसोडोंतो चारणाको उनपुरोहितो को दिया- इन से म्हेंता अजीतसिंहजी ने सं० २८ में मोल लिया
३	लख्मणा जा०	४ अ०	१	०	०	११।	२१ ८६	०	भो· जसोड· नूटा ने राजश्री अनाड़· सिंहजी- सहा को जागीर सं० में दीया
४	छोडीया भो	५ अ	१	१।	०	२।३	३० १०९	०	भो० जसोड सं० १९३९ में सीजी पांती म्हेरा जोतों को दी ॥
५	काराड़ा स	५ पू	१	१।	०	१।	२४ ११२	०	भो० जसोड वास ३ करणा बांजा वीका
६	लाला से०	७ पू	१	१।	०	२।१	२३ १२५	०	से० ठांगा टीलाड़ो काराडे· समूल है
	म्हेराजोलसं० १९०६ से०	६ से:	१	१।	०	।१	२२ ८१	०	जसोड· थलसे आय रासलो अचलो की ज़मीन में बसे -
	डांगरी जा०	८ अ	१	१। ।१	०	११३	२२७ १०१२	१ वि: १ म:	डांगरी कुंभारांकी वस्ती डांगरी में पलीवाल पनुध को धांमट वसे पीछे वडे गाम से भारी बेहारीदासो त हरीराम जी म्हेरेरा जाकर मरे वेटा नहारखां स्हसमल यहां रहे घोड़ा नज़र कर वसी लिखाया मारवाड लूटने से जोधपुर की फौज आई पेन्नालाष ने वर से षर्च देकर गढी व गां० बचालिया-
१	महेरेरी खा०	१० पू० अ	१	।२ ।१	०	१।	१४३ ५४६	१ वि	चारां म्हेरेरी तुलाई पै: गां० भो० पीधा जसोड· करने से खालसे है जमीन की पैदा पोल में भैसडे· वलेले तेहे चारां व डांगरी के रजपूत वगैरे रहते है कुवा नहीं सं० ४४ में श्री दरबार से नया सुरु कराया सो होने वाद रक मवंधेगी -
१०	ओलो जा०	१२ अ० पू	१ १	३। ३।	०	१२	१२४ ५२०	१ कि	रावलोत अमरसिंहोत कुवा नदी के नज़दीक कई हैं तथा होसके है पुर्स ७।८ बहुत। ज़राअत माली की है पर किरसा हो तो हज़ारो की पैदा होय -

११	वांगाग्डो भो०	१८ से०	१	।। ।।	० -	२।५	८१ २५०	०	भो०जसोड-आगला गाम सूना हुआ नवावसा - तला कु: वूरीघोडा स्कखांगासे पु १२ मीठा किरता जगदत्त कीगुनों हुहे सं.४५ में १कुवा मालीयां नेकीया ॥
१२	राजगढ जा०	१२ पू०	१	२। ।।	०	१८	६५ २९९	०	भो०जसोड कस्या जमीन भाटी वेहारीदासोत राजसिंह को व दोरर गांम वसा पानीपारा - मालू रूपा व हरसूरा दानीये रहते हैं ॥
१३	भैसड़ो भो०	१० से:	१	२।	०	३।८	१४४ ६६८	१ मं	बीसलपुरसे जसोड-परके आये भो० भैसडेन्चो कोमरकर का दिल हुप धनकेलालच तग करनेसे मटीके स्वांमी मरते आपसे गेहूं गुलवाड नहोकर वेरैही मुकगए
१४	वैतोराो सं०१९०९ से०	१२ ई०पू०	१	।।	०	१।२	२६ १३२	०	जसोड-काजे के है उमें जैसा सीरवी हो गामवसाचो कुवा वेतीराापुरं १६ पानी मीठा ॥
०	आवा	 से०	१	०	०	०	०	०	जसोड-आवी भैसडे में रहेहे ॥
०	जोगायत भो०	 से०	१	०	०	०	०	०	जसोड जोगायत भैसडेनेर हैहे जमीनसें आगे सगरांमसिंह तों को सीरवी कीया सं.४० में परर कम भरी नहीं है
१५	लखासर उर्फ मो डसीरोततो सं०१९ जा०	६ पू०ई०	१	० ।।	०	०	०	०	रासलांकी जमीन वेहारीदासोत लखजी केदेरे मोडभोलसी दरवा सेवसी लिखायतसा लचारकर गाम वसाया -
१६	मदासर भो०	९ ई०	३	।।	०	१।२	५३ १५५	१ मं	कंभारों वा गासंघा पो करणां के दु:रवसे जसोडकोमदद के लिये लेगये सो कजिये में मरा जसोड़ोंका गाम हुआ ॥
१७	नेडांन से०	१० ई०उ	१	२।	०	४।३	४७ २३१	१ मं	भो० जसोड-
१८	हुवाडो से०	८ उ०ई०	१	१।।	०	१।२	४३ १७६	१ मं	से० जसोड- उत्ता
१९	मूलांणो से०	५ उ	१	२।	०	१।१	६३ ३१२	०	से०

०	रासल	४	१		०	११	५८	०	तला १२ मरोहराबारेहा गामकेथे जिसमें ४
	से०	पू०					२९१		रास्ला भोपा सांवता भुलाने का
२१	अचल	५	१	११	०	१३	११	०	०
	से०	पू					५५		
२२	भोपा	३	१				१०	०	जसोड़ मेलेने गांरोज पडेहार हाजेकोजमीन दे
	सां०	से:					४०		सांवव समूल - ॥
२३	सांवत	से०	१	१	०	११	४१	०	ओ० जसोड़
	भो०						१३१		
×	मांडगा	४	१	०	०	१		०	मांडगों सं० १९०० में न्यारा गाम सा आया या फेर
	से०	पू०अ							सांवता में जा रहे नलो बूरी योडो है ॥
२४	ऊडो	४	१	१		१	४२	० वि:	जं पलीवाल एक तरफ़ सीव भाटी
	खा०	द:					१६९		की है ॥
२५	जिसू	३॥	१	१	०	१३		०	पलीवालोको गाम तेजमालोतोंके पटेथा वीरान ० में सेठ प्रतापचंदजी हिम्मतरामजी को पटे दिया
	पू०	द:							जबबस्या ॥
६	वारवरासी	५	१	१	१२	११	५५	१ म	सिरवे की भायप
	सां०	द नै					२४२		
७	सोमलआई	७	१				७२	१ वि	से०
	से०	से०					३१८	१ म	
८	काठोडो	से०	१	१	१५	११	३९	१ वि	भो० गाम
	खा०						१६९	१ म	र गोयल वीरान हुआ ॥
९	सीतोडाई	७	२	२	१	३१३	३१	० वि	जं पलीवाल श्री रांगावतजी साहिबाके पटेथा
	से०	नःट					१३६		

।	जारांकी तीन ढाणी ३ स०३९ से०	नै	१					०	सीलोड़ाई की सीव में ढांणियों हुई
३०	सिरवो सं०	३॥ से०	१	१	२०	१	३२ १२०	०	सांसण है इसमें सात गाम न्यारा बस्या रततुं पाट बारट
०	चीषा से:	से.					०	०	सिरवे की भायप
०	देसरलाई से:	से					०	०	से०
३१	रावतामोढा सं०१९१२ खा०	३ नै	१	१	०	३	३१ १७८	० वि	ज० पलीवाल था और पटे भारीजैतसिंहोतों के था वीरान होने से खालसे राईकां को बसाया ॥
०	वोला से०	१ प०		१	०	।१	०	०	पलीवालां का गाव जैतसिंहोतां के पटे था वीरान होने से खालसे हुआ ॥
३२	छोड़० जा०	२ से:	१	१	१७	३।७	४६ २१०	१म०	भो० देवड़ां था भारी गिरधरदासोतों को बसी हुआ ॥

(आ) परगना कोट फ़तहगढ़

गाव बीझोराई मे कोट बनतां सिरायां के कटक से फतह पाने से फतहगढ़ कहा ४ बुर्ज व सफ़ीले दाखी ईंटां का व दरवाज़ा ऊपर महल है कोट के अंदर कुवा १ पठसाल पलीवालां का है ॥

हा० कोठारी जूझारमल   प्र: में थांरो वसायर की चौकी मौज़े ओला मडाई कोठा चेसला में है ॥

१	बीझोराई खा०	१९ अ	१ १	७	८।५	८।९	१९६ ७४२	२कि २मू०	क़ौयर करर उर्फ़ बीझायासो नो कुवा बूका मारवाड में जारहे सं०१४८९ में जसूराणी को आ० देसराम सीमोणभा पलांको सीरवी का रहवास कीया जबसे ज० पलीवाल के भारी वेहारीदासोतां के पटे था सं०१९२२ में खालसे कीया ॥

२	कोडीयासर से	१॥ पू	१ १	२	२	२१५	५८ २२१	१ वि० १ म०	भाटी नारान दासोतों के पटेथा वो गाम वा तलव झ्लोडे गास सं० १३१३ में जं० पलीवाल हैं पहिले कुंभार थे कोडीया खाफरीया नामी चोर के तलाव पर गाव को डीयासर और सांच के मगरे में कोडीये का गुफा वरवा फरा सर तलाव है ॥
३	साढा सा०	२॥ से	१ १	२	३	३१२	४८ २११	१ वि	जं० पलीवाल वारह कासीदास को सं० में श्री मूलराज जी दीया ॥
४	साधु सां०	१। ग्र	१ १	१	२१	११४	४४ २००	१ दि	से० वीभो राई से न्यारा गांव सं० सं० १६४८ में सांधमगरे पास ब्रा० सांधु बसाया ॥
५	भीयासर से०	२ द	१	१	०	११८	५१ ३२१	१ वि० १ म०	से० जमीदार पलीवाल
६	रीवडी से०	२ ने	१ १	२३	१६	३२५	८७ ३६९	१ वि० १ अ०	से० कांरोधा रावलोतों के पटेथा सं० १३ में खालसे हुआ पलीवाल गाम भू हूका सोकल दे दावो बसाया पीछे पासरा पंकाछिर के सीरवी हुआ ॥
७	मंडाई से०	५ द	१ १	२३	८४	६३१	१३६ ५४	२ वि० २ म	से० माटी पन्चोंनोतां के पटेथा सं० १९१८ में खालसे किसाजीनें रीजमीन में माल पार मारा जाट था सं० १३३२ गा० कां गेडा के बागीये को साजीत सादूल वसा राजवसे पलीवाल हैं ॥
८	रावडी से०	६॥ से०	१ १	२	२	११३	०	० वि०	से० चेलकडावतों के पटेथा तलोरां वडो तलाई रावडी पा गाम है ॥
९	बोग्रेआई सां०	९ से०	१	१	५	११४	५२ ३६२	०	न्याश्या भीसरा
१०	नींवा भो०	७ द० ने	१	०	७	१५	३६ १५३	०	भो० जसोड उर्फ साजीला – साजीला वेरीयों के पार रहने से कहीजे और सातों गावों के नाम वसाने वालों के नाम से है
११	हरभा से०	५॥ ने	१	१९	७	११२	३६ १४७	०	से०

१२	नोगा से॰	नै॰९	१	१	०	।१२	२६ ११६	०	से॰
१३	नोरा से॰	४॥ नै	१	०	।२	।२	३ ६	०	से॰
१४	कोठानोपर खा॰	९ से॰	१	२।२	०	।९	३७ १५८	० वि	ज॰पलीवाल गोरोरीथांथा परेभारी संगमिहोनोंके याम॰ मे भोजराज वाघ जयोलकोवसीदियाथा सात गामो कीजमीन दवाने से स॰१६ मे खालसेकार सबजमे गाम गे हू वरखरा औरनथमल जोने सीव निकासी यादू गोव हके कोठा वकपा वहां कीजमीन देजपा नोत स देवला नकुर दखाते हे ॥
०	कोठागोयंद से						०	०	ज॰ पलीवालघा ॥
०	कोठानवां से॰						०	०	से॰
८	नोलिगेगाम से॰						१०	०	से॰ ।
०	आवा से:						०	०	भो॰ साजीता कर गया कई खेतपोलमे हरभाइ वाया बाकीको ठांसमूल हे ॥
०	मालरामड॰ से						०	४	भो॰ पुवारथका जव खालसे हुआ प॰जमीनपो लमे रेवडने दवाई हे ॥
१५	पाचा भो॰	।५ ह॰नै	१	०	३	।२	३ २१	०	भो॰ साजीता थका जव खालसे कर शालके भाड़ी यो कोनसी दियाथावह नहीं रह्या फेर साजीतो के सीरवी हीगोलजेकर मालीको स॰१९३५ मे किया
१६	कपूरीया से:	६ नै॰५	१ १	१	२७	२।३	९५ ३७६	०मठ	भो॰ साजीना

१७	चेलक जा०	९५ प०नै	१	१	१६	१३	५५ ३७६	१ म०	भारी दुआवत
१८	नगराज से:	११ से:	१	१	१४	१३	३६ १४७	०	भो० भराकमलकव्ज़ा सं० ७४ मेंखोमोंकोरहवासऔर सं० ९५ में जं झाहेबखानमिठुखां कोजागीरदीया
१९	जोधा भो०	१२ प	१	१२	१३	१८	१९ ८४		भो० भराकमल
२०	साला तथा [illegible] से०	१२ से:	१	[illegible]			४८ २०९	०	से० सालां का भराकमल दसेरेके भैसे पर लेकरताहै जिससेगंराटीलाडनआफ़ और भरां काठांराटी लाडन दूजा गांवां मुजब भरते हैं ॥
२१	[illegible] से:	११ प	१	१२	१३	१७	२८ १३२	०	से०
२२	वांसड़ी सां०	१२ फ०नै	१	१	०	०	४	०	भो० भराकमलकव्ज़ा सूना गाम श्री गजसिंह जी साहिबा बारट जोगराजको दीया ॥
२३	वंभारा भो०	१४	१	१२	०	०	५२ ४०२	०	भराकमलां १२ ही गामका तला है वस्ती मुसलमानमहोरसाह वगैरे है तथा भराकमलोंके गामोंका नामवसानेवालेकेनामसेहै कुवा १२ स्थेकईजारीहै पु० ४० मी०
२४	मूलीया सां०	१५ प	१	११	१०१२	११	३६ १४७	०	भो भराकमलकव्ज़ाश्री मूलेराजजीसाहिबानेदेघेकार भारांदको सं० [illegible] में लवापार फलीसेलेमें देरीया १२ ही गावाकी हैं ॥
२५	गेराज भो०	से०	१	१	१२	१३	३३ १२६	०	भो भराकमल ॥
२६	हापरा से०	से:	१	१२ १	१३	१७	१३ ६७	०	से० खेत चिडीयात में कुवा पुर्स १८ मी० सं० ४४ में हुआ
२७	झाकवाल से०	१२ से:	१	१२	१५०२	११०	३८ १७६	०	से०

०	चोथ से:							०	से०
०	जेसीग खा०						०	०	भो पाहु० सं० २८ सेखेतांकोमुफातारीलहैके व्याजमेलेगाकियावठांरगका ३०। भरताई है ॥
०	वाहु से०						५	०	से०
०	मांडा भो						०	०	भो० पाहु है परं रीलाडे न्हेतरे गांरगां वगेरे केव्हे रहुलवाकी है सो ऊपर नूलवहुसी
०	मंगोयालवो भो०						०	०	से०
२८	आसा से०						४ २०	०	भो० । भरााकमल
२९	धापा से०						७ ३४	०	भो भरााकमया सोनरहाजवसीहडोजमीनली
३०	वीझोतोपार से:	१५ प०है	१	•	०		६२ २६४	०	ऊपरके ४ ही गामोंवाले रहेहै ॥
३१	मेघा से	१२ केप	१ १	१	१२	१३	४३ १७१	०	भो पाहु वेरीयोंकापार सं० ४४ मेंनया हुआ पाहुवों के गामोंकानामवसानेवालेके नामसे है ॥
३२	रामा सां	९१ से:	१	१	७	१२	९२ ४०१	१मं०	वारट सिरवेकी भायप
०	सीहा भो०	१० से०	१	२॥	७	१५		०	भो सीहा गाम रामा मे रहे है
।	रव्यासो से०	•			१			०	से: वस्ती मुसलमान रावलीया बिजेरा वगेरे
३३	कोडा सां	४॥	१	१	१४	२	४८ २०१	०	वारट सिरवे की भायप

५६	सांगड़ से०	२	१	३	३	२।४	३११ ५४४	१वि: १करा	चारराा वीठु
३५	भेलासरी भो०	२	१	१।२	०	११६	४८ २२६	०	भो जसोड़ गाम छोडीयोंसे न्यारावासकियाकु वारांमसर पुर्स ८० पानी मीठा

(घ) परगनेखवा

१	कोरलवा खा०	२८ ह०अ	१	१।२	०	१।४	१५५९ ६३३	१वि: १दे: १म:	जमीदारकौम खोखरराठोड़हैं थानेकोरहनेको सं० १८५४मेकोरवनाया थासोगिराहुआहै अंदरदेवीकरखां कीरायकामंदरहे सदरमुकाम हाकमोहतमोलीलाल ॥
०	गोर्लीया से०	२ उ	१	०	०	०		०	जं खोखरखरवांमें रहेहै ॥
२	भाडली जा०	३ द	१	२।२	०	८।५	२७६ १२२१	१वि १म	भो खोखर पड़ोसियोंकेदुःखसे ठा० अर्जनसिंहको ज़मीनदेकर गाममेंन्यारीवस्तिकरी उन्होंने खिभरणीयारपार भाटी कानरोंको भाईव प्रधानलोजहां २१में व सायासो फ़रार हुआहै ॥
१	खिंवराणीयार	११ खै	१	११		१	.	०	
१	अर्जरणीवासी	३ आ	१					०	ठा० अर्जनसिंहजीकी खुदाई तलाईकानाम अर्जनवासीऊपरवानी भाडलीके प्रधानोंकीहै ॥
४	तसोपोसमो	४ ए	१	१।				०	पहिलेवस्तीथी

३	भाडलोस्येपर हेमा खा	३ द	१					०	ऊपर भाडलोसामल खिवीगई ज़मी हारखोपर
०	कोरपाज रो०		१						ञ खोपर भाडलोमें है हैं
४	कूंडो जा०	३ प०नै	१	११	०	११	४८ २६८	०	यह दोनो गाम भो० पोपरां सरवाप से हुस चारस० १९४ व २७ में गामजोगराजजीरे पडेदे सिंहान को वसी री वाकि पार षोभोगवसी तथा परेका गाम खोया खा पसे करवा लीयाथा ॥
५	नीवसी से०	४	१	११	०	११	३७ १७२	०	
६	जंझुनसापी जा०	७ प०नै	१	११	०	३१	१३९ ६२२	१ मं १ सि १ उपाक्षा	जंझोकोत राई जझनसालीपर ठा० कल्यारादासजी कांसाउसे आयवसी माडी
७	गूड़ड़ा ठांमरा	८ रो०	२	२१	पार सात नीवि का	११	९६ ४२६	०	जंझुनसपी ठा० नेचारण गूडडोंको वसायो
८	गेहूं जा०	१० प०	१ १	२१	पांण ५००				गेहूं पैदा होनेसे कुवा गेहूं परगांव हुआ पश्चिम पौन कोसपर सोसपासे वेरीयां हैं ॥
९	डाचरी सं०२१ से०	१० से०	१ १	० २१	से:	११		०	भो० पाहुया कोठोकी सदज़ ठा० वाक्जीरो होवसो रींव सं० १६ में वसाई डाचरीपर वस्ती मांडी ॥
१०	सोदात सं० ११ खा०	८ वा	१	०	१	११	२९ १२८		सलाई सोदात परआ गलीया कुटड़ोंको देस्ड़ो से न्यारा करके म्हेता सालमचंदजीने वसाया
११	जोगीदासकोगाम जा०	६ से०	१	११	०	१११	३८ १३८	०	खांपप्रथी राजोत भाटी जोगीदासने गाम वसाया
१२	गजसिंहरो गाम से०	७ से०	१	११	पार तुसी री	११	४७ २९८	०	भाटी दुजावत गजसिंह वसायो

१३	तेजमालोत से०	६ वा	१	१। ।१		२।३	१३६ ६०६	० मं०	गांमळांबंगासे भाटीपंचारोत तरेकांसाऊपर आरहेथे फेरउदेसिंहोतजंङ्गलनआली और तेजमालोतयहां बसे-
१४	वीरमांसी	५ ऊ० वा	१	१			३३ १३६	०	तेजमालो तोंकाप्रधानराहुड० व भराकमलरहतेहैं
१५	मोंदा से०	से:	१	२।		३।२	१५७ ६८३	१ दि: १ म:	जं० पलीवालथे फेररवांपतेजमालोतठा० दौलतसिंह जीकोवसी श्रीमूलराजजी साहबारीया ।। मारवाडमेंलूटकरने सेचोवावतबहादुरसिंहखोडा फौजलाया पाडीदिवेरो
१६	रगाचा से:	३ उ	१	२।	झरणा	३।५	१३४ ६२७	१ वि० १ म०	भो० पोषर रणाचोकल्यो वादसं० १८७१ में तेजमालोत ठा० सुवाईसिंहजीको वसी दियो-
१७	कोहरो खा०	२ ५	१ १	२।	०	०	३३ १३४	०	जं० खोखर तला वूरी योड़ा दूजा भी है
१८	देवड़ा जा०	८ ऊ० था	१	२।		१।३	२२३ ५१०	१ वि० १ म० १ वि०	भो० देवड़ो को गाम थो ठा० कल्याणदासजी कोवसी दियो फेरभीमजी रहा पर जमीन लीनों इंसेज्है ची

(८) परगने महाजलार

१	महाजलार खा०	३० ह० ने	१	१ २।	।१८	।१३	१३२ ५४०	१ म	जमीदार महाजल भाटीहैं सं० १८६२ में हीगलाजगढ़ गडी नायकोरखा भेके मातहेतथानारखाथा सं० १९१९ सेहाकमरहतेहैं ।। आवारी व दानेवकईकुवेओरहीमांव वसीचमें करानेदस्तूहजनाध्यकामळउमदाखाने वगैरे की हिदायत व तजवीज़ कोगई है ।।
४	तलोपीथास सं० १६								सं० १८८६ ई में सोढ़ा सुजानसिंह सेरसिंहोत कूवो करवस्तीफोरूनातीलीयी परंतहुई तलो होदयो
	भानेरीतलाई सं० १६	५ ऊ	१	०					महाजल व बाख्याडे कुंगरे कीरानी है ।।

१	गडेलीतलाई	४ र	१	०					महाजलदेसलरोंकीढानीजूनी है ॥
१	कैला तला सं १७	६॥ सेः	१	० २		—			नहोडी महासिंह सम्भेजैवसाय सोढों की मारफत दु वातीलेकुवादवस्तीकरी फेरसं० २५ ममभेजेअमरभीदू जाकुवा दुवाती सेकिया ॥
१	अखीसरोको बस्ती सं० १६	७ नै	१	०		१५	—		आखीसर नशार कंवीरव गैरे वस्ती करी
१	दूंदरीदोपार	५४ से०	३	०	परदै	१२	—		महाजल व भीसगूगलीये वाडे परदे है
२	कूपलाजोड- रवा०	८ प	१	३		३।	—		जं. चौहानदे सं० २० में सोढा सादूलवसहूकारगं गा दास कुवोवस्ती किया था सोनहोहुआ
३	पेडीनो सं: २५ सेः	७ पं० रा	१	० २	५५७ कची	२१४	१७ ७१		जं. चौहानकीजमीनमे सोटे खेतसीकुवोगामकिया फेरसोरेजैसिंहरोंसं० ४२ में दुवालीसेदूजोकुवोकियो
४	करडो से०	८ वा	१	११	०	१२	२९ १३५		जसता वस्ती सोढोंकी सजंनूजीरोफो धरु खेलांको हासलमाफ ॥
५	दहो भो	७ वा	१	११ ३।	०	१३।	४७ २१९		भो० राधधरहै और चौहान आधीया कर गया जूना कुवा मथे सं० १६ में गजूवसमां श्री दरबारको पाववरलो नवांध१ कुवोववसनीकीया सं० ५०में धारीसी केराजसाके एक कुवा किया ॥
६	हदार सै०	१५ सेः	१	११ ३।	०	११२	२७ ११९		भो० हदा सं० ५१में एककुवावंभरारांमुंवांगाचो सरू किया ॥
७	फुलीयो सेः	५ उन्दै	१	११ ११	१५	१६	२४ ११४		भोमीया सांवतसीकोरडी वासा सं० ४२ सेंदूजोकु: कियो ॥
८	तेजरारो सेः	५ ६	३ १	११	३ पारदै	३१२	७० २९३		भो० तेजरा

.	मुतारारी से:								
९	ग्रांटी चो से:	१०	१	१	०		८ ३३		से: नेजरारै समूलहै
।	तलाईलोटूरी		१				.	०	गांजू कालैरै बस्तीहै॥
।	विकांसी		१					०	मंगलीया व चांनीयारहैहै
१०	सीहड़ार सं३० जा०	१०	१	१	।१	११२	३६ १७०	०	मो० सीहड-कर गया सूनागाम भाटी प्रथीराज सरूपसिंहोत को बसी दीया जबबसा
११	सतीय से:	३ पू०ई	१ १	।२ ।।१	।१५	६।११	१८० ८४४	१ वि० १ म०	भो० सत्ताथा राज श्रीकिस्नसिंहजी जोरावरसिंहोत को जागीर दिया = ॥ जोधपुर जेसलमेर की सरहद पाव लट साहब साहबबहादुरने सं० ४६ में मोजे खेला कां गरि धारवी के तिहद्दे से बधीवा वलीन्गोह हदतक निकसाई जरां अलावा जंमीन बहुत सीहर गांवकी जाने के इस तरह ढांनियां मारवाड नीं चाहीं १ वकांसी २ भोपींशपा ३ गदागदरो ४ आसलीयावय ५ दापरोरो भो- इस तरह महाजलार की बहुत सी सीवत्तो गई केरला कुवा में भी मारवाड की सीर रखी और गाव भाडली की सीव व- कुवा ढांनीयां मारवाड की रखनी चाही सो मंजूर न रखने से जैसलमेर में है॥ कूवा नोहोली ग्राला नत्ताग्रायां पाः वगैरे बहुत सी ज़मीन इस वख्त्यों में मारवाड़ आलोंइ चाहीं
.	किसनसिंहरो तसी	५ [illegible]						०	
४	भोपींरी पार							०	समा यानां सर जुराग्ता वगैरे लोटा वधने का दहै

।	राहरतलाव	३ पू॰ज				१		०	ममावगैरे
।	गदागदरो							०	कुंभाररहेहै
।	भीलारी पार धरणाडने	३ ज						०	भीलरहेहै
४	नायेरी न-सार्ई							०	
।	आसलीया वव							०	स॰२॰सेगारे २ ध्यारणा रहताहै
४	दापरोटोभो	३ रू	१					०	कच्चाचांवरा वरसालू खेतो में हुवेहै
।	खारीयोतले	२ स	१	१				०	दोहर पलेच्या वगैरेरहेहै दखेवाडेरोपारहै
।	बिस्नोईरोपार	३॥ पू	१					०	मगालीया दोहर सत्तावगैरेहै
।	बूयल	३ पू	१					०	सेः
।	जपल	चे:	१					०	सेः

(च) परगने खाभा

पूवारवारी से ज़मीदार पल है जो मालसर पर रहते थे यह ज़मीन गोयल की थी उसकी बेरी व्रा० नहड़ पर सीज कर जमीन लेली खाभा नाम खडंगन से गांव हुआ नेहड़ की औलाद के हरजाल पलीवाल है - महारावल करण ने पलां को मारकर मालसर नामही मिटा दिया जब ज़मीन में पैदा नहीं होने लगी जब पलां के होलड़कों को जो नां नाशी अमरकोट से लाकर बसाये गांव बहुत आबाद होने से भागनगर कहाया

१	खाभो खा०	१० फ़ नै	२	१	१२	१५।९	३६ १२०	० वि: ० म:	डुंगरी पर सं० १८६२ में कोट बनाया था अब निशान है हाकिम के रहने का सदर मुकाम था सं० ४२ से सम के समूल किया यहां मोहर्रर रहता है महेता चैन सुख
०	निभीया से०	१ अ		०	३	३	०	०	जं पलीवाल था डूंगरी निभ के निभीया कहा
२	मलखा भो०	४ वा	१	१ १	५	७१	५२ २१६	०	भो० जंझ मलखा हिन्दु है भाराणी के बेरे मलखे बसाया
३	तुजासर से०	४ उ	१ १		१	११	११ ४५	०	भो० भराकमल
४	दामोदर खा०	३ उ	२	१	७	१०।७	३८ १३५	१ वि:	जं पलीवाल दामोदर ने खुशी से ज़मीन लेकर गाम बसाय फेर खाभे वालों वेरी पलाय वेरीयों का पाल्हा जेठीया =
५	देढा से०	२ पू०	२	१	०	२।२	२४ ७९	१ वि:	से: तवाई जसोये की बड़ी नानी है नीभीये के भाई देढे गाम बसाया ॥
०	जाजीया से:	३ से:	०	०	[illegible]	[illegible]	०	०	से: ऐ मालायक था कि पलीवाल सानी नहीं था कवी ने स कहा सो विसरहू आवि (बुजकलेरी केड जोयो नथभेला जीयो) जुनाने परदेस मेही घर गया जाजीया खाभ लसे आकर बसाया
६	धुलीया से:	२। र	२	३	०	२।१	२८ ८८	० वि:	जं पलीवाल धुल्ये के पोता बसाया सिपुल से जमी नलीवी

७	सुहारसापली ऐ:	२॥ स	२	३	०	२/१	२८ ८८	७॥	ज सिपुलवांस्तमालियोंकोवाडीमें ब्याजवगैरेकें हासलउजमें ८पूर्तजमीन समचोरसका(९)
८	जाडेल्ली प०	२ नै	१ १	०	१०	११२	३१ १२५	०	ज जोडूयाउर्फ़ जांमड़ा ओठीपरिणीनांकां पाड्डोगेको फ़ी मनुष्य हरसाल रु ५) दे
९	कुंभारकोठा स्या	४ र	२	०	४१४	११५	४० १५१	०	जं सिपुल बस्ती कुंभारोंकी
१०	सिपुल ऐ:	५ रस	२	०	७	४११	४७ १७४	०	ज तुवरउर्फ़ सिपुल सिवकानामथापली
११	धावा जा	८ ऐ:	१ १	४	१०	८११	१३२ २११	१ वि	भो मूलपसा खांपधोषा०
१२	खूहुडीजोडा ऐ:	ऐ	९ १ ०	३	१०	३१३	१५० ७३७	१ चि	खूहु सिंधीमें वेरैकोकहें सो पारमें वेरीयां परगांवपूहडीमूलपसाजी रेकाजोड़ा धोबेकाधोवाहे ॥ भो० मूलपसा जोदा गामकोसके सेटदोलतसिंह खांप गंगादासकोसं० १८४० मेंवसोदीपापरधोबारवालसेन्हुं थासं० १९२० मेंराजीतसिंह कोजमीनलिखादीसो ५० कोसकी गिर्दमें कबजेहे
१	खारीया सं०२२			१				०	यहांसोटा मोड० पीका रहे है
१	मोरीच रापार							०	यहांसोटा भारमलथा सो जेठवी भ्रा रहे
१	जेठावो सं०२२							०	आलीसर मांगलीयावगैरेहै पहिले यहपारसूनाथाउजू कोस१ कुवामलणासरबुरीयोवाहे अबनो पारकौरे हे
०	कांवरा खा०							०	जं फलीवाल कांवरे बसायाथा

०	घामट से:	०						०	जं पलीवाल घामट छनेलीया वसा सो वीरान हुआ वार सं३८ में गनीस्हा बस्ती करी थी किरगामें चावल पैदा करूं गा परन्तु सं०३२ में मरगया खडीन चामपी बधाया चना होता है ॥
०	वरेहा से०							०	भी वरेहा पुवार कव्या अब ज़मीन खालसे की - रोल पोलमें है ॥
०	पल प:							०	पल भाटी है आंमडां ज्युं ओठी परो कीनो करी है गामवीरान कर गाम पियलों वगैरे में जा रहे ॥
१३	खारीया उर्फ वरन भो०						१३ ३०	०.	भो वरन पुंवार
१४	देवीसर उर्फ तेजसी से:						२८ १२९	०	कुवा देवीसर भो० तेजसी खारीये की ज़मीन में सं० १८८० में बसा
१५	सूजा खा०				२१२	१	२१ ७५		भो० परबत आय - सोलंकी का या सो सं०१८ में खालसे कीया फेर सं०४१ मे परवत ने भी हक जमीदारी का फी रुपे दो आना लेना कर जमीन खालसे करा ई कर्जे के रुप्ये कुर० वेरसी सोरा हूई संतसे ने सं०४३ में गांव से १ कोस कुवा किया ०.
१६	घांगोली भो०			२	०	२१२	५८ २३१	०	भो रायधर

(१०) परगने सम

१	कोट सम खा०	१५ प: नै	३ १	३	३	१८	५५७ ५६३		पुवार राज में कोम समा के रहने से सम कहे ही मूलराज - रत्नसी के साके में मुल्क वीरान किया और कुवाव तलाब पूराये तोड गये थे फेर घडसीजी ने पीछा बसाया जक्तुवर उर्फ

भईया सिंधसे आकर जमीदार हुए सो व भई कीक होजे ॥ - सं० १८६२ में गढ़ी बनाय थाणा रक्खा सं० १९०६ से हाकिम महेता मूलचंद को भेजा सो है ० कोट ४ बुर्ज १ दरवाजे वगैरे मकान पक्के पत्थरों का बनाय सम मुकाम किया - यहां मफंडे पीर का मुकाम चमत्कारी है - कोट के नजदीक साहूकारों की दुकानें - व चमारों के घर हैं ॥

।	लूणा	। उ							
।	लखणा	१ उ							
।	मनूवलाला	१॥ द							
।	सगर	१ प							
२	झाडेल्लो खा	२ श्र	१ १	०	०।२	५।८	५९ २४५		जं जंघूपाड्ने गांगा दर्नीवा मुसलमान नलाई खाभें के पलीवालों की है
३	हडेल पे	५ पे:	१ १	२	१०० पार	१४	२२ १११		जं जंझ पाड्डे वीदा ववोहा हिन्दू
४	फलेडी से:	६ ऱ•श्र	१ १	१	बीन कुप दे	१	४२ १८०		ज से: वस्ती फकीरघींगनारागोसमधारावीवंभरा गंसुवांराी ॥ गामथुलीयोके पलीवालो कुवा खुदाया (धेसुर्य सादूपो सठो पुरठ हूडेल अहांपुणाई फलेडी जहांरागया निकोड• ॥
५	लोलेसाई खा०	६ श्रा	१		कच्चे ५॥ मूंष	१३	२४ १७०		लोलेसाई नलाई जं पन्नू वस्ती वंभरां मुवांगी
६	दबड़ी से:	७ ९	१ १	०	२ १०५	०	१२ ५०		दबड़ी पारहे जं जंझ वीरावस्ती गजू मुसल- मीनों की ॥
७	भद्रांकोर से:	५ नि०र	१	०	२७	४१७	५८ १५५		जं मैगंफ भद्रांकोर पार है वस्ती फकीर भीमा- गीवबली दाद ॥
८	लूंणाखड़ी गं०१५ से०	१२ नि०प	१	० ४॥	३	०	३४ १४२		जं से: कुवा वूरोड़ा १२ मध्ये एकतो फकीरोवली दादवहों, व दूजा राजड़ काठोडोकियाहोनोंगामवसा
९	मूणार जा०	से:	१	०	०	११	२४ ११०		१ कुवा सोदा मदन सिंहरां कियापीछे गामवसी लिखाय सांवकदायं वस्ती करी-

१०	धारागारागा खा०	१२ प	१	१ ३	०	०	९१ ३८८		जं० मेराफ़ कुवा १२ बूरोडों मध्ये ४ फकीरो किये १ मीरगा सं० १८९४ में २ हस्न सं० १९१७ में ३ माफ़ु सं० १९ में ४ झूंगो रिगायो सं १९२३ में वस्तीपोपापड़ा रनहीं
११	सईयदघे तलो सं० १७ से:	१५ बा०प	१	० ।१	०	०	५ १३		से: सईयद् मह्म्मद् अली नोपाट कूवो व गाम किया –
१२	मुहार मेराफ़ की से:	१५॥ वा	१	०	०	०	४८ १९४		से: मांगलीया मरथीया नोपाट कुवो व गाम कियो फेर दो कुवा जूनत्यार किया जमाने साबिक़ में इसताडे में कुवा बेम था
१३	भूहांग्रो से:	१२ प	१	० २।	०	०	१०३ ३८०		से० कुवा १२ बूरोडो मध्ये कुवात्यार कर वस्ती करी १ वंभरा नसीर सं० में २ वंभरा मीरजा सं० में फ़कीरो खावकांरिग सं० में सुरु कियो सो अधूरो हे – वं हमीरो
१४	मालीगडने सं० १७ खा०	१२ वा-उ	१	०		।२	४१ १८८		ज दोहराहडन्या सो बीपर गया फकीर के आपसे कूतो द योथो सो सं० में सेठ हिम्मतराम जी को वखत्यं – थो परन हुओ फेर राजड मिठे वगेरे वाज़ीदो फकीर रहलकी हुवा से नोपाट कुवा व गाम किया चार सं० ५ में राजड कारंगीयों वस्ती करी कुवो सं० ४४ में कियो
१५	खारडीया से:	४ वा	१ १	०	।३	५।७	१०२ ४१३		ज मेराफ़ खारडी योंका पाट्हे वस्ती फ़कीर चंगाणी खलकांणी हमीर वगैरे कीहे पारका के मे थे हुवे हे
१६	तलाईगजेरी से०	६ वा-त	१	०	०	११३	४३ १७७		ज अईसा मुल्लो मंगलीया मरखीया वाखरो
१७	धामीया से	२ उं६	१ १	२ ३	१ पार कवी	२।४	४८ २२०		ज से० कूवा दो जूना व कूवा ३ नवा पानी पुर्ष २६ तक मीठो पर रेजे को है ने नीचे खारो निकले १ अलायने सं० २० में २ कोसवां सं० ३६ तथा ४० में
१८	किनोई भो०	३ ५	१ १	०	१७	११५	९३ ४२९		भो० जंझ मेपा हिन्दु है ॥

(ज) परगनेवलदेवगढ उर्फ स्हागढ

१	कोटवलदेवगढ उर्फ स्हागढ खा०	४ प.नै	० १			८	७३ ३५२	१म	जमानेमाविकमेंज़मीदारीमगलीयोंकीसिंधतक थी ।।मराज डासकेराजड़ बेटाज्यराकाकौम समा को · मं · साहड़ नेबरी परनाय २ कोर मध्य ज़मीं

नरिये ॥ **दोहा** साडोवा डोबीह् द्रोकना है माजमे ॥ सोता साहङ चीर सुकेसब्धीविनचबै ॥१॥ अबसेराजड़ ज़मींदार - इज़ारहा घर इलाक़े हाजावसिंधमेहैं ॥ फेरसिंधकेमीयेकल्लोड़ के कामदार स्हावारने स्हागढ नामी गढ बनाय कस्बाआबाद कीया - पीछे टालपुरा के मीर रुस्तमने त-रक़ीदी - सं० १८९८ मेंजैसलमेर काक़बज़ा हुआ अबवलदेवगढ नाम रहा हाकिमरहनेकासदरमुक़ाम कोटहै इसपरगनेमें रेतकेटीबे बहुत भारीहैं - एकजगहसेउडकर दूसरीजगह होजाते हैं - कोटरेतमेंदब नेसे कूपोमें हाकिमरहता है - खेतीनहीथी सं० २७सेनिस्फ़ हासिलचानेरु. ३।) एक हलकाखेनाकर खेतीकरादईहै । कोटसे इकूवा सफेदरेती क्ष्यसीको प्रांइ कहते हैं - जिसपर ५ फीटसे १२ तकखोदने से पानीमीठा औरनीचेपाधरीज़मीनमेंखारा निकलता है - ऐसी २ अजायबकईबातें हैं ॥ १ रिषी नेदेवचन्द्रेश्वर महादेवका मंदिर जो अब इलाके सिंधमें इस क्रांकड़ से १२ कोसहै स्थापन करदईनकोना राया जिसकीकथा स्कंदपुराणमें है .

हाकिम प्रोहित हीरालाल -

२	मुगलीयासोत लो	उ.३	१				२०/२२	१	सुसर	१०/खे०						
३	मारो	५/व.	१				५०/२०२	६	चानराठ	५/नै						३०/२१
४	घड़सीयोकोटवालो	६/व	१				१७/६५	१	म्हांमद वासी	९/प						
५	घड़सीयोलंगदालो	से.	१				५५/२३४	७	मिठड़ाउ	३०/नै	१					२१/१०२
१	हकडो	३॥/नै						१	से.	से.	१					
१	झंडो	३/से०						८	खीराव	१२/प.नै						४२/१७२

१	रतड़ाउ	१३ से:						२०	कारटो	२२ ने					
९	वळीयाळोड	१० से:	१				४३ १७३	२१	लुहार	१८					३७ १६५
१	रतवो	१३ ने॰प						१	असुडो	२१ ने॰द					
१०	कीलोई	१२ से:						२२	खारी चानरो	१५ से:					४४ १७४
११	घोराउ	१२ से:						१	बिरांतरी षुई	१८ से:					
१	रारागाढो	से:						१	खालकनेरीषुई	१७ से:					
१	खारीयो	१५ से:					२८ ११५	२३	वळीयो	१९ से:					
१२	रुडीगाउ	से:					१४ ५९	१	से:	से:					
१	सेखार	१८ से:					६ २५	२४	बागराउ	२२ स॰ने	१				
१३	झमड़ाउ	१९ प:ने					२८ २०	२५	भीडी नवो	न५	१				४२ २००
१४	जनीयो	१० ने					१७ ७६	१	से: जूनो	६ से:					
१	कुलावषसरीषुई	२० ने					८ ४४	१	वांडडी	८ से:					
१५	जसीयो	१२ से:						२६	म्हेरांगो	९ से:	१				
१६	चाकराउ	७ प॰ने	१				११ ६१	१	पारेवाली	१० से:					
१	वीरमो	८ से:	१				२५ १०२	१	सरवूडी	१४ स॰ने					
१	संगेड	१० से:	१				१० २९	१	नेआउ	१२ स॰ने					८ २६
१	केहो	११ से:	१					१	कुंभड़ो	से:					
१	मुरारवालो	से:						१	अमूडो	१३					५५ १९५
१७	रघवो	१५ ने॰प	१				२३ ५६	१	महाडो	१३ न					२८
१८	मेहांगो	१६ से:	१					१	वाबूई	१५ न					८ ३५
१९	थोराई	२१ से:	१				४८ २३३	१	से:	से:					१
१	मगनजीषुई	२० ने						२७	बिटोई	१७ से:					४४ १८७

१	रईवाली	१५ सें:						३८	सांवतार	१५ सें:	१				
१	कपूर	१५ सें:						३९	हरडो	२१ सें:	१				५२/१८३
२८	मांपलो	१६ सें:						१	गजाउ	२४ सें०					
१	चंनो	१८ सें:						१	पालनवासी	२७ सें:					
२९	दसरो	१९ दृ	१				१७/५३	४०	हुरनाउ	१६ सें:	१				
१	मांपरवाडं	१८ सें:						१	- होषीयो	१७ सें:					
१	चांवडी	१७						४१	भीलोई	१८ सें:	१				
१	गागलोई	२०						१	कवरपालो						
१	मवोलो	१७						१	वन्चाव	२० ग्रे					
१	दलाव	२०						४२	म्रालीयो	२३ सं॰दे					३८/१२७
३०	पड़दियो	६ दृ॰मु	१				४८/२५५	४३	रारणादो	२० सें:					५४/१९८
३१	माहड़ी	२० सें:	१					१	नोम्बाउ	२१ सें:					
३२	कुलो	१८ गो:	१				१५/५६	१	घनात	२० मे०					
३३	वानुवालो	१५ दृ	१					१	खवडेरो	सें:					
३४	रानुवली	१६ गो	१				२/११	१	दरवालो	२१ गो:					
१	कसाव	१० दृ॰सु						१	चारुवाली	२१ रो:					५८/१६९
१	सूमपाउ	१९ गो:						१	बुवनवासी	२२ सें:					
१	रूडनवालोमोक्ष	२२ दृ	१					४४	रिलरो	२१ रो:					४७/१९१
३५	घिराजो	५ पू॰ग्र	१				१३/६४								
३६	नबोतलो	२१ गो:	१				५१/१६८		ऊपर लिखे गांव वदानियोमें जोकुवापकाहै -						
१	मेणाउ	१२ गो:	१					गांव पक्का वाकीतो नामके हैं क्योंकि १ जगह सेघोडे							
३७	गयजाउ	१२ सें:	१				४२/१३६	शासेमें दूसरी जगह पुई घोदकर रहतेहैं और वाज़ें							

के तो जुपे भी नहीं ॥ किसी रूष के नीचे रली हुवी मेल कर गोठ सदाते हे ॥

(ऊ) परगने देवगढ उर्फ घोटड़ु.

१	कोट देवगढ उर्फ घोटड़ु. खा०	४० प	१	५	०	२६	१०६		जमीन महोरावटी में घोटड़ु नामी कुवे पर रुकाएं राही मोरगारा व हिताव करनांशीवगैरे रहते हैं म्होर सलेम बदखुवाने खैरपुर के टालपुरा मीर रुस्तम से किला घोटड़ु पक्की ईंटों का बुर्ज १६ व दरवाजे होय व तजरां वगैरे बहुत मजबूत बणवाय
२	तलो सोझलो म०४३	८ प	१	० १	०	११	०		

ओर मनशा थी कि वक्त मुस्किल के यहां आ रहेंगे - परन्तु सं०१८९९ में फेर जेसलमेर का कबजा हुआ - जबसे देवगढ नाम रक्खा कारदारयाने हाकम रहता है तथा कुवा कोट में व ३ सफी लां फस उडा पुर्स ५०पानी बहुत व मीठा मवेशी ज्यादे के बायस खेती नहीं थी अब तुछ रहे ॥ परगना बसाने के सोजरा से पश्चिम ८ कोस पर कुवा बनाया पू० ३० मीठा पानी होने से बसने की पक्की उमेद हुई जब लि रवा लिया कि हिआया ई० गौर की आवे घोटड़ु वीरान नहो ॥ हांरा का जमीदार मुषीया

हाकिम बिसा जेठमल -

(ञ) परगने खारा

०	कोट खारो खा	४० प०व	१	२	०	१२			कुवो का पानी खारा से खारा कहा कोट बुर्ज ४ व दरवाजा तजरां मिट्टी का था सो गिर गया सिगदे

हीगोसों के तले जारहे हाकिम या मोहर्रर तले कोलू पर रहते है - जमीदार कौम म्होर सीव म्होरावटी में दूसरी कौम को रहने नहीं दे ओर मौसम गरमा में लोग सिंध जाते थे अब कूवा ज्यादे होने से नहीं जाते हे - कारदे पास झालो पार का मुकाम है - ओर कूवा का पानी भी अब तो पेछु हुआ है परन्तु म्होरां का माल पीवेलो विराईजे जिससे वहां बस्ती नहीं हो सकती ॥ कई बरसों से म्ह प्र० कोट खुयाले के सम् लकिया गया दोनों कोटों में एक हाकिम है

१	लांगावालोपा मिठड़ाव सं०४३	२ उ	१	० १					पाडे-[illegible]वालेने कूवा किन्हा माडेपानीसे मिठड़ाउ कन्हो ॥
२	सांदावालो सं०४२	६ उ०वा	१	० १					कूवा पाडे सादां तुंना किया ॥
३	कालीभर सं०३२	४ ई	१	० १			४८ १५२		पाडे-मूंगरांरा वगुमनोंने कूवाव [illegible]
४	हींगोलांवाला सं०२३	२ पू	१	० १			४६ २२०		पाडे-हींगोलां कूवावबस्ती किया
५	हंसूवालो	४ से	१	०			३८ १७०		जूं ताकूसा तयारकर मुवा सादूलरा द पाडे सादूलरा है ॥
६	हकालो	५ से	१	० १			५८ २०५		पाडन कुरा सांगराव लांगरा दस्ते है ॥
७	कोलू	८ पू०ई	१	१	११	१३५	८५ २७६		भाई षांनरा व सादूलरा व अभरागोर है है न लाई सतारी ॥
८	भादीया	११ आ	१	० १					वांधपर वस्ती लिखीजी पाडोनचूहड़ान व जीदा सोदा राी जूनातला तयारकर वस्तीकरी ॥
९	एकअरोपार	१६ पू	१	०	११	१२	६० २८३		मुवा अभराराी
१०	झरना सं०३५	१७ आ	१	०	१८	१२	९५ ६१		से पार नवा हुआ वस्ती कुरा मंधुवाराी
११	दांधा	१७ पू०आ	१	०	४१७	१८	७० २८६		जागीरा कुदा जीदा चूहड़ा वगैरे रुवे हैं वांधा पार है एकडीन वंगवारी सं०१९०५ में वंधायाथा सोदूरा सं०३५ में वेरीया निकली पे हुयाने वहुत है ॥

१२	नूक़ीयां	१६ आ	१	०	५।४५	३।१०	८५ ३९०		नूंकी खुदाई तलायां में झरना है ॥
१३	मीरवाल सं०१६	१८ आ	१	० ९।			२७ १३२		रुकाडगाणी पांडे बरीयांमर रहे हैं मीरने कूवा कराया
१४	असू	१२ रु० आ	१	९। ९।			९४ ४०९		जागीरांवनाथांणीया कूवा१ वेलीराम सं०१९००में कीया फेर कुवा सं० में हुआ
४	मंडेकडैवाला	८ प		० ९।					श्रीदरबारसे कूवा एक सं०१९१९में पक्का कराया परमहोरां बदमासी सेबस्ती नकरी हज़ाररुपये नाहक गये ॥

इतहास कौम म्होर - बादशाह सुलैमान के तुष्म भटीयारी के पेट से ई० सिंध में दो लड़के हुए सो जिनकी औलाद कहीजते हैं १ तोम्होर २ मालूमनहीं - क़ौम म्हर तीनो दूलाकों सिंध-व जैसलमेर-वीकानेर-मारवाड़-मलानी वग़ैरे में ल्ष क वाडीग मशहूर हैं और पुशतों वाद सांयराक रामाती हुआ चुनाचे पाबुजी ने वेरीको १०० सांढां देनेके लिये सांयरा का वर्ग ले आया पीछे से सांयरा पहुंचा जब लड़ाई में ठोवं से तरवार चलीदेखकर पाबूने सुलह करी याने सींढांकासवज़ म्हा गुन्चारां कोरीया जोसाउके गांवमे हे और महोरांको मांगते हैं - म्होरांका पाटवी सरदार स्वीजा हाजीखां मोजे खां नगढ़ इलाक़े सिंध में हैं और वीभा नाम म्हर इलाक़े हाज़ा में आरहा उसकी औलादके कई पाड़े याने ह ज़ारों घर हैं अववतेश भीरखां नरा में मुगरखां व चूहड़ामें दूलाही बाख्या और मुसाहनां में स्मर्थ-व जंगारां में रेस्म जासोत है ॥

(२) परगने खुईयाला

१	कोटखुईया सो खा०	२० प	२			४।११	१३० ६१३		कोट रोड़ा पत्थरों का वुर्ज ४ व दरवाजा व तजरों ऊपर मेडियां हैं कमीदार कोहरी मुसल्ला नहीं ॥ सिन्धी लोग पैदल चलने में कमाल करते हैं चुनान्चे गोहराम कोहरी अधमन वोझ लेकर ३ पहर में ४५ कोसतो सहज सुभाव चलता था - ओर तरी सफील पास काजला पीरां का मुकाम जाजली कहे तथा कोट के पास साकू का दूका घड़्या सो अब हवसा कूगी पर हुआ - हाकम म्हेता चैन सुख दास हैं ॥

१	राजा	१ अ							यहपांचपाड़ाकेहरीजोजमींदारहैं॥जोशेतहिन्दु कोहरीथासोकरगया अबपाडे पंजामें सांखू नामहै॥
१	रसामल	से०							
१	दावद	२॥ द							
१	हेमा	॥ ई			पार	।६			
१	सूर	३ पू							
२	सीथम्बर खा०	४ द०अ	१	०	पार	१३	६२ २९१		सीहांकतलाब पढीवालांका कोहरीकी जमींमें है वस्ती मंगलावागान ॥ सं०१३में कुवाकानेको दुवालोली थी सं०४४में कामशुरु किया पर तयार न हुआ ॥ पढीनप धरीयावंधायगोईकानेकालिखत सं०४२में कराया पर जमाने अच्छे आनेसे होगा ॥
१	खनुवारीवस्ती से:	से:	१	०	पार	०	।१		
३	कुहड़ी से:	४ ५	१ १	०	२७	२३१	६० २७५		ज जंझ मुसलमान पाड़ा २ तोगा पनराज पोपर - ॥ थान आलेजूझारकाहै ॥ तांडेमेकू
									वा वहुत पुरुष १२ पानी मीठा पर थोड़ा है
४	हाबूर भो०	४ ६	१ १	०	७	६।७	११९ ४७९		भो० तनड० खड़ीन हाबूरसे गामका नाम हुआ सो खड़ीन खालसे है ॥

		(ढ) परगने राजगढ़							
१	कोटरामगढ़ खा०	२० प०व	२				१९१ ८५५		ज० खालत है - कोट बिखरा हुआ है सिर्फ़ दरवाज़ा व उन्तैकी सफ़ील व मंदिर रहा है ॥ इस परगने में अमालु साष के बहुत खड़ीन हैं - षड़ी व सरल वगैरे का बंधा अब बंध गया है घमंद कवी है कि कोशिश बनी-रही व ज़माना अच्छा आनेपर पीदसे बढ़कर आमदनी होगी ॥ - हाकिम म्हेता रणछोड़ सिंह हैं
२	खेरड़ यानें भोजराज	४ वा	१ १				४५ २११		
।	तलोरगाउ स०२५	१२ वा							तरणोट बीचमें २० कोस उजाड़ था सो ४ कोस खेरड़ में बस्ती अगाड़ी ८ कोस कुंवारगाउ यहां से ५ कोस कूवा घंटीयाल होने से न रहा पर कुवा दोनों मरम्मत तलब हैं ॥
३	राघव								खालत राघवों की वस्ती है ॥
।	राघवों री तलो	११ उ० ई	१						
४	सेऊ	४ ई०	१				३६ १६५		खा० सेऊ रहते हैं ॥
५	सांयत	३ ई	१				३८ १०१		दे० सांयत हैं -
।	सांयतां री तलो	११ उ० ई	१						
।	चभूतेरे तलो	से:							
६	हेमा	४ स	१ १	०	१५	३	४८ १९०		तलाब परासर पर खा० हेमा वनेत सी वसे हैं

७	नेन्मी	३	१	०	६०	३१	३७		रे.
		६	१				१७३		
८	जोगा	४	१	०	१५२	३१	९७		खा० जोगारहते हैं
		५	१				१८७		
९	हाडो	६	२		११		४०		तलावयानेरखडीनका नाम हाडाहै औरमुसल- मीननका स्वालतरहतेहैं जमीनमें नामच्छावरूम खालतसा मिलहैं मोलका विराड जुरा
	खा०	९					१३७		
१०	सेराह	७	१			१	२१		न सेराहभाईहैनापालीयेउघानकी नोकरीसं०- २९ सेमाफकी वरसातफो गुवाडीरुपु वंध्या
	भ	अ	१				०६		
११	कासाव	७	१	०	११				न हूलपकी मचावडा पारनकुरनेसे भाट्राजरामें महेपारमीचापगंदनीकामायाहोलायहां आवा- जवगा कृपा कबाड़ियाया फेरश्री गडसीजी नेदूस जोवसाया लेनासे होसचहुस
	सं०८ से०	२.५	१						
१२	सांनु	६	१	१	०	५	७४		भो० भयाकमतं ६ पलीवाराकी जमीनमेंगांम- कुजासर में आवसे -
	भो०	५					३०२		
१३	तलो भोन्परो				१५				खा० भोजरा कुवा ५ बूरोडा मध्येसं०३४ मेंराम दिवत्तीकेपिंडे रूपनाथ वजारोंसे कुवा त्यारवरा- याथा किगामवमारिरमेसा होगा पर म्होरेत्रेपा- लताकीनाराजीदोपीछागया कुवावराव पडाहै ॥
	खा०								

(ड) परगने तरांट

१	क़ा. त्रामेट	५०		१	१	०	४१६	३००			सं०९८ में मारीरावतरागुंजीकासाकाहुआचार सहरवगडवीरान होकर लोढ़ा पुवारोंने सोलंकी जागीरदारकीया फेरभारीयोंका दखलहुआतोभी जमीदार वांहीरहा बादक़र्ईपालया हुआ
	खा	ना०१						१२२१			
१	का. भ्रामरसा नग										
२.	वरीचाफ										

सोलंकी मौज़े रामगढ़में आवसे० यहां कंनडोंको बसाय कस्बा आबाद किया हाकिमके रहने-
का सदर मुकामहै कोट बनायाथा सोगिरगया सिर्फ़ दरवाज़ाव १ महल ईंटोंकाहै ॥
कुवा चोलावा पु० २१ पानी बहुत वषाराहै कुवापरषानपडनेसे मू० दो पुर्स ऊंची जेरा नज़र रहै
॥ सीवमें गांव-बसानेको कई जगह कुवाकरवाया मगर पारा पड़ाकि वायस उपाय पली गया
॥ हाकिम म्हेता गोरधनदासथा अबगयानचंदहै ॥

(ढ) परगने किसनगढ़

१	कोटकिसनगढ़	८०	१	३	०	२१३३	२११	१ कि: १॥ रावरपोले बूरेवादखांने पक्की ईंटोंका २४
	खा	बा०७					८००	१ दे: बुर्ज ३ दरवाजावरंगमहलवतजरां वगैरेगय

१ हाजामें खासके लिये बनवाय कस्बा आबादकियाथा फेर जैसलमेरका कब्ज़ाहुआ जबसे
किसनगढ़ नामरक्खा हाकिमरहताहै ॥
२ ॥ ज़मीदारकोई नहीं कोमकोटवाल अव्वलमें आवसे ॥ ३ कुवा कावलसर चोलावा-
अज़हद है पु० २१ पानी बहुत वमीठा १ दूसरा भी जारी है ॥ सं० २४में १ जाटांसे त्यारक
राया परसीवमें ज्यादे खेती व कुवावगा० नहोसके रेतकेटबे बहुतहैं ॥ दफ़ीनाकोटमें निकासवे
कोपु० ७ खोदनेसे हाड निकला जवपीका पुरा मगर नीचेबेसक है ।
कामदार म्होवतसिंह वकिलेदार ह: हरपालहै ॥

(ण) परगने बाराहा

१	बाराहा	२२	१	०			९	भौ० रहाउ है० जूनाकुवाव गढ़ावगोधशाला तयारक
		वान		२			३०	रवस्ती करी सं० २७ में २ हाकेव्यास जोगीदासहै नव

परवना किया - पार. ावूला सांतिहतया सं० ४१ तेजुदाकीया ॥ कामदार श्रोहित बुधलाल-

॥जमीन राहड्कीमें पेती का हासिल वगैरे लाग नहीं लेते हैं सो लेकर स्हाजोगमें रखे और तला व पनालसर परसरवतरे. का ठाठ व दूसरा कुवा भी करावें वगैरे ॥ सबकारूपक आरामवलाय आपना दीरवज्युं तनरवाह करेनेकी हिदायत करी है ॥

२	साध्मरा से०						१९ ७४	
३	राचमल से०						३८ ११२	
४	नया से०						३६ १५२	से० पंचग्राम चुडां के नाम से है
५	तेजपाल से०						४२ १५४	
६	वडा से०						२२ ११४	
७	र्पीचावासराहडारो से०						२२ ९४	कुमरोंकीवस्ती गामपीया के दूजे वासरहाडांकी जमीनमें है ॥
८	तनोगोघराले सं० १९०८ से०	१ १/२०						तलेऊपरसी पले ऊवालेऊपरछिरवासे हिज्जलोकरहे है ॥
९	भुरा सं० से०							भो राहडु भुरा मुसलमान है आठवे हिस्सेके २३०७ टी लाडेके ठहराकर यहां वसाये गा।
१०	लारवीराोडर्पी वूपली सं० २४ दा	५ ५	१९	० ३१	०	०	८७ ३४९	देवलकी जमीडो हूडी वूपलीमें ठा० राजश्री केसरीसिंहजी कुवा जैसलमेरके पत्थरोंका पक्का वगामकराया फेर दूसराकुंम्होरांचूहडां वनूजां किया

४	डोहेरीटहालोरी सं० ४५			१				मंगलीयाककाडन्दे गामवेसालेसे आकरकुवाकीयाआबगामहोगापरवानामुन्शीअमरूद्दीनके नामकालिखाया

(त) परगनेरेवा

१	कोट रेवो रवा०	१० उत्तर	२	३।१	०	१।१	४७ २२८	रेवारवडीनकानामहै ज़मीदारकोई नही पडेरवा रदासरहतेहे षडीनमे पके कुवे षाडासीपलीवालों

के व्होमसे कई जारी हैं पु० १८ पानीवहुत याकम परा मीठा है बाडीके माली प्याज़वगेरे रसाल करतेहै सं० ४३ में ५ कूवे औरही तयार कीये ॥

गुसांई रामगिरजीने मढी औरमी अषेसिंहजीने गढी बनायथा नारकरवा ॥ सं० २५में रामगिरजीकेचेले गुलाबगिरजीने पक्कामठ बनाया कू० श्रीरायसिंहजी की छतरी हरमहीनेवदी चौथ को पुजा होवेहै ॥ यानवी दामोदरदासकी हाकमीमें नवाकोट सं० १९१९ पके पथरोंका ४ बुर्ज दरवाजा वचौतरफ़ हरसालां ऊपरन्हेसात तयारहुआ सं० ४२मे थानवी लालचंद षडीनमुढे लेकाबंधाबंधवाया ॥

२	धामट ५०	१ ५	१	०	०	३।४		० बि:	जं- पलीवालधामटथा तिरोट केदोनों-जांमोंके परहै ॥
३	लोहा भो०	३ ७	१	३।	०	१।	६३ २७२	०	भो० भड कमल
४	सांवो से०	५ ७०ई	१	०	पाहे थवा वा	।१	२३ १११	०	भो० सांवला है हरभंजीकाभोपाहैश्रीदरवारकीसवारीमेहरभांजीको गाडालेआगाहीवहैफेरअपसकुनसे जाने लागदीलाद्दामाफ़ है ॥
५	सिधराव रवा०	७ से०	१	३।	०	२	१४ ६३	०	कुवासिधराव पलीवालजगाथेकापुस४०स्वारदोकुव कूरीषाडाहैवस्ती पहोडामुसल्मानोंकीहै ॥

६	नेहडाई	७	२	२।	कचा पार	।७	४२	१ वि	जमीदार पलीवालजागीरे न्हंड• गामबसाया
	से०	७०वा					१९	० म	अबपली वालनहींरहा
७	मंधा	६	२	।।	०	२।५	६८	१ वि	पलीवाल मंधा
	से०	वा.५					२९८	१ म	
८	अर्जन	८	१	०	पार	।।	१७	०	जं० तुवर उर्फ़ देवत•
	से०	से०					७६		
९	सुरतान	१०	१	०	दम रपा र	।१	५८	०	से० फईनिनजूफलवतला पांचों गावोंकेबीर मेंहै गाहे२ गेहूं होताहै ॥
	से०	वा					२२७		
०	धनुं	०	०	०	०	०	०	०	देवत• पाडोचनुं गामचोंमें रहताहै ॥
	से०								
१०	डिवा	८	१	०	पा।	।१	२१	०	ज० देवत
	से०	ऊ०व					९२		
११	खेतलसर	५	२	२।	०	२।४	३६	१ वि	ज० पलीवाल
	से०	न०ग					१३१		
१२	पोलवरलील	९	१	।।	०	१।	१८	०	भी० जैचंद
	भो	५०					६२		
१३	से० फतु	९	१	१।	०	।।	८४	०	से०
	से०	प०					२७४		
१४	खीया	८	२	।।	०	१।३	२०	० वि	ज• पलीवाल• पटेठा० जोगराजजी पांपउरे सिंघोतके हैं ॥
	प०	प०वा					९३	१ म	
१५	काठोडीवास• राष०ईसर: वगीचो गा०	५	२	१।	०	४।५	३८	१ वि	ज: पलीवाल• चौरासीषेडोमेंअवलथे ॥
		ने					१४१	१ म	

०	नागोदे	२	३	०	०	१।३	०	० नं	नः पर्गीवास
		नं					०	विं	
०	मूलदे	२	२	१।	०	१।८	०	०	सिः
		१०१							
०	बीनल	४	३	०	०	१।३	०	०	सिः
		१०५							
०	नान्हदे	१	२	१।	०	२।१	०	०	सिः
		३०							
०	रामा	१	२	१।	सा	२।३	०	०	नः पर्गीवासः पर्ईन मूर्गवाघाजीढाकावे
	ग्वा०	था							पेदेंद ॥
०	मर्गीगा	५	२	०	०	१९	०	०	नः पर्गीवान पदे माल्डग गनग्नोनेंदे ॥
	[illegible]	[illegible]							
०	मायान	१	२	[illegible]	०	२।१	०	०	नः पर्गीवाल
	ग्वा०	दू							
०	[illegible]	४	२	०	०	१	०	०	सि०
	[illegible]	[illegible]							
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१	०	०	१।	[illegible]	०	नो० गोगदे वन्धा किभार्कोनदे ॥
	नो०	[illegible]					१३४		
०	[illegible]	०	१	१।	०	१।	०	नो	गुर्देना सेनासन
	[illegible]	[illegible]					[illegible]		
०	[illegible]	१	१	१।	०	१।	[illegible]	०	[illegible] ज्ञानदे
	[illegible]	[illegible]					[illegible]		

१९	चोधरी	३	२	११	०	२२	३३	५	ज: पलीवालसे अबतक कारलोग रहवेहैं
	से०	६०					५८		
२०	लाखारवडे०	१	१	०	०	११	३१	०	रवाना इ दोथथे अब तले देवीसर पासहवेहैं
	से०	३०६					१३०		
२१	मंडाउ	४	१	२१	०	०	८५	०	कूवा होय पलीवाल पांचसवालों केवनाया पुस्त २२ पली पाए है अब रीपीवेहा नसेन्होरगुसाई की वस्तीहुई ॥
	से०	५०६					२४२		
४	सफीयतरी	१९	०	०					नांचागामन्होरमें ठकरीऔरतलसफीयतघाम उजड़
	तलो	५		११					आदमचान्या परपानेमकाराकेवाद तबस्तीनहुई -
०	नपा								ज: पलीवाल
४	सेड़की								ज सेड० गाम मंधों में रहताहे
४	पनोधा	१९	१	१					पलीवालोंपनुधंका वूवा पनोधासे सीवपनोधो पनी
		३०६							सीराप रहेकम-जोगारी थोंका यानकमाकोठाहे
४	हूलघोर								ऐ: तीनोंगामोंकी ज़मीन नवेरतरा डा० मौजूदहैं
	होला निलार खा०								ज: पली वाल

(थ) परगने मोहनगढ

१	कोटमुहनगढ	१८	१	१२	०	२	३०४	१ वि:	सं० १९५० में नदी आनेबाद कस्बा आवादकीया
	खा०	७	१	१०			१३२२	१ म:	कच्ची ईटों वमिट्टी का ५ बुर्ज वदरवाजा वसा सो

वनायाथा सो वीरवराहुआहे - सदरमुकाम हाकिम मेहता हुंसराज - कोटसे उत्तर पालीयाने कई कोसोंका उजाड़ - था सो वाहलावूपली वगैरे कुवा व गाम होनेसे निरहा फेर सं० ५४ के कहत में पाली में करीब १२० कच्चा कुवा वनानेसे मुल्क की मवेशी वचाई अब उमेर पक्की होगई कि पाली में बहुतसे

गांव बसै गे सायर का हिसाब आ: मोबल राय पास रक्खा व १ चोकी गांव व्हाला में रषाई वरे ओ
ठी दूसरे गांवे फिरते हैं तथा उनालु साष पैदा होने की वडी गुंजाइश है सो होही गी

४	तलारोडूरा	८ ७	१	।१			०	०	बरसालू चांवरा लाडों वमेरे का है कूवा पुर्स १६ तक मीठा पानी कम से वस्ती न हो सकी
।	मंगलयारा तला सं० ४४	१४ ७	१	· ।१			०	०	पानी खारा है
४	आमडा रावला	७ ७	१	· ।१			·	·	कूवा अधूरा है तयार हुए वस्ती होगी
।	हमीरेरो भे	२ हिंउ	१	०	०	१	०	०	पहोडो की वस्ती है
१	खारडीया खा०	३ ५०	१। १।	०	।८	५	१५ ६३	५	मगलीया सांवरा जो लाठी ठा० का वलाव दार है रहते हैं ॥
३	आंवला दोय वास भो०	५ ५०५	१	।१	।८		७४ २९५	१ म	भो जैचंद - दूसरे वास को देवगक रहते हैं
४	वालाराा जा०	५ ५	१	३।	०	४	११६ ४४९		भो० शहडु या जवपनराज को खाडन लमें जमी नदी व थइगाम खाल में कीया सो भाटी सगतसिंह खेतसिंहो त को वसी हुआ ॥
५	कैरु भो	८ ५०६	१	१।	०	।१३	४७ १७२		भो चौहान राजासी गाम बसायो
६	ताडाराा	५० १७०	१	१।	१	३	८५ १६७		भो० कोलरा
७	व्हाला सं० १० खा०	६६ ५०	१	० ।१४	०	० ।१	४७ १४८	०	मंगलीया कांकड दे सिंधसे आरहे कूवा पक्का सरकारी बणासो सं० ४४ में दूजा कराया वतीन

कुवे कच्चे मंगलीयां कीये पानी खारा परमवेसी की अच्छा है उत्तर १॥ कोस म्हो रधी गारो सुंफरीद
कुवा सं० ४४ में कीया पुर्स २४ मीठा पानी रेख में आया है ॥

८	मेरागगारातसे सं.२५ जा०	५ ५	१	१। १।	०		०	०	भो मेरागकव्यासं.१५सेन्पोछत्रसिंहजीमहाराको बखस्या फेरसं. मेंनवाकुवाकरमात्तियावसाया-
०	खारा ७०	७ ५	२		०	१।	०	०	राठोड़ नरावत गेनजीकोसं. गांमबखीदिया न रावत गामवासांरोमे हैं

(ट) परगने नाचरगो

१	कोटनाचणा ज्ञा	२२ ५०६	१	४ २	०	७।।	३६७ १६३२	१वि १दे	ज० कोई नहीं हैं फुटकरलोगकोरवालवगेरे स मि नाचरणावनाचरगो। इहोरा व कुवाका नामसे

तृ० राजश्री जैतसिंहजीको जागीर दियाथासो छोड़ना - बादसं० १८८८ में राजश्री केसरीसिंहकोबख ला - जब कासबा आबाद कियाफेरसं० १९१३ मेंकोरव म्हलान व मकानात टांका दो मीठे पांनी के व कुवाचे तोराग दरवाजे बनाये तथासीवमेंकुवानलाया गांव हुए सो नीचेलिखेहैंसं०४४मेंकोटसे पाइभकोस १२५।१ कुवा पक्का वैरमलसामे राजसे व कई कुवे कच्चे लोगोंने बनाये बाजवाज नगर टानीयांहुई औरयां नहुकमलिखगयेहें जैसीको शिश रही तो बहुत सगांमवड आगें- चर आबादव बपारकी पीठ होवेंगी कोटसेपश्चिम १।कोसनाचणी डोहीमें ७ कुवे बुरे हुवेहें कामदार व्यास भोजराज व चांमकुंजेठमल = कूवेपरमालीनेवाडीकरीथी० राज श्री पदमसिंहजी की कुर्सी उनाम सफील पास है ॥

१	सादडा स०११	३ ने	१	० १।	०	०	२४ ११८	०	महोरराय पासोको इलाकेगैरसेबुलाके बसाए
१	मलासर १८१८	१४ ७०	१	०	०	१९ १४	१२ ५३	०	जूनाकूवा तयारकर जूनेजीरहतेहें ॥
१	फतूबासा.	१८ वा	१ -	० ५	०		०	०	

१	ऊनडावाला सं०३२	ऐ०	१	० २	०	०	०	०	तरणोटेके ऊनडमहोवोनेकूवावबस्तीकरी
×	नाचणी	२१ प०		।१	१	०	०	०	कोटवालपाचाणीयानेजूनाकूवात्यारकीया कभी २ रहते हैं॥
।	कबीरवाला सं० ४१	ऐ	१	० ।२	०	०	०	०	कोटवालबीजलराकूवावढानीकरी॥
।	साबूरीवय सं०२२	१७ प०वा	१	० ।१	०	।१ ।२		०	साबूरीवयडहोरीमेंम्होरपीरोज़मोज़ेनवैकोटवालेनेकूवावगांमकिया॥
।	जगमालरा सं०४३	१३ प	१	० ।१	०	।१		०	कलसजगमालनेनाडाफ्हेकैकीयाथाफेरकुवावढानीकरी॥
।	हेस्यार	८ प०वा	१	१ २	०	।१	६ २६	०	एककूवाजूनाथा दोयदूजा नुपरगाम पानी कमहै॥
×	सोढांवाला	१३ उ	१		०			०	टावरी आलेके सोढां लिखायासो अधूराहै वस्तीनहीं
।	विसनोई सं० ४०	२ प	१	।२	०	०	पाछेवसे	०	नवाघरआयवस्याएककूवाकियाज़मानाअच्छाहुआ गामअच्छाहोगा० रोहड़ाबालाकेहदीमेंकच्चा कुवावनायाषेतीकरतेहैं॥
२	घंटीआली जा०	८ द०नै	१	३	०	१	१५	० ६५	भाटी दोलसिंहखांपसगतसिंहोतगांवसते आएसे आकरवस्तीकरी पानीखारा है परम्वेशी कोअच्छा
३	सनेआया ऐ०	३ द	१	१ ।२	०	२।१	१०७ ५१९८	०	भो० भणकमथा भाटीखांपसगतसिंहोतोंको वसीदिया
४	दिधु ऐ०	६ द०अ	१	।१ ०।	०	३	६५ २९८	०	यहगामकेलणजीकेहुकमसेपाइनेगांवसायाथा कईवर्षखालसेरहाफेरपाइवोंकोफेरराजाश्रीजसवंतसिंहजीको सं० २३ मेंजागीरदिया॥

५.	अजासर	११	१	•	०	।१	६६	०	गामरोटेकीभायप भो०भणाकमलकटणेसेसून
	सं०१६०८ ऐ०			१।			२०५		गामभटीराजसीजालमसिंहोतकोवसायाअबब सा।
६.	रोटा	११	१	१	०	१-	५६	०	भो भणाकमलहै रा। श्रीवखतसिंह पदमसिंहो
	ऐ०	.					२५७		तकोवसाहुआ॥
७	आसकनी	५	१	१	•	।११	६६	०	कलणाजीकेहुकमसे पाहआसकरनने वसायाथाजो धपुरकीफोजरही जबबेराणथा फरपाहुवसेफेरला लसेफेरपाडुसेफरसं०२७मेंभारीनहारजीजेवमलोन लावसादिए
	ऐ०	५					४५७		
८	भदडीया	२	१	१	०	।३	४०	०	सूंनागामभाराकोदीयाथाउन्होंनेकीमतलकर
	ऐ०	५					१६३		छोड़ाफेरसूंनागामरा० मृत्तसिंहोतको वसादिया
९	उवाय	३	१	२	०	।३	६७	०	रा० अमरसिंहोतोंकेवसाहै।
	ऐ०	३०		१			२६८		
१०.	खारीयो	८	१	१	०	।१	१२	०	खारेपानीसेखारीया रा०भगवानसिंहोतकेथासो
	ऐ०	वा					५७		छोड़ाथामोड सिंह अजीतसिंहोतकोसं०४७मेंसीव काढदिया

(ध) परगने नोख

१	नोख				पार	।७	२२१	१म	कदीमभो०भणाकमलथा जसोडडेलेकेबडे
	खा०	-			है		६८६		वैदेवापरीघटीमेंपानीपीनेकीसोगनकरडेला

रसेआयआधीयहआ कोट विकमपुरखालसे किया औरभोमियोंहल्लाटालीयाजबसेखालसेहै
ताडेमेंकूवे ८४ मध्ये कईजारीहैपानीनजदीक वबहुतऔरमीठाहैमालीवाडियोमेंतमाकूप्याजमिरचोव
गैरेकरतेहै १कूवावथोडीसीज़मीनराषसीयेरीवारटमेंपजोनुदीयोडीहै॥ तथा देव अनजीजोजोगी
राजथामढीनामीहै सं०२५से हाकमकेरहनेकासदरमुकामकीयाअबमुनासदहै लिहाकिमगाम
पजू औरयहांमोहर्रररहेहाकमम०दलपतसिंहपूनमचंदऔरमातहतथाणा वसायरकोचो
कीयागांमविकमपुर वजूनोषडाहै॥ राणीतपुर

१	हालेरी	२	१	०	[illegible]	११	८	०	जैतुंगरावजीकेहालेतथासोढालाकहासं०१८६६
	सं०१८०६	ने	१				३८		मेंढालोंकीवस्तीहुईसं०७७मेंसूनाहुआसोवसाया-
✕	ख्वारुंरी हांसी	२॥	१	०	०	१२		०	दू०बीकानेरसेघर४० आवसे ४ कहतपड बैसे
	सं०३८	वा							पीछेगये जमाने आयां आसी
२	वीठरागाम	२	१	०	०	२।५	२१	०	जे भरा [illegible]
	सां०	दू०ने					२१		वीठवसायाथ्या मोकाता भरे है
३	झाडली	२	१	०	३४	२।३	३५	०	भाडली तलाई कलरांकी परबिसनोई वसे
	सं०१४ खा०	ने८८	१				८९		
४	मदासर	७	१	०	०	२	१४	०	केलराजीकेहुकमसेपाहुमदेवसायाथासोसूनाय
	सं०२२ खे:	५०		२।			४१		सोबिसनोईलछमणाकूवावगामकीया ॥
५	चनू	[illegible]	१	२।	०	१४	५८	०	ओ गामजैतुंगोंकासूनोथाकईपलटाहुआकवीबमें अभी लिखदियाथापरखालसेहीरहा फकीरवगैरे सिपाई रहे है ॥
	खे:	५०					२१३		
६	लिखासौ	९	१	२।	०	१५	२८	०	पडे-हुगोंकीजमीनमें लिकरायलिखसी भडलोभडलीकूवाथालिकरोपरकलरखेतकोरष भडलेपछाधीग्रामेलमेंबगा वरना इलाके गैरकाजाट बिसनोई वस्ते यहतोनूरेकेबुर्जमेंवस्ते ही हैं ॥
	सं०१६ खे०	५०ने					११७		
७	भडलो	५०	१	२।	०	१५		०	
	सं०१८ खे:								
८	नूरेराबुर्ज	४	१	०	०	३।१२	१२५	०	पडे- हांकीजमीनखालसेमेंकलरनूरेसं०१८६४ मेंगामबसाया ॥
	खे०	ने	१				५२५		
९	बधावडन	९	१	०	०	२।१	३४	२ बि	[illegible] पलीवालों महारावल भीमबीकानेरफ ने [illegible] बसाया सोवधाई मेंदिया सोवधावडन
	सा०	दू०नै	१				३२५		
१०	गाडरा	६	१	०	०	५।८	१३६	१ बि	[illegible] दियाथा लिकमपुरराव डूंगरसिंहने गाडरा [illegible]को दिया सो गाडरा कह्या ॥
	खे०	ख	१	१			५०२		

११	वैलेरोगाम	५	१	॰	॰	१	[illegible]	॰	रावउदैसिंहजीने चारणवलैको जमीन दी उस
	सं॰२६ ऐ॰	३॰							निगाम वसायके वडीसिर्ड॰हे गाइमा॰पीछा वसा
१२	मनचांतीया	४	१	१	१	॰१४	३३	॰	जैतुगमन वांतीयेको वसाया गाम ऊजड हूआ
	सं॰३५ खा॰	ऐ॰	१				११८		था सो वसाया
१३	लूंभाणी अर्फे	४	१	॰	॰	॰	२६	॰	रावडूंगरसिंहजीने लूंभै चारणको जमीन दी
	लूंभाणगाम सा॰	३॰८	२				६२		उसने गाम वसाया
१४	सांऊंणगांव	१	१	॰	१८	१७	७३२	२वि	रावसुंदरदासजीने ढोंग चारण सांऊंको सर्व गाम
	ऐ॰	२					५४३	१कि	कातलींयादीया सो वसाया॰करनीजी का थानकी
१५	बावडीदलपत	६	१	॰	२॰३	१॰२	५८	१वि	पलीवालोका गाम १पग बावडीतें बावडीरी राव
	री जा॰	भा	१						सुरसिंहजीका कु॰दलपत रहा जवसे दलपत
									की बावडी
१६	सेवडा	२	१	१७	॰	३१७	१७५	॰	गाम पलीवाल सेवेने वसायासो वीरान हूआ था
	खा॰	३	१				७३४	१म	हजारवखतफेरराजपूतांफिरंगतुगसीरवांनेतावतहुए
१७	दादूरणगाम	१	२	॰	१	११	२५	०	गेलोतदादुवसायाथासं॰१९००मे सूना हूआ सो
	सं॰२३ ऐ॰	प॰रा					१२१		वसाया
१८	वडीसिर्ड	६	१	७	५	१०८	२७६	१वि	भीमसिंडकेर नेटोंकापुणसातोंही सिर्डो कहीजो ऐ
	जा॰	पू॰रा					६०८	१म	गाम जसोड भाटेलियथा फेर रावडूंगरसिंहकेकं॰ ईसरदासलिया जवसे नरसिंहहै॥
१९	वडोगाम	६	१	॰	०	१	६४	१वि	जसोड भाटे चारण बावडे को खेतदिया उनन वा
	सो॰	ऐ॰					२२४		गाम थी मूलराजजीकेहुकमसे वसायाफेरश्रीग
									जसिंहजीसीवसोफरेमें जमीनवखशाई॥
॰	धमरैरोगाम	७	१	॰	०	११	॰	०	वडीसिर्डकेठा॰ईसरदासमिकसधमरेको जमीन
	ऐ॰	९.							दीसो खेतीकेलालच वडीसिर्डमें रहता है॥

२०	गुडो	८	१	०	०	११	१७	०	भीलोंसेमूलवालीयाथा फेरराववदरजनसालजीके
	जा०	ऐ०					७२		कु०भानीदासलियासो वरसंगनवलसिंहप्रताप
									सिंहोतकेतावैहै॥
२१	जोगीदासरीसिंई	८॥	१	१	०	१२	१२५	१म	भीलोंकीसिंईसूनीथीसं०१८३०मेंवरसंगजोगी
	ऐ०	ऐ०		२			४७१		दासजैसिंहोतवसाई॥
२२	नथराजरीसिंई		१	०	०		७०	१म	सिंईजालमसिंहकीसीवमेंनथराजवस्तीकरीपर
	ऐ०	ऐ:		१			२७७		इनोजगामउनकेसमूलहीहैराजसेपरवानानहीं॥
२३	जालमसिंहरी	८	१	८।१०	।८	२०।१४	१४४	१म	
	सिंई ऐ०	पू०प्र					६४८		
२४	मोडियो	१३	१	०	७	।१२	३७	१म	
	ऐ०	पू०					१७०		
२५	निरवडोदेवास	१२॥ २ १	१	१	३०	५।११	१४१	१वि	मो०केलणइ चारणोंनेवैरमेंजमीनदीनोंखकेता
	मो०	प्र०पू					५२५		लावपरकेलणके पोतेनेगा:कियाचारणकलेजारहे
२६	गिरराजसर	१२	१	२।१	।२२	३।१८	४०५	१वि	तरा करावककेकु०जैतुंगके वेटेगिरराजवसायाफेरस
	जा०	ई०पू					१९२१	१म	वसुंदरदासकाकु०अचलदासजीआरहेजवसेठा० वरसंगहै

इनवरषोंमेंसीवमेवहुतहानिपाइई ओरसाहूकारघर ६० गडीयाले जारहे जिस्सेकस्वेकीरोनक कम होगई

।	राघोदेरे	४	१	०	०	।१	०	०	गा:जेठमलजीकाचाकर चैनरात०राघोदेरेपर
	ऐ०	द०ने							रहा॥
।	सगतसिंहरारी	२॥	१	०	०		०	०	सं०४५मेंमीठेपानीकाकूवाहुआहैउमेदहैकि
	सं०५ ऐ०	प्र०			।१				गामपक्काहोजावेगा॥
।	देवडारी	३	१	०	०		०	०	गावपक्काहोजावेगा॥
	ऐ०	वाउ							रजपूतदेवडाकादोयाढानीहैं॥

	सोलंकीयांरी	४	२	०	०	[illegible]	[illegible]	०	रजपूतसोलंकी।
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		
	ढाल [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	जैतुंगढ़े [illegible]
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]
	विसनोयांरी	२	१	·	·	·	·	०	ई॰ मारवाड़के विसनोई आवसे।
	सं॰२३ ऐ॰	ऐ॰							
	ईंदारी	३	१	०	०		०	०	ईंदारजपूत
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		
	सैंभूंरोबुर्ज	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	जैतुंगसे भूरेबुर्ज बनायवस्तीकरी॥
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		
२७	ग्रांधी	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२१४	२२२	१म	सोमके गुरु प्र॰ ग्रांधन बसायाके लिए जोंनेसो
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		मको दियापश्चात् ज्हवर होनेसे सोमके वंशमेंन

रहा रावसूरसिंहके कु॰ भागदासलीया जवसे वरसंग है॥

	कुशलसिंहरी	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	जोगायतके नाडे परवस्ती करी सोगामजो
	सं॰३६ ऐ॰	३		१					गायतरो कहै है॥
२८	मोठडीयो	[illegible]	[illegible]		[illegible]	[illegible]	२७		समेजा मुसलमान रहे थे मीठे पानीसे मिठडो
	सं॰३२ [illegible]	३.५	[illegible]	२	[illegible]	[illegible]	१३२		यासोना था विसनोयो वजुवालो कूचावगाम
				[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		किया
२९	नगराजसर	५	[illegible]	[illegible]		[illegible]	२६	०	जैतुंगनगराजवसायथा वेरीललीकेपती
	सं॰३४ ऐ॰	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११४		कोपीवणे पीयाललीसतीहुई थानमौजूदहै

पूजाकरे जिसको पीवणा नहीं मारसके॰ गाम सूना हुआ था सो विसनोई शिवजो बसाया कुंवा पु

४०पानी खारा निकलने से नहीं हुआ

३०	वजु सं०२१ ऐ०						७७ २१५	१म	मांडु वागड सांगड की वेन वजु चौहान को परनायय यह्य गाम वजु व वेटे कूपे कूंपा सर कर ते रत्तासर वसाया था सो सुना हुआ सं० १८८७ में राव शिवजी सिंह को दीया जब गडी बनाई थी सं० ४ में पाड के गाम खालसे कीया सं० १५ में आधो गाम ठा० जेठमलजी को दियो फेर दो गाम विस नोयां जाटा वसाया है
३१	वजुकूजी सं०२१ जा०सं०१५								
३२	बागड सर ऐ०						८३ ४६३		पाडु सांगड बांगड वसाया था सो सूना हुआ वाद सं० १८६७ में राव नारसिंह के भाई मूलसिंह ब साया सो बूटा था फेर वसासी व वहुत सी खालसे की है
३३	पुवारां वालो सं०३४ खा०						४२ १७६		मांणकासर की सींव में ई० वीकानेर के पुंवार कां ने म्हावते नलो व गाम कीया मोका तो भरे हैं॥
३४	पूरनवालो सं०३३ ऐ०						८ ४०		मांणकासर की सींव में विसनोई पूरण हडुमान दृष्टांत से कूवा व वस्ती कीया सो हडुमानगढ़ भी कहे हैं॥
३५	मांणकासर सं०२९ ऐ०						३० १५२		केलणजी के अहद में मांणक पलीवाल वसाया सो सूना था श्री दरबार से कूवा करायाजब विस नोई वगैरः आवसा॥
३६	मोढायत सं०३० ऐ०						१६ ८७		नोडे मोढायत में विसनोई नींबे चेरियां पर वस्ती करी सं० ४० में पक्का कूवा किया॥
३७	दैदैरोतलो सं०३५ ऐ०								गाम वजूमिठडीये की सींव में जाट दैदै वैरासर नाम कूवा व गाम किया॥

३८	फ़लासर						१०		तांडे फूलासर मे विसनोई मूले खीचड रां कच्चा
	सं॰२१ ऐ॰						१३		कूना व तलाई व वस्ती किया सं॰४४ में दो कूवा
									पक्का होने से पक्का गांम हुआ॥
३९	गोड़						१०५		एव हरनाथने सोलखी पाने मकोल गोड़ सेव
	सं॰२२ ऐ॰						५०९		साया था सो सत्ना श्री दरबार से कूवा कराया विस
									नोई आन सा॥
४०	गैनेरेवाला								गोड़ु के जाट गैने सं॰२७ में कूवा व वस्ती करी
	सं॰७२ ऐ॰								
४१	रणजीतपुरा	१९	१	०	०	१६	१५६		जमाने सावक में नागड़ा कूवों पर एक साथा फ़कीर
	सं॰१९०६ ऐ॰	३					७१७		के आपसे वीरान हुआ फ़कीरां न कहाथा (नाग

डाफलकड़ी कड़ी दी पागड़) इसवोलपर श्रीमान् साहिबां ने श्री रणजीतसिंहजी साहिबा के नाम से
सं॰१९०६ मे कूना बनाय गांम बसाया फेर दूजा कूवा नहानियो होई सं॰४१ में

१	रामसर		२	०					विसनोई गजे रामसर कूवा कराय वस्ती करी त
	ऐ॰								या विसनोई लछमन वाघाणी कूवा किया है
	रेणु								कूवा रेणु सं॰८९ मे मरोटीयां को वसादिया पा
	ऐ॰								नी खारे के सबब वस्ती न हुई खेनवो वे हैं
	नायांवाला	२१	[illegible]	०	०	१२			इलाके वीकानेर के नाईयां कूवा व गांम कीया
	सं॰३९ ऐ॰			१२			[illegible]		फेर औरहो लोक आवसा॥
५३	सातु	२३	१	०	०	१७	२५१		तांडे सातु में भी मुसल्मानों गांम वसायो
	सं॰११ ऐ॰	ना॰		१९			८६		नेगलीये में घे वगैर रहवास कीयो॥
५४	फतूवाला	२२	१	०	०	१२	१९८		लोगा चफतू का जूना गाम सूना था सो कलादी
	सं॰२९ ऐ॰	ऐ॰		१२			७२		मगने वसाया॥

४५	मेघेवाला	ऐः	१	०					मंगलीयेमेघेसाच्चुवालेकूवाकाथापानीखारा
	सं०३३ ऐ०			१२					
४६	ढोलेवाला	२५	१	०		१२	८		रेतकेथलकानामढोलाहै लाडःम्हाम
	सं०१८ ऐ०	वा		११२			३४		कूवावगामकीया॥
४७	खारासु	२२	१		•	१२	२५		खारीपानीसेनामहूआकोटवालमोरनकूवा
	सं०३३ ऐ०	फ्वा		१२			५४		कीयोफेरविसनोयांकूवाकीया॥
४८	आदासरउर्फ चंदेसरवाला	२०	१	-					कलरचंदेसरकूवावबस्तीकीया॥
	सं०४० ऐ०	वा							
४९	नोरंगवाला	१९	१	०		१२	१५		कोटवालानोरंगकूवावगामकिया॥
	सं०३५ ऐ०	वाउ		१३			५४		
।	पुरोहितांवाला	११	१	।१		१	विकम	०	रावदुर्जनशाल्लजीपुरोहितोंकोज़मीनदीउन्हो
	सं०२९ ठा०	३					पुरमें		कूवावगामकियापरसूनाथाकई घरचाकरोंका
									जारहाखेतपुरोहितोंका॥
५०	विकासर	१२	१	।१			नोषमें	•	गामसूनासोलंकीविके का कूवाव थोडीसीव
	सं०३० जा०	३							रावसाहवदीनकीदीसोगामकहा॥
५१	कोटविकम						२६१		सुनाहैकिराजाविकमाजीतने १ दालदकापूत
	पुर जा०						९६३		लाखरीदासोईठै विकमपुरनामीकोटसं० २मेंब

नायरखासोमौजूदहैऔरकहतेहैं कि पुनलासिरहलावैजदहीकोटयालरै० चुनान्चेअव्वलपुवारथे पीछेऊमरसुमरा फेरह्वानीठोरवादसूनारहा नो तणु रावके कु० जेतुग ने लीया फेरसोमभाटी से केलणजी लीयाथा पाछेगांपाकेलणरहा सं० १५१९ में पूगलसे रावदुर्जनशालजी आयेजब सेबरसंगहै परयालटाणे हुवाहो १ दुर्जनशाल २ डुंगरसी ३ उदेसिंह ४ नरसिंह ५ विहारीदास ६ जैतसी ७ सुंदरदास ८ लाडखां ९ हरनाथसिंहजी श्री दरबारकाखेरखाह सं० १९०४ में

फोतहुवाजबसुंदरदासकाछोटाबेटाअचलदासकाबेटाकुंभारावहुआसं०१८०६मेंश्रीजोरावरसिंह जीसाहवांवफातदेकोटखालसेकीयासं०१८१९मेंसरूपसिंहलाडखांनोतूकोदीयाथाइसको उतारकरकुंभाकाभाईबांकीदासबैठासोफोतहुवाजवपोतायानेगुमानसिंहकाबेटानाहर सिंहगादी बैठा ६महीने बादइनकोमारकरसेरसिंहसरूपसिंहोतरावहुवासं०१८३५ मेंश्रीमूलराजजीसाहवांइणनेस्वर्गभेजनाहरसिंहकेबेटेजूझारसिंहकोरावकीयासो सं०७७मेंमराजबकु०अनाडसिंहरावहोताहीहुआदूलीपेशआनेसेकोटखालसेहु आ अनाडसिंहतोगडियालेमेंमजेचेचकसेफोतहुए छोटाभाईशिवजीसिंहसं०८८में कोटपरधावाडालापरकुछनहुआ श्रीदरबारनेवडापणेसेसं० ८७मेंगां० बजूरहवास दीयाफेरसं०१८००कीसालकोटमेंआवसे जेसलमेरसेफौजगईकोटकायमकरइनको बजूभेजाफेरहीवदनीयतीकागुमानपक्काहुवाजबसं०१८०४मेंबजूसेनिकालेसो ३० बीकानेरमेंजारहेसं० ९मेंबारू ठा० जेटमलजीनेपिताभोजराजकेवेरमेंशिवजीसिं हकोमारा सं० २५मेंशिवजीसिंहकेबेटेखेतसिंहकोकोटमराणेफवसंथा सामानओर ८गाम थलकोरकेदेकररावकीया बाकीपरगनाखालसेरखकरमौजेनोखमेंकचहरी कराई

जुगराफ़ियामुल्कमाड़मेंकोटविक्रमपुरकाहाल

सुनाहैकिराजावीरविक्रमाजीतनेएकपूतला दालदका खरीदासो यहांवीरानजंगलमें सं०२मेंविक्रमपुरनामीकोटवनाकरदरवाजेकेआगे रक्खासोहनोज़मौजूदहै = कहतेहैंकिजवहीपुतला शिरहलावेकोट पालटाकरैचुनाचेकोटमेंअव्वल पवारमालि कथे पीछेऊमरसूमरा फेरहूडीठोरकेवादसूनारहाजबभाटीतणुरावकेपुत्रजेतुंगनेकब जाकियाफेरसोमभाटीसेकेलणजीनेलियाथापीछेगोपाकेलणरहा = सं० १५१९ मेंपूगल सेरावदुर्जनसालजीआयेजबसेवरसंगमालिकरहेहैंनांहमपालटातोहोताहीरहा यानी दुर्जनसाल डूगरसिंह उदेसिंह सूरसिंह विहारीदासजैतसीसुन्दरदासलाडखांनइलायसिंह

ना श्रीदरबारके बड़े खैरख्वाह थे सं० १८०४मे फोतहुआ॥

स का बेटा कुंभा गाम गिरराज सरसे आकरराव हुवा उसको सं० १८०६ मे

ने खर्ग भेज कर कोट खालसे किया था सो सं० १८१९ में लाडखानके बेटे सरूपसिंह को

इसको मारकर कुंभा का भाई बांकीदास रावहुआ इसके मरने बाद इसका बेटा गुमान

नाहरसिंह गादी बैठा ६ महीने बाद इसको मार कर सरूपसिंहका बेटा

१८३८ मे श्रीमूलराजजी साहबां इसको वफात देकर नाहरसिंह के बेटे जुझारसिंह को राव

सं० १८७७ मे फोतहुआ जब बडा बेटा अनाडसिंह राव होता

लकर कोट खालसे किया और हाकम रहने लगा अनाड़सिंह तो गाम

से फोत होगया और छोटे भाई शिवजी सिंह ने सं० १८८८ मे कोट पर धावा डाला मगर

ब न हुआ फेर सं० ८७ में शिवजी सिंह को गाम वजु मे बैठाया बाद सं० १९०० मे ५

का दज हुआ था जेसलमेर से फौज जाकर इनको निकाला और

न हुआ जब सं० १९०४ मे वजु से भी निकाल दिया सो इलाके बीकानेर मे जा रहा था।

ठा० जेठमलजी ने इनको मारकर पिता भोजराजजी को बैर लिया इनके बेटे खेतसिंह को सं०

१९२५ मे बुलाकर कोट मरा ८ गाम थलकोरके देकर राव किया सो अब है

से उठाकर कोट नोरव मे कचहरी रखाई और खेतसिंह से लिखत करवा लिया है कि

की मोकूफी बहाली और पट्टे के गामों मे दीवानी फौजदारी का अखतियार श्रीदरबार

गा और रु० २६१) हरसाल रेखका भर दे॥

५२	कोलासर	८	१	२१	०	२६	१२	०	रावनणुजी के कु० जैतुंगके बेटे
	जा०	३०		९१			६०		या॥
५३	पादूसर	६	१	२१	०	५	१६	०	राठोडां पाबूजी के नाम से कूवा
	सं०१ ऐ०	३					७२		

ए गाम भाटी को दिया फेर रु० दे के पीछा लिया पर सूना या सो राठोड़ जीवणदास पा॥

५४	दावरीशाला ऐ०	२२ ३॥	१	५१	०	८	२९ ३९८	१म	दावरी जात है चेलें नवनुं सती के वरदान से कूवा चेला सरवनाया राव हरनाथ की वारमें

फेरकूंपे कूपा सरवनाया गैलोतें कूवा किया सो पानी खारे से वस्ती न हुई॥

४	खारा सं० ५०			५१				०	जूंना सूंना था, त्यार कीया
५५	गोगलीशाले जा०	७ उ०	१	५१ ५१	०	८	६६ २७२	१म	गोगलियो वसाया था गोपा केलण कोवसे निकल पहो कए इलाके माम ढुढुउग्रास

गए जब गोगली गाम वीठणोक जा रहा और यहां सोग राव की वस्ती हुई सो है॥

५६	चारणवाला ऐ०	२२ ३	१	५१ ५१	०	१९	१२५ ४७१	२म	गोपा केलणं चारणों को दीया था सो गलगया व राय दुर्जन शाल ने मरण कमलों व सोलंखे यों को वसाया सो है दोनोंही कूवा कराया
५७	पना ऐ०	९ ३॥	१	५१	०	१४	१५८ ७७२	०	सोलंखी विके को गोगलियों मारो विके केवे टलूंडे व पने पूगल से दुर्जन शाल को लाकरके

लणं गोपां व गोगलीयां को देश से निकलाय पने के नाम से गाम वसाया

५८	भारमलसर ऐ०	११	१	५१	०	१८	४८ २९८	०	भरण कमल भारमल कूवा व गांम करके सोग रावों को आधा दिया दोनोंही हैं॥
५९	वोडाणो ऐ०	४॥ ११	१	५१	०	२१४	७६ ३९७	१म	शक्ति देवल के श्राप से वोडाणा गाम माड वालो डूयहां शायरवजी का प्रधान हो गाम बसाया
६०	खैरूनाला सं० ५९ ऐ०	१८ वाउ	१	०	०		०	०	श्रीजी साहिबों से दौरे में शेख खैरू शजे कराय रावजी के तालुके में कूवा किया पुर्से ९७मीव पानी होने से गाम वसा॥

६१	बिरसलपुर जा०	२४ ३०	१	११	०	३।२१	६०२ २३६०		खीचेसेखावतपूगलसे आकर सं० १५०२ में गढ व कसवा दूदेवरसलके नामसे आबाद किया सं० १५६० में मुलतान का खज़ाना लूट

लाया तो खत्री भूलछक व फत्तूखां बहुत फौज ले आया जब खीमाल व कु० करणसाका कीया सदहा मनुष्य फौजके मारकर जूझार हुआ गढ व गाम बरबाद हुआ था सो बहुत मुदतके कोशस से रोनक पर आया और २० वर्ष होंगे पीछे तो खातरखुबातर: कीपर है कि परगना हो गया व होता जाता है मंदिर एक में श्री लक्ष्मी नाथजी व पारसनाथजी सामल विराजै व आरोगे है जुदा करे तो विघ्न हुवे तीन मंदिर देवी के भैसासूर सांवगीयां सांवलदे १ मडी में महादेवजी हैं १ खेत्रपालजी १ रामदेवजी गढ रोडै पत्थरोंका मजबूत १६ बुर्ज १ दरोंजा पूर्व मुख अन्दर मकानात महलात दो मजला व मंदिर और कूवा जैतसीसर गहरा फुट ६५ पानी खारा मीठे पानी का टांका उमदा है तथा चाकर ब्राह्मण लोगों का कई घर हैं कोट के चोतर्फ गाम वस्ता है मकोंनई टांका दोखणाभी है ॥

१	भूसेवाला	३ ३	१	२	।५	।८		०	दईये भूसे सं० १८८५ में कूवा व वस्ती किय
१	गन्नीवाला सं० १०	७ ऐ:	१	० ।१०	०			०	भी गन्नी कूवा व गाम किया ॥
१	मंगनवाला सं० १५	८ ऐ:	१	० ।११	०	१		०	सोलंखी मगन कूवा व गाम किया पूगलवालों नाहक तनक ए र सुरु करी सो सरहद निकली जब चुप रहा ॥
१	मीरनवाला सं० ६	७ ३	१	० ।१०	०	।६		०	लधड मीरन वस्ती करी ॥
१	रोहीडावाला	५ ५६	१	।३६	०	।२		०	डोहीमेंदर खत्री रोहीड के सं० १८८० में भी मुसल्मानों वसाया

।	भाटीयावाला सं०११	५ ३	१	० १	०	१२		०	रूपसेहोतभाटीयापक्काकूवावगामकिया
।	डिहरीया सं० २४	३ रो:	१	० ११	०	०		०	लंगाहांवगैरःकच्चोकूवावढांनोकिया॥
।	निसुंमा सं०५	७ ई०३	१	० १०	०	०		०	भरोववलोचोंकीवस्तीहुई॥
।	तुवरोंवाला	६॥ ई०	१	१				०	रावमंडलीककीठकरालीवीकानेरमहाराज कल्याणदासजीकीपुत्रीसगणदेनेसगण

दिसरकूवाकरायासोवीरानथासं० मेंतुवरोंक गामवसा॥

X	मिसरीवाला	१३ ई०	१					०	लधड मिश्रीसं०२५मेंकूवाकियापानीखा रीसवस्तीनहुई॥
।	जगासर सं०१६	८ ई०	१	० १८	०	१६		०	कोहरीमुसल्मानोंकूवाववस्तीकिया॥
X	धालेवाली	७ पू	१	० १२				०	विसनोयोंसं०२०मेंकूवाकियापानीखारेसे वस्तीनहीहुई॥
।	मोडीया	५ पू	१	१				०	भाटीयांवलोचांशिषजादांकूवावगामकिया
।	बिकंनरी सं०३०	७ पू	१	० १२	०	१		०	पडेहारसांवणकेकूदापरजादवसादूजाकूवा किया
।	खुसर सं०२४	७ प	१	० १२	०	१		०	दादरीपठानोंवगैरःकच्चाकूवावनायगाम वसाय॥
।	रूपरवाला सं०३०	५॥ रो	१	० १४	०			०	वलोचांकच्चोकूवाववस्तीकरी

।	भैसोडुंक	५	१	०	०	१५			०	नायवां कच्चा कूवा व वस्ती किया॥
	सं० २२	वा०		१४						
४	ढेढणीवाला								०	ढेढणीके डोहरमें पड़ेहारो कूवाकेयो पानो
	सं० ३९									खारेसे वस्ती नहुई॥
।	साहवों	७	१	०	०	०			०	भीया कच्चा कूवा व वस्ती किया॥
	सं० २०	उ		१४						
।	सुरीदसर	१३	१	०	०	०			०	कोहरियो सं० २० में कूवाकरनो चाह्या था परत
	सं० ३८	ई०पू		१९						ऊझा फेर विसनोई आवसा॥
।	जैतेआलीक	३	१		४	०			०	विसनोई आय वसे कूवेका पानी खारा है
	व्वर सं० ३६	पू		१९						ज्यादः वस्ती की उम्मेद नहीं॥
१	कोटवाषरवा	४७	२	०	[illegible]	[illegible]	३६४	२वि		भो० खडे २ था श्रीकेलणजी साथ पल्ली
	लसे	३					१५४७	१शि		वाल आवसे सो है सं० १८७७ में दिकमपुर पुर
								१म		खालसे हुवा जबसे इहां जुदा हाकम रहते है

पुरानी गडी गांवमें है अब तालाब में घड़ासर पर कोट बनेगा भैरोंजी का थान कदीमी है सामी दलुनाथजी का मठ सं० १९३० में उमदा बना और कसवा भी तरकी पर। है कि अब नवी गुवाडियो का रहने वजो लैके लीये जमीन व मुसकल मिलती है हाकम मोकाती सालम चन्द राखे था हमीर मल व नायव मेता साम सिंह परोहित नोलाराम और मातहत थाणा व सायर को चोकी गांव सीहड़ा व खीरवे में है मनोख व वापकी तहसील काम भी उन्हों के तअल्लुक है सं० ४१ से गावोंमें हवालदार रक्खा गया कि खेती में तरकी व रखवाल के सिवाय महसूल वगैरः को भी निगरानी रखे॥

।	गोमटीयाम	१॥					०	गोमटीये म्हार रहते है॥
	होरारोस	द						

१	खालतांरी	३						०	
		पू							
२	भोजांरोवाप	॥	२			३१३	१९	१म	केलणजोसाथपल्लीवालभोजनेछोटेभाईकं
	भो०	८					६४		वहूकेतानेपरयह्यागामवसाया
३	खीरवा	४	१	१	१४२	४१४	२९	०	भो केलण
	ऐ०	८	१				१०६		
४	सेखासर	५	१	०	१३०	३१९	२१७	१दे	ऐ०
	ऐ०	८नै	१				८९८		
५	जैमल	६	१	१	०	३१८	४६	०	ऐ०
	ऐ०	नै	१				२२७		
६	अरबाधना	६	१		१२२	३१४	८३	०	भो० केलण
		प	१				३४८		
७	जगमालरी		१			१		०	पडेहारकीजमीनमेंबिसनोया
	खा०		१						गामवसायाजगमालकीतलाईपर
८	मोडवीया	११	१			३१२	११	०	ऐ०
	ऐ०	प	१				६४		
९	रांणेरी	८	१		१२१	४१८	१०६	०	कोनासरकेबिसनोयांरांणेकीतलाईपरगाम
	ऐ०	प	१				५४२		वसाया
१०	खाखुरी		१			३१२	२२	०	पडेहारखाखूकीतलाईपरवस्तीपडेहारांकी
	ऐ०		१				१०७		है॥
११	बारू	१६	१	६	१२५	३१५	२८९	०	१२कुवावांकेकारणबारूकह्याअसलबासंदेबुध
		प	१				१३४७		भाटीयाफेरपड़ेहारआरहेबादटेकरेसेभाटी-

भागचन्द कुंवार का दासोत आकर कबजा कीया जब से कई दफा वीरान भी हुई मगर फेर ही भाटी रहे और अब वी सींव में तलाया पर ढांनीया जो नीचे लिखी है हुई॥

१	खेतुसर	३	१			११		०	भाटी हीरजी
	ऐ०	ई·पू							
१	धोली	३	१			१		०	गाम जेठमल्लजी
	सं० ऐ०	पू·अ							
१	दुरजनसी	३	१			११		०	
	सं	पू							
१	देदासरी	३	१			११		०	
	सं	पू·ई							
१	अनजीरी	२॥	१			१		०	भाटी अनजी
	सं	नै·द							
१२	कानासर	८	१	१	१५०	३।६	२५२	०	सं० १८८३ में खरीगे के विसनोयां ने अव्वल यह
	खा०	प·वा					१२८९		गाम कालासर तलाव पर वसाया और राणावत

जी सा॰ के पट्टे था वहुत से घर मारवाड से आये॥

१	नवा		१	०		१५		०	वहुत से गाम पल्ली वालों ज्यों वसाये परन्तु
	सं हे०			६					जमींदार नहीं क्योंके हनोज किसीने ज़मीन
									मांगली कन्ही लिखाई है
१३	रावरो	६	१			२१४	४३	०	मो केलण
	मो०	प·वा	१				१२८१		
१४	हरभा	३	१			२१२	९७	०	ऐ०
	ऐ०	ऐ					४९		

।	दुगाणी	११	१			१९		०	ऐ०
	ऐ०	नै०							
।	जोधाणी	ऐ.	१			२१४		०	ऐ०
	ऐ०								
।	खालड़ा	१२	१			२१३		०	ऐ०
	ऐ०	प							
।	भाथडा	१२	१					०	ऐ०
	ऐ०	प							
×	विरोलाई		१	०	०	०	०	०	भो पाङ्‌सेखासरमे है ठाणाधाभेरहै
	भो०								
×	असलमाली		१	०	०	०	०	०	भो कोटडीयासेखासरमें है
	ऐ०								
१	सीहड	३५	१	१	१७०	२१४	८६		रावजीके घोडेका आंतराकढा जिससे अन्तर
	भो०	पूर्दे	२				४५५		कदासो अंतरगढ व भो० सीहडसे सीहड
सं०७७सेहकुमतकापकादो सिपाई पानेरहते सं०२७ मेंजुदा परगनाकीयाया फेर सं०३२से वापकेमानहत मुहरर व्यास अभयकरण व कईसवारहै॥									
।	पंडितारीढाणीयांदोयहै								कूवाखोदते देवी कोमूर्त्ति निकलीजव थानथापकरनाम देवीसर दीया किसीसे प्याउ वेच्चै तोपानीमेंकीड़ेपड़े॥
२	टेकरी	३	१	११	२५	६११	११७		भाटी द्वारकादासोत
	जा०						५३४		
।									

३	छायण ऐ०	५ प०	१	२	०	२१४	१५२ ६३५		पड़िहारकीज़मीनमेंदूसरागांववसायश्रीखेतसीजाकेबैटेसबरहेथेसोदूसरेगांवमेंजारहेद्वारकादासोतयहांहै॥
१	लाठी जा०	१९ ५०	१	७	०	१५	१६७ ७०१		भो० जसोड़ लोहटासे ठा० राजश्रीईसरीसिंहजीगांवखरीदा फेरश्रीदरबारमेंहाथी

नज़रकरवसीलिखायकसबाआबादकीयावकोटवनायाथा परपल्लीवालसाहूकारवगैरः वहुतसेलोगवकोटविखरगया सं० १९२३ मेंग० राजश्री छत्रसिंहजीनेकच्चेपत्थरानकाकोट बुर्ज ७ व दरवाजा व मकानात् महलातवनाया हकूमतकेकाम पर श्रीदरबारकाहाकिम रहताथा सं० १९०३ से यह काम भी ठा० मोसूफकेताल्लुके हुआथा सं० ३९ से परगनातोअलग कीया वोलीवाएही लेते फी मनुष्य ॥ नदीमें कूवा पु० २६ पानी वहुत व मीठाहै गांवसे पश्चिम डेढ़ कोस पर छत्तासर प्रधान हमीरराजसीने सं० ४१ में वनाया॥

१	लोहट	२ ८	१	०	०	११	२७ ५६		जसोड़लोहटरहेहै
१	धोलीयो सं० २७	१ ५	१	० २	०	१५	५१ २४२		विसनोया एककूवा सं० २७ में दूसरा सं० ४२ मेंकियागामवसापानीवहुतमीठापुर्से॥
२	रतनरीवसी भो०	२॥ ३१	१	१	०	२११	१५ ४७		भाटीमालदेहोतहै सं० ७९ में नदीआईजब १ गुसांईकूवाबनाओ सोगुसांईसरहै कईवर्षउदेसिंहोतसरूपसिंहकाहीरहाथा॥
३	छत्तासरउर्फ करालीयो सं० २७ ऐ०	४ ८	२	०	०	२१४	४ १५०		हमीरराजसीनेगामडेलासरवभैरवोसेजमीन लेकरवसीलिखायाकूवातालावकोटड़ीपक्कावनायगामकिया

४	धायसर	७	१	२	०	२४	४६		भोजसोड महारावलभीमकीथायकूवाकरा
	ऐ०	८·नै					१८१		या जसोड खेतसी गामवसायाकूवेका पानी

खाराहुवा पीछे फतेपुरीयाजो सं० ९०में दूजा मीठा कूवा कराया आईजी का थान न कूवा पक्को-ठापक्का है॥

५	भैरवा	८	१		१७	१९	३५		भोजसोड आईजीकाथान फकीरउवायेका
	ऐ०	नै					१२०		कोठापक्का नदीमेंबेरीगोंपानीमीठा
६	सागर	८	१		१४	१	४१		भोराठोड़सगरगामचांधनकीजमीनमेंवसा
	ऐ०	प	१				२५३		पासं०३१मेंआईजीकाथानपक्काकराया
७	चांधन	७	१	१	४	२१२	४७		भोजसोड चांधननामवावडीकूवाकावरोंया
	ऐ०	३·वा	१	१२			१६३		सथोडेलेजीकेवेटेऊगेगामवसायागांवसेउ-

त्तर१कोस१कूवानोंल्खुरियोऊहै तथानदीमेंवेरीयांगाम पासकूवाथानपक्का है॥

८	जेठा	८	१	०	१४	१२	२४		स्यांगा जुदावास है
	ऐ०	ना	१				५१		
९	सावल	१०	१	०	२५	२१२	३०		भोजसोड सावलगाम मालीगडेसेआकरचां
	ऐ०	प		१			१३१		धनकीजमीनमेंवसा आईजीकाथानवसं०
									१७में कूवापक्काकिया॥
१०	मालीगडा	७	१	३१	०	५१	२३		भोजसोड गजेगामडेलासरसे आकर चांधन
	ऐ०	वा३					७५		कीजमीनमेंगामवसाये॥
११	सूजीयो	४	१	१	१३	२१	४८		भोरायधरोंकोदेरावरसेबुलायगामवसाया
		वाप					१००		पहलेयहजमीनगंगागुरोंकेथी॥
१२	टावरकी	४	१	१		१२	१४		टावरीयाकासुनागामभाटावरकीपरवालेभु-
	जा०	३·वा					६३		नाथेसोअखेराजोताकोदीयाथासोलोकगये

कई बर्षे बादसं० ९५में आसकर्ने कोवसादीया कूवा १खार वआईजीका थानकांकड परहै॥

२३	ऐटा	७	१	३।	२५	१४	९५	२९७	१८ कूपे ऐटा गाम भुतने सूना कीयाथासो
	जा०	३							भो० राठोड पिथडाने वसाया फेरखालसेहो

कर सं० २२ में राज श्री तेजसिंहको जागीर हुवा १कुवर गोपला कालुहारखी ठा० प्रतापसिंहजी कोदीयो डाडे १ पगवाव बूरोडी

२४	चांदसर	६	१	२।	०	१२	४३	१६२	गाम टोटाकी जमीन हूतीहै तका आधाकूवा
	जा	३-३							वसीव ठा० चांदसिंहजीको दीयाजवसं०
									१९६८ में गाम वस्या॥
२५	लुहारखी	६	१	२।	।३०	।१३	४८	२१२	भो० भणाकमलका गाम लुहरीत परहै भा
	जा०	३-१							टी सगतसिंहोत रहेथे सो गाम वडाणो है ऐ
									गाव राव प्रतापसिंहजीको वसीदीया
२६	नवातला	४	१	२।	०	।६	१४३	४९४	१वि० १म० पल्लीवाल सघा कूवा कराके गाम
	जा०	३-ई		३।					उयासजारहीठा० केशवदासजीको वसादो

याजबकसबा वसाया सं० २६ में आईजीका थान व सं० ४२ में दोकू० नवा हुवा॥

१७	भाईया	२	१	२।	०	३।२	१४३	५९१	जसोड मलके भाइयोंने लोहट व भाई वसा
	सा०	३							या भाई हेळकानोमें कु० वनानेसे रूकवा सं

८० में श्री स्वांगीयाजीका थान वनायसांसन सीवसुधाकिया फेर सं० ८८ वा १९०१ में दोया न कूवा वनाया

१८	अर्जनवार	३	१	१।	०	।१२	१५	५६	भाईकीमें कल्लरां कोवसाया त्याग माफ सफ
	प०	वा							रकी सवारीमें १ ऊंट निस्फ किराये हाजर
									रहे १कूवा केशवदासने वनाया सो खारा है

१९ सोढाकोर मो०	३ पा	२	२।	।२	२।५	२८	८९	भोजसोड डेलेके बेटे सखराने बसाया. चोवु रजोगडी पकीमें भाईजीकीहुक्म थापीथी
२० डेलासर मो०	४ ने	२	१।	·	३।७	५५	१५६	१मडीमानपुरीजोकी भोजसोड डेलजीके बरोंसेआकर कूवा वगाम कीया फेर आईजी का थान, '
० मयाकोहरप्प महेराजकोहर	३॥ ३·		बूरे डा	·	·	·	·	रावभवानीसिंहोतांको दिया था स्येनस्ट जमीन पोलमें पडोसीया दाबी॥

नकशाकुलपरगनातकेगाम हानीआबादवीरानजोजुना यानवावगामोंमेंनवाकूवापक्काकच्चाफसलहुईसो तथबस्व प्रिसकियेसो

नंबरपरगना	नामपरगना	तादाद कुल गाम							नवाहुवासो			पडोसइलाकोपरगना				गाम या सीवुस्केनए डीनजोजागीरभेम परेसासनजिस्को सं १९०२ से बसके पहाल पतोरखइलोजे जरूनहीयाकूवाके कीकैफियतमें हुई
		जुमलेगाम	आबादी		हानी		वीरान		कूवा		खालसे	पूर्व	दखिन	पश्चिम	उत्तर	
			जु	नु	जु	न	जु	न	पक्का	कच्चा						
।	खासशहर	१२	९	३	·	·	·	·	७	३	१	जेसलमेर	जे·	जे·	जे·	बूर्डजोगराजगामस खेवालेको ॥ वडासे सं· ७
१ १	जेसलमेर	७६	५२	२	१	२	१७	५	४	३	७	लाठी देवी कोट	फतेगढ़	आभा सुपाक रामगढ	देवा मुन गढ़	राघझाधानसिंहको गाम मजीपाभ· २ कुवा सं ३२
२	देवीकोट	३९	२७	५	·	२	५	·	५	४	७	नारणाउ	फतेगढ़	जेसलमेर	लाठी	भाटीरजसीगावचा लानेवालेकोगाम झासरजा· सं· १०

३	फतेगढ़	५७	३५	१	१	·	११	·	·	१	१०	मारवा	मारवा	महाज लार	देवीको ट	राजश्रीउम्मेदसिंहजीको
												ड	डलारवा	जेसल मेर		गाम दुधू जा·
४	लारवा	२२	१९	२	२	·	२	·	१	·	३	ऐ·मला	जोध	महाज	फतै	सोढाऊमजीगामभुकावा
	प०											नी	पुर	लार	गढ़	लेकोगामकीतादियाथासोहै
५	महाजलार	२४	९	२	९	४	·	·	१०	२	२	लारवा	ऐ·	अंग्रेजी	सम	मगयेसं·४१खालसेहुआहै
	प·											फतैगढ़		खेरपुर	खाभा	जूरीगणेशदासजीको
६	खाभा	२४	१६	·	·	२	६	·	१	·	७	जेसल	महाज	सम	अंग्रेजी	मुंदडीकाजमीनमेंसीवदी
	प०											मेर	लार		खुयाला	तलाईवस्तीसं·१३मेंकीया
७	सम	२२	१३	५	५	·	·	·	१३	३	८	साभाम	ऐ·	सहा	खुया	राजश्रीछत्रसिंहजीयहांको
	प०											हाजला र	सिंधु	गढ़	ला	गाममेंएगरीसीवजासं·१५
८	सहागढ़	९१	४४	·	२४	·	·	·	·	३	·	सम	सिंधु	सिंधु	देवगढ	वरीसिंहजेठमलजीकोगाम
	प०		२८												खारा	वजुआधीजा सं· १५
९	देवगढ़	१	१	·	·	·	·	·	·	·	·	खारा	सहाग	ऐ·	खारा	खीयाभाटीखीवकर्नकोगाम
	प०												ढ़			चैनुदीयाथासोछोडगया
																सोरावलोलमानजीकोदीया
१०	खारा	१५	५	९	·	·	१	·	१०	·	·	खुयाला राम	देवगढ	ऐ·	रामग ढ़	भाटीवेरीशालगामतापुवा
	प०											गढ़	सहाग ढ़			लेकोगामभु·जा·
११	खुइयाला	१०	४	·	६	·	·	·	·	·	२	जेसल	सम	खारा	ऐ·	मेदीयाथासोनहींरहेजवक
	प०											मेर				विराजजी को सं० ४३मेंदी·
१२	रामगढ़	५६	१०	२	·	४	·	·	·	·	६	ऐ·	खुयाला	कनोट	किसन	कनोतिकर्नसिंहगामचांदस
	प·											देवा			गढ़	मेंवालेकोगामकोटाजा·
															वारास	मेदीयाथासोनहीरहे॥

																	गाम
१३	टणोट	३	१	२	-	१	-			-	९	-	गामगढ़	गामगढ़	सिंधु	गामलु र	दोल्लमलोडकेभारीवाग
	प०															स्रूलनग ढ	नंदासोतभोनजीको गाम
																	पा·चा·जा·दीपाछिनरहे
१४	किशनगढ़	१	१	·	·	·	·	·	·	१	·	·	वराहा	गाणेर	सिंधु	गानल	व्यासधनुजीको गांमहीसु
	प०													गनपह	=	पुर	सरसंमेदीयापडोयीगाम
१५	वराहो	६	६	३	·	-	·	·	·	६	·	·	सुनग	दत्तार	राम	ऐं	पियल्लिखाडे सोनगरा की वज्रे
	प०												रूदेवा	मगढ़	गढ़		पीढालेकाढ़सुतमेंवसवे
१६	देवा	३१	२०	२	·	·	१०	-		५	१	१	गूमल मर	जेतल्द	ऐ०	वराहा	भाम राजश्रीनेजासिंहसद्द
	प०												सुनग ढ	गर	वराहा	सुनग ढ	कोगामऐदाजा·सं० २३खां
																	लसेतांऐला प·से
१७	सुँनगढ़	१९	६	२	१	१	·	·	·	१३	६	३	लाठी	देवा	देवा	नाक्ना	वरीसंहरेननसिंहजीको सं
	प०														वराहा		२५दिकमपुरकोट मपे देगा
																	मकेदेकर एनाकिया
१८	नाक्ना	१६	६	१	·	६	·	·		८	१२	१	चाप	मुंनग ढ	सुनग ढ	सिंध	राजश्रीअनारसिंहजीको
	प०												नोप	लाय	सिंधु	नोप	गामलखानजा· संपंमजो गराजजोउदेसिंहोतगामक राजा·से·गामे नोखली ऐ·से
१९	नोख	६२	३०	३२	४	२६	१	:		२६	·	६	चीरूने र	चाप	नाक्ना	चीको	सोहामदनसिंहराखांप
	प०												गाएा ढ	नाक्ना	सिंधु	नेर	रामगामलुणराजा·सं·२८
																	भाटीपथीराजजोधासिंहत
	चाय																गामसीहड़ाराजा·सं·३०
२०	प०																भारीनहाराजीजेठमलोत
																	कोगानासिंधु प·

२१	सीहड़ प.	४	३	·	·	१	·	·	·	१	१	मारवाड़	मारवाड़लाठी	लाठी	वाप नाचना	सेठप्रतापचंदहिम्मतराय कोगामसिंधु प. सं २
२२	लाठी	२४	९६	१	·	३	१	·	१२	१	३	जोधपुर	देवीकोट	जेसलमेर मुणाग ढ़	पुनगढ़ सांकड़	भाटीजेतसिंहोत दूघल सीवदेवीकोटरीमें सं

[illegible] सोढारनजातसिंहखुड़ी सीव मूलपसारी जा. सं० ३० व्यास पालजी नुं सीव डोहरी रहधरा चैनजीराना गामजेसुराणेकात भोजासर व कु० १ भो. सं. ३२ हमीर राजश्री गेनजीयोत गाम करालिया जा. सं० २७ गयागुरनुं सीवपुन्यार्थ गामजेठमलजीरांनु सीव सं. ४१ रावलोतमोडजी गाम खारीया जा. सं. ४२ सोढा खेतसी वगेरः वहुतोंको घर खेतका हासल माफ॥

गोसवाराकुलपरगनेजातदेहातवढानीजोसं०१९४५ वैशाख सुदी ३ है

परगनेका नाम	तादादकुल गाम	तादादकुल घर	तादादकुल मनुष्य	खालसे हे बसते गाम	खालसे हे बसते ऊजड़	खालसे हे वीरानगाम	खालसे हे घर	खालसे हे मनुष्य	जागीर गाम	जागीर ऊजड़	जागीर घर	जागीर मनुष्य	भोमीया बसते गाम	भोमीया बसते ऊजड़	भोमीया वीरान	भोमीया घ	भोमीया म	पट्टे गाम	पट्टे घ	पट्टे म	सासनडासन गाम	सासनडासन वीरान	सासनडासन घ	सासनडासन म
खास १ शहर	१२	३५०४	१२०२६	६	·	·	३५०४	१२०२६	·	·	·	·	·	·	·	·	·	६	·	·	·	·	·	·
१ जेसलमेर	७६	२६९७	[illegible]	१३	१	१२	८८५	३९९५	३	·	२३६	६६३	२३	२	८	२७७	[illegible]	६	१५४	५४७	६	·	२६८	११०७
२ देवीकोट	३६	[illegible]	[illegible]	६	२	१	५८८	[illegible]	६	·	[illegible]	[illegible]	२४	·	२	[illegible]	[illegible]	२	६	२९	४	२	१६२	[illegible]
३ फतेगढ़	५७	[illegible]	[illegible]	८	१	५	६०२	२४७०	२	·	१३१	५२२	१८	१	४	६४७	[illegible]	·	·	·	७	·	४३१	[illegible]
४ लखा	२२	६७०	[illegible]	७	·	२	२२१	[illegible]	२४	२	[illegible]	[illegible]	·	·	·	·	·	·	·	·	१	·	६६	[illegible]
५ महाजलार	२५	४७०	[illegible]	४	३	-	२७८	२४५	२	७	२२६	१०१४	५	१	·	११६	७७७	·	·	·	·	·	·	·

६ साभा	२४	२४०	[illegible]	८	·	१	३७	२०	२	२	२८०	[illegible]	५	·	१	११३	[illegible]	१	३१	३४	·	·	·	·
७ सम	२३	६७८	[illegible]	११	५	·	८१	[illegible]	१	·	१४	११०	२	·	·	६३	[illegible]	·	·	·	·	·	·	·
८ सहागर	८८	११८	[illegible]	७२	२८	·	[illegible]	[illegible]	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·
९ दैलगढ	९	१०५	[illegible]	१	·	·	७१	[illegible]	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·
१० खांप	१५	६१६	[illegible]	१४	·	२	११५	[illegible]	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·
११ [illegible]	१०	३६२	[illegible]	२	६	·	२११	[illegible]	·	·	·	·	१	·	·	[illegible]	[illegible]	·	·	·	·	·	·	·
१२ [illegible]	१८	३१५	[illegible]	११	४	·	२०१	[illegible]	·	·	·	·	२	·	·	१२४	३३	·	·	·	·	·	·	·
१३ नागार	२	२०७	[illegible]	२	१	·	२०७	[illegible]	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·
१४ [illegible]	१	३११	६००	१	·	·	३११	८००	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·
१५ [illegible]	६	८३६	[illegible]	१	·	·	८७	[illegible]	·	·	·	·	८	·	·	१८६	[illegible]	·	·	·	·	·	·	·
१६ [illegible]	३१	७०१	[illegible]	१३	·	१०	७८९	[illegible]	·	·	·	·	५	·	·	३१६	[illegible]	२	२०	६३	१	·	७	२६
१७ [illegible]	११	६१८	[illegible]	१	२	·	२११	[illegible]	१	·	११६	[illegible]	२	·	·	२१५	[illegible]	·	·	·	·	·	·	·
१८ [illegible]	१६	८७२	[illegible]	·	·	·	·	·	११	८	८७२	[illegible]	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·
१९ [illegible]	२२	८८१	[illegible]	२१	२	·	[illegible]	[illegible]	११	२८	[illegible]	[illegible]	१	·	·	१८८	[illegible]	·	·	·	७	१	[illegible]	[illegible]
२० नाप	२६	१४९६	[illegible]	६	३	·	४२१	[illegible]	१	६	२८९	[illegible]	७	·	४	४११	[illegible]	·	·	·	·	·	·	·
२१ सोहड	८	३१५	[illegible]	·	·	·	·	·	२	·	३११	[illegible]	१	१	·	६६	[illegible]	·	·	·	·	·	·	·
२२ नाठी	२४	११३६	[illegible]	·	·	·	·	·	६	२	२६७	[illegible]	१२	२	१	३२८	[illegible]	१	१४	२४	१	·	[illegible]	[illegible]
कुलमोद	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

देशमें

रहने के मकान खास शहर व पल्लीवालों व बाज जागीरदारान भोमीयां के गामों में पत्थर के और उत्तर की तरफ व रसलपुर वगेरः में साहूकारां वगेरः के कचे व चुने स घरों के भी है बाकी सिंधी सिपाहीयां वगेरः गुरबा लोग व रजोयत कोम के रूपे होय खुसपोस व छप्पर बंधा घासका है सो सं० ४१ से हिदायत की गई है कि छत्त न लीये व खपरेल का बनाया जावे स्थान इसमें कूवों की गहराई फुट ९० से ऊपर ५०० तक की है और ९० से कम को देरे कहते हैं पानी मीठा फीका खारा याने सब तरों का है व गाम दालाना में रोडा टेकरा गिरज घर विकमपुर वगेरः कूवों का पानी विरावा जो प्यासे के वासो जहर है तथा परगनः नोख नाचना मुहनगढ़ में जहां २ पानी खारा या विरावा है या कूवा नहीं हैं मीठा पानी की कुमायां टांका वारस के पानी से भर रखते हैं अब दूसरे परगनों में भी कुंडा बनाने की ताकीद व नसीहत की गई है तथा जमीन इस देश की रेतली पत्थरीली व खडांनो की चिकनी है और जो जिन्स पैदा होती है वहुत ही उमदा –

तथा न मालूम कोन आपे से पल्लीवालों के गाम बिलकुल घटगये व घटते जाते हैं ज्योंही खास शहर के लोग भी निकलते जाते हैं बाकी सब मुल्क में आबादी बधी व वधती जाती है चुनांचे परगनः बाय व नोख में खातर खाः आबादी हुई व होवे ही है अब नवां गाम वसने को गामों की सीवा निकल ने बाद जगे हा मिलेगी और परगनः नाचना व मुहनगढ़ वगेरः सम महाजलार में कुवा गाम हो सकेंगे और सहागढ़ घोटड खारा रामगढ़ खुइयाला लाठी लखा में जो लोग रहते हैं उन्हों के भाई गिनायत के सिवाय दूसरे लोग नहीं रहने पाते और खाभा देवा फतेगढ़ जेसलमेर के परगनों में तो बिलफेल वधने की सूरत नहीं दीखती है श्री वडेगा साहब ने फरमाया था कि जब जमाना अच्छा आवे मुल्क वसाने का उपाय करना मगर सं० ४१ से वहुत से उपाय करके चुप होना पड़ा ज्योंही ब्योपार की तरक्की मौजें बाय व रसलपुर मारुली में तो ठीक हो गई नोख नाचना मुहनगढ़ रामगढ़ सम महाजलार सहागढ़ गामों में भी होने की गुंजायस जानकर हरचन्द तदबीरें की गई पर वहुत सा ली पाने का मयाबी नहीं होने दी सो जमाना अच्छा आने पर ऊपर लिखे मुजुवीये गामों में तरक्की होने

की कोशिश करनी होगी तथा गेहूं पैदा होने की मात जगह का नक़्शा करके सब तरह से राय लिखो बल्कि उपाय भी कीये पर ज़माना अच्छा व करसे लाग होने से काम न्याविहुआ अर्थात् बिलफेल तो अच्छे होने की उम्मेद् नसूरत कोई नहीं बंधी॥

पहुवाल खांण

दफ़े १३ अकसर पत्थर की खांनेः वहुत है वह पत्थर ऐसे काम नक़ाशी को निहायत उमदा व पायदार होता है कि हिन्दुस्तान भर में कम होगा · जाली झरोखे वगैरः का तारीफ़ यहां तक लिखी जावे देखने से ही मालूम हो · खान फरीदराव अकला केकड़ी झाभला रूपासर वगैरः को पाटुपान कहते है · रंग जर्द और घड़ने में नर्म मगर मज़बूत बहुत इमारतों के काम में आता है · इन वरषों में पत्थर का काम वधती गया है सिवाय किवाड़ों के दीवार व छत्त भी पत्थर के पटी वटुकड़ों का होता है · यह तरकीव सं॰ ३० से निकाली ६० वर्ष पहिले सुरंग का हुनर नहीं था जब वड़ा पत्थर निकालने में खर्च ज्यादह लगने से ठहरादी थी कि पत्थर का छत्त ग्रहस्तो के घर में अशुभ है · सो अब खर्च कम लगने वह काम उमदा व मज़बूत तुर्त वनने से लकड़े का अशुभ रहा · ये संग अहमदाबाद व सिंध वगैरः मुल्कों में जाता है · महाराना श्री सज्जनसिंह वाली उदयपुर ने सज्जनगढ़ में कमरा वनाने को व जोधपुर व नीवाड़ा में जैन के मंदिर में लगाने को मगाया · अब उम्मेद है कि दूसरे मुल्कों में भी ज्यादह जावेगा · क्योंकि रेल नज़ीक आगई है और महसूल भी सिर्फ ३) रु॰ गाडे · ये ४०। ५० मन दो जोडी बैलो से ले जाते हैं लगता है · खान कुडकडा के संग का खरल प्याले गिलास रकावी फूलदान आवखोरे वगैरः वर्तन काच व चीनी से जिलोदार होते हैं · और यह खूबी वढकर है कि थोड़ा सा वोझ डालने पर भी पानी में तिरता है · पर संग कडा के वाइस नकाशी काम नहीं हो सक्ता · तथा चौकी कुरसी देवली व फर्स निहायत खूबसूरत होने से दिशावरों में ही जाता है · खान विछूपान जो विदी या रंग स्याह व पीला अवरदार इसका भी संग कडा वह वर्तन कुड़कुडे जैसे होते है · मगर लंबा चौड़ा १ फ़ुट से ज्यादह यह संग इसका नहीं होता ·

खान हाबूर शहर से यह १६ कोस गाम हाबूर के पास है पत्थर लाल माइल वसा अवर पीला फ़ारसी हुर्फ़ों की सिकल है इसका भी वर्तन व चौकी व कबर के तावीज़ बनते हैं संग नर्म के कारण ज़िला कम आता है परन्तु फ़र्से खुसनुमा दीखता है यहां की सोगात भी साहबले गों वग़ैरः को इस पत्थरों की चीज़े भेजी जाती है बल्कि निहायत पसन्द होने से फ़ैमायस भी इसी की आती है मगर बनाने वाला कारीगर एक ही है मौजे भादासर से पत्थर की घन्टी सिंध को जाती हैं महसूल फ़ी चक्की एक आना है तथा गाम सोमले आई बनोंवा में स्याह पत्थर की घंटी पडोसी गामों में बिकती है सिवाय इसके शहर व मल्लीबालों के गामों व आईता तेजरारा लाठी वाय वमेसर वग़ैरः में खांनेः हैं मगर अलावा गाम मुनपि या व जाजिया के मात्र जगह के पत्थर काला या रोडा या कच्चों दीवार के काम में आते हैं तथा परगनः कोरखारा पार एकल पास खांन मसीत की वह परगनः खुइयाला में वह खरी का पत्थर कूवा बांधने व दीवार के काम में ठीक है तथा मौजे जायन के पत्थर की चक्की उमदा बन सकेगी -

खांनमेट - यानी मुलतानी परगनः देवा मौजे मंधा व नहडाई में निकलती है लबा नो वग़ैरः मुल्क सिंधु व पंजाब को ले जाते हैं महसूल रहादारी फ़ी गोन एक आना है तथा परगनः खास में वह परगनः फ़तेगढ़ गाम मंफ़ाई में वह सं० ४१ से परगनः जेसलमेर गाम भोज के वह परगना खाभा गाम खुहडी में भी निकले है बाल धोने व ऊंठ घोड़े के बंदा पर लगाने में आवी है

खांनमटटी - सुफेद जो सेडी परगनः जेसलमेर गाम भाभला व परगनः देवी कोट खास में निकलती है मकानों की आरास में काम आती है इसके इतर से सिरकी गर्मी कम होती है व जरगिर सुडी बनाते हैं सिवाय इसके दूसरी मिट्टी ३।४ रंग की खास शहर व कई गामों में निकलती है सो छोटे पत्थर की जोडाई में बजाय चूना के काम आती है वा कुम्हार वर्तन बनाते हैं खससन मौजे मंफ़ाई की पीली मिट्टी

उमदा मकान को अगनाई लीपने है वह इसको जलाने से सुर्ख पाना हो कर मकान आ
गा की दीवार रंगते हैं तथा गाहे २ सिंध हैदराबाद भी जाती है और लाल रंग जो मु
रु चिकनी को गोवर में मिलाकर मकान लीपते है इसी रेती के कंकर मुरड़िया जो
बक्त पर ८।१० ईंच खूब जमाने से पानी नहीं करता तथा मरड़ीया व कत्तल जला
ने से मिलासतर जो खारा चूना बनता है गुग्गूगल सणी मिलाकर ऐको अगनाया
वरीयां करते हैं वह मीठा चूना निकलने से पहिले पत्थरो की जुड़ाई भी इसमें करते थे

खानगेरू

सरूप गढ देवीकोट खास वह गाम सीतोडाई पास तथा नडा में भी थोड़ासा होता है
अनीत लोग भगवा कपड़ा रंगते है सो रंग नहीं मिलने से दूर २ मुल्कों में लेजाते हैं व इस
से जेवर तिलाई को आपनी देते हैं तथा पानी में घोल कर बाग के दरखतों व मकानों
की दीवारों पर डालने से दीमक नहीं होती॥

खान मीठा चूना

को दांदड़ा व खंगर व खड़ी भी कहते हैं शहर से उत्तर १०
कोस मोजै देवा वह अगाडी मुहनगढ़ नाचना विकमपुर बरसलपुर तक बहुत जगह
निकलता है सो जलाकर पीसते हैं सो इमारतों के काम में तो ऐसा है कि कैसाही भारी
पत्थर हो थोड़े ही चूना से मजबूत हो जाता है दीवार गिरती को लगाने थभेही आ
अवफर्स भी बनाते है पहले गुमान था कि पानी से कच्चा पड़ेगा परन्तु ख्याल किया के
टांका व कुंडा में राख पोत कर चूने का लेपा देने से ४०।५० वर्ष तक पानी साफ भरा
रहता है तो फर्स ही क्यों बिगड़ेगा ये चूना गाम देवा में अव्वल मट में लगा था फेर
शहर में शुरू हुवा महसूल फी गुंन १ आना खान पर लेते हैं और शहर में निरख ९
रुपये का ८ आठ मन ३ तीन सेर रहता है स्याः खंपर कुवा बांधने व देहात में दीवा
रवनाने को बजाय पत्थर व ईंटो के लगाते हैं कि कोट विकमपुर नाचना व कई गामों
में बुर्ज वगैर: मौजूद हैं॥

खानमुतफर्रिक

शहरसे उत्तर ६ कोस मौजे हमीरा के कू॰ में कोयले निकलते हैं गन्द्रिफ जैसी वुहसी ः से अवासमकाम मगर साहबान ने पसन्द नहीं फरमाया कि पत्थर के नहीं लकड़ी के हैं· और दक्षिण को ७ कोस डुगेरनिया के डूगर वह पश्चिम को ७ कोस नेजुवो के डूग र में लोहा बतावो है· श्री ठाकुर साहब ने न्यारीया से निकलाई भी थी परन्तु नाः ल्मी से नफ़ा का ऐवज टोटा रहा· और गाम पारेवर सं॰ ४२।४३ में औलड़ाम साहब कई दिन रह कर पत्थर ले गये कि अच्छा मिला मालूम नहीं अच्छापन क्या था· तथ देवत सुरताना वह गाम सांवला का कू॰ में भी धातु है कहा गुमान कवी है· परन्तु वगैर इल्मके मालूम नहीं हो सक्ता· गाम जायन के कूवा व गाम सना के डूगर में थोड़ासा कोयला व गाम लुहारखी के कू॰ में महमाई निकला था· और कोट सह गढ़ के परले तरफ़ थलीयों में पानी जमने से सं॰ ३२ में खारा की पुडपुडी जई थी जिससे अनुमान होता है कि मुदित तक पानी भरा रहे तो अजब नहीं कि खारा भी हो जावें क्योंकि खारा की तिथां जोई खेरपुर में है वहां से नजीक ही हैं· तथा मौजे ना॰ में आगे साजी पैदा होती थी वह गाम दामोदर के ष॰ का आसोनण में खार होता है सं॰ १३ में साजी बनवाई भी थी सो हासल कम हुवा वह कानोध वगैरः के रन में भी खार नहल होता है परन्तु बनाने वाला नहीं॥

और खान से पत्थर वगैरः के निकालने पर हकूक राज का इस मनसा से माफ है कि शहर इलाके में जो कोई मकान व ठिकाना बनाते हैं तो उसके रहने की पायदारी का फायदा समझा और जोई गैर को ले जाते हैं उनसे भी खान का हकूक नहीं लीया कि निकालने से ज्यादह ले जावे बिलफैल महसूल रहादारी लेते हैं सो ऊपर लिखा उतनाही महसूल नाकाला लगता है· और जबकि यह काम खातरख्वाः न ना लेना का हकूक ठका सांदयामा का माल निकालने के अन्दाज पर मनासब वक्त

तजवीज़ की जावेगी जब पत्थर वगैरः निकलने की तादाद व आमदनी मालूम हो सकेगी ॥

नदी व वहाला

दफे १४ भूगोल हस्तामलक में शास्त्रानुसार लिखे हैं कि इस इलाके में नदी नाला कम खाने को भी नहीं है सो वहुत लनवी या १२ मास चलती तो कोई नहीं मगर छोटी २ नदी नय व वहाले ज्यादः वारस होने से जहां तक चलती है जिसमें काकनय व लाठी की नदी तो नागी व गोगडी सूकड़ी ठीक २ वाकी वांकीया वगैरः वहाले हैं

१ काकनय गाम भोपा से सोडा कोटडी गोरारा सतापास वहती हुई १४ कोस गाम कुलधरा से दो साख होकर एक तो पश्चिम को ढाई से ५ तक खाभा वुज में खतम होती है जहां जरात ३ साख हो सक्ती है मगर वडी कचा हत है कि कम वारस से तो खाभा भरता नहीं और ज्यादे से ज्यादः भरे है उस साल जरात हो सके नहीं क्योंकि पानी निकले का कोई रस्ता नहीं ६ कोस के घेरे में दरियाव सा दीखता है और खाभा मुहार भी भर जाता है तो बीच में कुंगरी निभ जो वेटसी शोभाती है फेर पानी सूकने से जरात करते हैं आगे पल्लीवाल वसते थे जब वुज में १५ व मुहार में ६ हज़ार मन वीज वहता था दूसरी साख गाम कुलधरा से गाम कहाले लुद्रवा होकर रन में गिरती है वहां पानी खारा होकर जरात तो क्या घास भी नहीं होता यह साख वंध करने को वंधा वंधाते थे सो टूटता था अव नदी का पत्थर काटना शुरू किया है सो पूरा कटने वाद पानी निकम्मा नहीं जावेगा सम्वत १३ में श्री ठाकरां साहव ने शहर से दक्षिण ३ कोस पर भारी वंध वंधवा कर तीसरी साख इस मनूसा से निकलाई थी कि घरसी सर गुलाव सागर किशन धाट रामघाट कराह कल्यान घाट भरकर कानोंध के रन में होता हुआ मुहनगढ़ पानी पहुंचेगा तो २० कोस में नदी के दोनों तर्फ नेर निकलने से जरात होहीगी और वुज में भी ज्यादः पानी न भरने से हरसाल पैदावार होगी क्योंकि रन में जो साख जाती है वंध होजावेगी ऐसे कई फायदे जानकर ६० वा ६५ हज़ार रु० लगाये थे वह घरसी सर वहुत खुदाया गुलाव सागर नया वनाया किशन

घारका बंधाया व राम घाट कल्यान घाट को हज़ारों रुपये लगाये थे सो सम्वत १९ में ज्याद: बारसे से काकनय आदि सब बंधे टूट गये अब कोई साहब यूरूपियन इंजेनियर देखकर वाजब जानै तो रुपये लगाये जावें - आय साहबों ने तो काकनय देखकर कहा था कि हो सकेगा - स्यारन का पानी मुहनगढ़ जाने के लिये सम्वत ३५ में पैमायस वाले टारन साहब ने मौका देखकर कहा था कि हो सकेगा मगर रुपये ज्यादह बताये थे - ब्रह्मा के पुत्र काक ऋषि यहां तपस्या करी थी जिससे काकनय - वह ऐसेही चांवड ऋषि के रहने से चुंधी कही जी जहां पानी के कई कुंड वह सजीवन दहाला है - सो मूल राज सागर के मगरे से ३ कोस चल कर मौजे लुद्रवा के पास काकनय में मिलता है॥

२ लाठी की नदी - गाम बेगटी वह माडवाई - मारवाड से शुरू होकर लाठी के पास १ साख होती है सो गाम सूजया से दक्षिण व आईता से उत्तर वहती हुई ३४ कोस पर गाम मुहनगढ़ के पूर्व रन में पानी दूर २ फैलने से जरात हो सक्ती है लेकिन यह नदी अव्वल सम्वत १८४९ फेर ५२ में आई थी जब जाट वगैर: लोग भी आने से कसबा मुहनगढ़ वसा बाद सम्बत ८२ में आई थी वह सं० १९३८ में भी जी भी आई थी नदी नहीं आने का सबब यह है कि इ - पोकरन में कई बंधे व. रेत के टीबे होगये हैं॥

३ गोगडी - परगन: देवीकोट गाम छोडियां से शुरू होकर गाम्म सांवल मूलाना वडे गाम की सीम में होकर गाम सगरा से आगाडी चांधन के खडीन रवाय में जहां अबगें हूं होते है भरके गाम मालीगडा से उत्तर लाठी की नदी में २० कोस पर मिलती है

४ सूकडी - गाम खूहडे के मगरे का पानी परगन: देवीकोट के गाम महासर नेडा नदुवाडा धायसर जावंध के पास होकर भैरवां से आगाडी १ कोस पर गोगडी में मिले है और पिछाड़ी के गामों में १५ कोस तक कुछ नहीं होता है व उम्मेद भी नहीं क्योंकि साख निकाल ने बाध बंधाने वगैर: गामों के भोमियों से तो बने नहीं और राज जबरन करते नहीं॥

५ बाकिया - वहाला परगन: जेसलमेर गाम आकल से पूर्व ३ कोस मगरे का पानी

गाम जेरत व दोनों वासन पीके बीच जहां अब बंध बंधने से गेंहूं होते हैं भरके गाम रिदजेसु राना आईता तक १५ कोस पर ताटी की नदी में गिरता है॥

६ मुतफ़र्रक - वहाला १ तो मौजे मलारई मारवाड़ से पानी गाम खारचा वायवान नवीतिया में जो धोरे अब बंधी है भरकर गाम सेवड़ा नोखसे आगाड़ी गाम राडाना की थलो यो में १५ कोस पर बिखर जाता है- २ टीपु से आकली तक गाम सादा से वारू की थलीयां में पानी फैलता है नाम जिस २ गाम के पास वह है उसकी नय- ३ अ-लखागां-रथनां कडूगर से म[illegible] साउ सोढा नहीं कर गेंहू कटू-नक पानी वोहरा में भरा रहता है- ४ अ-रामगढ़ गाम जो गाम खडीन सरन का खडीन बिजडासर भरने बाद खेरड से १० कोस पर लाहा सल जाता था तो सरन का बंधा अब बंधाया सो यकीन है कि सरन व पेणसर निजडासर खेरड में गेंहू होने वगैरः निकलने से बड़े ही फायदे होंगे॥

७ नदी - गाम महारेरी से शुरू होकर गाम ओला पास वहती हुई इ-मारवाड में मौजे कास्मीर तक पानी जाता है॥

देखने लायक मकान जो गढ़ व शहर व इलाके जात में है

१५ दफेः - खास शहर व देहात पल्लीवालों में पूंता पत्थर मजबूत व नकासी का काम वाणिक वजःदार मकान अच्छे ही हैं मगर किल्लात राजभवन समान वास वा मोती महल में आराम निहायत उनदा व गजविलास सर्वोत्तम विलास नीचे नया महल वगैरःव कोठार अन पूरणे व मन्दिर श्री लक्ष्मी नाथ जी टीकमजी रनछोड जी महादेव जी सूर्य्य जी के अलावः जैन के ७ ही मन्दिर तो देखने से ही ताल्लुक रखते हैं तारीफ कहां तक लिखी जावे १ हजार खंभ व हर पत्थर में बहुत ही बारीक काम चुनाचे: जाव जितना मन्दिर तिल जितनी पुतली इसी में है बनाने का हाल जुदा लिखा है॥

जैनके मंदिरोंकाहाल

चुनाचे: कैफ़ियत यह है कि गढ़ जेसलमेर में ८ मंदिर बड़ेही नामी हैं जहां दीदः आदमी देखकर कहते हैं कि इनके सानी कही नहीं देखे वहुत वारीक नकासी काम पत्थरोंमें और वहुत ही उमदा खंभ जो करीब ५००० होंगे ज्युंही पुराना शास्त्र भी वहुत जो नवाही के ज़मानेमें दूसरे मुलकोंसे आये हुये बडे ही जतन से रक्खे हैं और तादाद नहीं लिखी मगर लखों ही रुपये लगे हैं - नित्य पूजा व पुजारी भोजकों की तनख्वाह वगैरह खर्च वास्ते: रकम पर लगमान है और निमन्तक मनोर्थ व यात्री वगैरः की भेट व केसर आरती का घृत वगैरा का द्रव्य भंडार याने मजबूत तलभवरे में डालते हैं सो न मालूम कितना होगा

नकशा

नं	नाममूल नायक प्रतिमाका	संवत	नाम बनाने वालेका	नाम श्री पूज्य य जिसने प्रतिष्ठा कराई	कैफ़ियत
१	श्रीपार्श्वनाथजी	१३८८ १४५८	जेसंगवचोले साहसेठीयानरसिंहवभोजेसाहराजने	जनराजसूरकीआज्ञासेसागरचन्द आचारीये	लुद्रवासे पुरानी मूर्त्ति जो १८ सो बर्ष कीहै लाये, गढ़में साका हुवा जब जमीनमें रखी थी फेर जीरनोधार में बड़ा मन्दिर बनाया पाटपर पधराई
२	श्रीसंभवनाथजी	१४८७	कुंकडचोपडपेचेसहा	जनभद्रसूर	
३	श्रीसीतलनाथजी	१५०८	डागा लुणसा मुणसा		
४	श्रीचन्द्रप्रभुजी	१५९५	मनसासीभाडे साहमेहसदास	जनचन्द्रसूर आचार्य्ये	खुरसीचनते द्रव्य हो चुका तो अहमदावाद गभारा टीपणी नहुई फेर जंगल में

					दफोना पाया जब संग में घाली मिश्री देकर बाकी द्रव्य लाकर लगाया॥
५	श्रीअष्टापदजी वसंकुनाथजी	१५३६	पांचेसाह्रा		दोनों मन्दिर सामूल बने हैं
६	श्रीसंतनाथ जी	ऐ०	संगवीरेतेवी देशाहसंखवाले चा	जननन्द्रसर	
७	श्रीरिखभदेव जी	१५३७	चोपड़ा संघोध्र वंसगवोगए घर		
८	श्रीमहावीर जी	१५८१	वरडीयासमरे साहावेवेदामू लराज		

चौकीगली सम्वत् १५८१ में छबाई ब्राह्मणों की इज्जत मिटाने को ऊपर श्रीलस्मीनाथजी पधराये तथा सेठ गुमानचन्द वालों ने मन्दिर के लीये ज़मीन व पत्थर तैयार कराया पर नहीं बन सका फेरः अमरसागर में दोय बाग व दोय मन्दिर रिखभदेवजी का सवाईरामजीने सं० में छोटा और हिम्मतराम ने बड़ा सम्वत् १९२८ में बनाया श्रीपूजजन मुक्ति सूरने प्रतिष्ठा अन्जन सलाका कराई यां नलहरी याने शाहर में १ मन्दिर श्रीपार्श्वनाथजी का तपेगछ वालोंने संवत् १८७५ में कराया और पंडित डूंगरसीजो नामी जती इस ज़माने में गुजरा है जोधपुर व मेसर वगैरः बहुत जगह कुंड पानी का व थानक उपासरे वगैरः ठीकाना बनाया चुनान्चेः अमरसागर में बगीचा व मन्दिर रिखभदेवजी का संग की तर्फ से सम्वत् १९०४ में बनाया यह प्रतिमा कोटविक्रमपुर से आई है जो १००० वर्ष के पहिले की है-

गाम लुद्रवा में श्री चिन्तामनजी का मन्दिर मनशाली थडुसहाने सम्वत् १६७६ में बनाया व गाम वर्मसर में बागचार लखोलादके द्रव्य से १ मन्दिर सम्बत् १८७४ में हुआ और गाम देवीकोट मे १ देरासर व गाम वरसलपुर मे १ मन्दिर जैन का है॥ ॥ ❋

और भट्टा ईशरलालजी की हवेली व चोवटा में मशाला व देवी घंटी आलका थान। तथा शहर में श्री वल्लभकुल व श्री सीतारामजी का मन्दिर व कूवा रामसर मध्ये कोठ बंगला व श्रीजी के सहन में बादलबिलास जो अब नई वज: का बनाया है व ठाकुर राज श्री केशरीसिंहजी का डेरा में छत्त बिलन्द पत्थर के लदाव का और सेठ शुभानचंद के ५ बेटे की हवेली व नोहरे ऐसेही दीवान सालमसिंहजी व नथमलजी की हवेली भी बहुत उमद: है तथा जैन का मन्दिर उपासरा भी अच्छे हैं शहर से बाहिर त: व ऊपर मन्दिर महल वगैर: मकानात व बगीचे बहुत हैं १ घरसीसर इसमें कालगसर मिलाने से लम्बा चौड़ा बहुत हुवा २ गुलाबसागर ३ महतासर ४ गजरूपसागर जिसकी नहर पहाड़ के अंदर ही अंदर खोद लाये हैं ५ देदानसर जो सम्बत २८ से दी. नथमलजी ने सबतरह अच्छा बनाया है ६ ईशरलाल का तालाब ७ गंगासागर ८ जोसीका तथा प. डूंगरी पर ब्राह्मणों के समसान की छत्री भी दूर से बहार दीखे है बाग १ अमरसागर तक के बंध व ऊपर महलात मन्दिर बंगले व सेठ सवाईरामजी हिम्मतरामजी बाग में जैन के मन्दिर व महलात निहायत खूब व पं. डूंगरसी का मन्दिर बगीचा २ मूलराज राजसागर में महल बंगले व त. मेकू झालरा ३ बड़ाबाग का बंध की कैफ़ियत तो लूणकरनजी के हाल में लिखी और डूंगरी पर समसान में छत्री बंगले अच्छे हैं गाम लुद्रवा में मंदिर श्री चिन्तामनजी व देवी का और ब्रह्मकुण्ड एम कुंड जुधी में ठिकाना व पानी का कुंड है परगन: खाभा में खडीन व बुज मुहार व मुहार में बुज महादेव व डूंगरी पर देवी का मन्दिर परगन: रामगढ़ में त. नरणसर विजडासर देरासर व पेरासर व परगन: देवा में लखीसर परगन: देवीकोट में त. विजडासर

❋ सेठ हिम्मतरामजी जैन का मंदिर अमरसागर में जो पटवा अमरसिंह के पुत्रों ने बनाया है सो देखने लायक है

तथा कोट किशनगढ़ व कूवा वहावलसर व कोट घोटःड़ु व घड़सिपकी गढ़ी जो खुर्जे २० फुट ऊंचा है • कोट देवा व नाचना व कूवा चोतीणा व कोट विकमपुर में जीरखा व दरवाजा और कोट वरसलपुर व लाठी के भी अच्छे हैं • गाम लाद्रीया में श्री स्वामि याजी का थान अलावा इसके पल्लीवालों के गामों में मकान मंदिर कूवा ल:ख वगैरह देखने से हैरत होती है कि क्योंकर छोड़ गये सो हाल अलग लिखा है • तथा काकनय चलती है जब गाम कुलधरा पास अच्छी कैफियत दीखती है •

बारस व खेती का हाल

दफे १६ वर्षा हुई मोस्सा जमीन में तेहव नीवान में पानी आने की है सम्वत ३८ से शहर में जनाव रजीडन्ट साहब बहादुर ने पैमाना रखाया सो वारस होने बाद माप कर हर हफ्ते नकशा रजीडंटी में भेजते हैं परन्तु पैमाना से थोड़ी ही दूर वर्षा कमो बेश का हाल मालूम नहीं होता इसलिये हकूमत से रपोट आने का नमूना यूं रखा है नम्बर नाम गाम मिती वर्षा जमीन में रेज व नीवान में पानी कितना • घासचरा किशा • हाल खेती • हाल तनदुरस्ती वगैरह • गाम में मनुष्य जनमे मरे या आये गये की तादाद मये सबब • तथा शहर में बारस हुई का इंच व सेन्ट सम्वत ३९ जो सन १८८३ में ६।९८ सम्वत ४० में ८।६५ सम्वत ४१ में ६।२९ सम्वत ४२ में ८।१९ सम्वत ४३ में २।७० सम्वत ४४ में ४।७४ कुल छः बर्ष में ३६।३७ सन्ट १५ औसत फी सालईंस ६ सेन्ट १९ हुई मगर इन बर्षों में केहत होरहा वरना अच्छा जमाना में में इंच ८।१० वज्यादः १२।१५ तक भी होती है • सम कहीं नैवेशाख से पीछे जब हो अच्छी बारस होतो खेत बोया जाता है • फेर आश्विन तक ४।५ दफे बरसने से जमाना श्रीकार और कम होना कम •

साख सियालू बाजरी मूंग मोठ गुवार आगे से कई दर्जे ज्यादः होते हैं तोभी बाजरी मालानी व सिंध से और सूरा नाले वगैरः से आवेही है स्याहउबार व चांवल कम होते हैं

ज्योंइसका खर्च भी कम होगया है · तथा काकडी मतीरे काचरी नीडसी वगैरह ज्यादः व उमदा होते है · तिल सिर्फ ऊंठों के चारे व देश में खर्च वास्ते गाजरों के साथ थोड़ासा बोवते थे सो सम्वत् ३८ में विलायत जाने लगा तो खेती भी बढ़ गई चुनान्चेः सम्वत् ४१ में बहुत ही पैदा हुवा था सो ३ साल में ५) रूपये लख से ऊपर निकाला हुवा · फ़रकह तसालीयों से नहीं हुवा · मगर जमाना अच्छा होने से इसकी तरक्की ख्वातरख्वाह होगी · ऐसेही रूई की पैदा हो सके है और हिदायत व कोशिश भी हद्द बार है · लेकिन दो कबाहतें भारी है · १ तो यह है कि १ साल की बोई रूई तीसरी साल फलती है सो ४।५ साल तक रहे जितने वर्षा बराबर नहीं होती · दूसरे मवेशी के बिगाड़ने से लोग बोने में डरते है ·

खारव ऊनहाल् - जो महीने भादों व कुवार में ख· व बंधे भर जावे तो परगनः १३ याने जेसलमेर देवीकोट फतहगढ़ लखा खाभा महाजलार सम खुरयालारा मगढ़ देवा मुहनगढ़ वाय सीहड़ लाठी में होती है सो कनागतों से दीवाली तक चने कातिक शुदी १ से महावदी तक गेंहूं व वराय नाम सरसों धना वगैरह और बाज़ २ खडीन में फागुणवदी १ से चैत्र वदी तक जुवार व मूंग भी बोया जाता है · गेंहूं चना की नपैजो महावट हो तो १ मन का ५० या ६० बल्कि ८० मन तक होती है · मगर बारस की कमी से हरशाल नहीं होता · मुल्क सिंध व पोकरन बालोत्रा वगैरः से आते हैं · व परगनह वाय से मारवाड़ व बीकानेर को जाता भी है इस काम में हद से कमाल कोशिश है ज्योंफ़सल हर तरह की होती है · व उम्मेद कवि है कि अगर बारस ख्वातरख्वाह हरसाल होती रहे तो ई· गैर से आना बंध होकर हज़ारहा मन जावेहीगा क्योंकि अब जागीर भोम सीरन में भी होते हैं · जुवार की नय वे सुमार होने के सिवाय बुज सीतयर द्रगोरा वगैरःमें ये खूबी बढ़कर है कि १ दफ़ा बोवने से १ ही साल में ४ या ५ दफेः फलती है व सर्त कि बारस होती रहे · इसमें १ दफ़ा का हक़ फ़्राव दूसरी दफेः को

दोही कहते हैं हासल कम तीसरे बोदरी का हासल माफ चौथे वुहीगायों को चर ने हैं उत्तम कोम्मके हालीभी नहीं लेते पांचवें कालवी जुवार किसी काम का नहीं जा वरभी खावे तो मर जावे॥

हजूर के राज साख उनहाल का हिस्सा ५ या ६ निखत्रो व जहां हिस्सा ज्यादः है तो भी ऊपर की लगान से इतनाही रहता है और साख सीयाल में पल्लीवाल व जाट विस्नोया से लाटा का तो ऊपर लिखये से १ हिस्सा ज्यादः और जहां खारीया या चांचडीया का कुंता होता है तो भी हिस्सा ऊपर बमूजब है और रज पूत या सिंधियों से जहां डलोटा है फी हल ३) रुपये से ४) रु० तक नगद दे और पट्टे के गाम थे सो खालसे होकर जो बहाल हैं गामों के नकमे वे हैं और सम्वत् ६ में गेंहूंवां का ४ हिस्सा होकर कणवार पल्ला वगैरः लाग छूट हुई सिर्फ २ कणवार बहाल हैं १ देवीकोट हजूरी जेठामलरे व गांव ऊंडा सिपाइ लशकर के मुंड कटाई में थी सो जोगे वीखे के है व गाम पीथोडाई चावक सवा र जोरावरखां के भूम की एवज में है व गाम मंधा व देवतकी की पाट मोवाल गीरां के ३ गाम नहडाई खंधारी जमादार जादखां व नेजानीयां के व गाम खावड़ सर हजूरी जीपनजी रामजीदासजी व सुजाणियां के व गाम रामगढ़ हजूरी राधा किशन के हैं और लाग पल्ला जो भोग मन १ पीछे ८३ में ८१ थी जीके गंगाजली थे सो है सो अब मात्र गामों के भोग में सो कोठार से करा दिया है व ८॥। ज़िस हजूरी की मेंहदी करडे व ८। जामडे पल का था और ८१ गंगाजली ये वमूजब दीवान के रसोई का है इस वरस के सिवाय दीवानी की लागें बल्ल जो फी मन कच्चा पर आध आना व डलोटा में फी हल ४ आना व कूंता के फी बनी ८५ घृत का सम्वत् ४१ से ५ आना ६ पाई नगदी कीया सो तथा विघा की मात्र लाग–

सायर के महसूल व नोकरों की तनख्वाह व जमीन के बिकाय व इजारा ठेका वगे
रः २ पर है सो श्री दर्बार में जमा कराई कि नगदी तनख्वाह की जावे · और भोग
का नाज श्री कोठार पहुंचावें जब नाम खिड़ाई का मन १०० का ७ रुपया है ·
अलावा इसके · भीलां डुमां वगैरह से खेती का हासल राज में अलीन है सो खेती
नहीं कर सकते भूखा मरते है और किसी ने किसी के सीर में खेती करी तो उस
सीरवी के नाम से हासल कोठार में आया तो भी ठीक न हुवा सो यूं चाहिये कि ये
लोग खेती कीया करे · जिसका हासल राज में लेना तो अलीन ही रहे परन्तु चौथा
ई कम हासल लेकर राज के भीलां डुमां वगैरह में मरजी हो जिसको दिलाया
जावें ताकि सबका भला हो ऐसे ही साध का हासल कोठार में लेना छोड़ कर
श्री राम कुण्ड दीया जावे और महन्त जी ठिकाने में मेले के दिन जो साध आया
है साधू मात्र को रसोई दीया करे व रमते साधू को चोमासे में ठहरावे · तथा आय
स का मठ गुरु द्वारा का भी गुजरान वास्तः मुनासब तजवीज करनी जरूर है

हाल कहत साली का

बूढे आदमियों से अगले दुकालों की बातें सुनी थी सो लिखने में तो क्या याद आने
से ही कलेजा थरकता है · जब यह तसल्ली दी जाती थी कि जरूर है क्योंकि सम्ब
त् १९०२ के बाद सम्बत ५। २७। २५। ३४ वगैरः में जो भारी कहत पड़ा था तो भी
वह दुख न हुवा जो सुना था बल्कि सम्बत २५। ३४ में मारवाड़ बीकानेर की खि
याडुली थी परन्तु यहां तो अच्छे ही रहे · सम्बत ४२। ४३। ४४ तक ३ कहत बराबर
हुये तो भी परवाह न करी सम्बत ४४ के बेशाख से बहुत सी मवेशी मरने से बाजे पर
गनह का लोग टूटा भी तो इस दिल की हिम्मत नहीं टूटी थी · अब के बारस नहोने
से तो कई बातें अगले दुकालों जैसी हो गई कि ३ साल में बाज़े लोग तो ऐसे कर्ज में

द्व गये हैं कि अनतो भिर भुडान से ही नहीं मिले हैं और तूसे भुरद कलीसल
सी वगैरह हुवा था सो कहतसालो में गुजारा करते थे सो ही नही हुवा सारा सना
वड़ी वगैरह घास व केरे खेतड़ी के चोडे खाने तक नोबत पहुन्ची लाचार वहन
से लोग सिंध वगैरह इलाकह गैर में चले गये और मवेशी जो बची है थोडी
वारस जलदी होने से रहैगी क्योंकि ऐसा घास पानी किसी परगने में नहीं है
कि सब देश का माल बचसकै वस खुदा ही हाफ़ज है हा १ परगनह नोख मे
४४ वर्ष से कहत नहीं हुवा बल्कि नाज व तिल व पसम महगा बिकने से लोग
आसूदे होगये और अब के भी वहा के वासन्दां को साल भर के खर्च लायक घा
व नाज होगया है तथा परगनह वाय व नाचना में भी कहत का सदमा कमही
हुवा बाजे लोगों ने पाली में कच्चे कूवे बनाकर माल बचाया और मौजे विकमपुर
में कूवा का पानी खारा भी विरावा था व नोखड़ा में कूवे होने की उम्मेद ही नहीं
थी इमसाल फ़जल इलाही से मीठा पानी विकमपुर मे तो ३० फीट खोदने से
११ फ़ीट व नोखड़े में ३० फीट में ५ फीट उलेड चढी ऐसे ही गिरराज सर वर सिंह
भगतासिंह रा की ढानी में कूवा हुवा और गाम वजु वगैरह में हो रहा है । इतिशुभं

दरख्त व घास व चारा बोड

नाम अपार है परन्तु जोजो नाम प्रसिद्ध व काम में आते है सो लिखा खेजडी
पड़ुऊ गुणी लकड़ी किरसी जैसी पर मन करे जब सुलते से कदर कीमत नहीं पाई
वैशाख में फल सोगरी कचीया सुका कर साग होवे ऊपर सूके सो खोखा करीर
लकड़ी पायदार छत में काम आवे वैशाख में फूल नोखंटा फल कच्चा सो कैर पका सो
पाका देर दो जात की १ कोकन जो कातिक में फले फेर काटे सो थान पाला ऊटका
चारा दूसरी वड महा फाल्गुण में फले कुमट के कुमरिया साग होवै व गुंद -

अच्छा होवै व लकड़ी जलने में तेज पर सुले तुरत रोहीड़ा बाज २ गाम में है फुल फूमा
निकम्मा लकड़ी बहुत उमदा आली नहीं कटे कांकोड़ा पान घाव पर मुफीद है लक
ड़ी घर में रहे तो कलैह होवे बबूल बाज २ गाम में लकड़ी इमारत में छाल खाल रंग
में रंग सराब में काम आवे फल बाबलीया ऊंट का चारा गूंद होवे है बाबली परगन:
सन्त सहागढ में बहुत व परगन्नह मुहनगढ बरावा तनोट किशनगढ रामगढ में
भी गूंद होवे है नीम पीपल बड़ सरेस संदेसड़ा बाजे गाम में है गूंदी ४ जात दो
तो बागां में राय व बड़ १ सहरी १ बनगूंदी के लसोड़ा सो गाम ओला बा रह में है
पीलवाण उ जाल इफरात से है लकड़ी पायदार परन्तु है कम फल पीलू सू
कड़ मुफीद होवे है सिरगू गूंद होवे बिलायती बाबल लकड़ी निकम्मी अरनी
ऊकेरी नया होवे सीलवाण गांगाणी फल गांगीया गूगलाण गूगल होवे दांतन वाले
हरला जीरुणी फूलों में खुसबुह बीज तेजबान गांराठी मुराली घान पर डालने
से आहरुन होवे लांकस खीरखीप फोग लाणो लांणी थुहर व आक उपगारी
बहुत है ऊंट नहीं खावे ढाक उरोटा बकरी नहीं खावे खीप सकालो वगा लवा
साकुड लगेई लवी आकड़ी पनीर फोटा लगे पोवन बूरोड़ा सुरंभ अच्छी धामण
भुरट पीपा होवे फलीस हूंछा लंप कुरी लुगसी है आमणो गंठीया रोइ
स खसज्यों टारा होवे व जड़ तेल में डालते है भुर्ट है वर है कडे खिबाड़े है
द्राब मखणी भोडसो वोभरीया है डाभ थडा में भरे कल कलमा होवे वाणाव
भोथ जड़ में खुसबूह घीटो है रातडीयारवड बूकन कांय बद्रफ कुतियो सक्ड
पड्द पूडोयो मोरीया फिलअच्छी बूह रोहबुह अच्छी पीने से अफीम जहर उतरे
सोनेला सोनल घुडला कलांज दूधेली अम्ब जहर उतरे छपरी दो जात मधी
या नोली तिलकंट बीज कालीजीरी कड़ लुथ लाठीया रांवस सपन चमकश

पांनेल दड़ाई होय मोलवी मुपाङ्घल्ले

गाय के पेट छुटने पर पाते हैं · माशा उ; काली फिल दांतन अच्छा · सलेरी · चग छुष रबंधी होवे · बीसुनी · हाड़े का खेत उ; कंदारो · चिडीरी रेत · वगरा जमाने में वगारी जंगल में होवे · चंदेला बहुगुणा · रत्न जोत उ सनावडी · रांतीधा जावे · साठो · लालरूं पत्थर मिटे · हिलड़ा · कादी · भकडो · धकड़ो · ओइन · वेकर हूं · मागरी बीजउ दीगन · दोधा खीरड़े लगे · हने नपजो छिडनी बुई स्याह व सपेद · वादी पर बांधे · फेल दो जात · गेहडो · ममामोली दोनों · ककड़ो · सणतर · लातर · उंचेली · ईंऊड · खसणउ जात · धांमासा · खार · द्रेंवल · कोतद वलत · मे होवें गायनु भुफीद मागी संधे · । नाहसेत प उतरे · कन दंत दांत पकारहे आंधीझाड़ा · कपुतण · जलभंगरा · कालाभंगरा · कुटक · बलफूली आफू उतरे · चुंखो · वहे फोड जले पर लगावे · खीरोलिया उ · गंदा गंठोयां · कुत्ताखुटे · खुंभी · नागछत्र · बनमेथी · बनतुलसी घोड़ालजो सनाय · कवाडीया · गोरखमुन्डी · धाइल · सुवा · पीलवाण · गोलीयांड फलगोलां मीठी · तूसण जो इन्द्रायण के तुवा के बीज मीठा करके नाज मे मिलाय खाते हैं व घोड़ा भैंस को देते हैं · व हडिया निकालकर पांय पे लगाते हे · गाडरीया आखफुटणी सो · आकरु · करेला · रीगंणी · अमरबेल · कटोल बिछूकी दवा · गिलोय कोडीया फली लगे · पीस खुलां · जलवेलडी घोड़ा खाते हे और ऊंदरकनी वगैरह वहुतसी जडी हे॥

इलाके जात में वडे दरखत बधाने व रखवाल के लिये सम्बत ३ से आज तक वहुत से हुक्म जारी हुये मगर नारस के कम होने व लोगों की बेवकूफी बदनियती ने लगने नहीं दिये ग्राम नाचना व लखा में नहीं कटने से खेजडी बेसुमार हो गई बाकी शहर के चोगिर्द चोकोसी में खवाल से बहुत से पेड़ खेजड़ी बबूल वगैरह के लगे थे सोभी अब न रहे सो इस काम को जिमहवरी का रोजगार भी लोगों को कर देना कि हर रुखन

कटे व सूकी लकड़ी काम राज में आवे और बलीता जैसी वो लें जिसके ठेका के रुपये सेजगार में कटे और बीयाली निगरानी करता रहे · तथा बाजे गाम में श्री म्हांगिया जी या किसी देवता का ओयन है जहां बोरडी वगैरह के रुख बन रहे हैं क्योंकि लोगों को यकीन है कि ओयन काटने से नुकशान होगा सो ऐसे होता भी है · ये देशजोगनी पीव कहीजे हैं चुनांचेः देवी व ६४ योगनी ५२ बीर व भोमिया जुझार व सिध सामियां की समाधें व वली फकीरों की कबरें व रामदे पाबू हरभा गोगा वगैरह २ के थान हरगाम में ५ दस होवेंहीगे · अलावा इसके सम्वत ४१ से देहाती लोगों को समझाया कि त· की पियाई हरसाल लेकर सहाजोग में रक्खो सो जबही कहत साली हो त· खुदावो तो नीवान बढे और गरीबों की गुजरान भी होवे · तथा घर मकान की छत नलीयां की व अच्छे जमाने में घास की कीदु जरूर बनावो · और खेत का धोरा बांधाही व दरखत लगावो व गाम में घर बंधे ज्यों बरतन रक्खो · ऐसी कई बातें कहीहैं व हाकिमों जिले को लिखी हैं मगर ज़माना अच्छा आने पर हमेशह पूरी कोशिश रहने से तामील होगी॥

नक़्शा बीड़ याने जोड़ को बीड़ कहते हैं जो सरकारी रखवाल हो

नम्बर	[illegible]	नाम गाम	[illegible]	नाम जोड	[illegible] कोस	नाम घास	कैफ़ियत
१	जे·	जैसलमेर	१ से ५ उत्तर	कराह	१२	सेवन	सम्वत ४ से रवाश्तबेला खर्चे को ये जोड़ की यासो बड़े फायदे व आराम हुये · राज में घास खरीदन होने से लोगों को आधे मोल

							मिलतेहै खेजडी वगैरः रुखवधनेसेसवजीवोंकोसि
							प ऊठोफीलोंकेचाएकासुखहुवा अवमनशा
२	ऐ	से.	चोतर्फी	नीह		ऐ	है किराजमें घासकटेसोउठानेबादहोलीसेवषो
							होनेनकशहरकामालचरनैकोसावककमूजव
३	ऐ	मूलसागर	२ पश्चिम	वह्मला		ऐ	लागवीहकालेकरजेठवाईमें पानीपीनेकाना
							लवतायाजावेतोबहुततरहसे सवकाभलाहो
							चोतर्फदोसेबारसहोनेसे ११ महीनेबादकाकिसु
							दी१५तकऔररतेभारीयालावे फीभारीलाग१
							रुपयामें राजधरचौधरीवगैरःकोछूटभीहैवखाग
							का१रु. वेल१ रु.॥ कुल१॥रु.है सोऊपर
							लिखेबमूजिवहोनेसेआगेज्यों१॥रुसेऊपर
							होगा सोराजमें घासकटाकरहरसालकालार
							कीदुबायाजावेजोकइनसालोमेंकामआवे
							मूलराजसागरकावह्मलामें दागांकेखर्चकोघास
							कटनेबादलोगोंकोबिलालागछुट्टीहोतीहै
४	ऐ	थीथोड़ाई	७ दक्षिण	सीरम		खिवडी	
५	ऐ	सागंणा	८ पूर्व	सागंणा	४	सेवन	घासकटेसोउठानेकी लोगोंकोछुट्टीविलालाग
							होवेहै॥
६	खाभा	खाभा	१२ पश्चिम नेऋत्य	कीलूरिया	६	सेवन	कराहमेंनहीं होनोयहांसे घासतबेले आयेफेर
							छुट्टीलागनहीं॥
७	सम	सम	१५ ऐ	ल-सम	३॥	खवरड लुगसा	कोटकेखर्चेवकभी रुतबेलेखवाईआनेबादबिला लागछुट्टी

८	खुपाल	खुइयाला	२०पश्चिम	लारवीरा	२	खिवाई	ऐ
९	देवा	देवा	९उत्तर	देवा	१	खिवाई कड	
१०	ऐ	पनुधं ५गाम	७उत्तर	ऊपरला	४	गाठिया	येवीहसिर्फघोडीयांकेचरनेकोहैजिससालघास
						संध्यका	यहांनहीहोतोदूसरीजगहजहांअच्छाघास
							होघोड़ियांभेजतेहैंतथाइसकेनजदीकमेंघास
							कटाकरकालारभीवनाईजातीहै
११	जे.		७५-वा	खरीमा	८	खिवाई	ये ८ होवीहकदीमीपकेहैं·लोगोंकेमालस
							नेकीबुईहो जब लाग जो दालकहतेहैं·
१२	ऐ		ऐ	वटीया	२		जिसकीसरहमुनासिबवक्तयानेमैंस १
							से२का ७रुपयावगायबैल ७से ३०का ७६
१३	खाभा		८५-नै-	कुज	६		लाग १का ७रु·नगदव१दिनकोबिलोना
							काघृत १जोरीऊन १वेडीजटकीलेतेहैं·
१४	ऐ	खाभा	११ ऐ	हरजिसर	३		सो ७ जनावरकीगायकेहिसाबसेनकद
							होलेनाचाहियेघृतऊनजटनहीलेना।
१५	ऐ	दामोदर	ऐ	सोनाप	१॥		आमदनीवटीयाकीतोडा·राजश्रीकेशरी
							सिंहजीकेनरे बाकी खास तबेलेयाखजा
१६	ऐ	ऐ	१० ऐ	कुकडो	२		नेजमाहोतीहै·रखवालाउबीयालीआगे
							ठेकेदारथेअबघोडासुधाकोतनरबाहमिल
१७	ऐ	सिपुल्त	८ नै·	मुझरे	२॥		तीहै।।खिवाईकावाजिबहै·किइससेघोड़
							रीनावबछेरादूधछोडतेहैवखादाभीजोर
१८	दे·	देवीकोट	१२ पू·	अ·वी·	५		वानवगायेरवीरीव्यापेघृतज्यादःहोताहै

१९	जे॰	वासनपी	६.५॥			सेगन	यहांतो लाठी॰ठाकुरसाहेबकी घोड़ीवऐसे ही गाम लांणेलामें राजश्री मानसिंहजी की घोड़ीयां रहती हैं *

ज़िकरचौपाया

दफ़ १७ अकसर लोगों की गुजरान भी मवेशी की पैदा पर है ओर इन बरसों में ववा इस ग़मन रखने भी बहुत है परगनः सहागढ़ में मवेशि कम हो तथा ठाकुरांराज श्री केशरीसिंहजी की नवुजुहकोशिशसे नसल भी उमदः हो गई - चुनान्चेः मवेशि का मोल ३) रूपये से ७) रु॰ तक या यह कहावत थी कि जीता वेचो या मरा - अब देखोजूं नाम नलेने से मोल मांगना हो गया - तथा वैलभी लदने व हल गाड़ी लायक होते थे सो अब सरकारी थाटां वगैरह का रथा लायक होने से बाजे जोड़ी रुपया २ ढाईसो की होती है - और गायां भेसों की थाटी राज में बधने से घ्न बैल हज़ारों रुपये के होते हैं ओर ऊंट निहायत उमदा खूबसूरत परगनह सहागढ़ - घोटड़ू - सम में थलीया जो कद्दावर कम लेकिन तेज़ रौ व मूजिब बहुत होते हैं - कीमत ६०) रुपये से १५०) रुपये तक व फिराहुवा ४ या ५सो में विकता है सिंध के अमीर दस ग्यारहसो मैं भी देते थे सिफ़त चलने की श्री बड़े हज़ूर श्री गजसिंहजी के वक़्त में कोकवान नामी ऊंठ जेसलमेर से जोधपुर १४० मील चार पहर में जाता उसपर बैठने वाला भी एकही सख्श मिश्री नाम ग़ामड़ा था - ओर मलीरीया नामो ऊंट पर मुहम्मद फेरणीया रल्ला की चाल में बली दादरी तक जो २२ कोस है जाना व रोटी खाकर पांच छः घंटे में पीछे आता था - इस चाल के फिरे हुवे ऊंट को अमीर व रईस भी पसन्द फ़रमाते हैं क्योंकि कितनी ही मञ्जल हो चाल नहीं छोड़ता - तथा अबभी पांच छः घंटा में ४४ कोस जाने की तारीफ़ निसवत ऊंटकी खान फ़ैजुल्लाखां की मारवाड़ रपोर्ट में लिखी है व ऊंटभी इलाकः हाज़ा

* शुरू अमलदारी एलचीयों में बीकानेर की फ़ौज जिससे बहुतसे सर्दारभी थे पोकरन ठाकुरसाहब के बहकाने से जेसलमेर को लूटन को गई थी परन्तु जेसलमेर की फ़ौजने इस लाठी गाम में आकर बीकानेर की फ़ौज को ऐसी लतार खवाई कि भागने ही वनी

गाम राजगढ़ के ठाकुर अनूपसिंह के सांढ का था इसवाड़ ठाकुर मजकूर शर्त जीतकर सो जन से पोछा जोधपुर आया · जब वह ऊंट खान योसफ ने बड़ी खुसीसे खरीद लिया · अलावा इसके सकोरीव विसनोयों के सांढा का ऊंट दाढ़ा वर व खूब सूरत व तेज़ होते हैं ॥

घोड़े · ख· देवा के खूब सूरत व असालत में अजहद हैं व चलने में तेज़ व मजबूत बहुत होते हैं · चुनांचे: श्री जी साहब सम्बत् ३० में डूंगरपुर परनीजन पधारे जब इन्हीं घोड़ ऊंटों की सवारी चार दिन में आबूजी पहोंचे थे तथा खेत देवा की एक घोड़ी परोहित इन्दराजजी से जोधपुर में खीची मुखतावरसिंह जो माग कर महाराजसर श्री प्रतापसिंहजी साके घोड़ा साथ ४०७ रुपये की सर्त कर दौड़ाई थी डेढ घंटा में ४२ मील पाली पहुंचने की तारीफ़ रपोर्ट जोधपुर व सफ़े १३ दर्ज है * अलाहाम्मुलक्यास ख· खुईयाला हरराजसर खरीगा उपरला वगैरः भी घोड़ा का खेत बहुत ही अच्छा है॥

हाथी, कराह को कवियों ने अव्वल ही कालजीवन कहा था सो सही हुवा कि अब हत्ती पैदा होते हैं · चुनांचे: एक हथनी के दो बच्चे उमरः तीन साल में पैदा हुवे · जब दूसरी हथनी मंगवाकर इस बन में छुड़ाई जिसमें एक के तो बच्चा मादा पैदा हुवा · व दूसरी के भी होगा · श्री ईश्वर नाय जीते रक्खें ॥

चौपाये पर श्री ठाकुर साहबां की तो तवुजह थी ही · कि अच्छा चारा में मालको रखाना व दत मसाला दिलाना व हर साल तीन चार दफा शिकार वगैरह के बहाने पधारकर नज़र मुबारक से देखना वगैरह २ तदबीरें कराते थे कि राज में घोड़े ऊंट सरीदन वंघ होकर फरोख्त हुवे · सो मानो हिन्दुस्तान में जाने से मशहूर हो जावें सम्वत् १४ में चैत्र के मेला में भेजाये भी थे और अब भी श्री जी साहबां की उमर दराज़ हो सात रखाह तवज्जू फरमाते हैं · मगर देखना मना है · बखशिश सोगात के दिये हुवे

* रहमनुष्य रेशान रपोर्ट राजपूताना · मालवा मुफ़स्सली

दूसरे मुल्कों में जाते हैं सो औरें लोगों के ऊंट व बैल व घेटे वग़ैरः व्योपारी लोग खरीद करिके लेजाते हैं. जिसका सुमार मायरु के नक़्शा में है॥

मालजो सालियानाकी लागहै वखडोटा

दफ़ः १८ ज़मीदार कोटखारा के मडार १५७) रुपया व रामगढ़ के खालत २७) रुपया में २७) रुपया वस्ताणियां के छूट व खुइयाला के कोहरे ४७) रुपया व देवन की के देवत ३७) रुपया व कुचडी के जंरू २७) रुपया व समके भइये ५७) रुपया है. सो छः सालके बाद जबही अच्छा जमाना हो खांडवारस. नुंतावेथा वग़ैरह रकमां मिलाकर रुक्के मयादी २या ४ महीने के लिखाते हैं फेर गंमोत लोग मात्र घरों की गायें बैल व १ सांढ १ भैंस की दो गायें व १० बकरी भेंडो की १ गाय सुमार करके रुपया फाड़ते हैं. ऊंट व घोड़ा रु पर नहीं क्यों कि खेद मुहीम में नौकरी देते हैं. रुपये फ़ी ये रीये ६॥ के म्याद तक दाद पक्के ७॥ के जो चलन है लीये जाते हैं. आगे साहूकार लोग रुक्के लेते थे सो कच्चा पकाई वजीमण २७) रुपया पीछे ७) रुपया व खर्ची सूद वग़ैरह मुनाफ़ा बोहसाते थे सम्वत १९०६ में गा. राज श्री चतरसिंह जी व महता मालमचन्दजी दीवान राज जो इससे वाकिफ़ थे रुक्का लेकर सब मुनाफा आप नहीं रक्खा राज में जमा कराया जब से राज में जमा होता है.. इन वर्षों में भेंवर्षा ज्यादः चधने से रुपये भी बधती होते हैं. ताहम भी ७ साल में फी गाय आठ ७) आने से कम २ आध आना तक वराड पड़ता है. और इलाक़ः बहावलपुर में हरसाल इससे ज्यादः तणी के लेते हैं. लाग मुनाफा वग़ैरह कुल चीरे माल के सम्वत ६ में १५२७७) रुपया व सम्वत १२ में ९३३०) रुपये सम्वत १९ में २२६५२) रुपये व सं. २६ में २९३५७) रुपये व सम्वत ३२ में २८५८५) रुपये व सम्वत ३८ में ४३५४४) रुपये के हुये आयन्दह ज्यादः होहींगे

मालभरू लोग इलाक़ः गैर में बैठे भी माल भर देते हैं. सो कहतसाली वग़ैरह में वहां माल ले आवे तो खडोटा नहीं लेकर मदद खातर रहती है. मगर कई बरसों से वदनीयती

के बाइस रुपये कम भरने से बकाया ज्यादह याने सम्बत् ६ के बाद ३८००७) रुपया करीब
तो राज के वा १० या १२ हज़ार साहूकारों के होंगे · तथा जमीदार जामोतों से व्योहरां
के आगे सर्त थी कि आसामी निकेड के रुपये जो हिसाब नहीं हुआ है तो नये मालमें
भर दे यूंही सम्बत ३२ या ३८ में हुवा · और कोई सरदार बागी माल भरु का माल ले
जावे तो फी गाय १७) रुपया व ऊंट सांढ एक के ४०) रुपया माल में राज से वसूल दिये
जावें · माल बाड ने जमीदारों को बुलावें जब मोहरां के जामोत मूगरखां को अम्ल
८१ पाघ १ थान ९ भेजते हैं · व माल भरु लोग जब तक शहर में रहे बल अम्ल
सब को बसके लिखें जब श्री जी साहिब के सलाम कराय जामोतों को सिरोपाव देकर
कुल खर्च हर कोम के चौरे से भर लेते हैं · कोम मगलीये जो जमीन राजड़ों को देने से
जमीदार नहीं जिससे माल की एवज पटोला का जब ही बाड हो नजराने के १२ ऊंट
की कीमत १२००) रुपये पक्के और दूजी लागे ऊपर बमूजिब हैं · तथा मुहार के
बुवर उ सिपुल व हाड़े के खालतमले व मुदड़ी के जांवध भी माल भर हैं परन्तु सिपुल
से तो सालियाने के ४४) रुपया व मल्लों से १५ या बीस साल में छोड से रुपये का चीरा
कराते हैं · और मुदड़ों की ज़मीन थोडी सीव सम्बत १४ में हजूरी गणेसदास जी को बख
शी बदले में मेडी की जमीन दीवी तो भी माल का हिसाब बाकी ही है · यह रिवाज़ वंध
करके भूपी बरसात या तणी वग़ैरह जो ही मुनासिब हो तजवीज़ करनी वाजिब है · कि
सब को आराम रहे व सफाई भी हर साल हो जावे · यह काम पुस्तों से नथमल जी पास
है* तथा माल भरु व छोटे भोमियों से राज में हरसाल फी बांग दो जनावर लेते थे सो
वाघालीये के तो नकदी रुपये बरसोंन के समूल किया व चैनालीया जी वाल खासतव
ला ताल्लुके पडदार ले आते हैं · खड़ोटा जो खडन्वरा इलाकह गैर की मवेसी परलग
ताहै कि इलाकह सिंध में चोमासे कौडकी होने से मवेशी इलाकह हाज़ा में लाते हैं
सो कातिक वदी ** तक रहे तो गाय ६ का ५) रुपया व होली तक रहे तो आधा फेर ही लेते हैं ·

* पत्ने दीवान श्री मेथामलजी जिन्होंने बहुत बरसों तक पहिले आबू की वकालत की और फिर खुश दीवान हुये पुस्तों से वजारत बा ओदा इन्हीं के खानदान में है और इस तवारीख के बनाने वाले येही महाशय हैं॥ मो॰ मुरादअली

इसमें महोरएटी में मूंगारखां, गायें ७० व मुवा को ५० न, खालतेरे में मूला को ८० की लाग बूट केसिवाय फी टोला ७ रुपया हक़ ज़मीदारी का में कुछ हक़ कामदार का भी है और कोट देवा वगैरह में ज़मीदार को हक़ नहीं देकर कामदार ही लेते हैं व परगनः तणोट के टोभा पर माल रहता है उसका खडोटी जाम आम्दखां लेता है सो जाम से लिखा लीया है कि हिसाब में भर लीये जावेंगे. कुल पैदा ज्यादह ३००७ रुपये व कम ५०७ रुपये कहत में कुछ नहीं औसत फी साल १००७ रुपये होगा. इस काम पर विसा मंगनमल या कोई जावे सो ताल्लुके के कामदार साथ माल की गिनती करके रुपये ले आते हैं. किसी साल मालानी मारवाड वगैरह से मवेसी आवें है तो रजपूतों को माफ. जाट पल्लीवाल वगैरह लोगों से लाग वक़्त मुनासब ली जाती है सम्वत् २५ में रजपूतों ने जाटों वगैरह का माल छिपाया जिससे सम्वत् ३४ में तलासी में माल जाटों वगैरह का सावत करके खडोया जिसपर बेईमानों ने बदनाम किया कि हम से खडचरा लिया खैर सम्वत् ४१। ४४ में माल भरु लोग इलाकह मारवाड़ मलानी से जाटों वगैरह का माल बहुत सा लाया व इकरार ही किया तो भी खडोटा नहीं लीया॥ इतिशुभम्॥

दरियाव हकड़ा व श्रीतेमडारायजी

दफे: १८ किसी जमाना में हिमाला के पानी से दरियाव हकड़ा जेसलमेर से उत्तर १९८ कोस से गढ़ मरोट तक चौडा चलता था सो लेख तो नहीं मिला दन्तकथा है कि दरियाव के वाडस ईलाकह माड में जा वजा पानी की इफरात से गुलवाड होती थी कि निसानी बहुत से गाम में पत्थर की भारी घानीयां निकम्मी पडी हैं. तथा दरियाव की जगह वीरान जंगल उपाली में नाज बाज जगह रेत उड़ जाने से सीपी सोगोटी या वगैरह मिलने से अनुमान दरियाव के चलने को होता है.

तथा दरियाव के सूखने का असल हाल तो ज्ञानी जाने मगर सुना है कि शायद ग्यारह बारह सो वर्ष होगा एक चारन मामडीया जमाना केत में दरिआव पार जहां अशुर रहते थे जा रहा ७ बेटी आवड आदि जो सकती थीं उसरी की बदनीयत समझ चील होकर बाप को साथ ले उडी सो दरियाव सोसन करके जेसलमेर से ७ कोस दखिण डूंगर पर आते ही छोटी बहन अगाडी हुई सो खोह में एक राकस को पकड़ कर फेंका सो नीचे गिर मरा जहां गोडा की घुर से पत्थर पर मौजूद है · दूसरी वहिनों ने पूछा कितें है पास्व दिया कि मड़ा है · जिससे तेमडाराय व मुल्क माड से माड धनी आली वडूंगर पर थान से डूंगरेचियां नाम कहीजी सो नाग के ७ फन पर ७ कन्या रूप से दरशन देती थी फेर पुजारी गोगली भोवे हुवे सो डरने से छछुंद्री का दरशन होवे है · बीकानेर महाराज श्री रायसिंह जी यहां परनीजन पधारे जब दोनों राजे दरशन को गये महाराजाने छछुंद्री पर संका करी तब नाग के फन पर दरशन हुवा था · और कई बातें चमतकारी की बिरव्यात हैं जिसमें बाजे २ मो का पर लिखी भी हैं ·

तथा यूं भी कहते हैं कि अडोड का बंधा बंधने से दरिआव इस तरफ चलना बंद हुवा · जब बहुत सी जमीन निकली सो सिंध में तो रेशाल वहे लोड वगैरह होने लगे इस देश में पानी से खडे थे जिससे खाडाल वही · इसकी एक साखी है कि वलवहसी हकडो · तुटसी बंध अडोड सिंध में उसी सूखडी वहे मछी अरलोड। १ ईश्वर जाने कब होगा · तथा सिंध की तवारीख में यूं भी लिखा है कि दरियाव मीरा महारान शहर अलूर के किले के नीचे वहता था दलूराय के जुल्म से एक सौदागर की फर्याद पर खुदा ने हटा दिया सो रोहडी भकर के बीच में बहने लगा · इस बात को भी अरसा ऊपर लिखा बमूजिब हुवा है॥

देश की पेदावार व दस्तकारी चीज़

दफे: २० खाना व चौपाये व खेती व जंगल में गूगल गूंद फलोस भुर्ट वगैरः का हाल तो मोका मोका पर लिखा ही है तथा बागा में आंब नारंगी अमरुद अनार सीताफल रायण खारकां बेर नीबू जाबुन जभीरी करना दाख सहतूत केला सूफ करोंदे गूलर सेजरा खाखरा महदी रायडोडी बादाम वगेरह फूल बाद व छोटी रशाल सेलडी सांठा सकरकन्द खरबूजे मकीया वगेरह वगेरह जो पानी की कमी से पेड व फल होते तो कम है मगर जो लोग दिषणवरो में रह आये है सो कहते है कि यहां की चीजे बहुत ही उमदह है खास कर मिश्री आंब जो एक फ़कीर बरक न वाले ने श्री अमरसिंह जी के बक्त में लगाया था सो ऐसा तो कही नही है तथा उसी फ़कीर ने एक पेड केतकी का लगाया सो फूलता तो गाहे गाहे है परन्तु निहायत खुसबूहदार होने से किसी ठिकाने रईस या नबाब को सोगात भेजाते है उसी फ़कीर ने जाते अमरबाद पर नाराज होने से पानी कम कर दिया॥

और मालीया के वाडीया में साग पात के सिवाय खारकां व प्याज उमदह खास कर मेंजे लुद्रवा के वेराखनु का प्याज गुणकार भी होता है सो साहब लोग व रईसों को भेजते है

सम्वत ४४ में जनाब रजीडंस पोलट साहब बहादुर व महाराजा श्री प्रतापसिंहजी साहब ने खजूर के सहस्र पेड लेजाकर व फेर ही मगवाकर इलाकह जोधपुर में कई जगह लगवाये है मगर इसके फल तो नर मिलाने से अच्छे होगे तथा जानवरों के चमडे तो सिंध को जाते ही थे अब हड्डी भी जाने लगी घृत भी बहुत उमदा परगनह सम जेसा तो कही नही होता होगा॥

दस्तकारी

सिलावटों की कारीगरी की सिफत तो पत्थर के काम में लिखी है बाकी हरएक कारीगर अपना अपना काम करते है मगर तारीफ़ ज्यों नही हो पसम की कम्बल एक अर्जे की

जो हजारा गाम वरमसर में एक शख्स बुनता था सोही मर गया - दूसरों को तसल्ली व लालच देकर समझाया परन्तु काम नहीं कर सका - धोती जोड़े व दुपटी कम्बल वगैरह बुनते हैं सो दिशावरों में बहुत जाते हैं - लुहार चकमक का कड़ा व कलीया ने मोचना अच्छा बनाते है - खत्री की रंगत आल मजीठ की सिंध अमरकोट को जाती है - व गाम सागड़ में जाजम भी रंगते हैं - कोली मुसल्मीन व चमार देशी सूत के रेजे धोती जोड़े पाग वनाते हैं - ईलाकह प - में कमी लोग ऊंट बकरी की जट व भेड़ की ऊन से बोरी बोरे व सतरंजी खड़ीये बुनते हैं - व और लोग ऊंट की सजाई तंग मोहरा मोहरी गोर बंध वगैरह उमदा तैयार करते हैं - व मोजे नोख में एक जना सूत की दरी वगैरह भी बुनता है - गाम कनोई लुद्रवा मोहनगढ़ विकमपुर के सूथार[*] ऊंटों घोड़ों के पिलान अच्छे बनाते है सो सिंध वगैरह में जाते हैं - गाम शेखासर व खुहडी में कुम्हार मिट्टी के वर्त्तन पोकरन से भी पक्का वनाते हैं कि उसमें तांबे पीतल के वर्तन जैसा घ्रत रहता है - गाम भू - भोपा देवीकोट के भील मोसम सरमामें जमीन से शोरा निकाल कर हलकासा बारूद बनाते थे सो अब सिंध में गये हैं - गाम भिसड़ा में चमार मोची चमखड़े की कोथली जो थई का काम देवे बनाता है व खास शहर में मोची व गाम मंडाई में मेघवाल - चमड़े के हुक्के व थही व घोड़े ऊंटों का साज पर कसीदा रेशमी व कलाबत्तू वगैरह का अभी २ अच्छा बनाने लगे हैं - और कारीगर मजूरों की तनखाह फजर सुधां देनगी ✓) रुपया थी सम्बत् से सिलावटों वगैरह किराचीजा रहे देनगी फजर सुधा ।।=) आने ६ पाई गजर की अर्थात् ।।।) आने शहर में और राज में निस्फ और दूर भेजना हो तो भत्ता मुनासब वक्त वधा देते हैं और इलाकह जात में सरह मुकर्रर नहीं - खारा चूना का काम आगे बहुत ही पक्का था कि वाजे अंगनाया वटीपा वगैरह जो पुस्तों का है नये से अच्छा है - ४० वर्ष से यह काम कच्चा होने लगा - इस वास्ते - पिलासतर जो बिलायती चूना मंगा कर इस्तेमाल

[१] मेघवाल

[*] खाते बढ़ई

भी कर लिया अब अंगनीयां, टांका वगैरह बनाये जावेंगे लागत भी कम है क्योंकि ३ हिस्सा नदी का वालू मिलाकर गारा ज्युं काम से लेते हैं।

बोली इल्मफ़न्न

दफे: २१ बोली-शहर में जातों जात मे शब्द सिंधी पंजाबी थे क्योंकि वहांसे आये व दुकानें कमाई भी वहां ही की थीं सम्वत १८६० से पीछे लोग हर ४ तर्फ मुल्कों में जाने लगे तो, बोली भी हर आदमी की जुदा जुदा याने जो जिस देशमें रह आया वहां के शब्द मिलने से मिश्रत हो गई है। इलाकह जात में जो परगनह जिससे पडोस है बोली भी उससे मिलती है, चुनांचेः परगनह लखा व महाज़ लार में मलानी घाट व माड के ३ ही शब्द मिले हुये हैं - परगनह सम व सहागढ़ घोटड़ का सिंध मीरपुर खैरपुर से व म० खारा व तनोट सिंध महोर वडहर से परगनः किशनगढ़ खूयली बहाला नाचना सिंध बहावलपुर से गाम चुरसलपुर विकमपुर याने परगनह नोख का सिंध बहावलपुर व इलाकह बीकानेर से - परगनह वाय व सांहड़ इलाकह मारवाड से परगनह लाठी परगनह पोकरन से नजदीक है तो बोली भी उनसे मिलती है - और परगनह जेसलमेर देवीकोट फतहगढ़ खाभा रामगढ़ बाराहा देवा मोहनगढ़ में देशी बोली जात जात की जुदी जुदी है।

इल्म

बिलकुल ही कम है हां खास शहर में कोम ब्राह्मण पुष्करना में कई व्यास संस्कृत व कोम महाजन व औरही ब्राह्मण वगैरह जो पेशा साहूकारी करते हैं हिसाब किताब काम चलाउ पढ़े हुये हैं और देहातो साहूकार अपने काम लायक लिख पढ लेते हैं - व कोम चारनों व सेवकों में बाजे बाजे कविता डंगली दोहे गीत वगैरः सीमले बनाते हैं - तथा बाजे दूसरे लोग भी कका बारह खड़ी पढ कर ऐसी ही

चिट्ठी बांच सक्ते हैं · और जागीरदार भोमीयां तो पढ़ने को ऐब व औरतें पढ़ने को अशुभ समझती हैं · फ़ारसी अंगरेज़ी का तो नाम ही नहीं था · अब अहलकार राज के पढ़ने लगे हैं · व दिल से चाहते भी हैं परन्तु रिवाज व पढ़ाने वाले कम हैं श्री जी साहबों की उमर दराज हो बिलफ़ेल तो मदरसा जिसमें सम्बत ४१ से लड़के साहूकारी हिसाब सीखते हैं और अंगरेज़ी फ़ारसी पढ़ाने वाला भी रक्खा है बाज़े लड़के पढ़ते ही हैं · इस काम को तरक्की दी जावेगी कि सब तरह का इल्म लोगों को हासल हो और* ऐसेही अस्पताल में वैद्य हकीम रहें सो लोगों को दवाई मुफ़्त मिले तथा मन्दिर तालाब सांमीया वग़ैरह धर्मादे के काम व शहर सफ़ाई वग़ैरह सुधारने के लिये शहर के मुखिया वग़ैरह लायक़ आदमी कमेटी किया करें · इस बाबत पैदा व ख़र्च वग़ैरह की तजबीज बिचार रक्खी है · मगर बड़ी ही कमायत है कि ऐसे कामों को शहर के लोग दिल से तो क्या समझाने से ही ख्याल नहीं करते हैं जिससे उम्मेद नहीं तांहम भी श्री दरबार में ३०००) रुपया साल का ख़र्च वैद्यों हकीमों की तनख़्वाह व लोगों को मुफ़्त दवा देने का मंजूर किया है तथा दो चेले कच्छ भुज भेज कर टीका लगाना वग़ैरह का काम डाकडरी का सिखाया सो जारी है · बाकी इस देश में अम्ल व गुल बड़ी भारी दवाई थी व है · जेपुर के मुसब्बरों से काम तसबीर व आरायस का व भुज की भी खाजी से काम फोटोग्राफ़ का हज़ूरी सालजी को सिखाया मगर ऐसे काम को कोई समझते ही नहीं · सेवक लखमें को मुमारे भेज कर काम छापा खाना का सिखाया सम्बत ४२ में भाद्रवा १३ से मतबै माड नाम रखकर शुरू कराया परन्तु कोई को चाह भी नहीं** व पानी का नल मंगा कर बाग में लगाया सो न मालूम कल में बल है या क्या परन्तु काम नहीं चला ऐसेही घड़ी व राग पेटी वग़ैरह कलों का काम बंद हुवा तो २०) रुपया तनख़्वाह का कारीगर बुलाया कि यहां के कारीगर को काम तैयार करि के सिखावे

* सन १८८९ ई० आखीर में जेसलमेर गये कोई सरकारी मदरसा नहीं देखा॥ ** खास जेसलमेर के करीब ज़र्द रंग का जो कीमती पत्थर निकलता है उसमें एक दामियानी किस्म का ऐसा पत्थर पाया गया जिस्पर कापी व लीथोग्राफ़ का किरड़ो मन पत्थर मोजूद है अगर यह निकाला जावे तो रियासत को लाखों रुपये का फायदा हो॥

जमस की है मगर १०० दाव निकाले पर पत्थर भरजाता है चुनांचे राज के छापेखाने में ऐसे दो पत्थर हमने अपनी आंख से देखे थे हमारी समझ में जेसलमेर के आस पास ले
* याने हारसौतियल बाजा॥ मोलवी मुराद अली

सोभीअम्ली आलसी व ठोठ हैं ज्यूं ही कपड़ा सीवने की कल मंगाई सो निकम्मी पड़ी है जिससे दूसरी कलें आटा व तिल वगैरह की मंगानी बिलफैल मुल्तवी रक्खी · पैमायस के काम के वास्ते: एक सख़्श को बुलाया कि गामों की हद बंधी व देशका नक़शा बनावै ताकि सरहदों का जो भारी बखेड़ा हर गाम का जरूरही मियना है सो आसानी से फैसल होकर कई काम राज व लोगों के फायदा के अटक रहे हैं सो निमट जावे: व इस काममें कई लड़के भी हुसियार होंगे मगर बिपयारी अम्ली था सो डेढ बर्षमें २००) रुपये बे हक खागया · ज्यूं पंजाबी लुहार भी खा जावेगा · दिशावर के क़ाग़ज़ कसीदा साथ आते जाते थे सम्वत् ३९ में जनाब रजीडन्ट कर्नेल पोवलेट साहब बहादुर की सलाह से परोहित गिरधारी लाल फलोदी वाला से डाक बिठाई थी फेर सम्वत ४४ चैत्र वदी से सरकारी डाक जारी होने से काम ही बढ़ गया व लोगों को बड़े ही आराम फायदे हुये साहब मौसूफ़ ने कहा कि डाक के साथ राज का सवार रखना होगा जवाब दिया कि इस देश में चोरी धाडे का नाम ही नहीं है और जो डाक में कुछ हो जावे तो हमारी जिम्मेवरी है · अलावा इसके कई बातें दूसरा मौका पर लिखी गई हैं दुबारा जरूर नहीं॥ ❋

माहरखास व देशमें इज्जतदारों व बड़ी कोम का हाल

दफे: २२ जो कि भाटी व सोढे तो उमराव व सरदार हैं ही ज्यूंही वीरता व दातारी में नाम किये चुनान्चे: जंरुन आली: ठाकुरां का · सो: मुक्या मावीते वालकिया वारीतरे जाका जतन करे मोटाकी धा मूलचन्द।१। नरनाडीया नीकन ऊनाले ओछो जे परा · मूलामन महराण · कड़खे छिल्यो कल्याणउत

❋ महतानथमलजी प्रधान राजने डाकके साथ सवार देना नामंजूर किया जिससे राज्य एक बड़ा खर्च उठाने से स्वगपाहमने अपनी आंख से देखाकि अकेला हलकारा जंगल बियाबान में लाखों रुपये का माल लिये हुये चला जाता है और कोई पूछता नहीं यह महता साहब के इन्तजाम की खूबी है। मो· मुरादअली

।२। तथा बारु ठाकरों का दो सालु माल श्रलंग खेती बारु धणी तहोड़े वरते नहीं माणो इक मेवो शाहनशाह सोडे ।१। सो श्रमी नजर अरश्रारव महियत दावे घरे नाडी साकर नारख सरवत की थी साल में ।२। ज्यूं ही डागरी ठाकुरों का सो भगुपासे भेट कवि सोहा कंचन किया मसरा श्राखर नेट कीकुंरा भाटी करें ।१। श्रलाहाजुल क्यास सब के हैं ऐसे ही सोढा का दो कीरत बीरियां काहला दत विरियां दोढा परनी जे सारी इथी गाई जो सोढा ।१। याने ब्याह में गावे होंगे कि सोढे सारीखो न कोय तनोट के ऊनड़ों का जाम व सिरायां का जमादार भी सरदारों बमूजब हैं व चारन रतनु पाट बाटे तो येही श्रब कविराज भी हुये श्रलावा इसके मुसल्मानों में ज्यादह आदमी तो म्हार व बहादुरी में राजड़ श्रोर इतबार भरोसा में वंभर व कंधारी सिपाही हैं तथा मुसाहबों में महेश्रीयों में टावरी मुता जो १००० बर्ष से दीवान यही हैं व ब्राह्मण पुष्करना में पिरोहित व्यास श्राचार्ज थानवी व श्रोसवालों में भोजा मुता व सिंहवी सहा मुहता कि कुबे कायदे वकीलीयावर श्राही शान श्राजहद हैं तथा रैयत शहर में ब्राह्मन पुष्करना व श्रोसवाल महेश्री तो श्रव्वल हैं ही मगर व्योपार में भारिये भी रंगभर खेले हैं ब्राह्मणों में परोहित व्यास श्राचार्ज विस केवलीया पणीया थानवी बड़े नामी हुये व कीयावर तफसील जैल किये

१ लखभोज १ व्यास लालू गाम लुद्रवा व सहसभोज ८ में १ व्यास पेरु २ घडसी ३ रनछोड ४ बलदेव सम्वत १८२७ में ५ लाल सम्वत १८४० में ६ जेठमल सम्वत ० में ७ परोहिता सेवाराम सम्वत १८५२ में ८ केवलीया मूलचन्द मयाचन्द सम्वत १८३६ में व पंच परबीयां में १ व्यास वल्लभ दास २ उदेराम ३ किशनदास ४ केवलीया इरादराम ५ परोहिता बिहारीलाल सं० * में ६ नन्दराम सम्वत १८७२ में ७ गिरधारीलाल सम्वत १८३२ में

० असलमें सम्वत नहीं था   * असलमें सम्वत नहीं था

८ जोसी श्रीराम गाम डाभले सम्वत × में ९ ओझा हरवंश सम्वत ※ गाम कड़ाले १० भागचन्द ११ किराडू गंगाराम १२ पणीया खटूमल सम्वत १९२३ में १३ विसा चन्द्रसेन सम्वत १७०७ में १४ मुलत्लाल सं० १८८६ में १५ आचाजे नन्दलाल सं० १९५८ में तथा जोसी साचोरां में हेमराज जो राज व देश बोहरा हुवा - नरहर को सहस भोज व बड़त न्यात करके फी मनुष्य ७) रु० दक्षणा दिय बाद ९ लाख रु० महने जी खोसा लिये अफसोस है कि तालाव के सिवाय पानी दवा भी नहीं रहा

पुष्करने - घर १२०० मधे ७०० शहर व अमरसागर मूलराज सागर व गाम वडा लेडाभले नव ८४ में २३ हैं - १ सुन्चन परोहित रड्यानी गजा २ टंकसाली ३ व्यास ३ विसा ४ आचाजे ५ केवलिया ६ जोसी वदल ७ पणीया ८ हरस ९ किराडू १० रामदे थानवी ११ बोडा १२ कल्ला १३ छूपानी गढडीया देरासरी १४ ओझा १५ चूरा १६ बासु १७ वटु १८ व्यासडा १९ नें पारा २० कपटा बोहरा २१ उपाधियां २२ तिवाडी २३ ऋीयाश्रता ; इसमें परोहित लखुवीरा व व्यास तीथिमों बाकी सबे लोहड़ी तथा चौधरी परोहित धुडे ५ के जने ५ व्यास २ अचाज २ विसा २ केवल्ली या २ हैं न्यात को सिंधी में मस्तान कहे हैं न्यात समधी लिखत सब की सलाह से व्यास भोपत लिखे सो - परोहित सिरयत पास रहे व राज में काम पडे तो साह ३ परोहित व्यास व लोडी की आट कर दें - वरोठी ओसर वगैरः न्यात होय जब सांगीदिन शहर में नहेतरो व ४ गाम में चिट्ठी भेजे और लहोडी वाले ४ दिन पहले थिरमे से ७ जगह आगन्या लेवें - परोहित में १ वरसा को साथ ले २ जेठमलजी की कोटडी ३ वलाणी के ओटे ४ जगाणी देवचन्द के ५ गोपा की वहालों ६ डाडानीयां के कूहे टे और ७ व्यासा की छपरी - तथा गामो वाले आगन्या चिट्ठी के सिवाय १ ऊंट लावे तो परोहित सिरयत व व्यास भोपत चडजावे - तथा दखणी लफसी पर छकडया १ फदीया खा के सीरे पर ड़ १ा बुंदी जलेदी पर ।) आने से ७) रुपये तक हो गई -

× अस नमें सम्वत नहीथा

※ डमलमे सम्वत नहीथा

दक्षिण निसरावा देवे जिसके जाति भाई व देजगर गनायत व सच्चे हेतु नहीं लेवेंगे संगपन कितेक नखांसे मोद व खुसी से करते हैं मगर बड़ी ही कभायत व धर्म की बात है कि सगाई करके मिलनी बगत भात दाली तदपि फेरे न पड़े जितने कोई फरीक सगाई रक्खें या छोड दे - ऐसे ही बेटा गोद लेदें कि चाहे जद फेर दे - यह बुरी रस्म बन्द करने को कई बार लिखत भी कीया परन्तु कुछ भी न हुवा स्या कितेक नखांसे संगपन सदा से होता है - नखांके नाम नीचे सींघा मोद वा लों की व चोकडी सदे का है॥ इतिशुभम्॥

ओसवालों

में साहपने की अकल पूरी थी नामुरुको काम बहुत किये जिनके मन्दिरों की तारीफ देखने लायक मकानों में लिखी है - राजोसाहा महेवे नगर से ताने पर सम्बत १४ ८४ से आया जिसके जदानी है - वीदसाहा की चोधर्ये दर्बार में बैठक साहा का लकुव पाया ओर काछवा धरमान सेठाई में नाम रक्खा किमोड बंध व सिर मुडाये का काम अटका नहीं रक्खा - व थिरूसाह ने लुद्रवा में मन्दिर वीदसाह गढ़ का पठा बंधाया एक सरखा पठा से कुंजी धसता वहां सो सोना की हुई थी थिरूसाह जब अहमदाबाद में गुरांजी वखाण बाचते धर्म लाभ कहा तो सावका पूछा किसको कहा गुरां बोले जेसलमेर का धमो सेठ बिमान बैठे बंद ना किया - तथा सेठ गुमान चन्द जी के पांच बेटों ने राजपूताना में सानी नहीं रक्खा चुनांचे: उदेपुर जेसलमेर कोटा इन्दोर झालावाड रतलाम अजमेर वगैरः में हवेली मन्दिर बाग नोहरे वगैरह मकानात को ५० लाख रुपया व गाम मेरा मल का व्याह बीकानेर करने में ६ लाख रुपया व सिंह तीर्थ सेत्रंजा में १३ लाख रुपया लगे ओर सम्बत १८ ९२ में पीछे आये जब श्री जी साहब सामा पधारने का कुबे व सिंहवी सेठ का खिताब दिया - व खुस हुवे कि ऐसी रैयत है दानमल को

को पेर में मोना व सवाई राम कोजीव मोती लाल को पग में पीली सारी वगैरह निवाजस करी · और उदैपुर जैसलमेर कोटा वगैरह के राजावों को जनाना सुधां कईवार हवेली पधराये व जैपुर जोधपुर महाराज से भी सेठ का लकब पाया· हरसाल ६ लाख रूपये का मामूली खर्च था · फेर आपस की फूट से वह ठाठ न रहा आपआप का धंधा करते हैं संवत १९ २८ में हिम्मतरामजी ने अमरसागर के मन्दिर व बाग की प्रतिष्ठा करी जब पेर ने लंगर वैडी इनायत किया · तथा न्यातके घर आगे जियादह थे अब ३०० सिंह में २७ नखों की मोकलां ४८ में ४१ है पाडा है य १ ऊंचला में शंखवालेचा में १ जंदाणी मयाचन्द साह २ थिरपाल साह ३ गोठी हेमराज शिवदान व नरडिया में ४ मोजा ५ तेजसी । काबक विजैचन्द ६ ताते ड सुखमल व कूकड चोपडा में · दासोत तो ७ नरपाल ८ रायपाल खताणी ९ कपूरचन्द १० जालमचन्द ११ सुरीया वर्धमान १२ लालाणी जीवराज · चम्म जीवणदास फेर कु· सिंह्वी १३ अचलदास । सरूपचन्द । सूरतराम १४ चोरडीया जोधराज १५ परमेचा नहवरिया जोगीदास व तिलाणी १६ हेमसी १७ साहबसिंह १८ श्री श्रीमाल जसरूप मनीनरूप १९ मालु धमसी फेर सम्बत् २० अमरसागरी या गुमानचन्द २१ वडेर लकब काजी देवचन्द २२ वेगड आजेड अणदचन्द स्यापा डी नीचला में २३ पारख वर्धमान २४ बाफणा गुमानचन्दजी व भनसाली २५ मूलचन्द २६ विजैचन्द २७ गुलेछा तिलोकचन्द २८ कस्तूरा भनसाली कस्तूरचंद भं· थिरूसाह २९ धाडीवाल नरसलपुरीया जोधराज ३० वोदरा खूबचन्द ३१ सं· नवरीया भवानीदास व वागचार ३२ लाडखान ३३ मनरूप ३४ व कोठारी चिरदारमल ३५ वोहरा फूलफगर बहादुरमल ३६ गांधी ३७ रांखेचा पेमचन्द ३८ न्हाटा लुणीया मनरूप ३९ बुर्ड ४० सामसुखा राजसी ४१ फोफलीया देवचन्द हैं · इसमें मुखीये चौधरी तीन नं· १। २३। २४ तथा नव कहीजे सो १२ हैं·

नम्बर १।२३।२४।२।४।७।१३।१६।२१।२५।२७।२८ इसमें मुंनामो ४।५। १३।१५ बाकी सब साह नामे हैं - बेटी का विवाह दिशावर से ही आकर जेसलमेर में ही जकरें - और बेटे का चाहे जहां करो। की आवर सादी में बेटे का बाप बरोठी फ. १ सेरू ७ तक माढे के तर्फ में वहे ने और सामी वत्सल का जीमन करे सो सेवगा सुधा जीमावें व वर थोड़ा करे तो सामी बछल के दूजे दिन पारनेत में भी दोनों को जीमावे तथा गमी के कार्य में लावण खाड ३ १ कचा ऊपर ।) आने गछ में ॥) आने न्यात में और मिश्री स ५ रुपया करे तो शहर व बरमसर रूपसी देवी कोर डांगरी याने ५ गाम न्यात में देवें - व मर्द को ओसर करे तो सेवग भी जीमे हैं तथा जीवरास खमावें सो खाड मिश्री की एवज नारेर बाकी रीत लादन ज्यूं तथा मोकल व टीप में नाम अव्वल जंदाणी का होवे है - न्यात समधी लिखत संग के हैं ज्यूं काजी लिखे जब जंदानी नं. १ सही करके कागज ही रख लेवे : राज में ओसवालो से लिखावट करावे तो भी सही नम्बर १ वाला ही जे करे है - व राज के धुवे के ३२५) रुपये वर्ष एक का व देड़ नूंता नजराना वगैरह काम पडे जद होवे जरा सेठ गुमानचन्द पर बाड लिखे जणामें आध बुद - तथा राज के १०७) रुपये में बाड महसिरीयां पर ७५) रुपये इना पर ३२) रुपया पडता है - और सगाई खोलना साह हुवा बाद कोई फरीक बदले सो २७०७) रुपये ओलज भरे॥

महेसरी

भी सानी व सब तरह लायक बल्कि कियादरों में जियादा हैं - मगर गुमानचन्द के बेटा जैसा नाम करने वाला नहीं हुवा - हां एक जब्बलपुर में शोवाराम खुसाल चन्द वाले द्रव्य पात्र तो हैं और यहां रुपये लगाये भी परन्तु यहां कुछ न किया ते न उम्मेद है क्योंकि यहां आने से ही नफरत रखता है - श्री जी साहबा बड़ा पने से धणीयाप फरमाय यहां बैठने को सेठ का खिताब व हर तरह से तसल्ली कराई

नव सम्वत् ३२में नाम की दुकान करी । खैर ·

न्यात के आगे घर २७०० थे बहुत से दिशावरों गये व हां ७७०० हैं सो भी रलव न्यात की रोज वरावर मानते हैं और यहां कुल ७१० घर शहर व परगनात में बडे छोड़े दोनों धड़ा व २७॥ पाड़ा के हैं : खांपा ७२ व मोकन्नां ८५ थी अव ६६ हैं मुखी या सेठ १२ में ६ मड्डा नामे का १ पाटवी सूरदासोत दोय राय दानी थहारूदास व अखैराजके १ घुरका २ जीवराजोत ये ५ तो टावरी व धीरन हैं और ६ ही साह नामेकें २ दो विशानी कानजी व मदसूदन के दो कोल किशनदास व मेघराजके १ जेठा १ बोम्राणी इसमें कानजी किशन दास मुख्य हैं - लिखत महे जरवगैरः मे १२ साह छुवे हैं ; व दोय हीज हों तो १ मड्डा नामे की पाटवी व सहा नामे की बा तानी मदसूदन का करें व कागज़ भी इसके पास रहे हैं सो अब मुनासिब है कि नहा जवाउ वहां श्री लखमी नाथ जी के भंडार में रहे तो सबको वाकफ़ी इनकी वक्त परमिले - तथा मोकन्नां के नखां का नाम जो मौजूद हैं अगाड़ी अंक और जो नहीं है जिसके सीघा लगाया है - व धड़े की निशानी बडे की दो आने छोटे को १ आना रखी है = १ भूलड़ा बाचा - = २ भूतड़ी - = ३ भठड नीकानेरिया = ४ नावधर धीरन हीसांनी = ५ भसूदा = ६ डांगरा = ७ वायती कपूरिया = ८ डागा नहार = ९ चांडक जसेरा = कावा हरडुवेगंज हैं - = १० मुंधडा नागोरी - = भ - ना गल्ला - = ११ राठी कोठारी नीदेरा - - १२ मालपाणी चोला - १३ रू चोलीया मु काती - - १४ डां - गोलकीया = १५ डा - पशारी - १६ क - नवीरा = १७ रा - गुंगावाला - १८ रांबापेचा - १९ रा - बगड़ा = २० रा - दूलाल = २१ रा - गेहरांया = लधडजा वर्धांया हुरस्तरा = । वा - मशानिया = टावरी कुलधरिया - २२ तापडिया कंधारी = चो - सांवलजुवारी = । न धीरन = २३ सो - सूतीदासरा - २४ मल्ल = २५ सो - लोढ़ीरा = २६ सो - भ - लरीरा = २७ भ - पलांरी = मा - देढीया = २८ फोफलीया जांव

जीया मोटलरा = । सेठी मुरार केले हेमराजरा = २९ करवा खोली = ३० सा० उजल = ३१ रा० सागडीया = डा० नहवरीया = ३२ से० साढडा - ३३ घूतगमूरा = हरकंग हडकुटीया = इ० आप - ३४ भ० सहेरा = ३५ भ० मुहणा = ३६ मल्ल कोठारी - ३७ गलरा ढढोया = धूत = ३८ रा० काजलरा ईसराणी = लोड्या ढक = ३९ सांग गईया = ४० भ० ढढोया सांगडीया = ४१ मा० गघणा = ४२ भ० जेठा नरसंगरा = ४३ रा० सातल = ४४ भ० हठी - खासट गोरोरीया - ४५ डा० कुलधरीया जो सहा गडीया है - ४६ क० देवानन्द = ४७ चा० वजाज चांदाणी = ४८ मंत्री - ४९ सोनी कसूबीया - ५० भा० लोलाणी = ५१ चां० जोगड़ - रा० लीलांणी = झावर - भ० दि लवारी = ५२ रा० लाठीवाला - ५३ भ० हाथीरा - ५४ खा० दुर्जन = कां० परवतरा न्यात समधी कीयावर था ये जब तो सब नख व खाड गले व न्यात जीमे व लाव एना लेर वहेचे जब १२ सेठा को खुलावे है - और सूवसोज मांणात नखताणा वगैरह में जीमे तो सब न्यात जीमे तो सब न्यात पण बुलावे भाई पडोसी गना यत भायां मे वहेचणा व बटा भी ओसर से आधे है - तथा सगाई खोला बदले सो ओलजमरे - स्या० ब्रह्मभोज फलबंध वगैरह करे सो १२ सेठो से पूछकर भा० पुष्करनो के चौ[illegible]यो से आगनिया लेवे - दक्षिणा महानाम्मा में चांदी सं० १२ सेठई जब ब्राह्मण से लिखाया कि बिला दक्षिणा रोटा दाल जीमन में उजर नहीं करे - तथा कीयावरों पर ऊपर की लाग व वहेचना हद से परे हो गया है व और हीरा गेले जो जो बेजा है सुधार होना जरूर है - तथा पोकरन के महेसरी यां ने कच्चा मनुष्यों की झूठी बात पर गोसाई वसे कहकर लिखत किया कि जेस लमेर बेटी नही देनी ज्यूंही कलोधी के भा० ओसवाल महेसरी कहते हैं कि हम पोकरनिया के पीछे हैं और धारीयां ने सदा से संगपन करना किया इसमें तीन जग ह इज्जतदार बड़े शरमन्दे हैं - यहां से सम्बत १९०१ में कामदार व १२ ही सेठ -

धे व लुगायां की

पोकरन जाकर हरचन्द कहा कि पुत्तों का त्याग ने मत छोड़ो परन्तु नहीं माना।
पोकरनियां इलाकह हाजा में रहने वालों ने सम्वत २५ से लिखदीया था कि लि
खत पढ़ा वगैरह था जेसलमेर में रहकर दुमारा से बंदगे · संगपन होना चाहिये
सेठों ने कहा ठीक है · पर यूंही रहा · वहां के लायक शख्स पछिताते हैं कि डोले
ही बीकानेर जोधपुर लगये पिण छाई सो लड़की बंधती है कैसे निकलेगें किसे
तरह लिखत फटे तो ठीक हो · तथा यहां वाले वाज कहते हैं कि पोकनियां से छु
ट्टी हुई तो जेसलमेरीया जो दिशावर से सिर्फ संगपन के लिये आते हैं सो होनहीं
आवेंगे देखिये अब क्या हो॥

भाटीया

भाटी राव श्रीतणु जी के छठे कुंवर जांम के बंश का महाजन आगे यहां २७००
थे अब १२५ हैं मगर सिंध कच्छ बुम्बई में हजारों घर बडे हो द्रव्य पात्र व साहूकारो
में नामी आगी हैं और शास्त्र विलोकन करने से धर्म्म के पाबन्द व सुधारे में स
ब में का अभिमान हद भर रखते हैं चुनाचेः उत्तम बरन हिन्दू व कोम भाटीया व
जिस देश में नगाम का बासिन्दा है उनके भलाई व आराम फायदे के लिये वेशुमा
र रुपये लगाकर इसकूलों ताल्याव कूवा मान्दिर वगैरह २ कई पडबंध कीये व
कर रहे हैं इनके हरतरह की खूबिया लायकपने की सुनने से इस वात की खुसी
जियादे होती है कि भाटी बंशी ऐसे हैं · तथा संसार उत्पन्न होने से आज पर्य्यन्त
का हाल दरीयाफत करने व अपनापने की निशावत ख्याल रखने में कमाल की
गा है परन्तु मध्य का याने बंश भाटी से यह कौम पैदा हुई है असल वतन में सुधा
रे व नांमुज वगैरह का कुछ भी ख्याल न किया मालूम नहीं सबव क्या है · हां गो-
कलदास तेजपाल के धर्म्म फंन में से लखमीं दास खीमजी की सलाह से एक कूंवा
मोजे जायन में बनाते हैं · अब यकीन है कि जैसे कच्छ वगैरह देश में बासन्दापने

का लिहाज से व तीर्थों पर जो जो काम किये हैं यहां भी करे होंगे क्योंकि हरसाल
वाजब व फर्ज है तथा मालूम होता है कि इनके भाट कई बरसों से नहीं है पारसाल
जुनी पोथी लेकर दो जने असल वतन समझ के यहां आये थे परन्तु यहां वालों ने
कहा था कि बम्बई जावो फेर न मालूम कहां गये॥

परगनात में पल्लीवाल

जो गढ़ नाखरण में कोम ब्राह्मण ननवाने मसहूर थे गढ़ छुटने से पाली इला
कह मारवाड में जारहे थे यहां ही महाघोर हुवा कि १ दिन में ९ मन जनेउ उतरी
जब बिखर गये आरी ग्रोह गाम ओला में आकर पल्लीवाल कहलाये फेर इलाकह
हाजा में हर४ तर्फ याने ग्रहर से पूर्व ४० दक्षिण २५ पश्चिम २५ उत्तर ३० कोसके बीच
में जमीन खरीदी व हजार हां रुपये राजमें देकर मंगलीक कराई व हासल ही देना
करके ८४ गामों में २०००० घर सब जात के बसाये तथा धूंवा सरा आदि बहुत सी
लागें यह खुद व ग्रामों में रही यांके सिवाय मोदी वोहरे वगैरह जो इनसे रोजी
कमाते सो इजारा भरते थे तथा मकानात उमदा बनाने के अलावा खडी न वाज
मुहार नावरगी हरराजसर सोनारण कुच्या खरीगा वटीया लांगोला का ठोडी सीतसर
लठीयर इसाल द्गोरा देवा ऊपरला मुदेला सजप टेड्या धनवा चोपीरणा रवी सर
बलासा साजीत मनचीनया वगैरह वगैरह नामी मोल्ल जो खडीन उनालू आरा
पैदा होने के सदहा कब्जे किये और अम्ल रोटी वगैरह मनवार व ऊंट घोड़े शस्त्र
वगैरह सरदारगी का ठाठ व दानारी वीरताभी बडे जागीरदारों ज्यूं रखके व शादी गमी
में बेसुमार रुपये लगाते थे जमीन का हासल व जिन्स का महसूल व लागत के
सिवाय दंड नजराने सुकराने वगैरह हर तरह से जो गाम काठोडी में १ मन्दिर
बनाने पर बाहमी तकरार से ८४ हजार अलाहाजु लक्यास किरोडों रुपये सिर्फ ज
मीन ही की पैदावारी से राज में दिये सोना की चिडीया कही जी ज्यूंही सम्वत १८६०

* परमेश्वर का खेल है कि आज दिन उन्ही पल्लीवाल धन्यवान ब्राह्मणों के गाम सूने पडे हैं और इनके
मकानो पर उल्लू बोल रहे हैं कहाजाता है कि दीवान सालिम सिंहजी ने उनको उजाडा॥ इ० मो० सुपरदली

से ५९०० तक उडकर दिशावरें गई कई गाम वीरान हो गये और बाज २ गाम में रहे हैं सो एक गाम वाय में तो सम्बत् १४ के बाद ८० अस्सी घर बचे बाकी तो मात्र गामों में इतने ही नहीं हैं बस इसके सिवाय क्या लिखा जावे कि इस देश से अन्नजल उठ गया फेर तो महा रावलजी श्री रनजीतसिंह्जी साहब राज बिराजे थे जबसे इन्हों के पीछे आने के बहुत ही उपाय किये सो अंहले गये कि बाज २ गाम में कोई २ आया भी पर रह सका न हीं श्री वैरिशाल जी साहबां की उमरदराज हो सम्बत् ४० बाद भला आदमी ख्यास चतुर्भुज दास वग़ैरह को भेजाया और बहुत सी लागें माफ़ व कदर इज्जत बढाने वग़ैरह खातरी लिखाई जवाब में अरजी कागद भी आया कि जमाना अच्छा आने से हाज़र होंगे मगर चार शाल से कहैत ही है सम्बत् ३ के बाद इन्हां के आने की उम्मेद पर जो २ लोग जाट बिसनोई सिंधी वग़ैरह २ आये तो दूसरे गामों पुराने या नया में बसाये गये और इन्हों को इश्तिहार दिये कि अब भी नहीं आवोगे तो दूसरे लोग बसाने जावेंगे क्योंकि श्री जी हजूर की मनसा मुल्क आबाद करने का है। चुनाचें: कईवार दोरा करा के मात्र देश व गाम नजर मुबारक से देखे व हरएक को खातरखाह तसल्ली श्री मुख से फरमाई- यकीन है कि यह लोग भी आवेंगे और जमाना अच्छा आने पर दूसरे तो आवें हीगे॥

हजूरी

जो चेले खवाश याने खानेज़ाद हैं श्री जी साहिबां की ख़ाश खिदमतगारी के सिवाय मात्र कारखाने राज्य के शहर व परगनात में मुख़्तारी दोगाई किलेदारी व हवालदार खरीदार चपरासी कनवारिया बीआरी व सबार सिपाही खिदमतगार व घोरों का पंडव वग़ैरह की नौकरी देते हैं २५० घर खरीदार गोड़ वग़ैरह कई जात के हैं महारावल साहिब के धमा व भाभा भी यही लोग हुये हैं - श्री अखैसिंह जी साहिब के पासवान नेन शोभा का नेन शोभारा कई ओहदों पर थे अब भी अजीत मल तोशाखाना

फीलखाना का दरोगा है ऐसे ही श्री मूलराजजी साहब के पासवान खुस्याली का जीवनजी रामजी दासजी गकरो कहलाये व ऐसे कृपापात्र थे कि जहां स राजी राम जी जहां राजी मूलराज इनका बेटा खेतसी तो कबर कहीजता और सतराम जगमाल वगैरह कोटो में किलेदार थे व पोते अब भी हैं व गणेशदास कोठार तबे ला का दरोगा व कोंसिल में भी सलाहकार था ज्यूं ही अब पोता बलदेवदास सुतर खाने व सांढो के वर्गों का दरोगा है तथा लालजी तो नेकनीयत सन्तोषी याने ये हूजुरी जो श्री जी साहिबों के पोशाक पधरान वगैरह खाश खिदमत बजालाकर के खास का नकशा रजीडन्टी भेजने व मुसव्वर व फ़ोटोग्राफ़ का काम करने व व देशी डाक्टरी का काम पाटा बाधने में अदने बीमार को भी नित्य देखने व तोप खाना सभालने व जूरराज का काम भी कोठार तबेला की दरोगाई का देने वगैरः बहुत से काम करने पर भी फुरसत में दीख रहा है तथा श्री गजसिंह जी साहिबों ने नाई मालदान को हजूरी कीया सो रसोड़ा व शराबखाना व घाटों का दरोगा था ज्यूं ही अब पोता जेठमल है व छड़ीदार रामसहा का बेटा गिरधारी नोओसारी व बागों का दरोगा व पोता प्रभू दरवारी है - तथा कोम मजदूर भी हमाल काहार फ़रास चोबदार उस्ता चूंनीगर भिष्ती गाडीवान व ताइफा कलावत डूमों भाडों वगैरह का दरोगा व तबेला में कई काम चमारों की दरोगाई वगैरह का देते हैं इनकी औरतें भी राज में कठयानी व शहर में दाई पने वगैरह की चाकरी देती हैं॥

कौम मुसल्मीन

परगनह नम्बर ७ सम में १७ नाबणा तक में जो लोग संधी कहाते हैं ३०। ४० वर्ष पहिले ऐसी दुर्दिशा थी ब्रध्य - खीपोरा खोलरा ओंन मुर्दो खाईजे मुक्का जुयादि - मोंहि खांण हू बो खाईजे कूआ पुरसों ६० नीर बले जिणरो खारो इलें ऊंट हाकजे दूध पीजे अज्यारो जीवता मनुष्य भूतो जैसा पशू पसमचा पंगरगा - तिणदेश जन्मतेजन

नवे रखे दो(।) धामण १ सो कूंपे तो अवभी मुसपोस ही हैं मगर हरतरह समझाने खेती लगाने व खातर परवरिश करने से आसूदे होकर कपड़े गहने सजाई वगैरह अच्छे रखने के सिवाय शादी गमी में हजारों रुपये लगाते हैं न्यूं ही आदमी भी बहुत बध गये राज में हजारों रुपये देने के अलावा खालसे की भारी फौज भी इस देश में कामकेलिये यही लोग हैं - तथा भारी कवाहत है कि मवेशी को अच्छे चारे में रखने वास्ते खाना रोज तो यहां कभी न देने की नीयत वदसे इलाक इगेरे में जा रहते हैं सम्वत ४९ से ठीक तदवीरें कीगई हैं कि कई तो पीछे आये व दूसरे भी जमाना आने से आवेंहींगे - तथा इन लोगों में बड़े आदमी का लिहाज व अहसान रखने की ऐसी मुव्वत थी कि खून तक कैसाही झगड़ा हो भाई गनायत या भले मनुष्य मेड़ करके मुदई से माफ कराते थे और कोई सख्श मुफ्त उधार मांगने को गोठ में आया या किसी संधी पर आफत है तो हर घरसे हैसियत मूंजब व्याली बेल व ऊंठ नक देकर हाजत रफा कर देते थे सो अब कमीना वो कमीनाके वायस अव नहीं है यह हवा हो गई है व झेल सिंधी दो- क्राचो कुंमकडा केयो सायरमक गया तिरा तो बांहा पांइजी न कर सडबेया १ इलाक हाजा में यह लोग इतनी कोम है - माहेर जेगलीया रावड़ रंद वलोच भईया वंभरा पनान लंघा जंग कोहरी रहमा गजू कलर कदाऊंनर खालत देवत कोटवाल चानीया जांवच जोइया भुटा पहोड़ संमा समेजा हींगोलजा फकीर जूणेजा नोहड़ी मच्छा लाड़ धुकड़ सेख सय्यद टावरी सेखजादा धुनिया तुवर भटी आलीसर पन्नू मेन् सोढ़ा सोरा खोवेचा सुईकमी दरस लधड़ सर नायक मकोल वगैरह वगैरह जो सिंधी कहाते हैं॥

अजायब बातें मतफर्रक हैं

वाजे साहो कार मय व गांगो बकरी भेड़ी को दिवाली से होली तक तस्याली करके साढे चार महीने जंगल ही में रहते हैं पानी नहीं पिलाते और पास नीला न सूस होतो

गोवा भी पानी नहीं पीती हैं सो तो खैर · परन्तु उनके ग्वाल भी सिर्फ दूध व खट्टा ही पीते हैं धान पानी मुतलक नेस्त २ सायद प्रेतजून होगा · गैब या रुंग का आलम कहाते हैं सो परगनह सम मझाजलाहर सहागढ़ घोटड़ू तो ईलाकह हाजा व परग नह जिवाई · खेरपुर व परगनह मिठडाउ इलाकह सर्कारआली में हैं मनुष्यों से अहद व उनो गोत्त व मवेसी व वहवार मनुष्य ज्यूं है · बाजे बाजे मनुष्य जो इन्हों के गडा यते हैं सो इन्हों को देखे और दिखाय भी सकते हैं · तथा दुनिया में भली वुरी वर तने की कहे ज्यूं होवे ही है · और दूसरे मनुष्य या मवेशी पर बाया या दाव होंवियो का लगे तो तुर्ते या मुद्दत में वीमार होकर मरजावे सो उनसे मिलता है · परन्तु उनका गडायत आकर फीणा नाखे उतारना करा के बचाय भी लेता है · कहते हैं कि इन के मालक परगनह सम गाम कनोई ख · मिट्टी अला में रहे हैं ३ गाम छोडिया की सींव में तो दिवाली के हीडे व ओला में पाबूजी के थान पर दीवे और गाम नेडान करालिया वसी में होली गेवाउ दिखलाई देवे है · सो कहते हैं कि मलीनाथ की होली जगती है · चुनान्चेः ठरडा के पोकरने कायल हैं कि जिस साल होली ज्या दह होती है जमाना अच्छा व गामों में व आराम रहेंगे · ४ फकीर साध पोता की जबान से अवाज हुउ हुउ अहा हा सुनने से दिवाना कुत्ता व स्याल नहीं होवे व काटे का असर न रहे · जिससे इनको १० रुपया व पाग थान सीरना तो राज्य से व फी घर २ पैसा लोग देते हैं · ऐसे ही चेचक टांकने में विरडी फकीर इलाकह हाजा में हैं ५ देवतों के परचे व भूत भोमीये की बातें तो वे सुमार हैं · ज्यूं ही जोगी राज सिध व फकीर वर्कत वाले थे चुनांचे : फतहपुरी जी ने तो जेपुर के राजे को जो थारा भने चूक किया उस वक्त अफसोस से कहा कि ऐसा हुवा · व फकीर रसूल ने कु · माली गडा · जो आगे किसी फकीर ने सुकाया था सम्बत १७ में मुकाम पर जाग के कु · मीठा करा दिया अलाहाजुलक्यास हरयाल पुरी लालपुरी खेमा नाथ महर लाल वगैरः

थे ऐसे अब नहीं हैं • ६ घास मधीया से नमड़े को रंग सो मधीया जिसकाचडस व गाय के आला चमड़ा की वरते सो गोहडी कु• में डालने का मना ई पर हां द• प• के गामों में है • परन्तु गाम जरून आली का कू• देवी के नाम से मालणसर पु• ६• मोल है उसमें ऐसी मच्छाई हो तो पानी सूक कर कीडे सो गंगाजल डालकर तोबा करने से अच्छे हों • ७ सिंधी लोग पैदल चलने में कमाल करते हैं सांढा के पीछे न मालूम दिन भर में कितना पैंडा करते हैं • कोहरी गोद राम आधमन वोझ लेकर ३ पहर में ४५ कोस सहज लगाव से चलता था ऐसे बहुत से हैं

कलमी फौज

दफे: ७२ जो कि पनदनों में रिसाले याने कवायद फौज आगे कभी नहीं थी • भटी सांढे वगैरह हिन्दू व मुसल्मान देशी न काम पडे पडोसी इलाकों के भी हाजर होते थे • श्री लूनकरनजी के पास से पठान लाये जब से श्री अखैसिंहजी के अहद तक सवार व पैदल यहां कंधारी बड़े इतवारी रहे • फेर खोसा जमादार साहबखां के सवार भी रखे • और श्री गजसिंहजी साहब उदेपुर से पीछे पधारते गुसांई भैरूपुरी का निशान याने पलटन साथ लाकर बेड़ा मुकर्रर किया॥

पलटन

याने पैदल का बेडा • १ महन्त भैरूपुरी का बेड़ा जो गुरू महाराज का निशान सम्वत १८०८ से है • महन्त भैरूपुरी २ सावतपुरी ३ सतावपुरी जो कोट विक्रमपुर से सम्वत १८०० में बरसंगा से खूब लडकर १५ मूर्ति के साथ कैलाश गये ३० मूर्ति घायल होने के बाद निशान यहां आया • ४ गंगापुरी ५ खुमानपुरी ६ धीतेपुरी अब है • तथा गुसांई पदम पुरी हिंगलाज से आकर बिलग बेड़ा किया था सो चेला पस्चारी होने से न रहा • २ मंसूदार संडरखां पठान का बेड़ा किया था सो बेअदबी पेश आने से सम्वत ८४ में

पठान अलीखां जीवनखां को जो उदेपुर से साथ आये थे सूंपा गया - फेर सम्बत ८६ में अ[illegible]खां कोटा वाला को सूंपा - इसके मरे बाद सम्बत ९८ में पठान मीरजी को सूबेदार कीया था सो जी सम्बत २ में मरा जब बेड़ा टूटा जवान वाघसिंह के बेडे में आ रहे - ३ बेड़ा सूबेदार मोहकमसिंह अजबसिंहोत पुरबिया का सम्बत ८१ चैत्र में हुवा - मोहकमसिंह सम्वत् ६६ में मरा जब बड़े भाई केशरीसिंह का बेटा बाघसिंह सूबेदार हुवा सो सम्बत् ३६ में फोत हुवा जब से बेटा कन्हीसिंह सूबेदार है - ४ अरदली का बेड़ा सिपाई कंधारी ज़मादार केशरीसिंह पुरबिया व जसगिर गुसांई सम्बत ६६ में हुवा - केशरी सिंह सम्बत् २ व जसगिर सम्बत् २६ में मरे जब कंधारी जानेखां को जमादार किया सो सम्बत् ४० में मरा बाद - जं - बगुलाखां है - मौजे गोमट इलाकह पोकरन के गोमटीये महेर नाराज होकर सम्बत ११ में आये जब ५० नामा शहर व हकूमतों में नोकर रक्खे - जं - कवरसी व कादुखां थे सो सम्वत् २३ तक रहे फेर मतेई पीछे गये - परगनह वाय में जो पहले से गाम व नोकरी में थे ज्यूं ही हैं - कप्तान पूरनसिंह पुरबिया बहाबलपुर से सम्वत् १२ में आकर बेड़ा भरती कीया सो सम्वत् १६ में चोरियों की तोहमत से टूटी - रसालदार सुलतान खां पठान सम्वत् २० में नोकर हुवा सम्वत् २२ में बेडा भरती किया सम्वत् ३२ में बेअदबी पेश आने से टूटा - दादूपंथी भंडारी भगवती दास का बेड़ा जोधपुर से आकर सम्वत् ३० में नोकर हुवा सो सम्वत् ३५ में पीछा गया - देशी रजपूत अरदली में व अहलकारों पास वगेरह नोकरी में हैं परन्तु एक जमादार नहीं के कारण बेड़ा का नाम नहीं हैं तोपखाने व जेलखाने पर पहरे व शिकार कार में सर व बलोच हैं इनके सवा जुदा रजुदे २ बेड़ों से विलग हैं॥

रिसाला

सवार - १ सिपाही कंधारीयों पास तो घोड़े वारगीर थे सो सम्बत ४१ से नहीं है पाइधा

के पंडे बहुत काम देते हैं · २ खोसा-जं·साहबखां के घोड़े शहर खास में व हकूमतों में थे ज्यूंही है परन्तु कम हैं · २ मिठू खां ३ पीरखां ४ साहब खां अब हैं · ३ जं· फतह सिंह सिक्ख का रसाला सम्वत ५ से है · फतहसिंह के मरे बाद जं· बेटा बिसनसिंह व भाई मपतानसिंह है · दोनों के सवार अब हजूरी सिपाही वगैरह यहां हो के रहते हैं · ४ जं·मिश्रीखां दरियाखान का खोसा मोज़े तखतावाद इलाकह मलानी का रसाला सम्वत १४ से सम्वत १९ तक रहा · फुटकर सवार व पैदल देशी परदेशी शहर व हकूमतों वगैरह में कई रहते हैं परन्तु १ अफसर नहीं के वाइस बेडा का नाम नहीं है · शरह तनखाह पैदल सिपाही की चार या पांच रुपये व हवालदार के ४) ६) से ७) रुपये व जमादार सूबेदार के १०) रुपये से २०) रुपये व सवार के ७) रुपये से ८) १०) १७) रुपये · व जमादार के १०) रुपये से ३०) रुपये तक महीने के हैं · और नौकरी कायदे से नहीं ली जाती सिर्फ़ श्रीजी की बड़ाई से परवरस है · बक्सी महता रत्नलालजी॥

अहवाल अमियाइ नसा व शकुन

दफै: २८ नसा अफीम तो बड़ी बड़ाई है लखों रुपये का कोग व मालवा से आता है खास शहर के ब्राह्मण महाजनों में बड़े आदमी · बाकी सिलावटों के सिवाय मात्र क़ौम व सर्दार आदि देहात के मात्र लोग खाकर पल्लीवाल तो इष्ट के बराबर मानते हैं व कहते भी हैं बड़ा देवता के शरियो कंवर है तथा १ दूसरा मिले है तो बजाइ चाइ पान के यही मनुहार है और बेटा पैदा होने व सगाई बिबाह व तिवहार मजलस यानी खुसी में तो गालवां व ग़मी उदासी में कोरे की मनुहार होती है व रंज आमना बल्कि बाल बेर भी कदाने में अमल पाते हैं व किसी गाम जाकर मनवार करी तो गाम वाले सब तरह दिल से हाज़री करेगा व बीमारों में भी अव्वल दवा यह है कोई आदमी सुस्त

हो या थक गया या शकुन हलका हुआ या छींक उबासी खाई तो अफ़ीम देवेहींगे व शादी
गमी के बाद या सुसराल वगैरह कहीं जाकर आवे उससे अव्वल यही पूछेंगे अमल
कितना लगा था बच्चे को भी ३।४ साल तक देते हैं बल्कि बाज़े बूटी का ही अफ़यूनी
हैं अर्थात् हर काम में यही मुख्य है अगर सोचे तो इसके गुण से औगुन कई दर्जे
बढ़ कर हैं कि अमली हमेशा दोनों वक्त बीमार व कम वेश देने लेने से कई तरह का
दुख होता है शरीर में लवन खुराक व मग़ज हिम्मत घटै है वगैरह वगैरह कहां तक
लिखे जावें परन्तु इसके औगुण ही दिलोजान से यहां तक कबूल करते हैं के रोज़ी
कमाने वगैरह फरज़ी कामों से भी यह अव्वल है हां निकम्माई में मनुहार से दिल लगी
व बोल चाल ठीक होवे है - तलाश करिके इस निर्धन देश में इतना खर्च ला हासिल
व हर्ज़े कबूल करने का बाइस क्या है तो वाहीयात फ़ायदे बताये कि यह सती मर्द वक्त
लड़ाई के मदद देता है वगैरह २ परन्तु मालूम होता है कि ला इल्म व निर उद्यम
आदमी थे और हैं जब कभी इल्म पढ़कर नेक व बद का तमीज़ करेंगे व उद्यम में
लगेंगे जब रिवाज घटे होगा जैसे मारवाड़ में घटा है - ऐसे ही तमाकू का बिसन
समझे है कि खाना पीना सूंघना व मनुहार का रिवाज़ हद है फ़ी घर व औसत ५) रुपये
का खर्च साल भर में होगा अलावा पैदा देश के करीब एक लाख रुपये की इलाक़: सिंध
व मारवाड़ व मालवा वगैरह से आती है, तथा शराब का रिवाज़ कम है क्योंकि देहात
में तो पीते नहीं अरु नहीं किसी गांम में बनाने वाला है अगर सरदारों के शादी में पीते
हैं तो बीकानेर फलोधी पोकरन बारमेड़ से मंगाते हैं खास शहर में भी १ दुकान कलाल की है
व पीने वाला भी सिर्फ सुनार पातरियां व कई सिलावट मजूर हैं राज के मुलाजिमों में राज
से मिलता है वह पीते हैं कलाल से ठेका नहीं है फ़ी दुकान ५ रुपये प्रति दिन आधे
यार व तिवार को १ सीसा लेते हैं व राज में परींदे तो निस्फ़ कीमत से तथा चर्श का तो
नाम नहीं है भांग व गांजा लाडी देवानोत व ओला लिध्रवा में होता है पीने का रिवाज़

भंग शहर में तो व्यास भोजक वाजे ओसवार तो हमेशां वाकी लोग मजलस मौका पर तथा गांजा अतीत लोग पीते हैं देहात में मुतलक नेस्त॥+

शकुनों का रिवाज अज़ हद है

जोतिप व महूर्त्त से वढ़ कर जानवरों का एतक़ाद है कि आपा तीज को जंगल में जाकर देख ने से जमाने आदि साल भर में नेक व वद का ख्याल कर लेते हैं और फेर किसी के कोई काम की मनशा हुई तो दोत वार को शकुन देखेंगे जो दिल में ठाना वोही हुवा तो काम सिद्ध अगर सफ़र जाना है तो वक्त रवानगी के दिन का तो अव्वल वायें तीतर रखा तील अरु दायें पालंव हरण होने वाद दायें तीतर वायें पालंव ऐसे ही मंजिल के अखीर में या दिन छिपते दायें तीतर वायें पालंव हरण - तथा वीच में दायें नाहर को उवेड़ा कहते हैं देखा तो अतीव शुभ जैसें राज्य का वचन परन्तु इसको पूज करके कई पहर ठहरना होगा और एत्री को वायें स्याल दायें कोचरी वहुत शुभ और वरखिलाफ़ २ मानते हैं सो ठहर कर अच्छा सगुन हुवा तो चलेंगे तथा जर्ख या नाग या नोलिया देखा रात्र को नाहर या कोई वोला तो नहीं ज चलेगे अतीव नेष्ट है हकीकत में शकुनों जैसा फल होवे ही गा - तथा जानवरों के देखने व वोलने में वहुत ही वारीकियां भी निका लते हैं कि कोनसी दिशा में वोला वहां कोन वार है दरखत कैसे पर या वगैरह २ मगर सही ऊपर लिखा सो ही है - सिवाइ इसके घर सें निकलते ही शकुनों का ख्याल रखेंगा कि कुत्ते ने कान हलाया या विल्ली आडी फिरी या किसी ने छीक खाई या आदी जवान किथकारी दीया तो ठहरे ही गा और गीत राग वगैरह शुभ आवाज यानें तोप का चलना नक्कारा व घड़ियाल वजना अच्छा आदमी सामा आना वगैरः को शुभ समझते हैं - तथा वसन्तराज की छाया को प्रवीन सागर में शकुन भेद लिखा है जिसका खुलासा है कि चक्र के घेरा ८ के ऊपर के घेरे में पूर्व आदि दिशा व पतियों

+ बिल्कुल नहीं -

के नाम ओर नीचल्ले ७ घेरों में पती अपने घर है या किसी के पाहुंणा है सो अव्वल पूर्व दि
शा का पति खेडु दीतवार को ऐसे ही अनुक्रम वार से अग्नि रजपूत दक्षिण राजा नैऋत
वैश पश्चिम ब्राह्मण वायव बादशाह उत्तर भील अपने घर है अरु बाकी ६ दिन बिलोम
गती से अलावे ईशान कौंन के याने सोमवार को खेडू भील के घर उत्तर में पाहुंणा इसी
तरह सातों ही फिरते रहे ओर ईशान कौंन को धीसड़ईस अचल है॥

फलाफलम्

दिशांवा के पती की जाती स्वभाव से व पाहुंणा जिसके घर है उससे व्यवहार समू
जब समझना अर्थात् राजा के घर वैश है तो रीत की बात है अरु ब्राह्मण के भील
विरुद्ध है अलाहाजुलक्यास तथा चक्र के घेरों में ओंक दिशांवां का १ पूर्व से ८ ईशा
न तक ओर वार १ दीत से ७ शनि व पती १ खेडू से ८ ईस तक जानना सिवाइ इसके ८ ही
दिशा के बीच ८ बिदिशाओं याने पूर्व अग्नि के बीच अग्नि ओर ईशान पूर्व के बीच में
लोहू की नदी तक ८ ही नाम चक्र में मय शुभाशुभ हरएक स्थान में लिखा है अगर
ऐसी जरूरी है कि बुरे शकुन होने पर ही ठहर नहीं सक्ता तो पढ़ना चाहिये॥

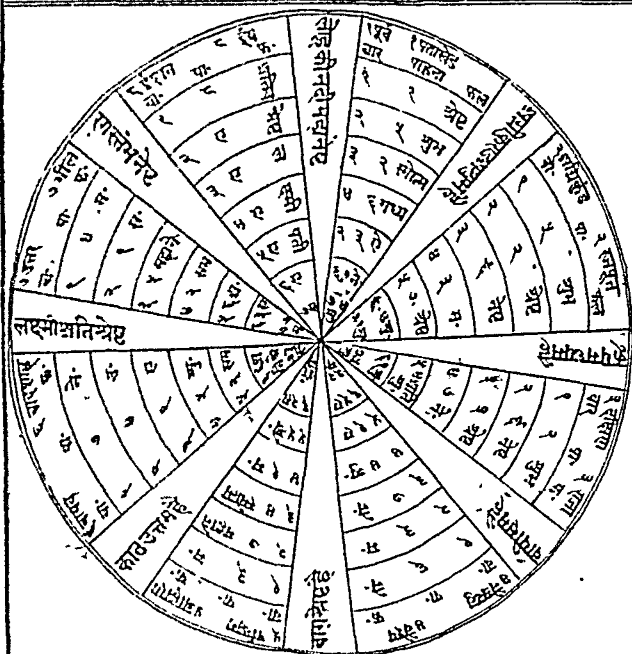
श्लोक

वाराणंस्या दक्षिणे कोंणे । करकुटो नाम ब्राह्मणः
तस्य स्मरण मात्रेण : अपशकुनो शकुनः भवेत ॥१॥

श्री ॥ जो कि रमल शकुनावली अनेक हैं परन्तु वैष्णव के अन्याश्रय नांही होने को गोस्वा
मीजी महाराज श्री गिरधरजी ने प्रश्नावली लिखी है कि सेठ पुरुषोतम दास के ८ प्रश्न
का उत्तर श्रीमद आचार्य्यजी महाप्रभुजी ने दीये ज्यूं ही फलाफल है सो अनजान
मनुष्य से १५ तिथिन में ३ के नाम लिखाय संख्या में ८ का भाग ते बचे तो अंक प्रमाण
मन में चिन्तव्ये कार्य्य की सिद्दी असिद्धी जानना

प्रश्न १ दंडवत कीनो **उत्तर** आशीर्बाद दीनो सो कार्य्य अतिव शुभ॥

प्रश्न २ काशीयात्रा करेंगे या नहीं **उत्तर** नाही सो कार्य्य सिद्ध नाही॥ **प्रश्न ३** वैस्नव काशी में आवै सो कहा करे **उत्तर** तीर्थ अस्नान विधि पूर्वक करें सो कार्य श्रम साध्य जानो॥ **प्रश्न ४** वैस्नव दुर्गा देवी के दर्शन करें कि नहीं॥ **उत्तर** हंसा अधिक है सो नाही करें सो कार्य न होवै॥ **प्रश्न ५** विन्दमाधव के दर्शन करें कि नाही॥ **उत्तर** पंचगंगा स्नान करें कि करे सो विलम्ब सिद्धी है **प्रश्न ६** वैस्नव पंचकोसी करे कि नाही॥ **उत्तर** इच्छा होय तो करे आग्रह नाही सो कार्य्य वनवा॥ **प्रश्न ७** मेरे घर पधारिये नहीं उतरिये॥



उत्तर अच्छा सो कार्य्य तुर्त सिद्धी होय॥ **प्रश्न ८** ब्रजयात्रा में महादेव देवी आदि अनेक देवतों के दर्शन करे कि नांही॥ **उत्तर** ब्रज के सब देवता बैष्णव है सो जरूर करना-ताते कार्य्य श्रम बिलम्ब ते होयगो॥

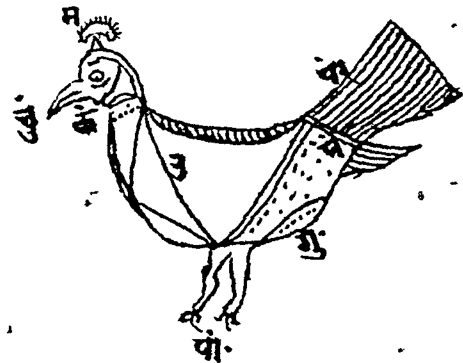
तिथिन के नाम लेने से पहले पढ़ने का **श्लोक** वसु लोके सु यत् सत्यं यत् सत्यं वेद बादसु। पती ब्रता सु यत् सत्यं · तत् सत्यं मम दर्शनम्॥ इति शुभम्॥

चिड़िया के किसी जगह अनजान आदमी अंगुली रक्खे जिसके फला फल का॥ दोहा॥ चिड़िया

चंच दुख पंख मरन कण्ठ हो सिध काज॥

उदर भोजन गुरू धनं मस्तक पावे राज॥

जो सुकलीणी पांय पडे तो पक्षी आवे आज॥



मेला

दफे: २५ दिशावरी ब्योपारी आने या कई दिन हज्जूम रहने का तो कोई नहीं नाम के मेले तपसील जेल है · कौम ओसवालों का सुबह से साम तक बाग अमरसागर में · १ कार्त्तिक सुदी ३। दूसरा चैत्र वदी २। तीसरा भादों सुदी १० को इन्हों की अर्ज़े खातिर से श्रीजी साहब भी पधारे थे। ब्राह्मण पुष्करना का बड़े बाग सब दिन बैशाख सुदी ७ व भादों वदी ७ व तलाव घरसीसर सांम का बैशाख सुदी ४ व श्रावण सुदी ४ व भाद्र वदी ४ व मन्दिरों में चैत्र सुदी ६ इसोड़ा का। महेसरीयों का बैशाख सुदी ७ श्रीगंगाजी का जन्म चुंधी के कुण्ड में न्हाय के अमरसागर आते है व भादों वदी ७ अमरसागर श्रीजी साहब भी अर्ज़ व खातिर से पधारते थे · इस में किसी को मनाई नहीं। ब्राह्मण व महेसरीयों का कार्त्तिक सुदी ९ अवला की पूजा मूलराजसागर का मेला था अब अमरसागर का है · व घरसीसर का फागुन वदी १४ शिवरात्री श्री महादेवजी के दर्शन को

श्रीजी साहब भी पधारते थे व बैशाख सुदी ३ नीलचास देखने जाते हैं - सरकारी मेले चैत सुदी ५ गनगोर की सवारी मये लवाज़मा घड़सी सर और तारा अस्त हो तो मन्दिर पधारें तथा दसहरा का आसोज सुदी अष्टमी या नोमी को गढ़ के चौवदा में आम दर्बार होकर हाथी घोड़ों की पूजा आरती के बाद बकरे पाडे वध होते हैं व सुदी १० पट्टदरवाजा से बाहर नौगांनिया पाडा निकालने को खांडा की सवारी बड़े ही ठाठ से होती है व श्रीजी साहब या ढाल तलवार से पधारे हैं व नजीक परगनह के हाकिम भी मये जमीयत खेड़ आते हैं - आम मेले घरसीसर श्रावण सुदी ३ हरियाली व भाद्र वदी ३ कजली का शाम को तलाव भरा हो तो गाहे २ श्रीजी साहब भी पधारते हैं - व भाद्र वदी ५ तलाव महता सर केशरीये कुंड का मेला महता अजीत सिंह जी नवाजः करते हैं - व भाद्र वदी ४ श्री गनेश जी का मेला तलाव गंगासागर का था - सो तलाव ईशरलाल जी के होता है - व माही भाद्र सुदी ६ तलाव गजरूपसागर श्री स्वागियांजी के दरशन व सुदी ११ रामदेव जी का मेला तलाब गुलाबसागर व सुदी १४ रावतसरीयां के थान - ये बहूं मेले तीन जगह सम्वत् १३ से हुये श्री बड़े हजूर पधारते थे - व भादो सुदी ६ सरए का मेला शहर से उत्तर ४ को - जहां सिद्ध जोगी की गुफा है - चमार लोग सब रात शब्द बोलते हैं - व चैत वदी ७ श्री सीतला देवी का तलाव देदानसर सम्बत् २९ से होता है - अव्वल तो रानीजी साहबा की तर्फ से पूजा को मये लवाजमा जाते हैं बाद कभी कभी श्रीजी साहब पधारते हैं और हर साल राजवी आदि सब सरदार मुसाहब पधारने से बड़ा हुज्जूम रहता है महता नथमलजी की जानिब से नवाज़ा होती हैं नगारखाना व तायफ़ा वगैरह के इनाम मुकर्रर हैं - केशरहिन्द का मेला माघ वदी ४ या १ जनवरी को तलाव गंगासागर सम्वत ३३ से होता है॥

रुदासर के २ दो मेले - भारी हैं १ बैशाखी का इसमें अतीत लोग शहर व नजीक

मंडलके बैशाख शुदी १२ को जावे सो भंडारा व रसोई न्यात या किसी की होवे जितने दिन रहे शुदी १५ श्री दर्बार से व १ दिन फतेपुरी जी के ठिकाना की रसोई होवे ही हैं • व यात्री लोग शुदी १४ को शहर व देहात व मारवाड़ मलानी वगैरह के वहां जावें सो शुदी १५ सुवह को ब्रह्मकुण्ड में जहां अस्त भसमी डालने वाले से ०) रुपया लेने व हरसाल कुण्ड साफ़ कराने का बमेसर के दाणी पर सम्बत् ४३ से हुक्म है • न्हायकर बड़े बाग में आ रहें वहां बहुत से लोग शहर से जाते हैं दिन भर आनन्द व ठाठ रहता है • एक हाकिम मये ज़मीअत जाबते को साथ रहता है • ऐसे ही भादो शुदी ८ रामकुण्डे को कई लोग जाते हैं सो शुदी ९ को तलाब के लारी पर शहर से दूसरे लोग भी गोगाजी के थान पूजन करके बड़े बाग में आते हैं • इन दोनों मेलों का साम के वक्त तलाव देदानसर पर बड़ा भारी हुज्जूम होता है • यहां भी गोगा का थान है व लोगों को एतक़ाद है कि गोगाचौहान की पूजा करे तो सर्प नहीं काटेगा • इसलिये हर गांव में गोगा का थान व खेजडी रूख होवेहीगा॥

मुसल्मानोंका

भादों शुदी २ नोहथे जोधों की कबरें व सिलावटें मूला की तलाब पर व शुदी को सिपाही कंधारी वगैरह भागुरे गाम फकीर उवाया कीजाल जिसके २॥ पत्ते खानेसे दिवाना कुत्ता काटने का ज़हर न रहे जाते हैं॥

मुतफ़र्रिक मेले

भादों वदी " तलाब खेतासर पर महते सूरदास वगैरह व सलीया की डूंगरी महते गोयदानी • व तलाब सुदासर सूदा बिशानी • व श्रावण शुदी ५ तलाब सोनीसर सोनारे • व तलाब दर्जी आई भादों वदी • दर्जी तथा जेठ व भादों शुदी १३ या १४ को मौजे लुद्रवा में मातजी के थान सी को देखने नहीं देते॥

परगनात में • माही भादों शुदी ६ श्री स्वांगियांजी १ गाम भादरीया में श्री भादरा

रायजी के थान जहां पोकरन फलोधी वगैरह दूर दूर के यात्री भी आकर सई कडी छत्र सोने चांदी के चढाते हैं · ज्यूंही मनोर्थ होते हैं · दूजे श्री देगरायजी के थान जसोड कामसी वगैरह नजीक गामों के लोग आते हैं · व जसोड़ा टीमे मात्र गांमों में थान हैं जहां गाम २ के लोग पूजते हैं · ऐसे ही माहो भाद्रो सुदी गांम वाय में श्री भैरू जी के भी दूर दूर से यात्री आते हैं मगर रात्रि को नंही रह सक्ते · तथा इन बर्षों में वभूता सिद्धने बड़ा भारी चिमतकार दिखाया है · कि नाम लेने से सर्प नंही काटता व पहिले काटे के रखडी बंधने से असर नंही रहता · इसलिये गांम चारनआला में कालीया नाडि थान पर मारवाड बीकानेर सेखावाटी सिंघ वगैरह बहुत दूर दूर के लोग भाद्र सुदी ७ को यात्री आते हैं माह भाद्र सुदी ७ को श्री तेमडाय के थान नजीक गांमो वाले आते हैं · मौजे महाजलार से १॥ कोस तक ख्याले पर सहजनाथ की समाध फागुन वदी १४ को मेला में धाट वगैरह से बहुत लोग आकर चड़ावा करते हैं क्योंकि सोढे इनके कन्ठी वध हैं · ठिकाने की तर्फ से सीरा परसाद सब को जीमाते हैं · गांम हद्दा घडीया पास काले डूंगरे चीयां गांम जानरा में देवी मालण · वगैरह मात्र गांमों में कोई देवता या पीर वगैरह के थान पर पर माह भाद्र सुदी में गांव वाले पूजते ही हैं · गांव सीयां से १ कोस तक पनरासर डूंगरी पर राहड पनराज जूंझार के थान भाद्र सुदी १० खडाजी पल्लीवाल व रहाड कुल वगैरह लोग आते हैं · गांव रामगढ़ से दक्षिण ४ कोस तक जीआदेसर पर जोगनीयां के थान भाद्र वदी १४ मालत मात्र व मल्हार व वाजे सिंघ के लोग भी आते हैं · ऐसेही कोट खुयाला में जोगनीयां के थान कोहरे वगैरह पडोसी गांव वाले आते हैं ॥

जुरू आल्ला जुंझार के थान तो कुछडी वगैरह में भी हैं परन्तु मेला गांम कनोई माह भाद्र सुदी १ को होते हैं।

अब मनसा है

कि मेले दोय को तरक्की दी जावे १ तो कुलदेवी श्री भाद्रायारायजी के भाटी जात जाये पसनेकी जात देवे व श्रीजी की तर्फ से पूजा करने को पन्डा जैसे को भेजे जावे व जाबते को

१ हाकिम मये जमीयत वहां रहे। दूजे वभूता सिंध के मेला में भी हाकिम का रहना होया - दोनों जगह ठिकाना भारी बना कर सब तरह लवाज़मा का गांठ बांधने वगैरह की तजवीज हिसाब सुधा न्यारी लिखी है - इन मेलों में दिशावरी ब्योपारी व और लोग खरीद फरोख्त वाले दूर दूर से आने को इश्तिहार मुल्कों में जनाव रजीडन्ट साहब बहादुर जी की मारफत जारी करना होगा - व मिती भी शुदी १ सिंध के व शुदी ६ श्री स्वांगियां जी के मेला की रहेंगे सो ब्योपारी दोनों मेला साज कर शुदी ११ रामदेहरे जहां हरसाल आते हैं पहुंच सकेंगे - तथा सिद्ध के ठिकाने में पानी का कुण्ड या कुण्डे टांका व कु-वगाने व पुजारी रहने वगैरह के लिये सम्बत् ४१ में नोख के हाकिम को तजवीज लिखी भी थी परन्तु कहत सालियां से कुछ न हुवा - सो ईश्वर की इच्छा होगी तो होगा - बिलफैल इच्छा मालूम नहीं होती॥

टकशाल

कदीम से १ ही जगह श्री जी के महलों नीचे छाप लगती है - शिक्का मुहम्मद शाही था सम्बत् १८९९ में श्री अखैसिंह जी साहब जसोल से सोनी नाथा को क़ैद से छुडाय लाये उसने छाप तो वोही रक्खी नाम अखैसाही कहा - जब से टकशाल नाथा नो ५ घरों पास है व छाप खोदत्ते भी यही हैं - नमूना छाप १ तर्फ हिन्दी दूजे पासे फारसी हरुफ हैं सम्बत् का अंक हिन्दी व छाप आधी लगती है तो भी बदमास खोटे बनाते हैं पूरा छाप को टिकडी डबढी चाहिये - व तोल में ११ मासे का कलदार बराबर में खार जियादे था ठाकुरां राज श्री केशरीसिंह जी ने खालिस चांदी का छपाय ९७ आने में चलाया तो लोगों को तकलीफ रही जब एक माशा कम करके पूरे १० माशे का रक्खा तो भी व्योपारीयां ने माल नहीं मंगाया काम बन्द रहा - फेर फी रुपये १ रत्ती खार मिलाने की ठहरी व राज की छपाई भी फीसदी ३॥) रुपया अलाव: हक़ अहलकारों के थे सो छोड़ कर २॥) रुपया रक्खा था सो ही न रह कर ॥) आने रहा था जिसमें ।) आने -

सुनारों को टांका जाय घडने की महनत वर्नाबू कोयलों का देते हैं - इस परभी व्योपारीयां लालच से खार बधवाया सो अब १।। या १।।। रत्ती होगा। साहूकार लोग मुमाई खानपुर वगैरह से नीणाई चांदी की पाटें खुरीया रायल व सिक्के वार नग वगैरह माल मंगाते हैं - वतुमार निकलाकर मुसाहिवों ने हर जिन्स का निर्ख ठहराया है - फेर माल अच्छा या हलका या नवी जिन्स आवे तो सब के रोवरू तपास कराके निर्ख ठहराते हैं - जुने रुपये वजेवर कटकर नये रुपये व नये रुपये कटकर जेवर बनाते हैं -। कलदार रुपये का निर्ख को हुडांण या बट्टा कहते हैं फीसदी ३ या ४ रुपया बधती रहता है कहे तसाली में जियादह - व कभी दोय से कम होता है तो साहूकार लोग ३) रुपया लेकर असे शाही छपाते हैं १ सुनार दरोगा जो तनख्वाह एज से पाता है रुपये की टिकडी तैयार हो जब देखें कि खार व डोल पूरा है तो छाप लगाने दे - सम्वत में सरकार दोलतमदार अंगरेजी के हुक्म से रुपये में नाम अगले वादशाह को निकाल कर महाराणी जी क्वीन विक्टोरिया का लिखा सो नमूना है -। हिंदी सम्वत हर साल नया होता था सो १७ ही का है - अठन्नी चोअन्नी दोअन्नी भी छपें हैं। सोने की अशर्फी १०।। माशे की व अधेली पावली दोअन्नी की छपाई ७।। आना है -। सम्वत ४९ में इसको खूब सोच कर यह तजवीज करी कि रुपये डोल में खोटे न करने - व और ही वाजिव जानकर दो निशानी १ तो मेघाडम्बर छत्र व कुल देवो की यादगार पोलंब याने चिडीया का चिन्ह बधाया - जिससे रुपये फुटरे व अच्छे होने से दूर दूर में ।) आने व १) रुपया बचती मिलता है - व छपाई भी ।) आने बधाकर पूरा १) रुपया कीया व जमा खर्च का कायदा भी बहुत अच्छा रखाया है कि नकशा तैयार होकर जिस तरह जो वात समझनी हो मालूम हो सके -। तथा यह दस्तूर है कि व्योपारी लोग कामदार की मारफत टकशाल में माल तोल देवे तो रुपये दिन १५ व बकाया १ महीने में चुकता करा देने का फर्ज कामदार पर है ढील

हो तो सूद दिलाया जावे और बाला बाला माल सुनारों को देवे तो कामदार जिमेवार नहीं। तथा रुपया तोल में कम या खार जियादह हो तो सुनार को सजा कैद व जुरमाना की होती है व लिख लीया है कि खोटा रुपया छापे तो हाथ कटाया जावे सुद्धा कि सब तरह से अच्छा बन्दोबस्त है तो भी निगरानी में जरासी गलती हो तो चालाकी हो ही जाती है तथा सम्बत् ९ से कामदार गोलकिया सुखराम व बेटा बछराज हैं

तांबेका

चलन पैसा अमरशाही था सो तो रोहडी सक्खर में है यहां भीमशाही जरब जोधपुर व किसी क़दर झाड शाही जैपुर का निरख आगे १४ टके का था सो बधते बधते अब २८ से ३२ टके का है नया पैसा तोल में तो २० माशा ही है तांबा हलका है तथा कलदार भी चलते हैं॥

ड़ोढियां

खास इसी शहर में ही है अव्वल किसी जमाने में छपा था फेर श्री अमरसिंह जी ने छपाया सो तोल में भारी व निरख भी १६ बीसी था सो कटकर व नया सम्बत् १८९३ में छपा सो तोल में कम है ज्यूं निरख भी ३० से ३६ बीसी तक रहता है नबे फ़ारसी हर्फ न मालूम क्या हैं यह चलन ढीगला नाम मेवाड़ में भी है तथा कच्छ देश में आबीयां ४८ दोकड़ा ३२ ढीगला १६ जो १ कोरी में चलता ही है। और १) रुपया में कोरी ३ फदीया ७॥ छकड़ १५ खुरदा ३० दुरगानियां ४० आना का पैका ६४ दोकड़ा १०० जेथल १५० जेथलो का पैका ६०० ये नाम सिर्फ़ हिसाब के लिये हैं जैसे गुजरात वगैरह में १) रुपया के दोकड़े १०० व १ दोकड़े में १०० फोकडे हैं चलन नहीं। सम्बत् ४१ के मृगासिर महीने से सायरात में तोल महाजनी व हिसाब में ऊपर लिखे नाम उठाकर कलदार पाई जो १ आना में १२ पाई हैं चलन जारी कीया

और कईबार सलाह हुई परन्तु काम नहीं हुआ सो यह है कि टकशाल में माल राज का छपे - व्योपारी के माल आवे तो उसी वक्त रुपये निर्ख से देकर माल राज लें इसमें दो कभा हते हैं सो तह होने बाद यह हो सकै - व चलन तांवा का आध या पाव आना का नाम पैसा या आधीया या तांबीयो या जो मुनासब हो रखकर छपा ना जरूर है कि भाव में कमी बेशी की तकलीफात न रहें व काम भी जारी रहकर नाम भी हो - ऐसे ही

तोलमाप

इलाकह जात में १ कीया जावेगा चुनाचे: लोहे के बाट छपाये हैं - बिलफैल हर जगह मुख्तलिफ़ हैं - याने तोल तो भीमशाही पैसे २३ से ४५ तक कई किस्म का सेर है व ४० सेर का १ मन और पायली ८४ व मांणी सेर ५ का सो भी अमरशाही तोल १ से ३ सेर तक और गांम बारू में पायली सेर ५ का पोकरन मूजब व तनोट में टोपा सेर ८ का फलोधी मूजब है - तथा पायली १६ की १ सेई व १६ सेई की कलसी जो अमरशाही मन १२ की होगी बाहर गांमों में हैं - तथा कपड़े नापने का हाथ शहर में १८ इंच व देहात में २४ इंच का है व २॥ हाथ का १ गज सिरकी ८ हैं ३६ इंच का शाहजहांनी गज इससे सवाया समझो

सायरात

महसूल का रिवाज कोम कोम व रस्ते रस्ते जिन्स २ का जुदा जुदा था कि अव्वल कोट में पीछे शहर या किसी गांम में माल आया जब दांण लिया बाद बहुत सी लागें बिधा बंधान कनोती वगैरह फेर फरोख्त पर मापा उर्फ मुकाता व नेसार पर भी लगता था सो सब बंध कीया सो मुफस्सल हाल लिखना अब जरूर न रहा १० । १९ जगह हिसाब करने व पेशगी रुपये देने वगैरह तकलीफात ब्योपारियों को थी सो न रही श्रीजी साहिबों की उमर दराज़ होव सलाह जनाब रजीडन्ट कर्नेल

परसी डवल्यू पोलन्ट साहब बहादर नई तजबीज सम्बत ४१ का मृगसिर वदी २ से कायम की गई आन सरदारों भोमियों सेठों चौधरियों ब्योपारियों वगैरह से सही कराइ जारी किया कि इलाक़ह भर में एक जगह पूरा दांण लीया बाद दांण की खेंचल न होवै मान कामों से चाहैं सो रस्ते माल आवै जावै दांण का शिरस्ता एक रक्खा है कि खाश श्री दरबार के माल का भी दांण लगे होगा बिधा बंधान कनोंतियों वगैरह हक़दारों को हक़ श्री दरबार से दीया जाता है ब्योपारी से कम या बेश नहीं लीया जावे - माल आवै जावै सो अव्वल चोकी पर मंडी जै और गर्भ माल की तल्लासी होवे - तथा बीच की चोकी पर परताल की जावै लोप वहै सो कसूर वार व निज़र परवरिश रिआया जुवार बाजरी का पैसा बिल्कुल माफ़ सिर्फ़ ७ आना फी ऊंट मदरसे का लिया जाता है सो ही चारणों फ़क़ीरों डूमों स्वामियों से नहीं और ब्योपार की तरक्की वास्ते पेशार दांण पूरा लिया बाद नेसार छूट है और पेशार में भी हाथी दांत अफ़ीम के सिवाय सब चीजों में कमी हुई सो नक़शे के खाने औसत साबक़ में लिखा है - जागीरदारों का हक़ पटे बरसलपुर का तो रावजी दांण लें और ठेके का रुपया १००७ बारों महीनों का राज में दे और बिकमपुर रावजी को दांण में पांचवां हिस्सा श्री दरबार से दिया जाता है और बाकी गांमों का माल परगना उतार नेसार में तो पैसा रुपया सरदारों का राज से वसूल देंना और पेसार में उनका जी चाहें सो लें राज से मुद्दो नहीं और बहतीवाल में हक़ है ही नहीं यह हक़ सिर्फ़ पाटवी का रक्खा था पर वो समझे नहीं जिस से सदा ही रुपया पैदा हुआ सो रोल में जिसके हाथ लगा उसने उडाया भोमियों का कुछ भी हक़ नहीं था सो मुखिये को दांण की निगरानी को श्री दरबार से ७ रु० पर ७ रुपया इस शर्त से करा दीया कि दांण चोरी न हो अगर कोई सख्श दांणचोरी करै तो मुखिया उसको पकडावे जब उसका माल नीलाम या जुरमाना हो उसमें भी मुखिये का हक़ हो चुका और जो मुखिये से बाला बाला खबर लगी तो मुखिये को शोण

जितनी सजा दी जावे और मुखबर मुलाज़िम एज है तो चौथा हिस्सा और दूसरा बिस्वाद है तो उसको आधा जुरमाने या नीलाम में से मिलैगा तथा खालसे गांम के मुखिये को भोमिये से आधा हक़ निगरानी का उसी सर्तो से दिया जावे - व्यौपारी माल लावैगा सो खरीद का बीजक या आढतिये की चिट्ठी या बिलटी रेल का नक़ल या दूसरी रियासत के दांण चूके की असल चिट्ठी बताओ माल तुलाकर चिट्ठी होगो - वहतीवान दांण चुकायों से दिन ३१ में माल हलाकह पार करेगा उपरान्त हासल पेशार का लगेगा - अगर किसी सबब से माल इलाकह हाजा में दूवा तीसे बेचैगा तो हासल पैसार में वहतीवान वसूल होगा - और जो माल बेच के पीछे कहेगा वसूल नहीं मिलेगा और छाने बेचैगा तो सजा दांण चोरी की होगी - भार बरदारी व सवारी का ऊंठ गाडी व पहनने के कपड़े या कपड़े के टुकड़े जिसकी कीमत ३) रुपये की है या खाने की जिन्स व रसाल का हासल नहीं - देश की पैदावार चीज़ सिवाय घास शहर के देश में हीज़ एक से दूसरे परगनह से ले जावै तो गेहूं घृत तेल कपास इस ४ चीज़ों का पेसार मुजब दांण है बाकी माफ - तथा देश का वासी देश में हीज़ देश के वासी से बलध भैंसारू जीयाल मरफ़ब लेवै देवै तो दांण छूट और रजपूती सिंधी थाने खेड़ में आवे सो वचारण डूंम फकीर स्वामी आपस में ऊंट लें दें तो भी छूट है - कोटों का कामदार ताल्लुके में वाजब जांणे जहां सायर की चौकी रक्खे हिसाब हर अमावस्या मए फारम व कौंसिल में भेजे अथवा रुपया इकी चिट्ठी से खर्चे दांण की चिट्ठी छाप लगवाने में करें॥

दांण का खुलासा फारिस्त में है - और जो चीज़ लिखे से नवी आवे तो कीमत व ज़ात दूसरी चीज़ से मिलाकर दांण लेनों - तथा दांण में कमी वेसी श्री दरबार साहेब जरकदे मुनासब ख्याल फरमावे तो हो सकेगा - एक जगह दांन लेने में व सकुदारों को श्री दरबार से देने चगेरह २ तदवीरें ऐसी हुई कि राज व व्योपारियों से खसूसन

[illegible] लोगों को तो बड़ाही आराम व फायदा हुवा ही सब पर इकसा होनेसे जिस२ लोगों की माफ़ी थी सो न रही॥

तथा हिसाब का कायदा भी निहायत ठीक है कि चाहो सो हाल बखूबी आसानी से मालूम होसकै · सायर में कदीमी तोल कच्चा. जो मन २० याने अमरशाही मन ६ का एक ऊंट था अब शाहजहांनी तोल है · बिधाबंधान कनोतियां का हक़ ऊंटों पर था सो आठ मन का १ ऊंट रक्खा है · और अमरशाही मन ६ का शाहजहांनी मन पांच का होता है॥

रवन्ना याने दाण की चिट्ठी सायर

[illegible]	[illegible]	[illegible]	कहांसेमाल आया कहांजावै गा किसवास्ते:	[illegible]	[illegible]	नाम जिन्स	[illegible]	[illegible]	रुपया महसूल का	दस्खत यानी निशानी सायरदार व ब्योपारी

नकशा सरह महसूल व आमदनी सायरात

[illegible]	नाम जिन्स	[illegible]	सरह महसूल					[illegible]	सं· ४० कार्त्तिक सुदी १ था सं· ४३ कार्त्तीवदि ३० तक की पैदाव औसत								[illegible]
			पेशार		नेशार		बहतीवान		पेशार		नेशार		बहतीवान		कुलपैदाव ४ वर्षके दाण का रुपया	औसत १ वर्ष का रुपया	
			[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]			[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]			
१	श्रीफल म·	१	७)	·	·	·	।)	९॥	५६०।	५६॥	-	-	७७॥	५ा८	५६०।) ६०	१०६॥)३	
	गिरीखोपरा	१	२।)		·	·	॥)	११८	२२६३	५३१॥	·	·	म· ६०६	३०३॥=	१८३५) १२	६११॥=)४	

२	गुड	१	॥)	·	·	·	=)	॥)४	१६६५५	१२८३५	·	·	१२६६५	२०७	२९८८५॥)	७३६(=)	८६
	पुत्ती	१	॥)	·	·	·	=)	॥)	१५६०	१७८७	·	·	२४८	११०६	१२८९)	४२७)४	८५।
	चीनी	१	॥)	·	·	·	।)	॥)	६५५७	१४२२०	·	·	४४७४	११३॥	१४३५६।)	५११८॥)	८५४
	मिश्री	१	॥)	·	·	·	।)	॥)	·	·	·	·	·	·	·	·	·
३	नगौंव रंगत	१	६)	·	·	·	२)	६।)	२११६४	१८७	·	·	८३१	८३१	१२७०७॥=)	४२६॥)	·
	लुगड़ा	१	३)	२)	१)	३)	॥)	२॥)	५१९६	१२७	२२२	३३५	७७)६	२८॥)	१५७५॥)	४२५।)	·
४	ऊन	१	२।	१)	१)	२)	॥)	२।)	१०६	११६५७	२७३४२	१२७	·	·	३३६५८)	१८३१८)४	
	ऊनानदा	१	३	३	·	३)	॥)	·	२८१४	८७॥)	१५६	३११६५	२८७॥	७१॥	१२६१=)	४५३॥)८	६
	पसमीना	५७	८)	·	·	·	२)	=	१५	८८॥)	·	·	·	·	४०८।)	१३६)८	
५	रसीमन	६	७	·	·	·	२)	६	१२२	८८५१	·	·	·	·	१८५५॥=)	६१८॥=)	
६	अरीमन	से	६)	·	·	·	४)	·	११६	१७५२	·	·	·	·	१००२॥)	३५७॥)४	·
	आपदसा	से	६।)	·	·	·	२)	·	१६८	५०५४	·	·	८५॥	२८॥	५०२॥=)	१६६=)२	
७	घृत	१	१०)	५)	१)	२॥)	॥)	२।)	२६६८	१४८२४	२५८॥	५२४	८०	७५॥=)	२१६२९॥=)	७२१०=)४	८१=
८	तिलसर्व	१	७)	॥)	·	१)	॥)	१=)	३०५३	१८८५	२२६१	२६५६	२२।	११=)	६७५४=)	२२१८=)४	८३।
	तिलसेल	१	।-)	।-)	·	।-)	=)	।=)	३३१४	११२७॥)	७८८२	२१०८६	१३४८	२३४८	२४३३८॥)	८११३)	
९	चावल	१	=)	·	·	·	।)	८७॥	११२५	१८७)	·	१	३७५७॥	१८२३)	८६३८)	२३०८॥=)८	२५॥
	गहूं	१	=)	=)	·	=)	=)	७२	११८	११८८२	६५६९	१२८०१	७५४	१४८)	१२८३५॥)	४६१२॥)	५१२
	चना	१	=)	=)	·	=)	=)	·	४०९	२५७५	·	·	८॥	५७६	७४६)६	२४८॥)२	५१५
	मूंगमोठ	१	=)	=)	·	=)	=)	=)।	१९२५	१२८२॥	२०५॥	३२८८	१७३	२३॥	२८३४॥)६	९२७८॥	५८॥
	मटरमसूरी	१	=)	=)	·	=)	=)	=)	·	·	·	·	·	·	·	·	·
	साठी ज्वार	१	।)	·	=)	=)	=)	·	·	·	२२१५ २॥	५१५	२९	४=)	५२१६॥)	१७३६॥=)	५८६
	मंघीज सौनिया	१	।=)	·	·	·	।)	·	११८	२८=)	·	·	३०	७॥)	३८॥=)	१२)४	१३४

१०	हस्तीदंत	१	३०)	·	·	·	१॥)	१२॥)	५५॥३	२१३७	·	·	॥३	१॥≡)	२१३८॥≡)	७१२॥≡)५	·
	मामदंत	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·
११	घारथल	१	३)	·	·	·	॥)	३॥≡)	३१०	८९९॥-)	·	·	९५॥	१३≡)	९१२॥)	३०४॥)	·
	लोहो	१	३१)	·	·	·	॥)	३१)	१७४६	१३१६)	·	·	३६८३॥	१४१६)	२६३५॥)	८७५८)८	·
१२	बहीका गज़	९०)	८	·	·	·	१॥)	८)	३२७९	२६५॥-)	·	·	१३१७	७८	२७२॥≡)	९०॥≡)५	·
१२	रुई काकड	१	३१)	३१)	·	३१)	॥=)	१॥-)	२४३१	२७१९ =)	११५॥	११८≡)	९३	५०॥-)	२८८८=)	९९२॥≡)५	·
१४	फिटकरी	१	॥॥)	·	·	·	॥)	·	९६४ ॥६	५२८ ॥≡)६	·	·	९३०॥	४४८॥≡	८७३॥=)६	३२५॥-)२	·
	सज्जीखार	१	५)	·	·	·	·	१≡)।	९०१	२१०॥=)६	२।	॥≡)	२२७३ ५	३८०॥=)	५७२=)६	१८७॥=)२	·
	खारा	१	।=)	·	·	·	·	॥)	२१ ॥८	·	·	·	·	·	·	·	·
१५	कस्तूरी	१००)	६।)	·	·	·	३=)	·	२०८१ ॥	८६॥-)६	·	·	३३२)	१	८७॥-)६	२८३)२	·
	केशर	१००)	६।)	·	·	·	३=)	·	८२१)	१६॥=)	·	·	·	·	५६॥=)	९६)६	·
१६	बदाम	१	१॥)	·	·	·	॥=)	३१)	७१॥	१२५॥=	·	·	३१)	१।=)	१२६।)	४२०)५	·
	पिस्ता	१	१॥)	·	·	·	॥=)	३१)	१०२	२९६॥-)६	·	·	१२५	५५=)६	२३५)२	७७)१	·
	नवजा																
	दाख	१	१॥)	·	·	·	॥=)	३१)	१३६॥	२५)६	·	·	·	·	२५)६	४॥≡)१	·
	खारक	१	॥)	·	·	·	।)	॥=)	१६८५	१२२१ ॥-)	-	-	६६७	३५५=)	१५३७)	५१२८)५	-
	खजूर																
	मेवा सर्व	१	१॥)	·	·	·	॥=)	३१)	६९८	३९६=)	-	-	५८३॥६	१५५-)	५४९≡)	१८३-)	-
१७	नील	१	८)	·	·	·	१॥)	८-॥)	३८॥)	३८५ ॥=)६	-	-	६६८)	९१॥-)	१३०३≡)६	४३४॥=)६	-
	मजीठ	१	१॥)	·	·	·	॥≡)	२)	१२३५)	१११९ ।-)	-	-	६०६)	३७७॥=	२१४६॥≡)	७३२।-)	-
	लाकुड आल	१	॥)	·	·	·	॥)	१)	७२॥	८९६)	-	-	२००६)	१२०८ ॥≡)६	२२२७॥)६	७०६।)२	-

१८	हुरी	१४	॥)	·	·	·	॥=)	·	१२८८	१९१२ ॥)	·	·	११७२	१३६)	२७४४)	६१४॥=)४	:
	निंबसुर्ले	१	॥)	·	·	·	॥=)	·	२८८	२४१२=)	·	·	३३३)	२६५=	२८८४॥)	८८४॥-)४	·
	अंबापुर	१	॥)	·	·	·	॥=)	·	१०७)	११२३)	·	·	७३	-)६	१९९६	४०॥)२	·
	पानिवे	१	॥)	·	·	·	॥)	·	३८७)	२८१॥-)	·	·	४३९	।)	२८-)	६६॥-)८	·
	हुंबे	१००	॥)	·	·	·	१४· ।)	६।)	१५५	७१॥)	·	·	२२८=	२५॥=)	६७॥=)	३३॥=)४	·
	अमनूर	१	॥)	·	·	·	॥)	·	१२)	१४४॥)	·	·	६॥	३३)२	१९७)६	३८)२	·
	नारसराना	·	·														
१९	वरदा	१४	॥)	·	·	·	॥)	३४=)	४३)	१२८=)	·	·	·	·	१२५॥=)	४९॥=)	·
	खतखे																
	नागरस	१	३)	·	·	·	३)	६)	३७)	२३४-)	·	·	२५॥)	२३॥=)	२५५=)६	८४॥)२	·
	निरंगुंडी	१	२॥)	·	·	·	॥)	१४)	२२८	६३१० ॥)	·	·	४४॥)	२०६)	६१६६॥)	३।८)१२	·
२०	मनोहर	१७)	१)	·	·	·	१४· १)	१=)	२८०५	१५३६ ॥=)६	·	·	८०)४	॥)	१६७३॥=)८	५२५५॥-)६	·
	सबेमर																
	सबेमेन	१७७)	७)	·	·	·	३)	३)	८३)	८)	·	·	·	·	८)	३)	·
	चांदोरे																
२१	गुरस्कन्द	१४·	१)	१)	·	१)	॥=)	१)	१८५)	१८५)	१८७५	३५०	४३)	१४४=)	५७०-)	१८०-)८	·
	मगल्ल	१४·	·	३)	॥)	॥=)	।)	॥=)	३५४	६५॥-)	१४५३-)	७८६)	२०७)	३४३)	८५५॥)	२८८॥)	·
२२	मुसलीन	४१	॥)	·	·	·	॥)	·	३४५)	·	·	·	१८३)	७५४॥=)	२३११-)	७७॥=)	·
२३	[illegible]	१	३)	३)	३)	२)	३)	३)	७८न	१५०)	न२८	५७॥-)	·	·	२०५॥-)	६८॥)४	·
	[illegible]	ऐ	१॥)	१॥)	३)	२)	३)	·	२८२२ ॥	१४३६ ॥=)	न ३०१	५७६ ॥-)६	२६८	८४॥=)	३८०८॥=)६	२६०३)७	·
	वेलभेक	ऐ	॥)	॥)	।)	॥)	।)	॥)	१४४५	१९१॥)	न २३६२२	६११८ -)६	२८०	७९३)	१६७॥)६	२२२३॥-)६	·
	पैठा नकाए	ऐ	३)	·	·	=)	-)	=)	२३७६	३३०-)	न २१२२	७६१६	१४०७	१४३)	८६०४३	३३०॥)८	·

-	नकब	ऐ·	३)	·	·	३)	=)	॥=)	·	·	·	·	·	·	·	·	-
२४	नकडवणन	९६	=)	=)	·	=)	-)	)	७८९६	६०२ ॥=)६	२८५५	७७१ ॥=)३	४५९७)	२८७= ६	१३५८॥-)३	४५२॥-)६	-
	भास्वावा	१०१)	६।)	·	·	·	१म	६।)	३०)	५॥=)	·		म. २७।)	२।=)॥	८।=)६	२॥)१०	-
२५	खालडा दोनों	रे·	७)	८)	८)	८)	६।)	६।)	५०२७	११८० ।)६	२४४३	२४७६	४३५।)	३५४=	२०८७-)६	२०२६)६	·
२६	[illegible]	फ्लो१	-	·	३)	३)	·	·	न११८	१०६४)	गाडा ५६ न७४	१६७५) ३	न१८२	११॥	१०११॥=)६	३३७१=)३	-
	चक्की	म १	-)॥	-)	·	-)	-)	·		)	१२७३२ ॥	७५३-)६	·	·	-	-	·
	नूनामेदमेन	१	·	-)	·	-)	·	·	न ३११४	१६७=)	८२९२ म	७०६)	·	·	६०३=)	३०१)८	·
२७	बारदाना	१००)	६।)	·	=	·	नं१	६।)	५३२४	३०४=)२	८१६।)	५५।)	मे१३७)	२॥=)	३६२१-)३	९२०॥)५	·
२८	[illegible]	·	·	·	·	·	·	·	म. ४७३९	४४३६ ॥)६	मं८।	३=)	म १४६१	६६।)	५१३०=)६	७७१०)१	-
२९	परचूण	·	·	·	·	·	·	·	म. १९७७	६२६।)	म २७७७ ।६	४६५॥)६	म ८०१॥	३८०-)	१५३५-)६	५११॥=)२	-
३०	अफीम	१	६५)	-	·	·	-	-	म. ५१५५	५०३६६ ॥=)	-	-	-	-	५०३६६॥=)	१८७६८॥=	·

पालीमें मंडे तो रु० ६५) में ५) रुपया जोधपुर का व दूसरी तर्फ से आवे तो रुपया १००) कलदार है नेशा रवा मुद्दा नहीं

	जोड़	·	·	·	·	·	·	·		२०६९७०॥-)		८३४८५॥=)		२०३८०॥-)	३१००४५॥॥)	१०३३४८॥-)	·

पेशगर	राहदारी	नकशेमें लिखी के सिवाय जिन्स के महसूल की सरह पेशगर व राहदारी मिन शाहजहांपर
॥)	॥)	आंवला, आलू, आरवी, करायला, महूदी, लसोड़ा
॥।)	॥)	केथूला, कलमीसोरा, कसीला, कायफल, कोंचबीज, कपूरकाचरी, काशनी, कसरकस, पोदीना, सुवा, पनीरखोडे, सीचव, संचल, पबनडोडे, समुद्रफेन, सनाय, आंवला, अजमोद, असरोट, ईसमगोल, उशीरक, लोद, उपलेट, तुरूमसल्या, तुखमबलंगा, हिहाली

		बेकचरी, वहेड़े दोनों, वलबीज, रेवनचीनी, रतांजनी, वडछबीला, भोडल, मूंगफली, आरीठा॥
३।	७)	नकछिकनी, नोसादर, नीबू, फूलगुलाब, गरमाला गिलोय, गोखरू, गोरखमुंनडी, सिगोड़े, साथार, काकडासींगी, सनावर, कत्था, कटखजूर, किरमच, कुटक, आलूबुखारे, अड़ूसा, इन्द्रजव, उन्नाव, ऐलीया, मैदालकड़ी, माल कांकणी, पतंग, पित्तपापड़ा, हरड़े, बायफुंचा, घोडावछ, भारंगी, तालमाखाना, राल धूप॥
७)	॥=)	सावन, सहेत, चन्दन दोनों, चित्रक, कालीजीरी, कायता, कनजा, कसीस, कबाब चीनी, जोहरडे, जमालगोटा, जरीस्क, मुलहटी, मोचरस, मुर्दासिंगी, वायविडंग, विदारीकन्द, ब्रह्मी, देवदार, दारुहरदी, रीगनी, गन्द्रफ, खस, खसखास, पद्माख, तमालपत्र॥ नागकेशर
७)	॥=)	लाखबांटिया, सोनागेरू, सुपारी हर्च, सकाकुल, सूतली, भोजपत्र, भोजगंद, विजयासार, वहमनसुर्ख, गाजवां, वनफ्शा, हजरतबेर, हंसराज, माजूफल, जेरनालेरगिरी, अतीस, धावडे फूल, चिर्मी सर्व॥
३)	॥)	सिंदूर, सोंठ, कसूवा, केशरपिवली, गुलाल, मूसली दोनों, निशोद॥
२७)	१)	अगर, आंवलासार गंधक, अकलकरा, इलायची, तगर, मलागरी, मैण, सुमीर, मोरथोथा, हरताल, हींगलु, कीकू, केशरके फूल, कपूर, कालीमिर्च, गुलाबजल, सुरातेल, शिलारस, सीगीमोहरा, संखिया, सीतलमिर्च, सुर्मा, सोभागी, सफेदा, स्याहजीरा, सुपारीदकिखनी, चपड़ा, चन्द्रस, पीपरा, पीपरामूल, पीपरदराज, पनडी पारा, बड़ेडोडे, कण, जावत्री, जायफल, जेरकुचीले, जंगाल, जवाखार, रसकपूर, रतनजोत, रसोत, बीदाना, बंशलोचन, खैरसार, खाकसीर, दालचीनी, लोहवान, लोंग, भिलावा, बेरजो, चोपचीनी, सरेस॥

आमदनी नक़दी के अलावा इलाक़ह बरसलपुर का रावजी से १००) रुपये १२ महीने का ठेका है - बाकी लाठी वनोट दाखणी वसिया वग़ैरह गांमो का दांन नही मंडा है व रजड़ा म्होरा लोगा दान चोरी करी सो अलग- अगर पूरा दांण मंडे तो पैदा ज्यादही है तथा परन्तु दाण रूई की गठड़ी वा खाली ऊंटा वग़ैरह के में चोरी व कमपछत हद से परे है सो जो जो चीज छोटी याने चोरी छिप सके सो लूट करके गुंजायश की चीजों पर ऐसी तजवीज हो कि हर्ज हरकत न रहे॥

सायरमापाउ-

तकड़ी मुकाता में सम्बत् ४१ से सिर्फ इतना रहा है - बाकी सब उठ गया- जेवर, बरतन वग़ैरह का २७) रुपया पे ७) रुपया व हिरण्य तोले ३० पै ७) रुपया व चांदी रुपया १००) पे ।) चार आना लगता है सो बिके उसी दिन विगत से मंडवावे - सो चोरी वाडगड़े का माल नही बिक सके - कंदोयां से खांड गालने पर व मिश्री बनाने पर फी मन व दूसरे लोगों के खांड गालने की महनत में च्यामे सो हर एक वाडे मंडाय दे - दरवाजों की लाग घास चारा पर फी ऊंट १ आना - इसमे हजूरी कंधारी वग़ैरह को छूट भी है - फाटका सोदापर लाग सम्बत् २० से लगी है सो सब दे - १००) रुपया पर ॥) आठ आने दोनों फरीक से - व सवदा हो उसी दिन ब्योपारी या दलाली का मडवादे - कि झगड़ा न पड़े व भाव कटने वग़ैरह कायदा की कलमा सम्बत् ४१ में लिखाई है - दलाली का ठेका या आध है पहले ॥=) आने राज के थे - न्यारिया का इजारा रु० ठहरे सो - लखारा का इजारा दरवज्जा के दरोगा की तनख्वाह है - पटवा का काम करने वाले से हर महीना में ७) रुपया था सो कई साल से नहीं लीया गया- ऐसे ही पीजारे कसाई वग़ैरह से भी था सो नही है - ऊपर लिखी लागो में कम बेश करके पुख़ता बन्दोबस्त करना जरूर है कि दाण चोरी न रहे॥

बरसोत

लाग रिश्राया से धुंवा सर भूमी ठांण भासोला डंड नेत्रालिया बाघालिया व इजारा वगैरह कई नाम तो मोका मोका पर लिखे गये व फुटकर नाम बहुत से हैं कि सालिया तादादन रुपया ९ हजार करीब होगी सो एक जगह जमा न होने से ठीक हिसाब भी मालूम नहीं होता है - ऐसे ही तबेलाण लके मोचीयां चमारी का इजारा वेगार वगैरह वाह का बहुत काम है और घास चारा मूगधणं पानी वगैरह का खर्च भी यहां ही से होता है इस काम में बन्दोवस्त लिखा तो है परन्तु कीया नहीं सो जरूर ही करना चाहिये - कामदार व्यास मुल्तानचन्द है इनके ताल्लुकः खीमा खाना व घोड़ों ऊंटों का सज्ज बनाना सांभन व और ही मुतफर्रिक कई काम है - तथा बागों का काम याने बागों की पैदा व सीधा दाए लाग व मालीयों से बरसोत वगैरह की पैदा व तीनूं बागों का खर्च अगरचः राज का है मगर अलहदा रक्खा गया है - सो अब समूल समझा जावेगा - और बाग बावड़ी याने आबाद होकर हर तरह की रसाल व आमदनी होने की तदबीर सम्वत् ४१ में बहुत ही खूब की गई है क्योंकि ख्याल कियाकि एक पेड़ आम वगैरह व एक कूवा व एक कोश होज हां बहुत पैदा होती है सो सदहा पेड व ऐसे ही कूवे कोश होकर नुकशान क्यों रहता है - मालूम हुवा कि मालीयों ने पैदा करने की कसम वास्ते न देने राज व कर्ज के की है - इस वास्ते इन्हों से मुनासब कल्मा लिखा लिया है - परन्तु जमाना आने से बनेगी॥

नमक

शहर से उत्तर १० कोस गाम कानोध के॥ कोरन में बारस का पानी सूकने बाद बेरे का पानी क्यारियां में - सीयाले के दिन २०।२५ में ३।४ दफा व ऊनाले के दिन १५।२० में ४।५ दफा भरने से नमक जमता है - सिवाय पानी व जमीन की सोरीयत के कोई चीज

नहीं रंग सुपेद सेभर से सोरीयत माइल है - नमक में जागीरदार वगैरह का हक नहीं राज ही मालक है - खार वालों को महन्तांने का हिस्सा तीसरा था सम्वत् ३३ से फी मन शाहजहांनी का १ आना दीया जाता है नमक बनाने के औज़ार व बेरा क्यारीयां का खर्चा मे खार वालों के हैं - तथा निर्ख अमरसाही तोल से ७) रुपया आगर पे मन श से १४ व शहर व परगनह मे ११ मन था - सो अब शाहजहांनी मन एक पे ।) आने कीमत व ७) रुपया महसूल आगर पर रक्खा और शहर व परगनह में किराया ५ मन पर एक कोस का -) आना ज्यादह सो सम्वत् ४४ के चैत्र में सब जगह निर्ख सेर ।।)१ का व आगर पर दोनों गांम काणोध के सिवाय बेचना मना करके परगनात में कोठार कराये सो गांम वाले नजीक कोठार से लेवें जिसका अमगाम लिखने वगैरह कायदे की किताबें छपाकर बेचने वालों को दी गई कि राज का नमक बेचने की आडत तुलाई की जगह का भाडा फीसदी ३) रुपया मिलेगा निर्ख में फ़र्क न रक्खें और जो रुपये पेशगी दे जिसको ३) रु॰ कमीशन जुमले ६) रुपया दीये जावे व निर्ख भी ७) रुपया से कमती लेने वाले को ५१ सेर कमती देवे - परन्तु दोनों सूरतों में हिसाब हर महीने ताल्लुके के हाकिम की मारफत नमक के महकमा में भेजा करें - सो साल तमाम पर नक़शा तैयार होवे कि किस किस कोठार व गांम में कितना नमक कितने मनुष्यों ने लीया - व पैदा खर्च वगैरह सब हाल मालूम हो सके - और आमदनी वजबा से निस्फ भी नहीं होती है सो ऐसे काम चला तो सही हाल खुल जावेगा -

सिवाय इसके मोजे वाय में भी रन है मगर नमक निकालना बन्द है व गांम वरमसर व पहाडों के रन में खारा पानी के बाइस ज़रात तो क्या घास भी नहीं होता और न खारी नमक होता है - तथा मोहनगढ़ के रन में पानी तो खारा होता है लेकिन ज़रात दोनों फसलें - सम्वत् ४१ से होती हैं - । रूजीडन्टी में रपोट निर्ख की हर पखवाडे व नमक खानों से निकाले व बेचे की से माही व साल तमाम पर की जाती है - । तथा सम्वत् ३३ में सरकार

दौलतमदार ने मारवाड़ वगैरह का नमक ठेके लिया जब यहां से दीवान नथमलजी को जोधपुर बुलाकर जनाब कर्नल साहिब बहादुर व रेजीडेन्ट साहब ने कहा कि यानो खानों को बन्द करो खर्च के लिये नमक सरकार से मिलेगा या खानों पर सरकारी बन्दो बस्त मंजूर करो । अर्ज़ करी कि इतनी गुंजाइश नहीं है कि सरकार नमक निकाले और बन्द करने सरकार को नमक पहुंचाने में ५०। ६० हज़ार खर्च होगा सो सुनासब जाने तो सरतें लिखाकर राज को खर्च जितना नमक निकालने की इजाजत दी जावे जनाब कर्नल वाल्टर साहब बहादुर ने सदर से मंजूरी मंगाकर ऐसा ही किया कि नमक (५०००) मन से ज्यादह बगैर हुक्म नहीं निकाले । सरकारी महसूल चुके नमक का इस इलाके में राहदारी नहीं लेना । ३ नमक गैर इलाकह नहीं जावे । ४।५ में निखे बरपोट का हाल ऊपर लिखा है। ६ मारवाड़ में सरकारी नमक का काम जारी हो जब से जारी करना चुनाचे इस मूजब बरते हैं । कानोध में तो काम दारगो बच्छराज व एक दरोगा दो अस वार व शहर में गोन्दुलाएम है। तथा नमक हर जगह पहुंचाने व बाजरी वगैरह लाने के लिये राज के ऊंट पे हरीदास जीवणदास मिर्धा व कई हाली रखे कि खर्च से बोच न्द फायदा होगा परन्तु उलटा नुकसान रहा सो अब कोई ठेकेदार ५० ऊंट रखकर शर्तों मूजब काम देतो बड़ा ही नफ़ा व सबको आराम रहे॥

दीवानीफोजदारी

कानवा कायदा सम्वत् ४४ का माघ से आम लोगों को सुनायागया परन्तु तामील न हुई सो होईगा (खुलासा दीवानी) लेन देन का रिवाज ७ पीडी का था अब ४५ वर्ष से पहले की सफ़ाई या दावा ५ साल तक कर लें पीछे सुनाई न होगी - बरसूस मुदई को रुपये दिलाने में च्यारम राज व फीसदी ५) रुपया धर्मा दे ऊपर गई के दोनों फ़रीक से व ७) रुपया फैसला का लेते थे सो छोड़कर फीस नीचे लिखे मूजब वक्त दावा के मुदई से

लीजावे सो वक्त फैसला के हाकिम अदालत वाजिब जाने जिस पर रक्खे व मुदालत तलवाना व नकल फैसला वगैरह वगैरह का इष्टाम भी नीचे लिखे हैं अपील सिर्फ ॥) आना के कागज पर हो सकेगी॥

फीस

१०) रुपया का ८) रुपया, तो ५००) रुपया के दावा तक ऊपर दावा १ हजार पर कमती याने रुपया ६।७।३।२ फेर चाहे जितने हो फीसदी ५) रुपया के हिसाब से जिसके जुज रुपया ५) तक ।) आने, रुपया १०) तक ॥) आने, रुपया १६) तक १) रुपया, २५) रुपया तक २) रुपया, ४०) रुपया तक ३) रुपया, ५०) रुपया तक ४) रुपया, उपरान्त २००) रुपया तक जुज २५ को, ५००) रुपया तक ५) रुपया का, १०००) रुपया तक १००) रु० २०००) रुपया तक २००) रुपया का, ५०००) रुपया तक ५००) रुपया, १० हजार तक १०००) रुपया का, २० सहस्र तक २०००) रुपया का, व २५ हजार तक २५००) रुपया, पीछे जुज १ आयुत का है। सो हिसाब फीस के ५०००) रुपया के ४००) रुपया, व १०००) रुपया के ७००) रुपया, व १५ के ९ व २० के १०॥ व २५ के ११॥ व ३० के १२ व १ लाख के १६००) रुपया समझो। तथा लोगों के आपस में तहरीर सं० ४४ का माघ पिछली स्टांप पर सही होगी जिसका दस्तूर (ष्टांम्प) लगाने का यह है कि हुंडवी हर किता पर एक दफा १ सौ तक नहीं ऊपर २००) आना ६०० तक =) आना १००० तक ≡) आना १५०० तक ।) आना २००० तक ।=) आना ३००० तक ॥) आना, ४००० तक ॥।) आना, ५००० तक १) रुपया, ऊपर २) रु० ज्यादा नहीं व पैठ पर पैठ पर सिर्फ ≈) आना के पर हुंडी पर नहीं लगा हो तो पूरा। सूदी देंन लेंन पर (ष्टांम्प) चलू खाता साहूकारी पे नहीं और खत खाता व रुक्का वगैरह में सामले से सही निशानी करावे तो अंग उधार या जेवर वर्तन वगैरह जंगम चीज गिरवी पर सूद ॥) तक है तो फीसदी ≈) आना का और सूद १) रुपया तक हो तो फीसदी ॥) आना

व सद् १ से ज्यादह परदूंना जिसका जुज रुपया २५) का • तथा रजिस्टर किसी कचहरी से करावै तो २५) रुपया पै ≡) जुज़ का हिसाव से लगेगा •। जगह ज़मीन खेत कूवा वग़ैरह् स्थावर आडत पर ऊपर लिखे हिसाव से ड्योढ़ा। नया या पुराना हिसाव करके रुपया वाकी निकाले जिस पर ऊपर लिखे मूजिव। खेत ज़मीन वग़ैरह् का सनदी हुक्म किसी कचहरी से का • रुपया ॥) पर लिखा सही होगा •। बेटा गोद लेने सगाई करने तलाक़ लिखने वग़ैरह् ऐसी तहरीर का • रुपया ॥) पर लिखी सही होगी •। रसीद् इकरारनामा ज़ामनी भाड़ा चिट्ठी वग़ैरह् ऐसी तहरीर का • ⌐) आना पर। फ़ारख़तीं अभियाग न दावा की रुपया २५) का ≡) आना जुज के हिसाव से रुपया ॥) तक हद् है। ठेका इज़ारा किसी क़िस्म का रुपया २५) जुज का ≡) आना के हिसाव से। सीर साझा किसी क़िस्म का मवेशी जगह ज़मीन व कोई जिन्स या व्योपार दुकान दारी वग़ैरह् की। लिखावट रुपया २०) तक ≡) आना रुपया ५०) तक का ।) आना रुपया ८०) तक का ॥) आना रुपया १६०) तक का १) रुपया, रुपया २५०) तक रुपया ॥), से उपरान्त रुपया ३) से वडती नहीं। घृत ऊन धान वग़ैरह् जिन्स लेनी लिखावे तो • का • वच व्याज मूजिव पर • मगर ऊंन तिल वग़ैरह् खरीद करने का सट्टा व्योपारी लिखावै तो का • फीसदी ⌐) आना पर परन्तु इसमें माल कमती तुले का भाव नहीं मिलेगा रुपये सूद से लेने होंगे॥

इस्टाम

घर काम या वेचने को इकट्ठे १००) रुपये से वधती खरीदे तो कमीशन फीसदी ५) रुपये से २०) रुपये तक वधती जिसका जुज यूं है कि २५) रुपया तक ५) रुपया ५०) रुपया तक ६) रुपया १००) रुपया तक ७) रुपया व ऊपर २०) रुपया का इस्टाम रुपयों के हिसाव से मिलेगा परन्तु अदालत की फीस का काग़ज़ पूरे मोल

कचहरी से होज लेना होगा · ऊपर लिखे में काम वेश करना श्रीजी साहब के हुक्म से हो सकेगा · जिसका इश्तिहार जारी कीया जावेगा · ऊभ सींगा याने चोपाया जबरन छीन ली· या है या देने करिके नहिं दीया है तो दावीदार दः ६१ और मजाज कचहरी में दरखास्त देकर सफाई करले वरना जदही दावा करेगा कीमत मिलेगी · ऐसे ही खाते में लैनी करी जिन्स नहीं आवे तो मियादबाद सफाई करले भाव नहीं मिलेगा · रुपये सूद से सही होंगे · तथा जगह ठगी की मसवाड़ भी ३ साल तक लेही लें पीछे ज्यादह डक ही नहीं मिलेगी। खेत में विगाड़ हो सो तो जिसपर दावा लग सके उससे भरा लेना परन्तु खेत छोड़ना नहीं अगर खेत छोड़ेंगे तो दावा खारज · अला हाजुल क्यास ऐसे झगड़े पुराने रिवाज के नहीं रहे·

दफे: २६

बड़े शहर व रेल तक रस्ते में गाम का नाम व दूर कोस व कू· गहरा व पुखता व बेरी व त· बड़ी छोटी

जोधपुर पु· ५० को·					
१	मोकलात	४	कुन्ही के		छो·
२	बासनी	१	७-मी	हे	व
३	चांधन	७	१९	हे	छो
४	सेदाकोर	४	३-मी	०	छो
५	लाठी	२	२-मी	०	हे
६	जाहानि रा	६	२४ल	·	व

बालोत्रा रेल है ५५ को·					
१	डाभला	४	७-मी	हे	व
२	आकल	२	०	०	व
३	छोड	५	३५मी	हे	व
४	देवीकोट	२	६०मी	हे	व
५	लखमन	३॥	८०-मी	०	व
६	छोडिया	१॥		०	व

कच्छभुज ९७ को· व गाडवी द्वारका					
१	जीया	३॥	·	·	छो
२	लु·	२॥	·	हे	व
३	पीथोडार	१	२५मी	हे	व
४	कोरुवा	४	०	हे	व
५	चेलक	४	७०-मी	·	व
६	देवडा	५	५०-पे·	·	व

७	पोकल	६	१०मी	·	व	
८	लउवा	४	·	·	व	
९	मडला	५	मी	·	व	
१०	देबू	५	७०४	·	व	
११	ठाढीया	२	मी २५	·	छो	
१२	लाडना	२	३०मी	·	छो	
१३	रामु	५	७०पे	·	छो	
१४	पाचुना	४	·	·	ऐ	
१५	नंदानीपा	२	१०मी	है	ऐ	
१६	वाल्रवा	५	[illegible]	है	ऐ	
१७	द्रोरा	२	ऐ	मी	ऐ	
१८	नादलद्र	१	वेए	मी	ए	
१९	[illegible]	१	वेए	मी	ऐ	
२०	नासंग्राध पुर	३	मी	है	व	

दूसरा रस्ता चलनेको गांवोंमें होकर दो तीन है जिससे नाम नहीं लि से व वालोंका रेल है

७	डांगरी	३	८० का	·	व	
८	शाला	४	८मी	·	छो	
९	धारा	२	८मी	·	हे	
१०	ऊंडु	७	·	·	·	
११	रतेउ	२	·	·	·	
१२	मुवाउ	४	·	·	·	
१३	उनराई	७	·	क	·	
१४	मलवा	५	·	क	·	
१५	खेड	६	·	·	·	
१६	वल्वतए	२	·	·	·	

वहाडमेर ·।को· ५२

गांव भू· सीतः झाई· रामा· एवडेमें टाईतक इलाका हद्दजा· गांवगूरा या हर्दवा सें सिवाय· ईलाकहद्द भार नाड फेर गांव माडस्या से गाहेडमेर और वहां से गुडा होंथी गांवधनी परवाव सुई गांव वगैरह होते हुए कच्छ भुज का भी रस्ता है

१	कुकामान	२	१०मी	·		
७	आनीदन	२	८०का	·	व	
	रो· गांव					
८	कोहए	७	२६मी	·	व	
। मवाकालीगुडीयानगुडपाग						
९	हुसानी	१०	११२द्र	है	व	
१०	गदडा	१२	खा	है	छो	
११	मोहली	६	१०मी	·	·	
। सीवसरनविञ्जुपोहेला						
१२	चाछा	१५		है	·	
१३	भोरीला	२२	खा	·	·	
१४	मिवी	२०	·	·	·	
१५	दीपला	२३	मी·	·	·	
१६	वलेहाए	५	·	·	·	
। समेधर्मपंथलफेरदेवाणेटो वाहसे						
१७	रावडा	२०	मी·	·	छो	
। वीचमें ३।४ गांव है पेर						
१८	भुजनगर					

फेरमाडवी को २० व रस्ता गरमें का १२ जहा ज चलकर थी द्वारकाजी वैठने शरामंडे सेगोमतीजी हैं अवडासे आसपुराकेम डको २५ फेरनारायणसरको· १५ हे

हैदराबाद सिंध को· १०० (१) सता को· ७ कुवा पुरवतः २५ मीठा त· (२) खुद्द ही कोश ७ कूँवा पुरवता १२ मीठा (३) त· बहुणाई कोश ६. (४) फुलिया कोश ५ कूवा पुरवता ३७ मीठा त· (५) महाजलार को· ५ कूवा पुरवता ४० मीठा (६) व्यधीवावली कोश ६ चौहद्दां हैं· कूवा पुरवता ४५ रवा· (७) सेदाउ कोश ५ कूवा पुरवता २५ मीठा (८) जाफराउ कोश ५ कूवा पुरवता १० मीठा (९) रणाउ कोश ५ कूवा पुरवता ९६ मीठा (१०) आसराडहर कोश २ कूवा पुरवता १८ मीठा (११) गपनीरो दंढ कोश ८ पानी लूण छाया (१२) हथूंगा कोश ४ यहां तक कोश ३० रेत के टीबे हैं पानी का नाला व कुएडा हैं (१३) खिपरा कोश २ बावा हे (१४) खिराउ कोश ६ (१५) मीरपुर जूना कोश ४ (१६) मीरपुर नया कोश २ (१७) नंडा अलायार कोश ८ (१८) लाठी कोश ४ (१९) खास शहर हैदराबाद कोश ६। दूसरा रास्ता कोट महाजलासें गांव सुन्दरा कोश ७ ईलाकह मारवाड · गांव रागरणदेर कोश ७ ईलाकह सिंध · फेर पर नीरा बेरी होकर गांव ढोल कोश १५ बेरें हैं नाला भी है · गांव अमरकोट कोश ७ । सांड लो कोश ८ फेर ढानियां होकर नंडा अजायार से हैदराबाद। अगाड़ी नगर थटा कोश · व किरान्ची कोश ६० हैं · वहांसे केलात व बलोचिस्तान व मक्का सरीफ़ व देवी हिंगलाज को जाते हैं · तथा किरान्ची से बम्बई बन्दर व विलायत ईङ्गलिस्तान को जिहाज़ जाते हैं॥

शे हुड़ी भाखलरयान्दी सकलर कोस १०० हां से १२ शहर शिकारपुर व कोश १२ खैरपुर मीर साहब का है जिसका रास्ता कोट सहागढ़ में होकर भी है (१) चुंधी कोश ४ कुएड मीठा (२) ढवेल कोश ४ वेरी पुरवता ७ मीठा (३) कुन्डड़ी कोश ७ वेरी पुरवता ६ मीठा (४) कोट खुयाला कोश ५ कूवा पुरवता १२ मीठा (५) बांधा कोश ४ वेरी पुरवता २ मी· पानी कम (६) असू कोश ८ कूवा पुरवता ४० मीठा (७) कोट घोटडू कोश ८ कूवा पुरवता ४० मीठा (८) सोजरे का कूवा पुरवता २४ मीठा· इलाकह हाज़ा (९) मिरडा पुर इं सिंध

कोश १६ कूवांपुरवता ७ मीठा (१०) उधड़ कोश ८ वेरी पुरवता ७ मीठा (११) मतेरीखु ई कोश ४ वेरी पुरवता ७ मीठा (१२) वस १२ कोश वेरी पुरवता ७ मीठा (१३) सिंगरार कोश ४ कूवा पुरवता मीठा (१४) भिडो कोश २ रोहडी कोश ६ दरियाव है॥

खैरपुरडहरका कोश ७२ (१) रामकुण्ड कोश ४ मीठा (२) लांणेला कोश ३ वेरा तलाव (३) भादासर कोश २ वेरा त• है (४) मोकल कोश १ त• वेरा (५) संतु कोश ६ कूवा पुरवता ६० (६) कोटरामगढ कोश ६ वेरे हैं (७) खेरड कोश ३ वेरे हैं (८) रणाउ कोश ८ कूवा पुरवता ३२ मीठा (९) घेटाली कोश २ कूवा पुरवता २० मीठा (१०) तणोट कोश ३ कूवा पुरवता २० खारी (११) खैरगढ़ ईलाके डहर कोश १६ वेरे हैं (१२) खेजुकारु कोश ८ कूवा पुरवता ८ मीठा (१३) खैरपुर कोश ८ पानी कावावा है फेर रेल है सो सक्खर कंडेरा अहमदपुर बेगड की गढ़ी बहावलपुर पंजाब वगैरह को जाती है॥

खानपुर ईलाके बहावलपुर कोश ७३ (१) वरमसर कोश ४ तालाव कुण्ड वेरा है (२) मुलदे कोश ३ तलाव कूवा पुरवता २५ मीठा (३) कंडीयाला कोश २ कूवा पुरवता ३५ खारी तलाव है (४) खाबलसर कोश ५ तलाव कूवा पुरवता खारी (५) रता कोश ५॥ कूवा पुरवता २५ मीठा तलाव (६) डावर कोश ३ तलाव करना है (७) वराड़ कोश १० कूवा पुरवता ३२ खारी• ईलाके हजा (८) न्हवर कोश ८ ईलाके बहावलपुर कूवा पुरवता ३५ मीठा (९) मूराटोभा कोश १२ (१०) तणारणा कोश ११ करना है (११) खानपुर कोश १२ खु•न वावा है •दूसरा रस्ता नहरवरसे मिठ्ठा कोश २४ वेरा हैं फेर रेल है॥

बीकानेर कोश ८३ वास्तपी चांधना सोढा कोर तक कोश १६ (५) भाडीया कोश ३ कूवा पुरवता २५ मीठा तलाव (६) नवातला कोश ३ कूवा पुरवता २८ मीठा तलाव (७) जुहारखी कोश ४ कूवा पुरवता ४५ मीठा तलाव (८) टेकरा कोश ६ कूवा पुरवता

४५ मीठा कम तलाव मरना हैं (९) सीहड कोश ३ कूवा पुखता ३८ मीठा तलाव (१०) सखासर कोश ६ तलाव (११) बधाऊडा कोश ३॥ तलाव (१२) कोटवाय कोश २॥ तलाव वेरी पुखता ७ हैं (१३) गाउण कोश १॥ तलाव (१४) वडी सिडे कोश २ कूवा पुखता २० खारी, तलाव (१५) मुलजीरी सिडे कोश २। कूवा पुखता २८ मीठा, तलाव (१६) नोखडा कोश ६ वेरी तलाव कूवा पुखता २६ मीठा इ० ह्राजा (१७) शवरीथेरी कोश ४ इ० वीकानेर कूवा पुखता (१८) देयात्रा कोश ३ कूवा पुखता तलाव (१९) मड कोश ४ कूवा पु० तलाव (२०) चांनी कोश ३ कूवा तलाव (२१) गजनेर कोश ३ बाग़ तडाग़ व राजभवन हैं (२२) नाईयारी वस्ती कोश २ (२३) प्हो कोश २ (२४) खास शहर बीकानेर कोश ४ फेर सरसा भीयानी देहली वग़ैरह का भी यही रस्ता है तथा सीहडा से फलोधी होकर नागोर का रास्ता कोश ९ है॥

कौम राजपूतों के सादी ग़मी में खर्च वग़ैरह की रीत

जनाब कर्नल साहब कर्नेल वालटर साहब बहादुर जी ने बमूजिब हुक्म वाइसराय गवर्नर जनरल मात्र रियास्तों के जो इख़्तयार मोतमद व कंवराजों की कमेटी से मुकाम अजमेर सम्बत ४४ का चैत्र में कौम राजपूतों के शादी व ग़मी में खर्च वग़ैरह का बन्दोवस्त कराया कि सगाई के वक़्त बेटी का बाप बडे सिरदार तो टीका देते थे और ग़रीव रजपूत रुपया लेता थां यह रसम क़ितई बन्द· अगर कोई बिल्कुल नादार हो तो विवाह के वक़्त रुपया १०) से कम लेकर विवाह को लगादें और सगाई करें जब अम्मल दस्तूर के बाद सग़पन कीये की चिट्ठी एक दूसरा लिख दे कि फेर झगडा नहीं पडे · तथा विवाह में खर्च की तादाद भी हैसियत मूजिब लिखी है उसमें चारणों भाटों डूमों वग़ैरह की त्याग की तादाद शादी के खर्च में फीसदी ६॥) रुपया उस इलाक़ह वाले को देवे कि जहां माद्दा है दूसरे-

इलाकह का मंगत आवे सो ताल्लुके का हाकिम सज़ा दे और इलाकह के एली में चारन नहीं है जिससे शेखावाटी का जाने की इजाज़त है· इस वन्दोवस्त से इलाकह हाजा मे शादी की बाबत बड़े सरदारों के तो ठीक ढंग सो आसानी से चलैगा और ग़रीबो के रुपया लेना का रिवाज़ पुस्तों से है सो मुश्किल से मिटेगा मगर यह तज़वीज हर हाल है नेक सो राज से पूरी कोशिश होकर मिटो सही · बाकी मोसर में खर्चे की तादाद रक्खी है सो चलने की नहीं क्योंकि पैदा के हिसाब से तो ओसर हो सकै ही नहीं और करना ऐन फ़र्ज़ है ज्यूं इस खर्च में हर्ज़ भी नहीं है भाई गनायत हेतू वगैरह दवदार पूरी मदद देते हैं अलावा इसके शादी में उमर की क़ैद लगाई है सो भी हो सके नहीं क़ैद बमूजिब उमर के वर कन्या का मेल लगना मुहाल है हां यह बात बहुत मुनासिब है कि ग़रीबों के कुंवर हों तो १५ वर्ष की उम्र बाद शादी न करैं तथा इस के बंदोवस्त को राज में कमेटी रहवे वह हर छ:माही रिपोर्ट एजंटी में देने का हुक्म है सो हुसी ही इस वास्ते हुकूमतों से रिपोर्टो के आने से नक़शे का नमूना ज़ैल में दर्ज है और हुक्म है कि सगाई विवाह होवै उसी दिन नक़शे में लिकवे॥

नक़शा मिती वदी १ शुदी ६ माही इलाकह जेशलमेर में कोम राजपूतों के बेटा या बेटी की शादी हुई का संबत् ४ मिती शुदी १ थी

नम्बर शुमार	बेटी का बाप					मिती विवाह की	बेटे का बाप					सगाई की मीती	रुपया लिया सो कितना	कैफ़ियत
	गांव व इलाकह	खांप	नाम	बाप का नाम	बेटी का नाम व उमर जिसकी शादी हुई		गांव व इलाकह	खांप	नाम	बाप का नाम	बेटे का नाम व उमर जिसकी शादी हुई			
														वीद की शादी पहली है या कितनी वींद पाटवी है या भाई भतीजा वगैरह तथा और ही जो रहाल वर्ते सो

तथा साहूकारों कोभी बहुतसी हिदायतें प्रबन्ध बांधनेकी की हैं व खसूशन सगाई बाबत समझाया कि कोई नेगी के रुपये लेवे ही तो उधारे कर लें सो पीछे दीये बाद आड़ा ओसर कर सकें और घटा करे तो सटाई मर्द औरत जीवे जितने आडा ओसर न हो परन्तु बिलफैल तौ असर न हुवा मगर यकीन है कि ऐसे ही होगा॥

इति

शुभम्भूयात्

इति श्री तवारीख़ जेसलमेर के राजपूतों की सम्पूर्णं

शुभम्



श्रीगणेशायनमःॐनमः

तवारीख

अथतीसराभागलिख्यते

जोकिब्रह्माजी के स्वयम्भू मनुजी आदि हिन्दू राजे जो सूर्य्य चन्द्र वंश में हुए जिन के नाम व राम कृष्णादि अवतार व औरही बडे सामर्थवान होकर जो जो काम किये सो भागवतादि पुराणों में हैं उसके पीछे के नाम व हालात शिलशिलेवार जो मिलता तो तिमिरनाशकादि बहुत ग्रन्थ बने हैं जिसमें लिखतेहीज और भाटी वंश के नाम श्री कृष्ण चन्द्र से आज पर्य्यन्त तवारीख में लिखेही हैं बल्कि उदयपुर की तवारीख में नाम थे ज्यों दूसरे रईसों के नाम वगैरह हाल मालूम हो सका सो वह बादशाहान दिल्ली व लाट साहब व रजीडन्ट साहब बहादुर व रजीडन्ट गरवी रजपूताना के नाम व सन जलूस व वाजेकाइस भाग में लिखाजाता है

दफा १

बादशाहानदेहलीके नामऔर लकब व कौम व जलूस व सन विक्रमी

(१) सुल्तानसाहबुद्दीनगोरी सं० १२३९ (२) कुतबुद्दीन ऐबक सं० १२५८ (३) आरामशाह सं० १२६६ (४) समसुद्दीन सं० १२६७ (५) रुकनुद्दीन फीरोजशाह सं० ९३ (६) रजीया बेगम सं० १२९३ (७३) मोजुद्दीन बहरामशाह सं० १२९७ (८) अलाउद्दीनमहमूदशाह सं० १३०० (९) नासरुद्दीन महम्मशाह सं० ३१७ (१०) गयासुद्दीनबलबन सं० २२ (११) मोजुद्दीन कैकबाद सं० ४४ (१२) शमसुद्दीन

(५२) रफीउद्दोला सं॰ ९७७६ (५३) रोशन अख्तर मुहम्मद शाह बादशाह सं॰ १७७६ (५४) अबुलहसन अहमद बादशाह सं॰ १८०५ (५५) अजीजुद्दीन आलमगीर शानी सं॰ १८११ (५६) महीउलसुनत सं॰ १८१६ (५७) अली गोहर शाह आलम बादशाह सं॰ १८१७ (५८) अकबरशाह बादशाह शानी सं॰ १८६३ (५९) सराजुद्दीन अबूजफ़र बहादुर शाह बादशाह गाजी सं॰ १८९४ सं॰ १९१४ मे काला लोगों के गदर से सामिल होने से नामकी बादशाही करके कैद हुवा॥

दफा २

सरकार दौलतमदार अङ्गरेज़ बहादुर

जनाब मलिका मोअज्ज़मा रफीउलदर्जात क्यूं इन विक्टोरिया कैसर बाइ इङ्गलिस्तान का जन्म सन १८१९ ईसवी। सन १८३७ में काका चौथा उईलियम के तख्तनशीन होकर सन १८४० ई॰ के जनवरी में जरमन का प्रीन्स आलबर्ड साहब से शादी करी और राज काज करने की खूबियों में व इकबाल बिलन्द का हाल मशहूर आम है लिखने की हाजत न ताकत खुदा उमर दराज़ करे ६२ किरोड़ मनुष्यों का अन्न्दाता नसीब है और औलाद का नाम व शादी नीचे लिखी हैं मये सन व माह व तारीख॥

विक्टोरिया अडलेडी मेरी लुईस का जन्म ४०।११।२१ प्रसीयोक शाहनशाह फेडारिक उईलियम से शादी ५८।१।२१। (१) प्रेन्स आफ वेलस आलबर्ड इडवर्ड का जन्म ४१।११। ९ डेनमार्क की बेटी अलखजन्दरा से शादी ६३।३।१० प्रेन्सस अलस मोडमेरी ४३।४।२५ हिसीडार मिष्टाड कालुईस से शादी ६२।७।१।(२) प्रेन्स आलिमड अर्नेस्ट आलबर्ड ४४।८।६

सन ६६।५।२४ प्रेन्सस हलेना अगष्टा विक्टोरिया ४६।५।२६ हसष्टन का कंवर क्रिसयन

से शादी । । प्रेन्सस लुईस काएैलाइन एलवर्ट ४८।३।१८ लोर्नेकामारकुइस सेशा दी७१। ३ ।२१ (३) प्रेन्सस अर्थर विलियम पारटीक अलवर्ड ५०।५।१ (४) प्रेन्सस ल्यूपा वलन जरजइनकेन अलवर्ड । । ।

सन् १८७८।१।१कोकेशरहिन्दका खिताब स्वीकार किया सन् १८८७मे सन् जुबलीकी खुशी मानजहांन में हुई सन् ६१मे प्रेन्सस आलवर्डके फौत होने का शोक ४वर्ष रक्खा था॥

इङ्गलिस्तान में वज़ीर आज़मके लक़ब व नाम व तारीख़ चार्ज

(१) भाई कवंट मेलब्रान सन् ३५।४।१८ (२) सररवर्ट पीलू सं. ४१।९।१ (३) लार्ड जोन्नर सल ४६।७।३ (४) अर्ले ओफ़ डर्बी ५२।२।२७ (५) अर्ले ओफ़ अवेर्डन ५२।१२।११ (६) भाई कवंट पामरन ५५।२।८ ओर्ले ओफ डर्बी ५८।२।२६ (८) भाई कवंट पामर न ५९।६।१८ (९) अर्ल रसल ६५।११।६ (१०) अर्ल ओफ डर्बी ६६।७।१६ (११) वन्न जामनडीज राइल ६८।२।२७ (१२) विलीयम वार्ट गलंडष्टम ७४।२।२१ (१३) इज राइल । । (१४ वलीयम वार्टगल लेडष्टुन ८०।४।२८ (१५) मारकुइस ओफ़ सालसबरी ८५।६।२४ (१६) बलीयम वार्टगल ड्रष्टुन ८६।२।६ (१७) मार्कुइस ओफ़ सालसबरी ८६।८।३

गवर्नर जनरल के शरहिन्द व तारीख चार्ज

(१) राइट आनरवल वार्न हष्टंस ७४।१०।२० (२) लार्डकोर्नवालसकेजी ८६।९।१२ (३) सर्जन शोरवाडे ९३।१०।२८ (४) दीमारकुइस ओफ़ अलस्ली ९८।५।१८ (५) लार्ड मंटू सन् १८०७।७।३१ (६) मारकुइस ओफ हष्टंस सन् १८१३।१०।४ (७) लार्ड एमहरष्ट सन् १८२३।८।१ (८) लार्ड ओइलियम वटंग सं. १८२८।७।४ (९) सर चालेस मीर कोफ़ कायम मुकाम सन् १८३५।३।२० (१०) लार्ड अकलंड सन् १८३६।३।४ (११) लार्ड इलनबरा सन् १८४२।२।२८ (१२) लार्ड हरडीज सन् १८४४।७।२३ (१३) दीमारकुइ स ओफडेलहवसी सन् १८४८।१। २ (१४) भाई कोट किना सन् १८५६।२।२८ -

(१५) लार्डइलंग सन् १८६२।३।१२ (१६) सरजान लोर्से सन् १८६४।१।१२ (१७) अर्ले मेयो सन् १८६६।१।१२ (१८) लार्ड नार्थब्रुक सन् १८७२।५।३। (१९) लार्ड लींटन सन् १८७६।४।१२ (२०) मारकुइस ओफ़ रीपन सन् १८८०।६।८ (२१) लार्ड अर्ले ओफ़ डफ़ीन सन् १८८४।१२।१३ (२२) दीराइट आनरेबल आफ़ लेन्स डोन वाइस राय इनु गवर्नर जनरल इंडिया सन् १८८८।१२।१० चार्जलिया सम्वत् १९४५ मृगसिरसुदी ८ चन्द्रवार॥

साहवान अजन्ट गवर्नर जनरल राजपूताना।

(१) जर्नेल डिवीड अकटर लोनी दिल्ली सन् १८ । । । (२) सरचार्लस मिटकाफ २५ । । । (३) मिस्टर सर ऐ काल ब्रुक सन् २८ । । । (४) कर्नेल लाकट अजमेर ३५ - - (५) कर्नेल अलवीस - - (६) कर्नेल जे सदर लेंन ३८ - - (७) मेजर जेथ थोरसबी कायम मुकाम - - (८) कर्नेल जे सदरलेंन - - (९) क. जे. लेवो - - (१०) सरहनरी लारेंस आबू - - (११) जरनेल जार्ज लारेंस - - (१२) क. डबल्यू ऐफ ईडन कायम मुकाम ६० - - (१३) जर्नेल जार्ज लारनस साहब ६१ - - (१४) कर्नेल सी के इलियट साहब ६४ - - (१५) क. डबल्यू एफ ईडन साहब ६४ - - (१६) क. आर एच कीटेंग साहब ६७ - - (१७) क. जेसी ब्रुक ७० - - (१८) सरज्युइस साहब ७३ - - (१९) मिस्टर ऐसी लायल साहब ७४ - - (२०) क. सी के एम वालटर साहब कायम मुकाम ७७ - - (२१) मिस्टर ऐ सी लायल साहब ७८ - - (२२) क. ए आर सी ब्राड फ्रोड साहब - - (२३) क. सी के एम वालटर साहब कायम मुकाम - - (२४) क. ए. आर सी ब्राड फ्रोड साहब - -

(३५) क· सी· के· एम बालटर साहब बहादुर सन ८७·

मातहत यूरोपियन साहब बहादर बहोत से हैं चुनान्चे: अलावा सिकत्तरों के अजमेर में कमिश्नर व उदेपुर व जैपुर जोधपुर में रजीडन्ट व भरतपुर देवली में अजन्ट साहिबों के पास पड़ोसी रियासतों के वकील वास्ते: काम पंचायत वगैरह के रहते हैं तथा बीकानेर अलवर कोटा झालावाड़ में पोलटीकल साहब व नये शहर वगैरह में भी रहते हैं और जैशलमेर सिरोही मलानी का रजीडन्ट साहब जोधपुर व बूंदी टोंक लवा का अजन्ट देवली में व डूंगरपुर बांसवाडा देवलिया प्रतापगढ़ का रजीडन्ट उदेपुर में व करोली धोलपुर का अजन्ट भरतपुर सम्भाल वगैरे करते हैं · और अनाव कलों साहब बहादुर जी पास १४ वकील उदयपुर जैपुर जोधपुर जैशलमेर बीकानेर किशनगढ़ अलवर भरतपुर करोली धोलपुर टोंक बूंदी कोटा झालावाड के रहते हैं · तथा यहां के वकील मुंशी लखपतिराय थे सं· १९०९ में हजूरी रामजी दासजी फेर सं· ९९ में मो· सरदारमलजी गये सं· ९६ में अजमेर का लाला पहोकरनलालजी को नायब रखवा सं· ३ में मो· जीमिम्ब र कौंशिल रहे व सं· ९ में फोत हुये तो लालाजी कायम मुकाम रहे सं· १० में मांभूका का सोढ़ा ठा· ऊमजी गये फेर बेटे जोधसिंह को रखवा था सो सन १३ में आया बाद लाल जी व बेटा लखपतिराय को काम दिया· सं· १९ में व्यास धनसुखदास वकील हुवे· सं· २० का कार में महता नथमलजी दीवान साबिक जरूरी काम के लीये वहां गये सो कलों साहब बहादुर जी के साथ जैसलमेर आये जब सं· २१ के कार्तिक में महता अजीतसिंह जी को साथ ले गये सो सं· २३ के जेठ में पीछे आये दार पोहकरलालजी का बेटा गुलाबरा मजी जो नायब था उन्हों काम देने लगा दइकदार था ही · वकील हुवे सो है ॥

पोलटीकल एजन्ट मारवाड़ जैशलमेर के रजीडन्ट साहब की

राजपूताना

(१) कप्तान चल्डर साहब अजमेर से १९ - - (२) कप्तान जेमसयाड साहब उदयपुर - - (३) लेचलंपिम साहब अ - - (४) एच २ ग्रेथर्ड साहब सन् १८३७ - - (५) मेजर जान लडलु साहब - - (६) कप्तान माच साहब सन् ४४ - - (७) मि-थान्टहैड साहब सं-४५ - - (८) कप्तान मेकमीसन साहब - - (९) मेजर मालकम साहब सं- ४८ - - (१०) कप्तान हाडलप्टन साहब सं-५१ - - (११) क- सिक्तनिपर साहब सं- ५१ - - (१२) कप्तान मीसन साहब सं- ५६ - - (१३) कप्तान मारीसन् साहब सं- ५७ - - (१४) क- ब्रुक साहब - कायम मुकाम सं- ५८ - - (१५) मेजर निकसन् साहब सं- ५९ - - (१६) मेजर डेम्पी साहब सं- ६५ - - (१७) क- ब्रुक साहब का- सं- ६८ - - (१८) मेजर ईम्पी साहब सं- - - (१९) मेजर एवर्ट साहब ७२ - - (२०) मेजर सी- के- एम- वाल टर साहब सं- ७३ - - (२१) मेजर सी- ऐ- वेली साहब सं- ७५ - - (२२) मेजर केडल साहब सं- ७८ - - (२३) कप्तान बार साहब का- - - (२४) क- परसी डवल्यु पौवलट साहब सन् ७९ - - (२५) क- टोडी साहब सं- १८८० - - (२६) क- परसी डवल्यु पौवलट साहब सं- ८२ - - (२७) मेजर सी- ऐ- वेली साहब सं- ८४ - - (२८) क- परसी डवल्यु पौवलट साहब सन् ८५ - (२९) करफोर्ड साहब - - (३०) क- पौवलट साहब बहादुर जी सं- - है

रियासतों के मामलों मुकद्दमात की बाबत वास्ते ८ वकील उदयपुर जयपुर जोधपुर जैसलमेर सिरोही सिरोही पालनपुर बीकानेर किशनगढ़ रहते हैं - ।

यहांके वकील सं॰ ४ में व्यास वद्रीदास व सं॰ १७ में हाफ़ज़ अवदुल हक़ जी वासदे नागोर जो नायव थे सं॰ ३७ में फ़ौत हुए बाद बेटा अब्दुल हसनजी हैं दोनों को पैर में सोना मिला॰

अजन्टीमें

नक़शे व रपोर्ट भेजते हैं

(१) हरदफ़े नक़शा बारस (२) हरपखवाडे निरखे बाज़ार (३) से माही नक़शे पांच॰ १ में फ़ुटकर नमक डाक ठगी डकैती (४) शशमाही महाजन व दिसम्बर के अखीर में॰ । तादाद फ़ौज सवार पैदल व तोपा॰ तादाद मुलाज़िम ईसाई विला यती मकरानी॰ । तनखाह॰ सिलावटे व मज़दूर। तादाद मुजरमान जो इलाके ग़ैर से आये॰ मये हाल उसको सलाह वग़ैरह का॰ । तादाद अफ़यून देशामें पैदा व दिशावर से आया व खर्च हुवा व रुपये महसूल॰ । पैमायश के मिनारे सम्भाल कर रपोर्ट करना। राजपूतों के शादी गमी का हाल (५) सालयाना रपोर्ट अखीर दिसम्बर में॰ । तादाद वाशिंदे हैं व इसमशाल हुवे की॰ । बीज गंदम व रूई कितनी ज़मीन में कितना वूहा॰ कितना पैदा व खर्च व नेकाल कहां को हुवा मये निरखे व आमदनी राज॰ । तन्दुरुस्ती व सेहत आम खलायक॰ । मेउ कालेज अजमेर में कौन गया॰ । हिसाब व कुल पैदा खर्च की॰ । तादाद वारदात साल तमाम व सज़ा मुजरमान॰ । तादाद दीवानी फ़ौजदारी में कितने॰ बकाया साबक व नये रजू व फ़ैसल मये पैदा राज॰ । जो कोई तरक़्क़ी व तनज्जुल इमशाल हुवा हो॰ (६) हाला त पूछने पर॰ करजा॰ घास॰ चारा॰ घोडे॰ बैल खच्चर वग़ैरह वग़ैरह लिखा जाता है (७) रजीडन्टी से नक़शा माहवारी महसूल अफ़ीम का जो पाली में सं॰ २८ से लेते हैं व छःमाही हिसाब खजानची का आता है॥

यूरोपियन साहब बहादुर शहर खास व इलाके जैसलमेर में

तशरीफ लाये :–

(१) जनाब साहब कर्नल लाकट साहब बहादुर जो सं· १८८२ श्री सरकार से हथनी एक लक्ष्मी व सोगात लाये · (२) नचलिया साहब सं· ८९ में बीकानेर महाराज से मुलाकात कराई (३) लडलू साहब बहादुर सं·   में आप फलोधी की सींव निकाली (४) जैकिस साहब सं· ९२ बहाडमेर मुफसिदों को सज़ा दी (५) (६) कलेंजर साहब मेचलादन साहब श्रीजोगंगाजी पधारे जब साथ थे (७) सा· स·   में साकल से जमीन मापते थे (८) जनाब क· प्तान सदरलेन साहब बहादुरजो सं· ४ माघ सुदी १५ को तशरीफ़ लाये दिन १५ मुकाम डाक्टर साहब व सिकत्तर साहब साथ थे (९) कप्तान बीचर साहब सं· ५। ६।७ में आये सिंध से सींव निकाली (१०) कप्तान सिवल सं· ८ में पोकरन से सीव निकाली (११) साहब सं·   में आकर मुल्तान गये वहां काम आये (१२) सिंध से कमिश्नर साहब के भेजे सं· १४ गदर में अजमेर जाना भये फौज बलोचों का विलाक साहब व २ दूसरे साहब आये थे तोफा रिसाला भी साथ था (१३) तरवद साहब साहब अमरकोट से सं· १४ में आये दिन   रहकर ऊंठ खरीद किये (१४) (१५) (१६) कप्तान बुक साहब व डाक्टर साहब व डिकसन साहब सं· १४ फाल्गुण सुदी १५ को आये चैत्र वदी को कूच · (१७) मकाली साहब सिंध से तोपखाना ले जोधपुर गये दो साहब साथ थे सो पीछे आकर सिंध गये (१८) मकाली साहब सवार ५०० सिंध से आये थे केरजी साहब सं· १५ आषाढ सुदी ७ को सवार ४०० साथ

ऽः अरबनारात के भाटीटरों में से पहला अडीटर जो सन १८८६ ई· के अन्त में जैसलमेर में आया उसका नाम मौलवी मुहम्मद मुस्तअली अडीटर राजपूताना गजट अजमेर है इनको मुलाकात श्री महारावल वैरिसालजी साहब से हुई और दर्बार ने २०) रु· १ ऊंट और दुशाला व पाग इनको बख़्शा था

अजमेर से आकर सिंध गये (१९) गुलसमद साहब सं· १५ माह शुदी १२ अमरकोट से आये द रहे फेर पोकरन से पीछे आकर सिंध गये (२०) डिकसन साहब सं· १५ कार्तिक वदी ५ सवार दो सो साथ आये थे (२१) (२२) जेकिसन साहब पाटी र साहब सम्बत् १७ माह वदी ६ वहाडमेर तोफा लाये (२३) नेकिसन साहब ब हादुर अजन्ट जोधपुर सं· १७ माह शुदी १ वहाडमेर से आये सो गिरिराजसर तशरी फ ले गये (२४) सिकन्दर हिमल्टीन साहब सं· १७ कार्तिक में बीकानेर का कांकड देखा सं· १९ में सरहद निकाली (२५) कप्तान इष्टन साहब सं· १९ पोष शुदी ११ को आये· शुदी १४ को कूंच· फेर चैत्र वदी ७ को आये· वदी ६ को कूंच (२६) निकसन सा हब बहादुर जोधपुर से सं· २२ के मृगसिर वदी ३ को आये, वदी ८ को कूंच (२७) जना व कर्नल· इडन साहब बहादुर जी सं· २१ कार्तिक वदी १३ को तशरीफ लाकर श्री जी साहबों को तख्त नशीन कीये· डाक्टर लोग साहब व सिंध विलीयर व रापर्ट साह ब साथ थे (२८) जोधपुर से इस्पी साहब वहादुर सं· २७ कार्तिक वदी १२ को आये वदी को कूंच पैमायश के काम पर (२९) याने साहब सं· ३० माघ सं· ३२ पोष सं ३३ पोष माघ कार्तिक सं· ३५ के कार्तिक में गये (३०) राचर्स साहब सं· ३२ के चैत्र में आये सो जनाब बालटर साहब के दोफ्त लिखने से खातिर ज्यादह कराई (३१) ब्राथ साहब सं· ३१ व सं· ३३ मृगसिर माघ चैत्र व सं· ३५ के कार्तिक शुदी १२ को आये थे (३२) बूलर साहब बुम्बई से आकर सं· ३० के माघ में जैन का शास्त्र देखा व कैई उतराया कि नया मिला एक साहब शैर करने को बिलायत से आया साथ था (३३) जोधपुर से जीडन्ट बालटर साहब वहादुर सं· ३० आसोज शुदी ६ को आये बड़ी धूम से दसहरा हु आ. फेर सं· ३२ के फाल्गुण में श्रीजी साहब की मिजाज पुरसी के वास्ते तशरीफ लाये डाक्टर साहब जी से ग्युमन साहब साथ थे उनको वाज़रात घोड़ा व रुपये दराये (३४)-

विलारफोर्ड साहब सं॰ ३२ फाल्गुण सुदी को पत्थर देखा डूंगर तेमडे व तेजुवां में धातु क्रह कर पत्थर ले गये (३५) कप्तान कानल साहब बहादर व एवज रेजीडन्ट साहब सं॰ ३३ के पोष सुदी में आकर केशर हिन्द का दर्बार किया (३६) पष्टन साहब सं॰ ३३ के वैशाख में फलोधी से नमक का आगर देखने आये (३७) फिरटी साहब सं॰ ३३ के वैशाख वदी १ (३८) जनाब बार साहब बहादुर रेजीडन्ट जोधपुर से सं॰ ३४ के माघ में फलोधी से आये काबुल पर सर्कार की चढाई दे लिये ऊंट खरीद कराये (३९) जनाब कर्नल ब्राडफोर्ड साहब बहादुर जी सं॰ ३५ के कार्तिक वदी ५ को तशरीफ लाये वदी ८ को कूच (४०) जनाब कर्नल पोलट साहब बहादुर रेजीडन्ट जोधपुर से॰ (४१) गिं[illegible]साहब सं॰ ४२ ४३ में देश के डूंगर देखे (४२) डाक्टर एडम साहब सं॰ में आये॥

दफा ३

नकशा रियासतहाय सूबा अजमेर व आबू के राजपूताना में आबादी व आमदनी वगैरह का सन् १८८१ ईस्वी बमूजिब

नम्बर	नाम रियासत	लकब	नाम रईस	[illegible]	[illegible]	मरदुमशुमारी				आमदनी सालाना
						घर	कुल मनुष्य	मरद	औरत	
१	उदयपुर	महाराना	श्रीफतहसिंहजी	१२६७०	५१२२	३२४१६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५१०००००
२	जयपुर	ऐ॰	श्रीरामसिंहजी	१४४६५	५६६४	५२८८६	२५३४३५७	१३५६१३४	११७८२२३	५००००००
३	जोधपुर	ऐ॰	श्रीजसवंतसिंहजी	३७०००	३७८५	३७६७४	१७५०४०३	९६६१३२	७८४२७१	४००००००
४	जैसलमेर	महारावल	श्रीबैरीसालजी	१६४४७	४७५	२६२८७	१०८१४३			
५	बीकानेर	महाराजा	श्रीडूंगरसिंहजी	२२३४०	७३६	१०७२९९	५०९०२१	२६७६४०	२४१३८१	१२५[illegible]

६	अलवर	रावराजा	श्रीमंगलसिंह जी	३०२४	२७४७	७१३४८	६८२६२६	३६०३५४	३२२५४२	२३०००००)
७	भरतपुर	महाराज	श्रीजसवंतसिंह जी	१९७४	१३५९	८८१०४	६४५५४०	३५०४७५	२९५०६५	२८०००००)
८	करोली	महाराज	श्रीअर्जनपालजी	१२०८	८६२	२५९३०	१४८६७०	८०६४५	६८०२५	५१०००००)
९	टोंक	नवाव		२५०९	११९२	७३४८२	३३८०२९	१७६८६९	१६११६०	१२००००००)
१०	बूंदी	महाराव राजा	श्रीरामसिंहजी	२३००	८४२	६०५६१	२५४७०१	१३३१०३	१२१५९८	६००००००)
११	कोटा	महाराव	श्रीशत्रुसालजी	३७८७	१६११	१३०९९८	५१७२७५	२६९९२४	२४७३५१	२९५०००००)
१२	झालावाड	राजराणा	श्रीवखतसिंह जी	२६९४	१४५७	६३००१	३४०४८८	१८३०२८	१५७४४८	१५००००००)
१३	सिरोही	रावराजा	श्री	३०२०	३६६	३०५३२	१४२९०३	७६१३२	६६७७१	
१४	डूंगरपुर	रावलजी	श्रीउदेसिंहजी	१००००	४२१	३९९२६	८६४२९	४४५६८	४१८६१	२०००००)
१५	वांसवाडा	रावलजी		१५००	१०८१	३५८२०	१०४०००	४१११८	३८१८०	२८००००)
१६	प्रतापगढ़	ऐ॰		१४६०	५६८	१८६२२	७९२९८	५९०९८	५३५३५	
१७	किशनगढ़	महाराज		७२४	२१३	२४९२८	११२६३३	५९०९८	५३५३५	२८००००)
१८	धोलपुर	ऐ		१२००	५३८	४८४२९	२५९६५७	१३८३४२	१११३१५	११००००००)
१९	शाहपुरा	राजा		४००	१९८	१०८४९	५१७५०	२७३१७	२४५३५	३५०००)
२०	लवा नरूकागा-टूंकसेभी जुदे हुएहै									
२१	अजमेर सरकारीसूबाकमिश्नर साहबहैं राजानहीं केई ठिकाने राठोड वगैरह इस्तमुरारहैं			२७११	७०३९	६४११८	४६०७२२	२४८८५४	२११८७९	

तथाभीलोंनेखानेस्युमारीनहीकराईसो तावमीननउ०५१०७६इ०३६०५२वी०५८०४५ज०२७० कुल १६६३ [illegible]है॥

इति शुभम्॥ सम्बत् १९३८ माघ शुक्ला १५ सन् १८८२ तारीख ३ फरवरी॥ इति हस्ताक्षर सारस्वत क्षेमकरण ब्राह्मण गौडस्य

* दफ़ा ८

दूसरी रिश्रासतों वरईसों के नाम ज़ैल में लिखे हैं और उनके तेज प्रताप व दातारी वीरता के हालात तवारीखों में हैं इस ग्रंथ वध्याके लिहाज़ से नहीं लिखे

रियासत उदयपुर

श्री आदि नारायण से ६७ पुस्त श्री रामचंद्र अवतार के पुत्र लव के वंस में ७८ विजैनाभ से कौम गहलोत हुई १२२ गंधर्व सेन ने(१) तंबावती व १३५ कनकसेन ने उजेन वसाई- १४२ किरीये जी मयां ने कुआव में राज किया अयोध्या छुटी १६० केसवदत्त मगरे ईडर में रहे १६१ नागदत्त नागदां में राज किया १६४ आसादत्त अड वसाई १६७ मदद्त ईडर के राजा से लड मरे- कु॰ आपा ब्राह्मण के घर में रहे सिध हरीदत्त ने श्री इकलिंगजी के दरसन कराय दफ़ीना वताया जव मोरीयों से चीतोड लेकर राजधानी करी रावल कहाये २०५ समरसी प्रथीराज चहुहान की मदद गये क़नोज के राजा जैचंद से फ़तह पाई बादशाह महम्मद से लड मरे प्रथीराज को पकड़कर बादशाह ग़ज़नी ले गया- २०७ करन सिंह के छोटे पुत्र रायपत ने डूंगरपुर का राज किया वांसमून को नाग काटा - श्री पुज ने जिलाया सो सीसोदिये महाजन हुए - २०८ महीपत मंडोवर के राजा को पकडने से राना कहीजे २१८ रत्न सिंह सिंगलद्वीप में पदमावत से शादी करी- २२० अजीतसिंह ने अडसी के बेटे हमीर से मौजे वावचा को मरवाय गोढवाड में दखल किया हमीर को जो ममामा तो था राज दिया और कु- सजन सिंह ने संनारे का राज पाया- २२४

ॐ सफे २८२ में कातिव ने गलती से किताब ख़ातमा को समाप्ति लिख दिया है पाठक क्षमा करें- म॰ मुराद अली-
صفحہ ۲۸۲ کے آخر میں کاتب نے بیوقوفی سے کتاب ہذا کا اختتام ہونا لکھدیا ہے ناظرین معاف فرماویں محمد مراد علی ہوشیار عفی عنہ

मोकल जीको राठोड़ों ने चुक करना चाहा जब मंडोवरहीलेली थी छोटे कुं· रघुमारा देवलीये रावत हुवा जिनके सूजे मल-ग्रथी सिंह - बाघजी - भानु - हरी सिंह - प्रतापसिंह - गोपाल सिंह - सालमसिंह जी ग्रब हैं - २२५ कुंभाजी १६९० रानियां सिवाय पास वानोंके थी ३६ किले जदीद वफतह किये - करामाती थे ब्राह्मनके कालिबमें ग्रपनी रूह तबदील करके स्वर्ग गए ब्राह्मनने गदी बैठ कर यह हाल कह दिया जब कुं· उदाजी ने उसको मारडाला जिससे - छोटे कुं· रायमल जी गदीन शीन हुए - २२७ सांगाजी किला रंगत भोरबनाया - व ढुंढाड़ मे सांगानेर बसाया मंदसोर तक ग्रमलदारी हुई - कुं· भोजराज तो फ़ौत हुए - रत्न सिंह राज बैठे - ग्रोर विक्रमावतजी को खवासबन भीर ने चूक किया ग्रोर ग्रापराजबैठा जिसको निकाल कर २३१ उदयसिंह जी सं १६०८ में राज बिराजे - सं· १६२२ में चीतोड़ में बादशाह का कबजा - हुग्रा जब देवडे राजपूतों से गिरदी व कई गांव जहेज़ मे मिले थे यहां रहे - उदयपुर शहर बसाया व उदयसागर तालाब बनाया - सांगा राठोड़ से सलूंबर लेकर राव सिंगजी सावे वाले को दी वदले कनवारिया दिया - सं· २४ मे चीतोड़ ही कबज़े हुई - २३२ प्रतापसिंह जी सं· १६२८ पांचवां कु· बाघजी जहाज़पुर गये - २३३ ग्रमरसिंह सं· १६५२ बादशाह को खिरनी ४ हज़ार देनी कर थाने - थाने उठाये - फेर नहीं दी - तीजा कुं· सूजे मलजी सायपुरे गए - जिनके २३४ कर्न सिंह जी सं १६७६ शाहज़ादे खुर्रम को तख्त बैठाया जब इलाका मालवा मिलाथा - २३५ जगतसिंह जी सं· १६८७ - २३६ रायसिंह जी ब्रजसे पधारे सो हनोज़ बराजे हैं - २३७ जैसिंह जी सं· ३७ इलाके से बादशाही थाने उठाये २३८ ग्रमरसिंह जी १७५५ - २३९ संगरामसिंह जी सं· १७७६ - २४०

जगत सिंहजी सं· १७९० भानेज माधो सिंहजी को जैपुर गद्दी नशीन किया- इस खर्च में १५ लाख का इलाका भानपुर रामपुर मलार राव को दिया २४१ प्रताप सिंहजी सं· १८०७ - २४२ राज सिंहजी सं· १८१० - २४३ अडसी जी को सं· १८१७ राज बिठाया ज़िला नीमच मांजा घोसीधीये को दिया - २४४ हमीरसिंहजी सं· १८२४ - २४५ भीमसिंहजी सं· ३३ *नूर्शा अखतर साहब ने छावनी नीमच आबाद करी यट साहब ने उदयपुर में कोठी बनाई - २४६ ज्वान सिंहजी सं· ८४ - २४७ सरदार सिंहजी सं· ९५ छोटा भाई सेरसिंह को - सघोरदा - २४ सरूपसिंहजी सं· ९८ रियासत सरसब्ज़ करी - २४९ शंभुसिंह जी सं· १९१८ अजंटी कायम हुई - २५० श्री सज्जन सिंहजी सं· १९३० आसोज सज्जनगढ़ बनाया - २५१ श्री फ़तह सिंहजी सं १९४१ सावण सुद ४ चिरंजीव

रियासत डूंगरपुर

जो उदयपुर महाराना के खान्दान से प्रारंभ है ॥

ख्याल में लिखा है कि अनादि पुरुष ॐ से १६७ पीडी रावल संवतसिंह के वडे कुं· सीहड़· ने पिता की आज्ञानुसार छोटे भाई भूहरा को गढ चीतोड़· का राज देकर आप उत्तर दिशा में नदी सांम पास यवनों से लड़· कर धरती ली- और राजधानी करी - ॥

१ रावल सीहड़ ॥ २ दूदा ॥ ३ वीरसिंह ने सं १३५५ में डूंगरा भील को जो १० सहस भीलों का सरदार लुटेरा था मारकर उसे पुर में शहर बसाय डूंगरपुर कही - ॥ ४ भरतुंड ॥ ५ डूंगरसी ॥ ६ करमसी ॥ ७ कानड़देव ॥ ८ पाताजी ॥ ९ गेपाने जी गेब सागर तालाव बनाया ॥ १० सोमदासजी

* असिल नाम इनका अखतर अलीथा यह इंग्रेजी फौज के जनरल थे शाह आलम बादशाह ने इनको नसीरुद्दौला का खिताब दिया था छावनी नसीराबाद इन्ही साहिब ने अपने ही नाम से बसाई थी - ॥ म· मुरव्वज़ली

११ गांगाजी से गहलोत हुए ॥ १२ उदैसिंह ॥ १३ प्रथीराज ॥ १४ आसकर्न ॥ १५ स्हंसमल ॥ १६ करमसी ॥ १७ पूंजोजी ॥ १८ गिधरजी १९ जसवन्तसिंह जी २० खुमाणसिंह ॥ २१ रामसिंह जी २२ सेवासिंह जी ॥ २३ बैरीसाल जी ॥ २४ फतहमल जी ॥ २५ जसवन्तसिंह जी हरीभगत हुए बहुत धर्म पुन्य कर के पुष्कर जी में देह त्यागी ॥ २६ रावल जी श्री उदैसिंह जी चिरंजीव कुं० जी श्री खुमाणसिंह जी भंवर जी श्री विजय-सिंह जी ॥

रियासत जयपुर

श्री रामचन्द्र जी पूरण अवतार के पुत्र कुस के वंस मे सुमित्र के बेटे कुर्म से कूर्म वपोते कलस्व खांध के कछवाहे कहाते मगधदेश के नाग वंसीयों से अयोध्या छीन ली जवसे अन्तरवेद में मौजे मुगट पेर नरवर में रहे - और ग्वालिअर भी नावे किया सो ईसरी सिंह ने अपने भानेज तुंवर जेसा को दिया पीछे नंद्रावडी मे रहे इनके कुं० १ सोड देव ने मोरियांव वडगूजरां सेन्द्रोसा लेकर सं० १०२६ में राजधानी करी वादमीना का मुल्क माची धोहू गरोट - भोटा वाडा लेकर किला रामगढ बनाया ॥ २ दुलहराय धोहू में ३ का-कलदे आमेर में राज बैठा - ४ हणुदेव ५ जैनड ६ प्रद्युमन ७ मलेसी वो ३२ पुत्र हुए ८ बाजल राज बेठा कूकी से व आन जाति महाजन नाई आदतगोर हुए ९ राजदेव से पीछे तडा हुई - छोटे कुंवर भोजराज के - ४ सारव कछवाहे हैं १० केलण - केलणगढ बनाया ११ कुंतल कं० हमीर के हमीरदे गांव दूंगोराव जी १२ जूणसी कुं० कूंभे के कुंभाणी १३ उदैकर्ण

कुं॰ नरसिंह व बरसिंह के नरू के गांव लदाराणा उनेहारा लावा वगैरह हैं - और
खाला के सेखावत मौज़े मनोहरपुर व सीकर खेतड़ी चौकड़ी वगैरह में हैं - व
सोब्रह्म के सोब्रह्म पोते व पातल के पातल पोते वपीथा के पीथापोते (१४) रासी
(१५) वनभीर कुं॰ मंगल के मंगल पोते वबरा के बरा पोते वनरा के वन भीर पोते
(१६) उधरण (१७) चन्द्रसेन कुं॰ कूमा के कूभावत (१८) प्रथीराज के १८
पुत्र में पूर्णमल व भीम व भीम का बेटा रत्नसिंह व आसकर्न ने तो थोड़ा
थोड़ा राज किया और १२ की १२ कोटड़ी हुईं जिस में कई लुप्त हुईं ज्योंहीं
दूसरे मिलाये गये ॥ पिचान के पिच्यानोत ॥ सुलतान के सुलतानोत ॥
गोपाल के नाथावत गांम चांमू ठाकुर सरमोद रावल जी मुसाहिबी के हक़ -
दार हैं ॥ जगमाल के खंगारोत गाम डिग्गी ॥ बलभद्र के बलभद्रोत -
गां॰ अचरोड़ ॥ रामसिंह के रामसिंगोत ॥ प्रताप के परतापोत ॥ साईं
दास के साईंदासोत ॥ चतुर भुज के चतुर भुजोत गां॰ बगरू ॥ कलपां -
रा के कलपांरा ोत ॥ पूर्णमल के पूर्णमलोत गां॰ नींदड़ा ॥ सांगा
(१९) भारमल कुं॰ भगवानदास के बांकावत ॥ सुन्दर दास के सुन्दर -
दासोत ॥ (२०) भगवती दास कुं॰ मांधोसिंह के मधांणी व सूरसिंह के
सूरसिंहोत ॥ वनमाली दास के वनमाली दासोत ॥ (२१) मानसिंह जी से
राजावत हुये ॥ कुं॰ दुर्जन सिंह के दुर्जन सिंहोत गां॰ धूला भावसिंह राज
किया मिरज़ा राजा का खिताब पाया बिम्भा गांव बसाया ॥ सगतसिंह के सगत
सिंहोत ॥ कल्यांनसिंह के कल्यानसिंहोत ॥ हिंमत सिंह के राजावत ॥ (२२)
जगतसिंह जी ॥ कुं॰ जूझारसिंह के पुत्र संगराम का म्हलाय ॥ प्रथीसिंह
के खिरणी व ईशरदे है ॥ अनोपसिंह के राजावत ॥ तानार सिंह ने अय

ज़ादा का खिताब व नागोरका परगना पाया ॥(२३) महासिंह ॥ (२४) मिरज़ा राजा जैसिंहजी ॥ (२५) रामसिंहजी बादशाह ने आमेर खालसे कर पीछी बख्शी ॥ (२६) किशनसिंहजी ॥ (२७) बिशनसिंहजी - हिन्डोन का परगना पाया था ॥ (२८) सवाई जैसिंहजी सं० १७५६ बड़े ही प्रतापी हुये सं० ८४ में शहर जैपुर बसाय राजधानी करी सवाई लधारमज राजेंद्र का खिताब पाया बादशाह ने आमेर खालसे कर पीछी दी बाद ईशरसिंहजी राज बैठे थे - बूंदी छीन लीवी थी ॥ (२९) सवाई माधोसिंहजी - किला रणत भोर फ़तह किया - अ० उव व रामपुर दखनीयो को दिया शहर माधोपुर बसवाई माधोपुर बसाया वेटा प्रथीसिंह ने भी १० वर्ष राज किया - (३०) सवाई प्रतापसिंहजी सं० में हुये इनके अहद में मांचोड़ी रावनरू का प्रतापसिंह जो ६ हज़ार का जागीरदार था अकल व बीरता से जैपुर - भरतपुर - मेवात वगैरह का मुल्क दबाकर अलवर में राजधानी करी - बखतावरसिंहजी को गोद लिया जिनके बनैसिंहजी उनकी शिवदानसिंहजी उनका मंगलसिंहजी - अबरावराजा है* ॥ (३१) सवाई जगतसिंहजी सं० १८६० इनके बाद नरवर से मानसिंहजी को लाकर राज बैठाया था परंतु कुं० जैसिंहजी पैदा हुये तब उठादिया - (३२) सवाई जैसिंहजी सं० १८७६ ॥ (३३) सवाई रामसिंहजी सं० १८९१ राज बिराजे अकल व होशियारी से राज बढ़ाया व सरदारों के ठिकाने सख्त किये खालसा ३२ लाख का था सो ८५ का हुआ सरकार अंगरेजी की मेहरबानी से कलकत्ता कोंनसिल में मेम्बर हुये कोर का समका प्र० पाया और नेकनिश्ती या ने खास व आम पर नेक नज़र वगैरह २ खूबियां अज़हद थी एक काम बहुत ही बुरा किया कि श्री वल्लभकुल के मन्दर उठादिये - उत्राधिकारी न होने से ईशर दे के

* २१ मई स० १८९२ ई० को महाराजा मंगलसिंहजी मौसूफ नैनीताल के पहाड पर जहां आब व हवा बदलने गये थे स्वर्गवास हुये लाश २७ को अल्वर में लाई जाकर दाग दिया गया ३ जून को इनके पुत्र जैयसिंहजी १० वर्षकी अवस्था में गद्दीनशीन हुये - म० मसहूरली

ठा० कायमसिंह को कि जिसको ईशरदे नो क्या इलाके सेही खार्ज किया था दत्तक लेकर माधोसिंहजी नाम रखा ॥ (३४) सवाई माधोसिंहजी सं० १९३७ राज बैठे चरंजीव ॥

नकशा रियासत उदयपुर के १६ सरायतों का

नम्बर	खांप	लकब व नाम जागीरदार		ठिकाना	आमदनी	कैफ़ियत
१	झाला	राजराणा	राजसिंहजी	सादडी		
२	चौहान	रावजी	* बखतसिंहजी	बेदले		
३	ऐ०	ऐ०	केसरीसिंहजी	कोठारिया		
४	सीसोदिया	रावतजी	जोधसिंहजी	सलूबर		
६	पोवार	रावजी	गोवर्द्धनदासजी	बीजोलियां		एवज़ में किस्नावत रावजी ऊर्जनसिंहजी गांव आमेट वाले हैं
७	चूंडा०	रावतजी	किस्नसिंहजी	देवगढ		
८	ऐ०	ऐ०	मेघसिंहजी	बेगु		
९	झाला	राणा	* फतहसिंहजी	देलवाडे		
१०	चूंडा	रावतजी	शिवनाथसिंहजी	आमेट		
१०	ऐ०	ऐ०	अमरसिंहजी	मीजारी		
११	झाला	राणा	मानसिंहजी	गूगादा		
१२	सारंगदे	रावतजी	न्हारसिंहजी	कानोड		
१३	सगनावत	महाराज	मदनसिंहजी	भींडर		
१४	मेडतीया	ठाकुर	केसरीसिंहजी*	बदनोर		
१५	सगना	रावतजी	मानसिंहजी	बान्सी		
१५	किस्नावत	ऐ०	मनावसिंहजी	भैंसरोड		
१६	चहांन	रावजी	रत्नसिंहजी	पारसोली		
१६	किस्नावत	रावतजी	जैतसिंहजी	कुंडावर		
५	मेडतीया - घाणेरा राव थे सो अब गोढवाड़ साथ मारवाड़ में गया					

* बखतसिंहजी का जून सं० १९०२ ई० के अन्त में देहान्त होगया इस को जगह इनके पुत्र करणसिंहजी गादी पर बैठे हैं मु० मुराद अली

* इसका भी देहान्त होगया अब इनके पाट गादी पर सादूलसिंहजी गादी पर बैठे हैं ॥ मुराद अली

* फतहसिंहजी का देहान्त होगया जन के पुत्र राजसिंहजी का तिलक सिंहजी मालिक हैं ॥ मुहम्मद मुराद अली

रियासत जोधपुर

कमधज या कमंध याने राठोडों की तवारीख सिलसिलेवार नहीं मिली ग्राहर कनोज में बडा राज था ॥ १ राजा जैचन्द के बाद २ सेत मारवाड में आये और कई पुश्तों बाद गोयलों से मुल्क लेकर खेड में रहे ३ सीहा ४ आस्थान ५ धुंहड ६ रायपाल ७ कानरदे ८ जालण ९ तीडा १० सलखा जीके बडे कुं० मलीनाथ के लगभग सं० १४ ... जी ने बकूंपाव वगैरह को राज जैसलमेर से व्हाडमेर कोटडा सिवाना भर परगने मिले और जैतमाल अहमदाबाद जाते अस्थान ने सुथारों को गोठ जिमाय चुक करके गुडा राडधरा भर ५२ गांवों के लेकर राजा कहीजे तथा ११ वीरमजी ने सलखां वगैरह जो हूंनों को पनाह दी फेर उनके मुल्क में जा रहे और वहां ही मारे गये- बाद कुं० गोगादे ने सलखां वगैरे को मारे सलखां के बेटे ने गोगादे को स्वर्ग भेजा ॥ १२ चूंडाजी को ईदों ने मंडोवर दी ॥ कुं० चवदे राव भए ॥ १३ रिडमलजी ... पुर में काम आये मंडोवर ही छुटी थी सो १४ जोधाजी ने पीछी ली- फेर सं० १५१५ में गढ बणाकर जोधपुर आबाद कर राजधानी करी फेर तो राजनीत याने क्षत्री धर्म मूजब ज़मीन के ग्राहक हुए चुनाचे हरपीडी में हर तरफ़ पडोसियों वगैरह का बहुतसा मुल्क दबाते रहे बल्के बीकानेर किशनगढ रतलाम आमझरा वगैरह कई जगह जुदा२ राज बांधा १५ सूजाजी १६ गांगाजी १७ मालदेजी १८ उदैसिंहजी १९ सूरसिंहजी २० गजसिंहजी २१ जसवंतसिंहजी २२ अजीतसिंहजी कई बर्ष पहाडों में रहे गढ में बादशाही आराम रहा २४ अभैसिंहजी को गढ खिला- कुं० रामसिंहजी को निकाल कर

४	करनोत १८	३७॥	०	६५८६३)	०	३७॥	६५८६२
५	मेडतीया २२१	५८६॥।=	६	१४१२७७॥)	१६५००	५८५॥।=	१५७७७७॥
६	जोधा १४५	२३२॥	८॥	४२७५७॥)	३१०००)	२३२	४५८५७॥
७	ऊदावत ७०	१२७	२७॥	२८३४०)	६६६८०)	१५४॥)	३५२०२०)
८	कर्मसोत ३४	४४	१८	२७०००)	१३४७५)	६२	४०४७५)
९	नरावत ७	६॥	०	१६५००)	०	६॥	१६५००
१०	महेचा ९	१३॥	५॥	१८६६२)	३०३६६)	१८॥	२१६६८)
११	धवेचा २५	३४॥।	॥	३०६५६)	४००)	३४॥।ा	३१०५६)
१२	जैतावत ३	२॥	०	२७५०)	०	२॥	२७५०)
१३	पातावत ३७	४२	०	६३५८०)	०	४२	६३५८०)
१४	रूपावत ४	२॥	०	३०००)	०	२॥	३०००)

[illegible]	बांदावन २	१।=	०	१०५०)	०	१।=	१०५०)
[illegible]	[illegible] ६	२॥	३=॥	४२५०)	२४३३	५॥=॥	[illegible]
[illegible]	[illegible]लान १	३	०	६२५०)	०	१	६२५०)
[illegible]	[illegible] ६	२॥	०	६००)	०	२॥	६००)
[illegible]	[illegible]	०	०	[illegible]	०	०	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	॥	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	४॥	०	[illegible]	०	४॥	[illegible]
[illegible]	[illegible]	॥	०	[illegible]	०	॥	[illegible]
[illegible]	[illegible] १	१	०	२००)	०	१	२००)
[illegible]	[illegible]	०	[illegible]	०	[illegible]	[illegible]	[illegible]

भाई २५ वखतसिंहजी राज बैठे - २६ विजैसिंहजी के पोते- २७ भीमसिंहजी सं॰ १८४८ मेंराजबिराजे- फेर गुमानसिंहजीके कुं॰ श्रीमानसिंहजी सं॰ ६०मेंराजाहुए जब फेर मानसिंहजी स्हाको बेजङ्से ठा॰ सगतीदानजीने बडा स्हेब का मुनशा लाकर राज बेगया- बाद अैम नगर से २८ श्री तखतसिंहजी साहब को सं॰ ९८ में तखतनशीन किए- सरकार अंगरेजी का अजन्ट रहने से वा आराम राज किया सितारे हिन्द का तुगमा पाया-

२० श्रीजसवंतसिंहजी सं॰ १९३० फागुणबुदि १ चरंजीव- नेकनियती- कीबरकत व बलन्द अकबाल से रजीडन्ट तो करनल पावलट साहब बहादुर- और कारमुखतार छोटा भाई महाराज सर प्रतापसिंहजी मिल सिरिश्ता- सततर सक्क होगई चुनाचे खारचीवे से जोधपुर-बालोतरा तक रेलहोने वनमक काटे का सरकार अंगरेजी को देने व दीवानी फोजदारी व सायरात वगेरः २ का नवाबन्दी बस्त करने से आमदनी १८ लाख थी सो सह चन्दहुई और ऐसी ही कारखाई रही तो इस से भी दोचन्द होजावेगी तथा सरदारों से हर पीढी में बपेडा रहेथा सो नामही नहीं रहा- जसवन्तपुरा गाव व जसवंतगढ बनाया-

जागीरदारों के गावों की तादाद व आमदनी वगैरेका नकशा सं॰ १९४६ के फैसला मूजब जुदा लिखाहै-॥

जीसी एस आई का तुगमा मिला श्री प्रतापसिंहजी साहब इंगलस्तान जाकर कैमपोस्ती हासिलकरी* के-सी-एस-आई का खिताब पाया- सं॰ ४६ में महाराजकुमार श्री सरदारसिंहजी जन्में-

* द्वजुरकेसरएहीन्दकी

आठ मिसलों के खांपां व गांव दोहा व सोठा में लिखे बाकी १६।३२ गांवे बहुत से हैं -

दोहा - चांपा कूंपा मेड़त्या ऊदावत कनोत - । आठ मिसल जोधाअस जैतावत आसोत - ॥ सोठा

आउवा व आसोप रियां रायपुर कारणोरां । आठु मिसल अरूप खिवा लगड़ा खींवसर - ॥

बीकानेरके नीमाजरासे आहूजुरा

परगनायानेहकूमतोंकेनाम

(१) जोधपुर (२) नागोर (३) डीडवाणां (४) मरोट (५) परबतसर (६) मेड़ता (७) जैतारण (८) सोजत (९) बीलाड़ा (१०) पाली (११) बाली (१२) जालोर (१३) भीनमाल (१४) सांचोर (१५) शेखाला (१६) पचपद्रा (१७) शिव (१८) सेरगढ़ (१९) फलोधी (२०) सांभर - (२१) नवा - (२२) जसवन्तपुरा - और मालहतधाने बहुत हैं ॥

रियासतमारवाड़मेंजागीरदारोंकेरेखवखारेकेगावोंवआमदनीकी तादादसं०१८९६ के फैसले मूजब ॥

नं०	नामखांप	तादाद गांव		तादादपैदा		कुल	
		रेख	बखारे	रेख	बखारे	गांव	पैदा
१	चांपावत	२३५ ×	७५॥।≡	३२०१५)।	१७२१२५॥)	३१०॥।≡	४९२२६८)।
२	कूंपावत	७७ ×	१३	१४५८३७	५४९२०)	९०	१९०७५७)
३	जैतावत	२२ ×	३॥	३९६७०)	५२२५)	२५॥	४५०९५)

२६	सीधल १	३८	०	३११८०२)	०	३८।	३१८७
२७	देवराजोत २	२०	०	२०४७५)	०	२०	२०४७५)
२८	जूझारणीया २	१	०	४०००)	०	१	४०००)
२९	चाडदे	११	०	२६००)	०	११	२६००)
	जोड ८५८	ठिकानेरा जोड.	८०५	ठिकानेंदसी जात.	२९३	जोड दोनों की रेख	३५२३९१९ ।)
१	भाटी सरदार ८४	३२४।।।	३५।।	१८२९)	८०४०)	१९०।	१७३३०८)
२	चुहान ७४	१५	३	१८७६३५)	६६५०	१४९	१७४२८५)
३	सेखावत २६	२०।	१	४७०१२५।।)	८७५)	२२।)	४७८८७।।)
४	राँणावत २	४८	०	४१८७५)	०	४८	४१८७५)
५	देवडा १०	३०=।।	०	२८२९२)	०	३०=।।	२८२९२)
६	सोलखी ३	२४	०	३३४५०)	०	२८	३३४५०)

७	सोनगरा ४	१॥=॥	०	४७५०)	०	१॥=॥	४७५०)
८	पीपडा १	१	०	५००)	०	१	५००)
९	सांखला ३	२॥	०	३९००)	०	२॥	३९००)
१०	बोडा २	११	०	११०२५)	०	११	११०२५)
११	काबा ३	२७	०	२००००)	०	२७	२००००)
१२	ऊदा ३	५९	०	१०३५०)	०	५९	१०३५०)
१३	कुंभावत १	२॥	०	२०००)	०	२॥	२०००)
१४	मांगडीय २	१३	०	२३००)	०	१३	२३००)
१५	सोढा ५	५	०	५०००)	०	५	५०००)
१६	बालोचा १	१	०	१०००)	०	१	१०००)
१७	मुर्या ५	५	०	३७५०)	०	५	३७५०)

१८	पुवार १	॥	०	१०००)	०	॥	१०००)
१९	खालोत १२	२२	०	२२६२५)	०	२२	२२६२५)
२०	गैलोत २	२	०	२४००)	०	२	२४००)
२१	भायल २१	२३॥	६	२१७०३)	२२००)	२५॥)	२३९०३)
२२	डोडाया १	१-॥	०	१६६६७)	०	१-॥	१६६६७)
२३	आसायच १	१	०	७५०)	०	१	७५०)
२४	तुवर ४	७	०	१५५००)	०	७	१५५००)
२५	पूरखीया ३	३	०	२०००)	०	३	२०००)

मजमूई हालत रकवा रियासत ३५६७२ मील मुरब्बा- आबादी १७४६८०२ आमदनी ७२ लाख- खिराज सरकार अंग्रेजी ९८ हजार- फौजखर्च १ लाख १५ हजार रुपया है तादाद फौज ६ हजार- शहनशाही खिदमात की फौज के अलावह है-

अख्त्यार गोद लेने का हासिल है सलामी १९ तोपें और सरकार से सितारःहिन्द दरजे अव्वल का खिताब मिला है खास दस्तखत स्वस्तिस्त्री जोधपुर सुभस्थान सुभस्त्री महाराजाधिराज राजेश्वर श्री महाराजा जसवन्तसिंहजी है- श्री महाराजकुंवार सरदारसिंहजी साहिब तिथी माघ सुदी १ सम्वत १९३६ को जन्मे थे चिरंजीव॥

इनगाओं की पैदा बहुत बढ़ती है तथा इसके सिवाय बिलारेखके बहुत गांवहैं ॥

जोधपुरके अव्वल और दूसरे दरजःके सरदारोंका नकशा

नम्बर	नाम ठिकाना	खाप	तादाद गांव	सालाना आमदनी	कैफियत
१	पोहकरन	चामपावत राठोड	१००	१०००००)	यहठिकानाबहुतजबरदस्त है मयोकालिजमेंतालीमपाई है
२	आसोप	कुंपावत	५	३००००)	राठोड
३	खेरवह	जोधा	१०	३००००)	औजन
४	रास	उदावत	१७	५००००)	औजन
५	नीमबाज	उदावत	१०	५००००)	औजन
६	आहवा	चांमपावत	१६	६०००)	यहजागीरपहिलेजियादःथी मयोकालिजमेंतालीमपाई है

७	रीयान	मेड़तिया	८	३६१००)	राठोर
८	भादराजून	जोधा	२७	३२०००)	ऐजन
९	रायपुर ※	उदावत	३८	५००००)	ऐजन
१०	कुचामन ※	मेड़तिया	१६	४८०००)	ऐजन
११	घानेराव	ऐजन	४२	४५०००)	सौ वर्ष पहिले मेवाड़ के मातहत था -
१२	आहोर	चामपावत	१०	२३०००)	राठोड़
१३	रासपद	ऐजन	१३	२६०००)	ऐजन
१४	रूपट	ऐजन	११	१७०००)	ऐजन
१५	कन्टालियह	कूंपावत	१२	१४०००)	ऐजन
१६	लांबिया	उदावत	७	१९०००)	ऐजन
१७	गुलर	मेड़तिया	५	२३५००)	ऐजन
१८	भावरी	ऐजन	५	१९५००)	ऐजन
१९	बूकसू	ऐजन	२५	३८०००)	ऐजन
२०	मेंढा	ऐजन	२९	३७०००)	ऐजन
२१	वलोंदा	ऐजन	६	२०५००)	ऐजन

※ अब इस को वर्त्मान ठाकुर हरीसिंहजी के नाम से हरीपुर कहते हैं और रेल का स्टेशन भी हरीपुर लिखा जाता है - ※ इस ठिकाने को अपने यहां टकसाल रखना और सिक्का चलाने का अधिकार है - मः मुराद अली

२३	खेमसर	करमसोत	३२	१३०००)	राठोड़
२३	रास्नी	चोहवान	२२	१२०००)	गैरकोमजागीरदार
२४	कानानद	करनोत	३	१२०००)	राठोड़
२५	मनाना	मेड़तिया	७	१७०००)	ऐजन
२६	पालासनी	उदावत	२	१४०००)	ऐजन
२७	खेनवाड़ा	चांपावत	१७	१६५००)	ऐजन
२८	बाकर	ऐजन	७	२७५००)	ऐजन
२९	चंदावल	कूंपावत	८	२२०००)	ऐजन
३०	आगेवह	उदावत	३	२१०००)	ऐजन
३१	आलन्यावास	मेड़तिया	५	१५०००)	ऐजन
३२	चानोद	ऐजन	२४	३५०००)	ऐजन
३३	जावला	ऐजन	८	३८०००)	ऐजन
३४	बडू	मेड़तिया	१२	३३०००)	ऐजन
३५	मीठड़ी	ऐजन	१५	२८०००)	ऐजन
३६	लाडनूं	जोधा	७	२००००)	ऐजन

३७	दगडी *	जैनावत	७	१६०००)	अैजन
३८	कल्यानपुर	चोहान	७	१००००)	गैरकौम
३९	खेजडला	भाटी	८।	१५०००)	चंद्रवंसी गैरकौम
४०	भालामंड	राणावत	८	१५०००)	गैरकौम
४१	डुडियाना	मेडतिया	९	३३०००)	राठोड़

सिन्धी साहिबजादह अब्बासअलीखां की इज्जत तमाम सरदारो से खासतोर पर जियादह है - यह दोनो दरजे के सरदार पांचसौ रुपया सालाना आमदनी पर एक सवार के हिसाब से नोकरी और हाजरी देते है - ॥

राज्य बीकानेर

यह राज्य राजपूताने के उत्तर में फैला हुआ है जोधपुर के सिवाय दूसरी समस्त रियास्तों से लम्बाई व चौडाई में जियादह है - इसके उत्तर में हरियाना - भटयाना जिले हिसार व सिरसा पश्चिम में भावलपुर - जैसलमेर - दक्षण में जोधपुर का राज्य - और पूरब में शेखावाटी है लम्बाई पूरब से पश्चिम को २०० मील चौडाई उत्तर से दक्षण को १६० मील रकबा २२६७६ मील मुरब्बा आबादी ६ लाख आदमियों की है आमदनी खालसा आठ लाख से अधिक है और फौज सवार व पैदल ७ हजार के लगभग है - इस मुल्क में तीन भाग जाट और चौथा हिस्सा राजपूत राठोड - सारस्वत ब्राम्हण जोइया - दाहिया जात के राजपूत (जो मुसलमान हो गये) और चारन - भाट माली आदि बस्ते हैं इनमें एक हिस्सा थोरी - धानक वगैरह जात के लोग भी हैं जिनका पेशा चोरी लूट का है - यहां का ऊंट उमदा होता है

* यहां का ठाकुर श्री दरबार जोधपुर को राजतिलक देता है जबलों तिलक न दे पगडी जब्त रहती है - मः मुरादअली -

जिसको रेवे की नाय कहना चाहिये - और भेड बकरी भी देहात के रहने वाले बहुत पालते हैं जिनके बालो से उमदा कंबल बनाये जाते हैं बीकानेर का जियादतर मुल्क रेगिस्तान है लिहाजा यहां फकत एक फसिल बाजरा मोठ की पैदा होती है तरबूज यहां का जिसको मतीरा कहते हैं बहुत मीठा होता है खास बीकानेर की मिसरी मशहूर है कुये डोघे होते हैं और अक्सर खारा पानी निकलता है इसी कारण बहुधा लोगों का गुजर तालाबो के पानी से होता है नदी या पहाड इस राज्य में कोई न्हीं - ॥

स्वारीख

बीकानेर वाले जिनकी रियासत आज से चार सौ वर्ष पहिले स्थापन हुई थी जोधपुर के राठोडो की खांप है राव **जोधाजी** ने जब सम्मत १५१५ में पुरानी राजधानी मंडोर को छोड कर जोधपुर बसाया तो उस का बेटा **बीका** नामी अपने काका **कांधलजी** की सहायता से तीन सौ राठोडों को लेकर उत्तर दिशा के जंगली मुल्क को बिजय करता हुआ चलागया और वहां के सांखला राजपूतों और **पुंगल** के भाटियों से लड कर **कोरमदे सर** नामी नगर पर कबजा किया और उस मुल्क के जाटों को जो आपस के झगडों से बरबाद हो रहे थे अपना सहायक बना कर जोयों और भाटियों का जोर घटाया और अच्छी तरह से दखल कर लिया तो मंडोर छोडने से ३० बरस पीछे वैसाख बदी १५ सं० १५४५ में बीका ने अपने नाम पर राज धानी बीकानेर को बसाया और उसके चचा कांधल ने उत्तर देश को अपने कबजे में कर लिया जहां आजलों कांधलोत अपनी राजधानी **बहादुरा** नग्र के इधर उधर बस्ते हैं - राव बीकाजी १५०५ में उतपन्न हुये सं० १५४५ में पाट बिराजे और सं० १५५१ में बीकानेर बसाने से ६ बरस पीछे ५६ वर्ष की अवस्था में बैकुंठ बासी हुये यहीं से बीकाने-

राज्य की बुन्याद पडी - ॥

वीकाजी के १३ पुत्र थे जिनमें से बीकाजी के देव लोप होने पर वडा बेटा राव नाराजी गादी पर बैठा नाराजी सं० १५२६ में पैदा हुये - और सं० १५५१ में गादी विराजे और थोडे दिन राज करके सं० १५५१ में देव लोप होगये - ॥

रावलुनकरन सं० १५२७ मे उतपन्न हुये १५५१ मे पाट विराजे और १५८३ में स्वर्गयाश हुये - ॥

रावजैतसी १५४६ में जन्मे १५८३ में गादी विराजे और सं० १५९८ में देव लोप हुये इनके वक्त में जोधपुर के राव माल देव ने वीकानेर इन से छीन ली थी परन्तु इनके बेटे राव कल्यानमल को **अकबरबादशाह** ने माल देव से वापिस दिलवादी - ॥

रावकल्यानमल सं० १५७५ में जनमे और १६०१ में पाट विराजे और संम्मत १५९८ में देव लोप हुये यह नागौर में अकबर बादशाह के हजूर में हाजिर हुये और अपने भाई कान सिंह की बेटी अकबर को व्याही जिससे राव मालदेव को निकाल कर बीकानेर पर कवजा पाया - ॥

रावरायसिंह सं० १५९८ में जनमे १६२८ मे गादी विराजे और १६६८ में देव लोप होगये इन पर अकबर बादशाह की वडी मेहरबानी थी गुजरात की लडाई में बादशाह के साथ थे **ताजखां** जालोर वाले और सरोही के सरदार **देवडह** को पकड कर बादशाह के हजूर में हाजिर किया एक हजारी का मनसब पाया अकबर के मरने पर उस के बेटे जहांगीर ने रायसिंह को पांच हजारी जात का मनसब और चार हजार सवार रखने का रुत्बा बखशा - ॥

रावदलीपसिंह सं० १६२१ में जन्मे १६६८ में पाट विराजे सं० १६७० में परलोक वास हुये इन्होंने अपने पिता रायसिंह के मरने पर हाजिर होकर जहां

गीर बादशाह से राव का खिताब और खिलअत पाया - खुद जहांगीर ने अपने हा थ से दरबार में राज तिलक देकर दो हजारी जात और हजार सवार का मनसब ब खशा - परन्तु अन्त को बादशाह से बगावत करने के अपराध में कतल्ल किये गये और राज इनके छोटे भाई सूरसिंह को मिला - ॥

राव सूरसिंह सं० १६५१ में जन्मे और १६७० में गादी विराजे और १६८८ में देहान्त होगया दो हजारी जात और हजार सवार का मनसब पाया सं० १६८८ में दक्षिण की लडाई में काम आये - ॥

रावकरनसिंह सं० १६७३ में जन्मे और अपने पिता सूरसिंह की जगह सं० १६८८ में पाट बिराजे सं० १७२६ में देवलोप हुये यह दक्षिण की लडाई सें बाद शाह से सीख लिये बिना भाग आये थे बादशाह आलमगीर बेखफा हो कर इनके बडे बेटे अनूप सिंह को गादी पर बिठा दिया और यह दो बर्ष कैद भुगत कर मरगये-

राव अनूप सिंह १६६५ में जन्मे १७२५ में पाट विराजे सं० १७५५ में देवलो प होगये सं० १७७६ में अनूपगढ बसाया और कारगुजारी दिखला कर आल मगीर बादशाह से राजा का खिताब पाया - ॥

राजा सरूप सिंह सं० १७५६ में पैदा हुये सं० १७५५ में पाट बिराजे सम्मत १७७५ में देवलोप होगये - ॥

राजा सुजान सिंह सं० १७५७ में जन्मे सं० १७५७ में गादी बिराजे और सं० १७९२ में देहान्त होगया - सुजानगढ बसाया - ॥

महाराजा जोरावरसिंह सं० १७६९ में जन्मे और सं० १७८२ में पाट बिराजे और १८०२ में परलोक बास हुये - इन के अहद में जोधपुर के महारा जा **अभय सिंह** ने बीकानेर का मुहासरा कर लिया था परन्तु सं० १७४० में जै पुर के महाराजा **सवाई जय सिंह** और नागोर के हाकिम तखत सिंह ने बी

कानेर से २१ लाख रुपया दिलवा कर जोधपुर का कवजा उठवा दिया ॥

महाराजा गजसिंह सं० १७८० में जन्मे सं० १८०२ में अपने भाई जोराव रसिंह की जगह पाट बिराजे और सं० १८४४ देवलोप हुये ॥

महाराजा राजसिंह सं० १८०१ में जन्मे सं० १८४४ में पाट वैठे और छो टे भाई सूरत सिंह की मां के जहर देनेसे १४ दिन राज करके सं० १८४४ मे मरगये

महाराजा प्रतापसिंह सं० पैदाय मालूम न्ही सं० १८४४ में पाट बिराजे सं० १८४५ में देवलोप हुये ॥

महाराजा सूरतसिंह सं० १८२२ में जन्मे और सं० १८४५ में अपने भतीजे को मार कर पाट बिराजे और सं० १८८५ में फौत हो गये - इन के वक्त में संम्म त १८६१ में किला भटनेर मुसल मानजोईयराज पूतों से फतह हुआ जोधपुर के दावेदार **धोंकलसिंह** का साथ देनेमें २५ लाख रुपया खर्च किया पर न्तु नवाव **मीरखां** के दवाव से हार कर बैठ रहे संमत १८७५ में सरकार अं ग्रेजी से अहदनामा हुआ महाराजा साहिब सरनोपत रहेमंत को ५० वर्ष राज्य करके देवलोक

महाराजा रतनसिंह १८४७ में पैदा हुये सं० १८८८ में गादी बिराजे और १९०८ में देवलोप हुये ॥

महाराजा सरदारसिंह १८७५ में जन्मे और सं० १९०८ गादी बिराजे और १९२८ में देवलोप हुये इन्हों ने गदर स० १८५७ ई० में मदद देने के वदले में सरकार अंग्रेजी से टीवी का परगना पाया जिस की आमदनी १४ हजार ३ सौ रुपया सालाना है इनके समय में सरदारों और दरवार में वखेडा खडा हु आ - जिसका सरकार ने फैसला कराया ॥

महाराजा डुंगरसिंह सं० १९११ में जन्मे और १९२९ पाट बिराजे और सं० १९४० में वदनजमी रियासत के सबब माजूल किये गये और माजूली

* यह बहुत पुराना किला है सुलतान महमूद गजनवी ने हिन्दुस्थान मे गयारवां हमला इसी गढ पर कियाथा सरकारी जिला सिरसा और बीकानेर की ठीक सीमापर है - हमने भी इसे देखा है - मः मुरादअली

ही की हालत में सं० १९५४ मे परलोक वास हुये- यह महाराजा गज सिंहजी
में छटी पीढी में मिलते थे इन के वक्त में समस्त जागीरदार नाराज हो गये
थे अन्त को सरकारी फोज ने सं० १९४० में बिदासर में जाकर ठाकुर रामसिं
ह रईस महाजन व ठाकुर मेघ सिंह रईस जसाना और ठकुर बिदासर को पक
डा और महाराजा साहिब को माजूल कर दिया चार वर्ष पिछे उक्त सरदारों के
बीकानेर जाने की आज्ञा मिली - ॥

महाराजा गंगा सिंह-जी येह सं० १९ ३६ में जन्मे और १९४४ में आप
ने बडे भाइ महाराजा डु.गर सिंह जी की जगह पर पाट बिराजे अभी आप की
उमर गयारा वर्ष के लग भग है मयो कालिज में तालीम पाते हैं चिरंजीव
रियासत का बन्दो बस्त साहिब एजन्ट बहादुर की निग्रानी में कौनसिल द्वा
रा होता है जिसके वाइस प्रेसीडन्ट राय बहादुर सोढी हुकम सिंह जी है - ॥

तवारिख राज्य किशन गढ

राजपूताने के मध्य में राठोडों की छोटी सी (परन्तु रुत्बे में बडी) रियासत है
जिस के उत्तर व पश्चिम में मारवाड और पश्चिम व दक्षण में अंग्रेजी ज़िला
अजमेर और पूरब में जैपुर का मुल्क है रकबा ७२५ मील मुरब्बा - आ
बादी एक लाख ४२ हजार से अधिक खालसा आमदनी साढे तीन ला
ख और इससे कुछ कम आम दनी की जमीन जागीरदारों के कब्जे में है
फौज सवार व पैदल ६०० आदमी कहे जाते हैं तोपें ३० है सलामी
१५ तोपों की है जमीन कम पैदावारी की है अतएव तलाओं के पानी
से खेती होती है - जियादः जमीन पहाडी है जिनमें थूहड के रूख
बहुत हैं - समस्त राज्य में किशन गढ - रूपनग्र - सरवाड * तीन ही परगने
हैं जागीरदारों में ठिकाना फतह गढ मशहूर है जो राजा कहलाता है -

* सरवाड में तांबडा पत्थर बहुत अच्छा निकलता है जिसके कोठे और नगदूर २ जाते हैं कलो
द्वारा खान की खुदाई हो तो राज्य का बहुत फायदा हो - अः मुराद अली -

खास राजधानी किशनगढ में ७ हजार आदमी बस्ते हैं ॥

इतहास

यह रियासत आज से पौने तीन सौ वर्ष पहिले **जहांगीर बादशाह** की मेहरबानी से कायम हुई थी जहांगीर ने जोधपुर के मोटा राजा **उदय सिंह** जी के बेटे **किशन सिंह** को उस की खिदमत गुजारी और अच्छी चाकरी से खुश होकर जिले अजमेर में **सीटूला** आदि गांव सं० १६६६ में बखशे थे उस के दो वर्ष पीछे किशन सिंह ने अपने नाम पर किशनगढ बसा कर वहां रहना अखतियार किया - किशनगढ वाले यध्यपि जोधपुर के छुट भईये हैं परन्तु बडेरों की जागीर में से कुछ हिसा न पाने और अपने परीश्रम से ठिकाना बनाने के कारण जोधपुरवालों का अहसान न्हीं मान्ते - **बादशाही** राज्य में किशनगढ के रईस का कुर्ब जैपुर, जोधपुर बीकानेर, बूंदी, कोटा के पीछे मानाजाता था परन्तु आलमगीर बादशाह के मरने लों उसको राजा याराव आदि का लकब न्हीं मिला था तो भी चार हजारी मनसब रखता था **मुहम्मदशाह बादशाह** ने बहादुर सिंह को राजा का खिताब बखशा और २८० वर्ष में १५ रईस इस गादी पर बैठे जिनका हाल यह है - ॥ **किशन सिंह** ने सं० १६६६ में सिटूला की जागीर बादशाह से पाई महाबत खां के साथ मेवाड में साका किया २० आदमियों को मारा ३०० को पकड कर बादशाह के पास लेगये बादशाह ने खुश होकर ३००० हजारी मनसब और १५०० सवार रखने का कुर्ब बखशा १६७२ में **गोविन्ददास** भाटी प्रधान मारवाड से लड कर अपने भतीजे करन समेत काम आये राठोड सहंसमल राठोड **जगमाल** यह महाबत खां के बेटे अमानुल्ला खां से लड कर काम आये - राठोड **हरी सिंह** सं०

१६८५ में गादी बिराजे २५ वर्ष राज किया राठोड रूपसिंह १७०० में गा
दी बिराजे इन्हो ने बादशाही फोज के साथ बलख बदुखशां काबुल आदि में
अच्छी चाकरी की सादुल्ला वजीर के साथ चित्तोड का गढ तोड नेमें ब
हादुरी दिखलाई जिससे बादशाह ने खुश हो कर मांडलगढ इलाके मेवा
ड का परगनह बख्शा* सं० १७१५ में आगरे के निकट औरंगजेब और शाह
जादे दाराशिकोह की लडाई में दाराशिकोह की तरफ से औरंगजेब के हाथी
पर तलवार मारते हुये काम आये- राठोड मानसिंह सं० १७६३ में साका कर
के काम आये- राजा राजसिंह १८०५ में देवलोप हुये-राजा सांवन्तसिं
ह राजा बहादुरसिंह रियासत की आमदनी के दसवें हिस्से की जागीर फ
तहगढ इन्हीं होने अपने बेटे बाघसिंह को बिना रेख बख्शी थी महाराजा
बिड्धसिंह सं० १८४५ में गादी बिराजे और सं० १८५२ में देवलोप होगये
महाराजा कल्यानसिंह १८५५ में गादी बिराजे परन्तु सरदारों ने फसाद
किया तो साहिब एजन्ट की सलाह से ३६ हजार रुपया सालाना तनख्वाह
लेनी करके राज अपने बेटे मुहकमसिंह जी को सौंप कर दिल्ली चले गये ज
हां ६ वर्ष पीछे मित्यु को प्राप्त हुये- महाराजा मुहकमसिंह ८ वर्षराज
करके सं० १८९७ में बे औलाद मरगये- महाराजा प्रथ्वीसिंह सम्मत
१८९८ में ठिकाने फतहगढ से गोद लिये जाकर चार वर्ष की अवस्था में राज
बिराजे- यह बडे बुद्धिवान व दयावान रईस थे सं० १८२७ में ३ लाख रु
पया खर्च करके अपने राज्य में ४ तालाब खुदवाये इनके राज्य में हो कर रेल निकलने
से ६० हजार रुपया सालाना सरदारी के महसूल की आमदनी का मारा गया
परन्तु महाराजा की न्याय की और गरीबी को देख कर २० हजार सालाना सर
कार उक्त हानी के बदले मे देती है बहुतसे सुभ कार्य करने और धर्मा

* दोलाख की जागीर में

इस मारे के पीछे सं॰ १९३६ मे स्वर्ग वास हुये माहाराजा सारदूलसिंहजी (चिरंजीव) जैनवी महीने की ८ ताः सं॰ १९३६ में पाटबिराजे अपने पिता के समान नेक नीयत सादा मिजाज धर्म कर्म के पके हैं सं॰ १९५२ में बाबू शामसुन्दर लाल जी मयो कालिज के दोयम मास्टर नम्बर करनेल ब्राडफर्ड साहिब बहादुर एजन्ट गवर्नर जनरल राजपूताने की आज्ञा अनुसार किशनगढ के प्रधान नियत हुये बाबूजी ने दीवानी फौजदारी अपील आदि महकमे जारी किये और श्रीदरबार का इजलास महकमाखास कहलाता है - इस्टेम्प भी जारी किया गया - श्रीमहाराजा साहिब बहादुर को मई सन १८९२ ई॰ में सरकार से जी-सी-एस-आई- का तमगा भी इनायत हुआ जगदीश्वर मुबारक करे सरकार अंग्रेजी के श्रीहुसेवरीता के लिफाफे पर बमुताल्ले महाराजा साहिब मुशफिक मेहरबान मुखलिसान महाराजा धिराज - लकब और श्रीनामे पर महाराजा साहिब मुशफिक मेहरबान मुखलिसान सलामत लिखा जाता है कागज सुनदरी थेली कमखाब की होती है - ॥

राज्यबूंदी

राजपूताने के दक्षण और पूरब दिशा में बूंदी का राज्य दूसरे दरजे का पुराना राज्य है जिसके उत्तर में जैपुर पश्चिम में जहाज पुर इलाके मेवार - दक्षण में गवालियार - पूरब में कोटे का इलाका है - लमबाई ५० मील चौडाई ५० मील रकबा २३९१ मील मुरब्बा आबादी २लाख ५४७-१ आदमियों की है - खालसा की सालाना आमदनी ५लाख रुपया और इसी के लगभग जागीरदारों की आमदनी है - फौज सवार और पैदल दोनो २५०० है १लाख २००० रुपया सरकार अंग्रेजी को खिराज देते हैं सलामी १७ तोपें हैं शहर बूंदी

जो इस राज्य की राजधानी है आगरा से २८५ मील दक्षिण दिशा में पहाडी घाटे के मध्य में बसा है इस में ५० हजार आदमियो की आबादी है महारा जा साहिब के महल ऊंची पहाडी के तलाव पर उत्तम रीति से बने हैं जिनकी खूबसूरती प्रसंसा के योगय है - ॥

तवारीखबूंदी

बूंदी वाले चौहान जाति के हाडा खांप में अजमेर के राजा मानक चंद के पोते अस्तपाल के बंस में से हैं आद में हाडा भिन्न २ स्थानों में रहे और अंत को सं० १३६८ में मेवाड के महाराना की सहायता से बूंदी का राज पाकर सवा दो सौ वर्ष **चीतोड** के मातहत रहे और सं० १६२६ में वह **रतनभोर** का गढ अकबर बादशाह को सोंप कर खुदमुखतार राजा और बादशाही मनसबदार बने - मतलब यह है कि आजसे ५५६ वर्ष पहिले वह राजपूताने में सरदारी के दरजे पर पहुंचे थे और ३१८ वर्ष पहिले खुदमुखतार राजा हुये राजपूताने में आने के समय से आज लों उन की २४ पीढियां हो गुजरी हैं बूंदी के रईस मेवाड की मातहती से इनकार करते हैं - परन्तु सत्य यही है कि उनको दक्षिण से निकलने के पीछे मेवाड ही में पनाह मिली और मेवाड ही की सहायता से पहिले **भैसरोड** और फिर बूंदी का राज्य पाया जैसा कि बादशाही मनसबदार बन्ने से पहिले अकबर का वजीर **अबुलफजल रावसरजन** को मेवाड का मातहत लिखता है और इकबाल नामें **जहांगीरी** व बादशाह नामे **शाहजहानी** आदि इतिहासों में भी ऐसा ही लिखा है **अस्तपाल** के बडेरों में से **अजेपाल** ने अजमेर को बसाया उसके पीछे **मानक राय** ने सं० ७५१ में **साखंमबरी** देवी के नाम से साखंमबरी ग्राम बसाया - जिसको अब सांभर कहते हे (सांभरका लोन प्रसिद्ध है) इसी मानक

राय की औलाद में एक खांप की नवीं पीढी में **प्रथ्वीराज** उतपन्न हु
वा था · खीची· हाडा· मोहल · निरभाण· देवड: हिडोरिया· भोरीचा·
धनेरया· वागेरचा · आदि चौहानों की खांपें हैं · मानक राय का वेटा
अनोरराज असी अर्थात **हांसी** काराजाथा जिस के बेटे अस्तपा
लको शत्रुओं ने सं० १०८१ में वहां से निकाल दिया वह दक्षण में जा
कर **असीर** का राजा हुवा वहीं से हाडा खांप चली अस्तपाल के पीछे
लोकपाल हुआ जिस का बेटा **हमीर** प्रथ्वीराज के साथ सं० १२४९
में **शहाबुद्दीनगोरी** से लड कर काम आया· हमीर के पीछे काल क
रन· माहमगद: राव बांचा· रावचंद्र आसीके राजा हुये राव चंद्र को सं०
१३५२ में **अलाउद्दीनखलजी** वादशाह ने कतल किया तव उसका
वेटा रैनसी ढाई वर्ष की अवस्था में हिफाजत के लिये चितोड में लाया ग
या· रैनसी ने जवान होकर मेवाड वालों की सहायता से **डोंगा** भीलको
मार कर भेंसरोड गढ लिया · रैनसी का वेटा **कोल** और उसका वेटा **बां**
गू हुआ वांगू के वेटे देव ने जोर पाकर मीनों को जेर किया सं० १३६८ में बां
दो घाटों के वीच में शहर **बूंदी** वसाया जिस के गिर्द हाडों के फैल जाने सेउ
स देश का नाम भी हाडोती होगया · राव देव का वेटा **समरसी** और समर
सी का **नापूजी** नापूजी का वेटा **हामूं** सं० १५४० में गादी परवैठा और
१६ वर्ष राज करके मरगया उसका वेटा **बीरसिंह** सं० १५५६ में पाट बैठा
और सं० १५२६ में मरगया तव उस का वेटा राव वांदो गादी पर वैठा प
न्तुउनके दो छोटे भाइयों ने मुसलमान होकर बादशाह की सहायता से बूं
दी छीनली और **समरकन्दी** वउमर कन्दी नाम से बूंदी के राजा कहला
ये · राव वांदो २१ वर्ष पहाडों में खराव हो कर मरगया तव **रावनारायन**·

द्यान अपने सुनो मुसलमान का काम्रों को कतल करके राज बिराजे और ३२ वर्ष राज करके मर गये उनका छोटा भाई महाराना संग्रामसिंहकेसाथ बाबर बादशाह से लड कर काम आया ॥

राव सूरजमल सं० १५८० में पाट बिराजे और महाराना सां आ के बेटे रतनसी से शिकार में लड कर काम आये ॥

राव सुलतान सं० १५८१ में गादी बिराजे परन्तु राजका काम न चला सके सरदारोंने इनको गादी से उतार दिया इन के कोई बेटा नथा अतएव सरदारों ने राव बांदो के पोते अरजुन को पाट बिठाया राव **अरजुन** सं० १५८२ में ५०० हाडों समेत चीतोड के गढ से **बहादुर शाह गुजराती** के सुरंग उडाने से उड गया ॥

राव सुरजन सं० १५८८ में गादी बिराजे और सं० १६२६ में रतमभोर का गढ अकबर बादशाह को सोंप कर मेवाड की मातहती से निकल कर बादशाही चाकरी में गये इसी कारण उनका कुर्ब जैपुर जोधपुर के पीछे बीकानेर आदि के बराबर रखा गया और सुरजन सं० १६४१ में देवलोक हुये ॥

राव भोज अपने पिता के सामने सं० १६३५ में गादी बिराजे और १६६४ में मित्यु को प्राप्त हुये (कियों कि इनके पिता इनको राज्य सोंप कर बादशाही चाकरी करने चले गये)

सर बुलन्द राव रतन गादी पर बैठ कर बादशाह से सरबुलन्द का लकब और ढाई हजारी जात मनसब और १००० सवार का कुर्ब पाया और अंत को पांच हजारी मनसब और राय राव का खिताब पाकर सं० १६८८ में दकन की लडाई में काम आये राव रतन का पाटवी कुंवर गोपीनाथ पहिले ही मर चुका था इस वास्ते बादशाहने उन के पोते शत्रुसाल को बूंदी का राज दिया और दूसरे बेटे **माधोसिंह** को कोटा और पलायता की जागीर दे कर

ढाई हजारी मंनसब बखशा उसी दिन से कि(२५०) वर्ष हुये कोटा बूंदी से अलग हो गया॥

राव शत्रुसाल सं॰ १६८८ में राज विराजे सं॰ १७१५ में आगरे के निकट लडाई में काम आये॥

राव भाउ सिंह सं॰ १७१५ में बाप की जगह पाट विराजे और सं॰ १७३२ में बे औलाद मिर्त्यु को प्राप्त हुये॥

राव अनरुध सिंह सं॰ १७३५ में पाट विराजे और सं॰ १७६२ में काबुल में लडकर काम आये॥

रावराजा बुधसिंह इन को बादशाहने रावराजा की पदवी बखशी इन में और कोटे वालों में खूब लडाइयां हुई यह अंत को सं॰ १७९६ में **वेगों** में देवलोप हुये॰ बुधसिंह के छोटे पुत्र **दीपसिंह** को कापरन जागीर में मिली और बडे उमेदसिंह राज के मालिक हुये॥

रावराजा उमेद सिंह ने सं॰ १८०० में राज पाया **कुंवर अजीत सिंह** उदयपुर के महाराना **आरसीजी** इन्हों ही ने शिकार में धोखे से मारा था॰ जिस का रंज बूंदी और मेवाड में आज लो है परन्तु उसी पाप से कुछ दिन पीछे अजीतसिंह कोढी होकर मरगया॥

रावराजा विशन सिंह सं॰ १८६१ में पाट विराजे और सं॰ १८७५ फ़रवरी महीने की १० ता॰ को सरकार से दोस्ती का अहदनामा किया और संम्मत १८७८ में देवलोप हुये॥

महाराव राजा राम सिंह १८७८ में दस वर्ष की अवस्था में करनेल टाड साहिब के सामने पाट विराजे यह रईस बहुत बुद्धिवान और विद्वान थे इनके समय में बड़ी २ बातें हुई सरकारने दिल्ली के दरबार सन १८७७ ई॰

में इन को सितारःहिन्द और अमीर कैसरहिन्द की पदवी बखशी यह बडे पंडित और धर्म कर्म के बहुत पाबन्द थे परन्तु ऐसे दाना और दयावान होने परभी कापरन का ठिकाना जब्तकर लिया जिससे कई सरदार इनसे नाराज रहे॰ राजपूताने में इनकी उमर से बडा कोई रईस नथा इस लिये सरकार इनकी बहुत इज्जत करती थी सन १८७८ ई॰ में ८० वर्ष की अवस्था में ७० वर्ष राज करके नेकनामी से देवलोप हुये॰ ॥

महाराव राजा रघुबीर सिंह २८ ताः सेपटम्बर सन १८६८ ई॰ को जन्मे थे और बडे भाई भीम सिंह जी के स्वर्ग बाश होने से पादवी करार पाकर सन १८७८ ई॰ में अपने पिता की जगह राज बिराजे यह भीअपने पिता के समान धर्म संबन्धी कामों में सरगरम और अच्छे रईस हैं रियासत का काम बदस्तूर पुरानी रीति से चल रहा है बूंदी के राज्य में ५० सैन्सकृत पाठशाला और १० फारसी के मदरसे हैं॰ ॥

राज्य कोटा।

राजपूताने के दक्षरा और पूरब में कोटा का राज्य आमदनी के लिहाज से जेपुर॰ उदयपुर॰ जोधपुर के पीछे दूसरी रियास्तों से बडा है इसके उत्तर में बूंदी पश्चिम में भेसरोड इलाके मेवाड दक्षरा में मकन्दरः घाटा इलाके इन्दौर हुलकर और पूरब में टोंक और गवालियार है लम्बाई पूरब से पश्चिम को ९० मील चौडाई उत्तर से दक्षरा को ८० मील॰ रकबा ४३५० मील मुरब्बा आबादी ५१७२७५ आदमियों की सवार वपैदल ५००० आमदनी खालसा २८ लाख रुपया है जिसमें से २ लाख ५० हजार रुपया खिराज और देवली की सरकारी फौज के खर्च की बाबत सरकार अंग्रेजी को दिया जाता है शहर कोटा। जो राजधानी है चंबल नदी के किनारे परबस्ता है और नदी में रईस के रहने को जलमहल

भी वना है इस रियासत की जमीन सरसवज है परन्तु हवा खराव होने से वीमारी अक्सर रहती है ॥

नवाशख

कोटा के रईस हाडा जाति के राजपूत बूंदी वालों से निकले हैं जैसा कि बूंदी के इत हास में हमने लिखा है शाहजहां बादशाह के शुरु अहद में उन्ही की मेहरबानी से यह रियासत कायम हुई है ॥

राव माधो सिंह बूंदी के रावरतन के मरने पर इनके भतीजे बूंदी की गादी पर विराजे और शाहजहां बादशाह ने इन की चाकरी से खुश होकर कोटा और पलायता की जागीर इनको सं० १६८८ में वखशी और तीन हजारी जाति का मनसब दिया उस वक्त इन की अवस्था १५ वय की थी सं० १७०० में देवलोप हुये ॥

रावमकुन्दसिंह माधो सिंह के पांच बेटे थे बडे मकुन्द सिंह गादी विराजे और मोहन सिंह को पलायता जुभार सिंह को कोटरा कन्हीराम को कोयला और किशोर सिंह को सांगोद जागीर में मिले रावमकुन्दसिंह सं० १७१५ मे उज्जैन के निकट लडाई में काम आये इन्हों ने उस वडे घाटे में जो हाडोती को मालवह से जुदा करता है महल वनाये थे इस से वह घाटा मकुन्दरा के नाम से आजलो प्रसिद्ध है

रावजगत सिंह यह अपने दादा मकुन्द सिंह के मारे जाने के पीछे आलमगीर बादशाह के हजूर से दोहजारी मनसब पाकर पाट विराजे और वादशाह के साथ दखण की लडाई में लडकर सम्मत १७२६ में काम आये ॥

राव भीमसिंह जगत सिंह के मरने पर कन्हीराम के बेटे भीम सिंह गादी पर बैठाये गये परन्तु सरदारों ने उन को बेवकूफ समझ कर कोयला की जागीर पर भेज दिया जहां अब लो उनकी औलाद मालिक है ॥

राव किशोर सिंह भीम सिंह को निकाल ने के बाद सांकोद से किशोरसिंह

को लाकर गादी पर बिठाया यह सं० १७४२ में बादशाही फौज के साथ दक्षरा में लडकर काम आये इन के तीन बेटों में से बडा बेटा बिशुन सिंह बादशाह की चाकरी मे नजाने के कारण राज से महरूम रहा उस को अंता की जागीर मिली और दूसरे बेटे राम सिंह ने राज पाया - ॥

रावराम सिंह इन्होंने बादशाही चाकरी दक्षरा में दिल से करी जिस के बदले में मौ मैदाने का परगनह भी जागीर मे पाया और रावराजा की पदवी मिली - बूंदी और कोटा में इन्ही के अहद में बैरपडा सं० १७६३ में कामआये **महाराव भीम सिंह** सं० १७६४ में गादी बिराजे और सं० १७७५ मे सात हजारी मनसब तक पहुंच कर नरवर के राजा गज सिंह के साथ बादशाह की तरफ से हैदराबाद के निजामुलमुल्क से लड कर बुरहान पुर में काम आये - ॥

महाराव अरजुन सिंह सम्मत १७७७ में पाट बिराजे और चार वर्ष राज करके लावल्द फौत हुये - ॥

महाराव दुरजन साल सं० १७८१ में पाट बिराजे मुहम्मदशाह बादशाह ने इन को राज तिलक और खिलअत बखशा मरहठों को मदद देने के बदले में **नाहरगढ** पाया इस के दूसरे वर्ष पीछे हिमत सिंह किलेदार का भतीजा **जालिम सिंह** झाला (झालावाड वालों का बडा) पैदा हुवा इन्ही महाराव को मेवाड के महाराणा जगत सिंह ने बेटी ब्याह कर गादी के बाईं तरफ बैठने की इज्जत बखशी सं० १८०० में जैपुर ने बूंदी दबा कर कोटा लेना चाहा पर हार कर वापिस आये सं० १८०५ में महाराव ने हुल्कर से सिफारश कर के बूंदी उल्टी जैपुर से बूंदी वालों को दिलाई सं० १८१३ में महाराव लावल्द देहलोप हुये - ॥

महाराव अजीत सिंह ८ वर्ष की अवस्था में अंता की जागीर से गोद

नाकसं० १८१३ में पाट विराजे और ढाइ वर्ष राज करके स्वर्गवाश हुये इन्ही के समय में हिम्मत सिंह झाला के मरने पर जालिमसिंह झाला उनका भतीजा किलेदार हुवा॰ ॥

महाराव.शत्रु साल १८ १६ में पाट विराजे जैंपुर की फौज कोटा पर चढ़ आई परन्तु जालिम सिंह झाला की वहांदुरी से जिसने हुलकर को मदद के लिये बुला लिया था बटवारह नामी स्थान से लोट गई सं०१८२२में देवलोप हुये

महाराव गुमान सिंह अपने भाई शत्रु साल की जगह राज पाकर जालिम सिंह किलेदार की जागीर जबत करली वह मेवाड में चले गये परन्तु फिर कोटा को लोट आवे और मरहटों से ६ लाख रुपया देकर महाराव की सुलह करादी जिस से फिर नांदतह की पुरानी जागीर महाराव ने उन्हे बखशी सं०१८२७ मे महारावने बीमारी की हालत में अपने बेटे उमेद सिंह को जिन की अवस्था १० वर्ष की थी जालिम सिंह की गोद में बिठाया और आप देव लोप हुये॰ ॥

महाराव उमेद सिंह इन के समय में दीवान जालिम सिंह को राज का कुल कुलां अधिकार होगया दीवान ने २५ लाख के बदले ३५ लाख की खालसा आमदनी बढ़ाई फकीरों॰ मेहतरों॰ रंडियों॰ आदि पर टिक्स लगाया जागीरदारों की जागीरें खालीं हुलकर ने चढाई करके १० लाख मांगा परन्तु मीरखां की सिफारश से तीन लाख लेकर चलागया जालिम सिंह के पास २० हजार फौज बहादुर पठानों की थी सं० १८७५ में जालिम सिंह ने अंग्रेजों को बहुत मदद दी जिससे खुश होकर सरकार ने दिग॰ पंच पहाड॰ अहवा॰ गंगरार इनाम में दिये परन्तु जालिम सिंह ने महाराव उमेद सिंह के नाम इन परगनों की सनद लार्ड हिसटगर साहिब से करली खुद न्हीलीये; इसी सम्मत मे सरकार से कोटे का अहद नामा हुआ जिसमें जालिम सिंह के खानदान में सदा लों दीवानी का

ओहदा रहना सरकारने मनजूर किया जिस से रियासत झालरा पाटन की बुन्याद पडी सं० १८८६ में राव उमेद सिंह लावलद फौत होगये ॥

महाराव किशोरसिंह १८८६ में पाट बैठ कर जालिम सिंह झाला के अख्तियारात लेने की कोशिश की परन्तु न्ही लेसके कियों कि अंग्रेजीअफसरजालिमसिंह की मदद पर रहे महाराव नाराज होकर सं० १८७८ में बिन्द्रा बन चले गये परन्तु थोडे दिनो में वापिस आकर दीवान को बेदखल करना चाहा-दीवानने भी लडने की तैयारयां करलीं जिस की मदद पर सरकारी फौज की दो पल्टनें छ रिसाले और एक तोपखाना था दीवान के पास ८ पल्टनें १५ रिसाले और ३२ तोपें थी इन सब को साथ लेकर दीवान ने महाराव पर हल्ला किया महाराव के बहादुर राजपूतों ने भी बडी बहादुरी दिखलाई बडी घमसानकी लडाई हुई महाराव साहिब अपने साथियों समेत चंबल नदी के पार उतरगये और जुवार के खेतों की आड पकड कर फिर लडे जिससे अंग्रेजी रिसाले का मुह फिरगया करनैल बिर्च साहिब घायल हुये किलार्क साहिब और रीड साहिब दो सरदार मारे गये महाराव के छोटे भाई प्रथ्वी सिंह भी काम आये महाराव अपने साथियों समेत मेवाड में हो कर **नाथ द्वारा** में पहुचे और कोटा को नाथ द्वारा के नाम श्रीक्रिशनार पुन्न कर दिया (जिसके बदले में ५०००रु० सालाना कोटा के गढ का किराया अब लों नाथद्वारा में दिया जाता है) कुछ दिन पीछे महाराणा भीम सिंह जी की सलाह से मेजर टाड साहिब ने दीवान और महाराव की सुलह करादी जेठ सुदी ८ सं० १८८० को ८५ वर्ष की अवस्था में दीवान जालिम सिंह देव लोप हुये यदि सरकार से कोटा का अहदनामा न हुआ होता और दीवान से केवल ओहदः दीवानी के बहाल रखवाने का जिम्मा सरकार न करती तो दीवान के कोटा लेलेने में कोई संदेह न

था-जालिम सिंह के मरने पर उसका बेटा **माधो सिंह** दीवान हुआ इस ने रईस को राजी रक्खा सं० १८८५ में महाराव किशोर सिंह और थोड़े दिनों पीछे दीवान माधो सिंह दोनों परलोक वास हुये-॥

महाराव राम सिंह इन के गादी बैठने पर माधो सिंह का बेटा और ज़ालिम सिंह का पोता मदन सिंह दीवान हुवा परन्तु महाराव और दीवान में हमेश बिगाड़ रहने से दीवान के लिये कोटा राज के तीसरे हिस्से की अर्थात १२ लाख सालाना की जागीर सरकार अंगरेज़ी और महाराव की मंजूरी से सं० १८९४ में निकाली गई- और मदन सिंह से दीवानी कोटा की बाबत हमेशा केलिये इस्तैफ़ा लिया गया सरकार अंगरेज़ी से मदन सिंह को महाराजराना का ख़िताब मिला और अस्सी-हज़ार रूपिया सरकारी ख़राज क़ायम कियागया- महाराव राम सिंहजी सम्वत-१९२२ में फ़ौत हुए-॥

महाराव शत्रुसाल जी सं० १९२२ में पाट बिराजे- यह नातजरबाकारों के बस में फंसकर मद्यपान करने लगे- रियासत क़र्ज़ा से ज़ेरबार होगई- तब सं० १९२६ में एजन्ट साहब ने सरकार में बहुत बड़ी शिकायत लिखी- महाराव साहबने भी-तंग आकर साहब की सलाह से सरकारी बन्दोबस्त होने की दरख्वास्त की- जिस पर सं० १९२९ में नवाब बख़्शी **फ़ैज़अलीखान** जी जो जैपुर में बख़्शी फ़ौज और प्रधान रहचुके थे सरकार की तरफ़ से सुपरन्टेन्डेन्ट रियासत होकर आये- इन्हों-ने कोटा का राज ८ निज़ामतों में तक़सीम करके नया बन्दोबस्त किया - दीवानी-फ़ौजदारी और माल के महकमे क़ायम किये- नवें लाख रूपिया जो राज के ज़िम्मे क़र्ज़ था इस के उतारने का यह बन्दोबस्त किया कि क़र्ज़दारों को रूपिया पीछे ॥≈ देने करके अजमेर के राय बहादुर सेठ **अमीरमल** जी लोढा से इकट्ठा रूपिया क़र्ज़ लेकर सबको चुका दिया- फ़ौज के ख़र्च में ९ लाख की कमी कीगई- रसोड़ा आदि

का ख़र्च भी घटाया और अच्छा बन्दोबस्त किया परन्तु ख़ुशामदी लोगो ने-महाराव जी के दिल में यह वहेम डाल दिया कि ज़ालिम सिंह झाला के समान नवाब भी कोटा का मालिक बन बैठेगा - इस्से महारावजी घबराये और नवाब की शिकायत बड़े साहब को लिखी इसपर नवाब ने सं० १९३२ में इस्तेफ़ा दे दिया और कपतान एवट साहब बहादुर नियत हुए- इन्हों ने भी अच्छा बन्दोबस्त किया फिर मेजर पावलट साहब बहादुर और फिर मेजर बेली साहब बहादुर सं० १९३६ में मुकर्रर हुए- जिन्हों ने मीर जाफ़र हुसेन और बाबू अबदुल्ला इत्यादि अफ़ीसरों को सरकारी इलाके से बुलाकर अच्छा बन्दोबस्त कराया- कोटा में ४० लाख आमदनी के २४९३ गांव हैं जिनमें से चौथा हिस्सा जागीरदारों व धर्मार्थ के क़बजे में हैं - ८ जून सन १८८९ ई० को महाराव जी ने बीमारी की हालत में महाराज-छगन सिंह जी के छोटे कुंवर उदै सिंह जी को गोद लेकर नाम उन का उमैद सिंह जी रखा और मंज़ूरी के लिये सरकार में ख़रीता भेजा - परन्तु जवाब आने से पहिले ११ जून सन १८८९ ई० को ६ घड़ी दिन चढे महाराव शत्रु साल देवलोक हो गये - अन्त समय महारावजी ने एक लाख रुपया दान किया - ब्राह्मणों की ११ कन्याओं का विवाह करा दिया - १६ हज़ार ब्राह्मणों को भोजन दिया था इनके देवलोक होने के पीछे रामचन्द्र जी राज वैद और रघा भाई बीसा जी महारावजी को ज़हर देने की इल्लत में कैद हुए परन्तु सबूत न होने से छूट गये -

महाराव उमेद सिंह जी - जेठ सुदी ८ मुताबिक़ ८ जून सन १८८९ ईस्वी को ९ वर्ष की अवस्था में पाट विराजे - मेऊ कालिज में तालीम पाते हैं - सरदार होनहार मालूम होते हैं - सरंजाव - राज का बन्दोबस्त सरकार के हाथ में है-॥

राज्य झालरा पाटन

राजपूताना के दक्षिण व पूरब में समस्त रियासतों से पिछली और आमदनी के लिहाज़

से दूसरे राजे की रियासत झालरा पाटन है- इसके उत्तर में घाटा-मकुन्दरा और कोटा-और पश्चिम में राज्य हुलकर-वगवालियार और पूर्व में राज्य टोंक वगवालियार व दक्षिण में भी इलाका टोंक है-रकबा २५०० मील मुरब्बा आबादी ३४५०० आदमीओं की-और आमदनी खालसा १९ लाख रुपया सालाना है-फ़ौज सवार व पैदल ४०००. जागीरदारों के कबज़े में केवल एक लाख की जागीर है ८० हज़ार रु० सरकार अंगरेज़ी को खराज दिया जाता है-रईस को सरकार अंगरेज़ी से राजराना-का खिताब और १५ तोपें सलामी का कुरब हासिल है-इस रियासत की ज़मीन बलिहाज़ पैदावारी सब से अच्छी है-क्यों कि झालों ने अपनी मरज़ी के अनुसार कोटा की रियासत में से अच्छी पैदावारी की जागीर निकाली थी-यही कारण है कि स्थिर-होने की अवस्था में जो जागीर १२ लाख की थी अब उसी में २० लाख उतपन्न होते हैं-राजधानी शहर झालरा पाटन जिस को ज़ालिम सिंह जी ने वसाया था वकौल-करनल टाडन साहब बहादुर बहुत ही खूबसूरत जैपुर नग्र के समान बसा है-और साहूकारों के अधिक होने से व्यापार व्योपार बहुत होता है-

तवारीख झालरा पाटन

कोटा की तवारीख में इस राज के स्थिर करने वाले का हाल हम लिख चुके हैं अतएव-यहां दुबारा लिखना फ़िज़ूल समझकर मुख़्तसिर लिखते हैं झाला राजपूतों का पराचीन ग्राम झालावाड़ इलाके काठियावाड़ है-राजराना ज़ालिम सिंह जी **हलोद** के झाला सरदार की औलाद में से थे-हलोद वालों में से **भाऊ सिंह** नामक एक राजपूत ने **आलमगीर बादशाह** के फ़ौत होने के पीछे आज़ से डेढ़ सौ बरस पहिले नोकरी की तलाश में अपना देश छोड़ा था **भाऊ सिंह** का बेटा **माधो सिंह** कोटा के महाराव **भीम सिंह** के पास आकर नौकर हुआ और उस की बहिन के साथ महाराव के बेटे दुरजनसाल की शादी हुई-इस सम्बन्ध के कारण **नांदता**

ग्राम की जागीर और फौजदारी उन को मिली · · · · कोटा में उनको मामाजी कहा जाता था - माधोसिंह के पीछे **मदन सिंह** और उस के मरने पर **हिम्मत सिंह** किलेदार व फौजदार हुआ - इन्हों ने मरहटों के साथ अहेदनामा करके कोटा को उनका खराज गुज़ार बनाया - और राज्य को मरहटों से बचाया - जिससे दरबार कोटा में इन को इज़्ज़त मिली - हिम्मत सिंह के देवलोप होने पर **ज़ालिम सिंह** जी उनके भतीजे किलेदार और फौजदार नियत हुए - और जैपुर की फौज से लड़ने में नाम पाया परन्तु महाराव गुमान सिंह जी से बिगाड़ होने के कारण ज़ालिम सिंह जी मेवाड़ में चले गये - और रईस ऐलवाड़ा की मारफ़त दरबार मेवाड़ की नौकरी करली - किन्तु थोड़े ही दिनों पीछे कोटे को लौट आये - और महाराव गुमान सिंह और मरहटों में सुलह करादी - जिससे नांदला की जागीर और फौजदारी जो ज़ब्त होगई थी दोबारा पाई - और महाराव ने मरने के समय अपने बेटे महाराव उमेद सिंह को जो १० बर्ष के थे इनकी गोद में बिठाकर राजकाज ज़ालिम सिंह जी को सौंपा - ज़ालिम सिंह जी ने उमेद सिंह जी के राज में कि पचास बर्ष लों रहा बड़ी ताक़त पैदा की - (देखो तवारीख कोटा) और महाराव किशोर सिंह के अहद में ८५ बर्ष की अवस्था पाकर सं० १८८० में - ज़ालिम सिंह जी अद्भुत चरित्र दिखलाकर स्वर्गबास हुए - इनके पीछे इनके पुत्र **माधो सिंह** दीवान कोटा नियत हुए - और सन १८८८ में देवलोप होगये - माधो सिंह के देवलोप होने पर उनके बेटे **मदन सिंह** दीवान नियत हुए - परन्तु महाराव और दीवान में कभी मिलाप नहीं हुआ - नित प्रति दिन बखेड़ा रहता था अतएव - कोटा के महाराव **राम सिंह** जी के अहद में सरकार अंगरेज़ी ने यह फ़ैसला कराया कि कोटा के राज के तिहाई की जागीर जिस की आमदनी १२ लाख सालाना होती है मदन सिंह को अलग देकर दीवानी से हमेशा के लिये इस्तैफ़ा ले लिया जाय - सं० १८९५ में बहुत तजवीज़ सरकार अंगरेज़ी की सलाह से महाराव कोटा ने मंजूर करके मदन सिंह जी

को १२ लाख की जागीर रियासत कोटा में से निकाल दी - और वह खुदमुख़्तार रईस माने गये - और सं॰ १९०१ में ७ वर्ष राज करके मदनसिंहजी देवलोक हुए - ॥

महाराजराना प्रथवीसिंहजी सं॰ १९०१ में अपने पिता की जगह राज बिराजे और सं॰ १९३३ में ३० वर्ष राज करके स्वर्गबास हुए - इन के अहद में फ़ुजूलख़र्ची के कारण रियासत १४ लाख की क़रज़दार हो गई थी तो भी इन्हों ने अच्छे २ मकानात बनवाए - बाग़ात लगवाये - आगरा - काशीजी - दिल्ली - आबू - नाथद्वारा आदि की यात्रा और सैर की - राजपूताना के प्राचीन रईस इनको बराबर कुर्सी देने में उज़र करते थे - परन्तु महाराना **शम्भूसिंह** जी स्वर्गबासी मेवाड़ाधीश ने महाराजराना प्रथवीसिंहजी को ताज़ीम देकर अपने बाईं तरफ़ बराबर बिठाया जिससे अब कोई रईस उज़र नहीं कर सकता ॥

महाराजराना ज़ालिमसिंहजी इनका नाम पहिले कंवर बख़्तसिंह जी था ठिकाने **वांन** इलाके काठियावाड़ से सरकार की मंज़ूरी लेकर गोद लिये गये परन्तु महाराजराना प्रथवीसिंहजी स्वर्गबासी की एक महारानी साहबा ने कहा कि हमको हमल है - इस वास्ते मसनद नशीनी बहुत दिनों तक मुलतवी रही - अंत को रानी साहबा की बात बेएतबार साबित होने पर इन्हीं को वारिस क़रार दिया और नाम इनका राजराना ज़ालिमसिंहजी रक्खा - यह सं॰ १९३२ में गोद लिये गये थे और जब लों नाबालग़ी में मेओ कालिज में इल्म पढ़ते रहे - रियासत का बन्दोबस्त सरकार के हाथ में रहा - पहिले कपतान **एबट साहब** बहादुर (जो अब करनल एबट साहब एजेंट मग़रबी राजपूताना हैं -) रियासत के मुन्तज़िम रहे - साहब मौसूफ़ ने बड़े २ लायक़ अहिलकारों को एकत्र किया - राजभवन - बाग़ात - सड़कें बनवाईं - दीवानी - फ़ौजदारी का बहुत अच्छा बन्दोबस्त किया रियासत का क़रज़ा खन्दी करके उतारने का बन्दोबस्त किया - रियासत सरसब्ज़ हो गई - इनके पीछे कपतान - एफ़ - मार्टंगल साहब रियासत के मुंतज़िम रहे सं॰ १९४३ में सरकारी बन्दोबस्त उठ गया और राजराना ज़ालिमसिंहजी को रियासत के पूरे अधिकार सरकार ने इनायत किये

परन्तु महाशोक कि इन्हों ने राज पाकर सरकार की मरज़ी के अनुसार काम नहीं किया- जिसका पूरा २ व्रतांत हम नहीं करसकते अन्तको उन बातों का यह फल प्राप्त हुआ कि सं० १९४४ में सरकार के हुकम से मेजर टाल्बट साहब बहादुर ने झालरा पाटन में पहुंचकर राजराना ज़ालिमसिंह जी को माज़ूल करदिया और राजके कार्य्यों का अधिकार अपने हाथ में लिया - जब से आज लों सरकारी बन्दोबस्त है राजका काम एक कौंन्सिल के द्वारा चलता है- जिसके मेम्बर बड़े २ लायक और विद्वान लोग हैं- जैसे धा भाई हरलाल जी साहब - व मुन्शी कालीचरन जी आदि- राजराना के लिये तनख्वाह मुक़र्रिर है - राजके कामों से कोई सरोकार नहीं - यदि अब भी राजराना साहब अपने को सम्भालें और सरकार अंगरेज़ी के अफ़ीसरों की सम्मति पर चलें तो अंगरेज़ी सरकार जो दयावान और न्यायशीला सरकार है अवश्य करके इनको क्षमा करेगी सरकार से इनको खरीते के लिफ़ाफ़े पर **महाराजराना बिसियार मेहरबान दोस्तान महाराजराना ज़ालिमसिंह बहादुर सलामहु अल्लाह** तआला और भीनामे पर **महाराजराना साहब बिसियार मेहरबान दोस्तान सलामत** लिखाजाता है - खरीता सुनहरी काग़ज़ पर और थैली कमख्वाब की होती है-

राज्य करौली

राजपूताना के पूर्व हिस्सा में करौली का राज एक छोटा परन्तु पुराना राज्य है - जिसके उत्तर में भरतपुर और जैपुर- पश्चिम में जैपुर - दक्षिण में जैपुर- और पूर्व में गवालियार और धौलपुर का मुल्क है रक़बा १९०० मील मुरब्बा - आबादी ४०६७० आदिमीओं की और आमदनी खालसा ५ लाख रूपिया सालाना - फ़ौज सवार व पैदल दोनों २००० से अधिक है - इसराज में जागीरदारों के चार ठिकाने - हाडौती - अमरगढ़ - रानोतरा - इनायती - अव्वल दरजे के हैं - और राज का बन्दोबस्त ४ तहसीलों के द्वारा होता है -

करौली- मंडरायल - आदत गिर - माचलपुर - इसरियासत की बहुधा ज़मीन पथरी-
ली है - प्राय पूर्व और दक्षिण में चम्बल नदी के कारण बरसात में नाले और गढे पड़जाते
हैं इसी राज्य में यादों राजपूतों के सिवाय गूजर-जाट-माली-मीना-आदि भी बस्ते हैं
करौली जो राजधानी है **गवालियार** से ८९ मील के फ़ासले पर पश्चिम में बस्ता है- नग्र
के गिर्द ब्रक्षों के होने से दूर तक लहलहाती हुई हरियाली दिखाई देती है - नदी नालों और
दलदल के होने से इस देश में शत्रुओं का गुज़र नहीं हो सकता करौली के गिर्द पुख़्ता श-
हरपनाह है- और बाहर दो पहाड़ियों पर रईस की गढियां मौजूद हैं- करौली की पूरी और
परसिध्य तवारीख़ नहीं मिलती तौ भी जो कुछ मिली है लिखी जाती है- ॥

तवारीख़ करौली

करौली के रईस जैसलमेर वालों के समान यादों नसल के चन्द्रबंसी राजपूत हैं वह ब्रिज
(मथरा) ही के आस पास रहे - मुसलमानों ने जब **बयाने** से इनको निकाला तो इन्हों
ने चम्बल नदी के कनारे करौली और सबलगढ बसाया - परन्तु सं० १५१० में मालवा के
बादशाह खिलजी ने करौली फ़तह करके ख़ालसा में मिला ली और यह लोग पहाड़ों
में फिरते रहे- **अकबर बादशाह** ने राजपूताना फ़तह किया- तो करौली वालों
को भी कुछ जागीर और मन्सब दिया - राजा **गोपाल** जादों अजमेर में बादशाही
क़िलेदार रहकर सं० १६२६ में मृत्यु को प्राप्त हुआ- तब उसका बेटा **कल्यानदास**
सं० १६६० में बादशाही मन्सबदार बना- और बहुत सी लड़ाइयों में बादशाही चा-
करी बहादुरी से की- मुसलमानों की सलतनत कमज़ोर हुई तो महाराजा सेंधिया
ने सबलगढ दबाकर करौली महाराजा ही के क़बज़े में छोड़ दी उस दिन से रईस करौ-
ली २५ हज़ार रुपिया सालाना ख़राज पेशवा को देने लगे सं० १८७३ में सरकार-
अंगरेज़ी ने राजपूताना से मरहटों का क़बज़ा उठाया तो महाराजा करौली भी अहद-
नामा करके सरकार की हिफ़ाज़त में आये - और ख़राज माफ़ होकर माचलपुर का

परगना जिसको मरहटों ने स्वराज के बदले दबा रखा था- उलटा दिलाया गया सं॰ १८८१ में लावलद गुज़र गये-॥

महाराजा परताप पाल सं॰ १८९० में पाट बिराजे और सं॰ १९०४ म मृत्यु को प्राप्त हुए-॥

महाराजा नरसिंह पाल- यह राज का अधिकार पाने नहीं पाये थे कि सं॰ १९०४ में देव लोप होगये-॥

महाराजा भरत पाल सं॰ १९०८ में गादी बिराजे- परन्तु महाराजा नरसिंह पाल के बे औलाद मरने पर लार्ड डिल्होसी साहब गवरनर जनरल ने पुरानी क़ानून के अनुसार करौली को ज़बती का हुकम भेज दिया क्योंकि उक्त लार्ड साहब की सम्मति यही थी कि जिस रईस के असली औलाद न हो उसका मुल्क ज़बत कर लिया जाय- गोद लेकर रईस न बनाया जाय- परन्तु पारलेमेन्ट ने लार्ड साहब की राय को नामंजूर किया- और रईस करौली को गोद लेने का अधिकार मिला (इसी लाट साहब ने झांसी- नागपुर आदि रियास्तों को रईसों के लावलद मरने पर ज़बत किया था) ॥

महाराजा मदन पाल सं॰ १९१० में पाट बिराजे इन्हों ने सन १८५७ ई॰ के ग़दर में सरकार को मदद दी थी जिसके बदले में १ लाख ७० हज़ार रूपिया सरकारी क़रज़ माफ़ हुआ- और १५ तोपों की जगह १७ तोपों की सलामी होगई- नेकनामी का ख़िलअत पाया- १९२२ में सितारे हिन्द का तमगा मिला- यह महाराजा साहब १५ बर्ष राज करके सं॰ १९२६ में स्वर्गबास हुए-॥

महाराजा जैसिंह पाल १९२६ में गोद आकर गादी बिराजे और १९३२ में ६ बर्ष राज करके देवलोप हुए-॥

महाराजा अर्जुन पाल सं॰ १९३२ में पाट बिराजे और जागीरदारान भवरतन- और इनायती को जो सरकशी करने थे फ़ौजी दबाव से ताबे किया- सं॰ १९३८ में-

दरबार के विरुद्ध रईयत व जागीरदारों ने अजन्टी में फ़रयाद की जिस पर महाराजा से राज का अधिकार लेकर एजन्ट साहब को सोंपागया - जिन्होंने पंचायत द्वारा राज का वन्दोवस्त किया सं० १९४३ में महाराजा अर्जुनपाल देव लोप हुए॥

महाराजा भंवरपाल साहब (चरंजीव) सं० १९४३ में पाट विराजे - यह रईस रहम दिल और नेकमिज़ाज हैं - रियासत का वन्दोवस्त साहब अजन्ट की निगरानी में लायक़ अहिलकार करते हैं - राज करौली में ४५० गांव हैं जिन में से खालसा के २५० ग्रामों की आमदनी ५ लाख रुपिया साल है - बाक़ी गांव जागीरदारों के क़ब्ज़े में हैं - जिनकी सालाना आमदनी डेढ लाख है छोटे बड़े जागीरदारों की तादाद ४० है - सरकार की तरफ़ से खरीता के लिफ़ाफ़े पर " बमुलाहे-महाराजा साहब मुश्फ़िक़ मेहरबान मुखलिसान सलामत महाराजा यदुकुल चन्द्र भांलची सिंह पाल जीदेव सल्लमहु अल्लाह तआला " और श्री नामे-पर महाराजा साहब मुश्फ़िक़ मेहरबान मुखलिसान सलामत लिखाजाता है - काग़ज़ सुनहरी थैली कमखाब की होती है -

राज्य टोंक

राजपूताना के मध्य में टोंक मुसल्मानों की रियासत है - जिसका वन्दोवस्त टोंक - रामपुरा - नीमाहेड़ा - छबड़ा - सरोंज - पड़गवा - छः परगनों के द्वारा होता है - एक परगना से दूसरा परगना बहुत दूर और दूसरी रियास्तों से घिरा हुआ है - इसलिये इस राज्य की कोई हद स्थिर नहीं हो सकती - टोंक जो राजधानी है - जैपुरराज के दक्षिणी इलाक़े से घिरा हुआ है - रामपुरा दक्षिण की ओर बूंदी से मिला हुआ है - नीमाहेड़ा पश्चिम में मेवाड़ और उत्तर में नीमच से मिला हुआ है - छबड़ा - बूंदी झालरापाटन और गवालियार से घिरा हुआ है - पिड़गवा हुलकर

और गवालियार के राजसे घिरा हुआ है- सरोंजके चारो ओर गवालियार व हुल कर का मुल्क मालवा और सागर का जिला फैला हुआ है- तीन परगने टोंक, सरोंज, नीम्बाहेडा, १० लाख के और बाकी तीन परगने पांचलाख की आमदनी के हैं- सब राज और फौजखर्च इस राज्यको माफ़ है- ज़मीन सब परगनों की पैदावारी के- लिये अच्छी है- टोंक चम्बल नदी के कनारे बस्ती है- और नदी के सदाबहने से- गेहूं और खरबुज़ा बहुत उतपत्ति होता है- छपराके पूरबमें होकर पारबती नदी बहती है- इससे भी पैदावारको बड़ा फ़ायदा है- इसराज्य में सम्पूर्ण ग्राम्- ११८३ है और सब परगनों की ज़मीन मिलकर २३३० मील मुरब्बा, आबादी- ३ लाख ३८ हज़ार - आम्दनी खालसा १५ लाख सालाना - फ़ौज सवार व पैदल ४००० खराजमाफ़ - सलामी १७ तोपें सर होती हैं॥

तवारीख टोंक

टोंक के रईस **बुनेरवाल** पठान हैं जिन का निकास बुनेरइलाके काबुलसे हुआ है- महम्मद शाह बादशाह के अहद में **तालेखां** पठान **चोरहर** इलाके कोहसे हिन्दुस्तान में आकर **अली महम्मदखां** रुहेला की फ़ौजमें नौकर हुआ - उन के- मरने पर उन के बेटे **हैदरखां** ने रुहेलों से **सम्भल** ज़िले मुरादाबाद में थोडी सी जागीर पाई - सं० १८२२ में हैदरखां के बेटे **अमीरखां** उत्पन्न हुए- अमीरखांने जवान होकर मालवा की रियास्तों में नौकरियां कीं और ज़ोर पकड़ते पकड़ते - वह दबदबा हासिल किया कि मालवा और राजपूताना के बडे २ शूरबीर राजा इनसे डरते थे- सरकार अंगरेज़ी ने भी इनकी बहादुरी और ज़ोर देख कर सन १८०० ई०- में इनके साथ अहदनामा किया- और जो जो परगने हुलकरने फ़ौजखर्चके लिये अमीरखां को दे रखे थे - सरकारने हमेशा के लिये उन्हीं के क़बज़े में करा दिये और सन १८१७ में वह खुद मुखतार रईस माने गये - नवाब अमीरखां सं० १८४२ में-

वीस वर्ष की अवस्था में दस सिपाही और एक भाई को साथ ले कर घर से नौकरी की तलाश में निकले थे मालवा के रईस के यहां नौकरी की- फिर भोपाल के नवाब हयात महम्मद खां की नौकरी की फिर राघोगढ के राजपूतों की चाकरी में रहे; फिर बालाराव ईंगला के नौकर रहे- इसके पीछे वह सं० १८५४ में हुलकर की चाकरी में आये और यही से उनके भाग्य ने पलटा खाया- सं० १८०६ में जैपुर के महाराजा जगतसिंह जी से दोस्ती की- और नवाब की मदद से कछवाहों ने मारवाड़ की सीमा पर फ़तह पाई- जिस पर महाराजा मानसिंह जी ने नवाब को पगड़ी बदल भाई बनाया- और जैपुर पर मुसीबत आई दोनों रियासतों से लाभ उठाने के पीछे उदैपुर के महाराना **भीमसिंह** की कंवरानी जी **किशनकंवरजी** को क़तल कराया- जिस्से आजलों अमीरखां को ज़ालिम कहा जाता है- इसके पीछे नवाब ने नागपुर के ऊपर चढ़ाई की सरकार अंगरेजी ने यह ज़ोर उनका देख कर यहां न रुकवाया- फिर सन १८१७ में उनको सरकार के साथ अहदनामा करना पड़ा- जिसके अनुसार लूट मार उनकी बन्द होगई- तात्पर्य यह है कि नवाब अमीरखां ने वीस बरस नौकरी और दस वर्ष लूटमार और १७ वर्ष टोंक का राज करके सं० १८९० में ६७ वर्ष की अवस्था में देहत्याग कर परलोक का रास्ता लिया- मरने के समय नवाब अमीरखां के ११ बेटे ९ बेटियां ५० पोता पोती- और ३० बेटियों की औलाद थी ॥

नवाब वज़ीरुद्दौला वज़ीर महम्मद खां सं० १८९० में अपने पिता नवाब अमीरखां की जगह पाट विराजे- यह धर्म कर्म में बहुत ही सावधान थे- इन्हों ने शराब गांजा- चरस आदि नशा की बिकरी और लेनदेन अपने राज्य में बन्द करदिया- कोई पात्र या वैश्या राज में नहीं रहने पाती थी- नवाब रात दिन मौलवीयों की सोहबत में रह कर धर्म के अनुसार राज का काम करते थे- ग़दर सन १८५७ के उपद्रव में नवाब ने सरकार की अधिक सहायता की जिस से रईस-

टोंक को भी दूसरे रईसों के समान औलाद न होने पर गोद लेने का अख्त्यार मिला और नीम्बा हेडे का परगना जिस पर टोंक के दखशी की सरकशी के बदले में कर्नल ओर साहब पोलीटेकल एजन्ट ने मेवाड वालों का कब्ज़ा करा दिया था वापिस दिला दियागया - क्योंकि जागीरदार की बगावत से रियासत को बागी नहीं समझा जाता - १८ जून सन १८६४ ई० को ३० वर्ष राज करके नवाब वज़ीरमहम्मदखां देवलोक हुए॥

नवाब महम्मद अलीखां यह सात भाईयों में से बडे भाई पाटवी के मरजाने पर सं० १९२० में राज विराजे और राज के कामों मे भली भांति चित्त लगाया परन्तु सं० १९२१ में इनके खराजगुज़ार ठाकुर **लावा** में और इन में सरवरशाह प्रधान की नालायकी से झगडा खडा हुआ - ठाकुर ने चाकरी में कमी की और नवाब ने नज़राना बढा दिया - यह झगडा चलही रहा था कि हकीम सरवरशाह प्रधान टोंक ने दगा करके ठाकुर को टोंक में बुलाया - और ठाकुर का काका **रेवत सिंह** २ कामदारों और १२ साथियों समीत दीवान के मकान पर बुलाकर कतल किया गया - इस फिसाद की खबर जलदी से सरकार को मिली और एक अंगरेज़ आफीसर फोरन टोंक भेजा पहुंचा - जिससे फ़िसाद बढने नहीं पाया - ठाकुर को लावा जाने की आज्ञा दी गई - और फ़िसाद की तहकीकात करके सरकार ने यह न्याव किया कि नवाब महम्मद अलीखां टोंक की गादी से उतार दिये जाये और १७ तोपों सलामी के बदले में ११ तोपें सलामी की जाय - दीवान सरवरशाह उमरकैद करके किसी किले में रखाजाय और लावा की जागीर एजन्टी के मातहत कर दीजाय - इस हुक्म की तामील हुई - महम्मद अलीखां बनारस को भेजेगये और ६० हज़ार रु० साल रियासत से उनकी तनख्वा मुकर्रर कीगई - हकीम सरवरशाह दीवान चुनार गढ में उमरकैद कियागया - जहां वह सं० १८७८ ई० में मरगया - लावा का ठाकुर एजन्टी हाडोती में रेख भरदेता है - वहां से टोंक के खज़ाने में जमा कर दी-

जाती है- दरबार टोंक से कोई वास्ता नहीं - मुहम्मद अलीखां बनारस में न-
ज़रबन्द हैं ॥

नबाव हाफ़िज महम्मद इबराहीम अलीखां साहब बहादुर-यह अपने बाप के गादी से उतारे जाने पर १२ भाइयों में सब से बड़े होने के कारण २० वर्ष की अवस्था में सं० १९२३ में पाट विराजे- परन्तु भाई बेटों की सरकशी से जो साहबज़ादे कहलाते हैं और ४ लाख की जागीर पर क़बज़ा रखते हैं राज्य का बन्दो बस्त न कर सके इसलिये नवाब के काका साहबज़ादे महम्मद **अबीदुल्लाखां**- साहब बहादुर दीवान न्यत किये गये इन्हों ने रियासत का बहुत अच्छा बन्दो बस्त किया- जनवरी सन १८७७ ई० के दिल्ली दरबार में नवाब साहब शामिल हुए जहां पर १७ तोपें सलामी की बहाल होगई- साहबज़ादे अबीदुल्लाखां दीवान- को सरकार ने प्रसन्न होकर- के०सी०एस० आई० का ख़िताब बख़्शा - पिछले २० वर्ष में १५ लाख रुपया का कर्ज़ रियासत पर हो गया था - दीवान और कौंन्सिल ने अजमेर के राय बहादुर सेठ **समीरमल** जी लोढा से सं० १९४३ में रुपया उधार लेकर क़रज़ दारों की खन्दी करदी और ख़ज़ाना राज्य का सेठजी की निगरानी में रखागया- जबलों इनका रुपया न चुके- सन १८८७ ई० से न- वाब साहब ने एक कौंन्सिल (पंचायत) अपनी मातहती में स्थिर की है - उसी के- द्वारा राज का कारुबार होता है - इस कौंन्सिल के सभापती खुद नवाब साहब और नायब सभापती साहबज़ादे अबीदुल्लाखांजी दीवान हैं -सन १८९० ई० में नवाब साहब को अजमेर में बुलाकर बड़े लाट साहब लार्ड **लइन्सडोन** साहब बहादुर ने सितारे हिन्द दर्जे अव्वल का तगमा इनायत किया - रियासत का काम आजक ल ठीक चलरहा है- क़रज़ा भी उतरता जाता है- कुल आमदनी २० लाख रुपया की है जिसमें १५ लाख खालसा और ५ लाख जागीरदारों की है- सरकार की ओर से

खरीता के लिफ़ाफ़े पर "बमुलाहिजे नवाब साहब मुशफ़क़ मेहरबान मुख लिसान नवाब अमीनुद्दौला वज़ीरुलमुल्क नवाब महम्मद इबराहीम अली खां बहादुर सोलत जंग सल्लमहु अल्लहतआला" और अन्दर नामे पर "नवाब साहब मुश फ़क़ मेहरबान मुखलिसान सलामत" लकब लिखा जाता है कागज़ सुनहरी और थैली कमखाब की होती है॥

राज्य अलवर

राजपूताना के पूरब और उत्तर दिसा में आमदनी के लेहाज़ से दूसरे दरजे की रियासत अलवर है- जिसके उत्तर में सिरकारी ज़िला गुडगांवा और कोट- कासिम राज्य जैपुर का इलाका और पश्चिम में नाभा-*पटियाला और जैपुर- का राज्य है- दक्षिण में जैपुर- और पूरब में भरतपुर राज्य की अमलदारी है- लम्बाई उत्तर से दक्षिण को ८० मील- चौड़ाई पूर्व से पश्चिम को ६५ मील - रकबा ३५७३ मील मुरब्बा- आबादी ६८२८३२ आदमीओं की- और आमदनी २० लाख रुपया सालाना- फौज सवार पैदल ४००० (शहन्शाही खिदमात के अलावा) है- सलामी की १५ तोपें और खिराज माफ़ है- इस राज में **रूपा** और **साबी**- नदियों के बहने से जिनमें से पहिली नदी सदा बहती रहती है- पैदावारी खूब होती है- अलवर का राज्य चार भिन्न २ इलाकों में है (१) **ढूंढाड** में मालाखेड़ा- राज गढ़-राजपुरा- टीला (२) **नीहड़** में थाना गाज़ी- परताबगढ़ - अजबगढ़ और बलदेवगढ़ (३) **राठ** जिसमें माडन- बीरोड- मंडावर- कसनीकोट नीमराना - हरसोरा- जीदोली - ततारपुर - हाजीपुर- हमीरपुर - बालसाज़- और रामनगर हैं- (४) **मेवात** - जिसमें अलवर - बहादरपुर - रामगढ़

* नाभा और पटयाले को सन १८५७ की खैरख्वाही में यह मुल्क सरकार ने बखशा है पहिले नवाब झभर का था - महम्मद मुराद अली - ॥

गोविन्द गढ़ - पीपल खेड़ा - किशनगढ़ - इसमाईलपुर - तजारा - और पंतो करा परगने हैं - राज्यका बन्दोबस्त करनेके लिये १२ तहसीलें है॥

मेव और खानज़ाद: जातिका इतहास

अलवर राज्य के इलाके में मेव जाति के लोग अधिक रहते हैं जो सुलतान महम्मद तुगलक के समय में मुसलमान हुए थे - इतिहास बतलाताहै - कियह राजपूतों और मीनों से मिलकर एक जाति पैदा हुई है - सदामन्दसे यहजाति इकैती और चोरी में परसिद्ध है - जैसे इस देशके जाट-गूजर-और मीने हैं - राज अलवरके परगने तजारा में एक दूसरी जाति खानज़ादा के नामसे परसिद्ध है - जो श्री कृष्ण चन्द्र जी के वंस में चन्द्र वंसी यादों राज पूतों की नसल है खानज़ाद: नाम पड़ने के दो प्रमाण इतिहासो में मिलते हैं - एक यह कि खान नामी कोई यादों नसल का राजपूत मुसलमान होगया था - अतएव उसका और उसकी औलाद का नाम खानयादों पड़गया - जिसको परन्तु सहस्सरो वर्ष विदीत होने से खानयादों कहते २ खानज़ाद: कहने लगी जैसे अजैमेर को अजमेर और गंधार को कंधार और असी को हांसी कहने लगे - दूसरी कथन - यह है कि फीरोज़शाह बादशाह तुगलक के समय में दोतीन राजपूत - मुसलमान हुए थे उनको बादशाहने खानेज़ाद की पदवी बख्शी थी - उनकी औलाद आजलों खानाज़ाद अर्थात खानज़ादा कहलाती है जिसका अर्थ चाकर है - दोनो बातो में से कोई बात हो परन्तु यह साबित है कि उक्त खानज़ादा यादों वंस राजपूत है - और उनके सम्बन्ध आजलों चौहान - भाटी आदि मुसलमान व हिन्दू राजपूतों के साथ होते हैं - जो हरयाने के देश में फैले हुए हैं - और रांघड कहलाते हैं - खानज़ादा जाति के सरदार ५०० वर्ष से सूरबीर के नामसे परसिद्ध हैं - नवाब हसनखां मेवाती जिसका नाम पुराने इतिहासो में सूर्य के समान

चमकता हुआ दिखाई देता है - उदैपुर के महाराना हिन्दू पति **संगराम सिंह** जी के साथ होकर **बाबर** बादशाह की लड़ाई में १००० सवारों के साथ काम आया था - इसी सूरबीर की बेटी के गर्भ से **बीरमखां** का पुत्र **अबदुलरहीमखानखान खाना** उतपन्न हुआ था - और जो अकबर बादशाह का मुसाहब था - जिस ने हिन्दोस्तान के दातारों और सूरबीर छत्रियों में नाम पाया और एक **कबित्त** के बदले में **चाडा चारन** मारवाड़ वाले को ५ लाख रुपया दिया था - इन दो जातियों के उपरान्त अहीर - जाट - आदि भी बस्ते हैं - राजधानी शहर अलवर अरबली परबत के ढलाव में बस्ता है - और ५० हज़ार आदमी उसमें रहते हैं - पहाड़ के ऊपर मज़बूत किला के अन्दर एक महल चार कुन्ड एक तालाब **सलेम सागर** और एक बावड़ी है - बर्तमान नरूकों के कब्ज़े से पहले जैपुर का किलेदार उसमें रहता था - अलवर की कच्ची शहर पनाह और खाई है - जिस को महाराजा **परताप सिंह** ने सं० १८३२ में तयार कराया था - कम्पिनी बाग और बने बिलास से जो **मोतीडूंगरी** पर है शहर की बहुत रौनक होगई है - इन बागों की सी नारंगियां कहीं नहीं होतीं ॥

तवारीख अलवर

अलवर के रईस जाति के कछवाहे हैं जो आंबेर के बारहवें राजा **उदयकरन** के परपोते **नरू** जी की औलाद में होने से **नरूके** कहलाते हैं - इनका कुरसीनामा यह है - महाराजा उदयकरन के बेटे बीरसिंह - उनके महाराज - उनके नरूजी - उनके लालाजी - उनके ऊदाजी - उनके लाडखां - उनके फ़तह सिंह - उनके कल्यान सिंह - उनके उग्रसिंह - उनके जोरावर सिंह - उनके मोहब्बतसिंह - उनके रावराजा परताब सिंह - ग्यारह पीढ़ी लों यह जैपुर के मातहत जागीरदार रहे परन्तु बारहवीं पीढ़ी में राव राजा परताप सिंह ने अपनी असली जागीर **माचेरी** व रामपुरा पर अपने भाई को उग्र सिंह

तेजसिंह - ज़ोरावरसिंह - मोहब्बतसिंह को छोड़ा - और अपनी तलवार के ज़ोर से - जैपुर भरतपुर के राज में से बहुत सा इलाक़ा दबाकर १८३२ में रियासत अलवर की बुनियाद क़ायम की - और रियासत स्थिर रहने के लिये उन्हों ने नवाब नजफ़खां के साथ बहादुरी से चाकरी करने और नवाब को भरतपुर और आगरा पर क़बज़ा दिलाने के बदले में दिल्ली के पिछले बादशाह शाह आलम से सनद और पंजहज़ारी मन्सब और माहीमरातिब का कुरब हासिल किया - जिससे जैपुरवालों का अलवर पर दावा न रहा और सं० १८३६ में जब कि मरहट्टे लूटमार कर रहे थे इन्हों ने बड़ी बहादुरी से बहुत सा मुल्क इधर उधर से दबा लिया - और २० लाख रुपया नक़द परगने **बिसदा** को लूट कर ख़ज़ाना भर लिया जिससे रियासत को पूरी ताक़त हासिल हो गई - रावराजा परतापसिंहजी पूसबदी ५ सं० १८४७ में ५० वर्ष की उमर पाकर देवलोप हुए ॥

महारावराजा बख्तावरसिंह सं० १८४७ में गोद आकर पाट विराजे - सं० १८६० में ग्राम सवाड़ी इलाके अलवर में मरहट्टों और अंगरेज़ी फ़ौज से भ्यानक युद्ध हुई - उसमें नवाब **अहमदबख्शखां** वकील अलवर - और ठाकुर **समरथसिंह** जी ने अंगरेज़ों को बहुत मदद दी - जिस से सरकार ने खुश हो कर बेनाले ने खराज के अहदनामा किया - और ८ परगने रावराजा को इनआम में दिये - जिन में लुहारू - दादरी - नीमराना भी हैं - और नवाब को लुहारू और फ़ीरोज़पुर के परगने इनआम में मिले - महाराज बख्तावरसिंह मांघसुदी २ सं० १८७१ में मृत्यु को प्राप्त हुए ॥

महारावराजा विनयसिंह सं० १८८० में पाट विराजे - दूसरे दावीदार बलवन्तसिंह को चार लाख की जागीर तजारा दी गई थी जो बलवन्तसिंह के बेऔलाद

मरने से २ बर्ष पीछे राज अलवर में पीछी मिलाई गई- सावन बदी ९ सं० १९१४ को ५० बर्ष की अवस्था में देवलोप हुए ॥

महारावराजा शिवदान सिंह १३ बर्ष की अवस्था में सं० १९१४ में अपने पिता की जगह पाट बिराजे - यह महाराजा साहब फ़जूलखर्ची और दातारी और बदइन्तज़ामी के कारण दो बेर रियासत से माज़ूल किये गये- और दोही बेर रियासत का अधिकार मिला - अन्त माजूली ही की हालत में सं० १९३१ में स्वर्गबाश हुये ॥

महारावराजा मंगलसिंह १४ दिसम्बर सन १८७४ ई० को गोद लिये जाकर पाट बिराजे - महारावराजा शिवदान सिंह जी के काका ठाकुर **लखधीर सिंह** जी गादी के दावीदार थे - पर अंगरेज़ी अफ़सरों ने उन को बूढ़ा समझकर गादी से महरूम रखा - ठाकर साहब ने महारावराजा के हुज़ूर में नज़र पेश नहीं की और खफ़ा होकर सरकार के हुकम से अजमेर में चले आये- और उसी हालत में मृत्यु को प्राप्त हुए- महारावराजा मंगल सिंह जी ने मेऊ कालिज में अंगरेजी विद्या सीखी - और सं० १९३४ में राज के अधिकार पाये - सं० १९४२ में जी० सी० एस० आई० का तमगा सरकार से पाया - और सं० १९४५ में सरकार ने **महाराजा** का खिताब बख्शा - २२ ता० मई सन १८९२ ई० को नैनीताल के पहाड़ पर जहां वह दो बर्ष से आबो हवा की बदली के लिये जाया करते थे - जिगर की बीमारी से देव लोप हुये - ॥ और लाश अलवर में लाकर दाग दिया गया ॥

महाराजा जैसिंह जी (चरंजीव) १३ ता: जून सन १८९२ ई० को १० वर्ष की अवस्था में अपने पिता की जगह राज बिराजे - रईस होनहार मालूम होते हैं राज का काम एक कौन्सिल द्वारा चल रहा है - जो करनल फ़रीज़र साहब पोलीटिकल एजन्ट की निगरानी में है - अलवर में आजकल एक बिचित्र मुकद्दमा चल रहा है - महाराजा साहब के नैनीताल में देवलोप होने से एक दिन पहिले अलवर

में राज्य के दीवान **कुंज बिहारी लाल** सड़कपर मारेगये- इसमुकद्दमाकी तह कीकात अंगरेज़ी पुलीस के अफ़ीसरों नेकरके रामचन्द्र आदि ६ मनुष्यों परकुंजबिहारीलाल के मारनेका दोष लगाया है- मुकद्दमा दौरासिपुर्द होगया है ॥

राज्य भरतपुर

राजपूताना परदेश के पूरब दिसा में भरतपुर बिचले दरजे काराज है जिसके उत्तर में गुड़गांवां ज़िला अंगरेजी पश्चिम में अलवर और जैपुर- दक्षिण में जैपुर करोली धौलपुर के इलाके और पूरब में ज़िला आगरा और मथरा है- लम्बाई ७५ मील और चौड़ाई ४८ मील- रक़बा १९७४ मील मुरब्बा- आबादी ६४५५४० आदमीओं की- आमदनी २२ लाख- फ़ौज सवार व पैदल ५००० है- ख़राजमाफ़ है- सलामी की १७ तोपें सर होती हैं- इस राज में होकर चार नदियां बानगंगा- घमदीर- कावन्द- और रूपारेल बही हैं- जिससे पानी की कोई कमी नहीं- इसके उपरान्त इस की नीची ज़मीन होने से १२ महीने बरसात का पानी भरारहता है और बहुधा यह पानी खेतों को नुक़सान पहुंचाता रहता है- दक्षिण दिसा में पहाड़ियां हैं जिनमें जंगली वृक्षों के अधिकतर होने से पशुओं को घासचारा हरमौसम में बहुत मिलता है- **बयाना कागद** और **दीग** इसराज्यमें पुराने और परसिद्ध स्थान हैं राजधानी भरतपुर नगर नीची ज़मीन पर तीन मील लम्बा और एकमील से अधिक चौड़ाई में बस्ता है- शहरपनाह यद्यपि कच्ची है- परन्तु इस के गिर्द जो खाई है वह सदा पानी से भरीरहती है और लड़ाई के समय बाहर के तालावों का पानी छोड़देने से नगर एक टापू बनजाता है- जिससे शत्रुओं का नगर लों पहुंचना कठिन और दुःभर होजाता है- इस नगर को महाराज रामचन्द्र के भाई भरतने अपने नाम पर बसाया था- परन्तु क़िला आदिराजा सूर्जमल

के बनाये हुए हैं ॥

तवारीख

भरतपुर वालों के पुरखे कौम जाट संसनी नामी ग्राम के रहने वाले हैं - यह खेती बाड़ी के सिवाय लूट मार भी करते थे - **राजाराम** जाट को सं० १७४५ में आलमगीर बादशाह के पोते **बेदार बख़्त** ने डकैती का दोश लगाकर क़तल किया और गढ़ी संसनी को उजाड़ दिया था - आलमगीर के मरने पर फिर इन लोगों ने लूट मार शुरू की थी परन्तु **फ़र्रुख़ सेयर** बादशाह के वज़ीर सैयद अबदुल्ला ने **चूड़ामन** जाट को जो राजाराम के क़तल होने से जाटों का मुखिया बना था लूट मार से बन्द रहने और रास्तों की हिफ़ाज़त करने का ज़िम्मेवार ठहरा कर **राहदार खां** का खिताब और कुछ गांव जागीर में बख़्शे - परन्तु यह लोग अपनी शरारत से बाज़ न आये इस लिये बादशाह ने सं० १७७५ में जैपुर के महाराजा सवाई जैसिंह को भेजा कि चूड़ामन को सज़ा दें - चूड़ामन वज़ीर से मिला हुआ था अतएव कुछ बन्दोबस्त न होसका - चूड़ामन ने ज़ोर पाकर अपने भतीजे **बदनसिंह** को क़ैद कर लिया - ३ वर्ष पीछे बदन सिंह क़ैद से छुटकर सवाई जैसिंह को अपनी सहायता के लिये चढ़ा लाया - ६ महीने महासरा रहा - अन्त को **इतौन** नामी स्थान को महाराजा ने विजै कर लिया - और चूड़ामन अपने पुत्र मोहकमसिंह समेत भाग गया - सन १७२३ ई० में बदनसिंह जाटों का रईस नियत कियागया - महाराज सवाई जैसिंह ने इस को राज तिलक दिया - बदनसिंह ने बहुत से ग्राम इधर उधर से दबाये - परन्तु **इलाहाबाद** के बादशाही सूबेदार ने इसको मारकर भगादिया - अन्त को बदन सिंह मरहटों से मिलगया - जिस से फिर भरतपुर की बुनियाद स्थिर होगई - जेठ सुदी १० सं० १८१२ में मरगया ॥

सूरजमल सं० १८१२ में अपने पिता की जगह राज बिराजे और सन १७३३ में

छापा मार कर खीमा जाट से भरतपुर छीन लिया और सं० १८२० में इलाहाबाद के सूबेदार नजीबुद्दौला से लड़कर मारे गये ॥

राजाजवाहर सिंह पूस वदी १३ सं० १८२० को गादी बिराजे और सं० १८२५ में क़िला आगरा में तरवारसे घायल होकर परलोक वास हुए ॥

राजारतन सिंह भादों वदी १ सं० १८२५ में पाट बिराजे ७ महीने राज कर ने के पीछे रूप कीमियागर गुसाईं के हाथ से चैत सुदी ५ सं० १८२६ में कतल हुये - इनके आदमीओं ने गुसाईं को वहीं मारडाला ॥

राजा केसरी सिंह सं० १८२६ में राज बिराजे - बादशाह के वज़ीर नजफ़खांने सं० १८२८ में आगरे का परगना दबालेने के दोष में भरतपुर के सिवाय समस्त राज ज़बत करलिया था परन्तु इन की मां रानी **किशोरी** की लाचारी से नवाबने राज वापिस दे दिया चैतवदी १५ सं० १८३४ में देवलोप होगए ॥

राजारनजीत सिंह सं० १८३४ में पाट बिराजे नवाब नज़फ़खां को ९ लाख रु० नज़राना कादेकर राज तिलक पाया सं० १८४१ में शाह आलम बादशाह को महाराजा साहब दीग की सैर कराने को लाये - बादशाहने खुश होकर **बदलबेग** से जिनके कबज़े में दीग का गढ था राजा को दीग दिलादिया - और दाऊदबेग से आगरे का किला महाराजा सेंधिया को दिला दिया जिस से नाराज़ होकर गुलाम कादर रुहेला ने बादशाह की आंखें निकालली और दिल्ली के लाल किले को लूट लिया - परन्तु अन्त को पिंजरे में बन्द होकर बडे दुखों से मारा गया - सं० १८६१ में अंगरेज़ी सेना ने भरतपुर पर हमला किया - जिसके सैनापती लार्ड लीक साहब थे - बड़ी घमसान की लड़ाई हुई - ३००० आदमी अंगरेज़ी फौज के मारे गये - तोभी भरतपुर विजय नहो सका - अन्त को महाराजा ने १२ लाख रूपिया देकर अंगरेज़ों से सुलह करली - आषाढ सुदी १५ सं० १८६२ में देवलोप हुए ॥

महाराजा रनधीरसिंह सं० १८६२ में राज बिराजे और सम्वत १८८० में देवलोप हुए - ॥

महाराजा बलदेवसिंह सं० १८८० में पाट विराजे और सं० १८८१ मे देव लोप हुए - ॥

राव दुर्जन साल - पाटवी तो वलवन्त सिंह थे परन्तु दुर्जन सालने जो महाराजा बलदेवसिंह के भतीजे थे फ़ौज और सरदारों की सहायता से वलवन्त सिंह को गादी से उतार कर खुद मालिक बनगये सरकार ने फ़ौज भेजकर दुर्जन-साल को निकालने का वन्दोबस्त किया किन्तु फ़ौजके आने मे देर हुई इस दोष में जनरल **अक्टरलोनी** साहब मौकूफ़ हुए - और उसी दुःख से मरगये - अन्त को २५ हज़ार अंगरेजी फ़ौज ने आकर भरतपुर लिया और दुर्जन साल को पकड़कर आगरे के क़िले में क़ैद कर दिया और वलवन्तसिंह जी पाट बिराजे ॥

महाराजा बलवन्तसिंह सं० १८८२ में पाट बिराजे और सम्बत १९०७ में देवलोप हुए - ॥

महाराजा जस्वन्त सिंह जी (चरनजीव) सं० १९२० में पाट विराजे ना-वालगी में सरकारी अफ़सरों की राय से राज का वन्दोवस्त हुआ - याने - तहसील - कचहरियां - दीवानी - फ़ौजदारी - माल आदि का वन्दोवस्त कियागया - सं० १९२५ में महाराजा साहब को राजके अखतियारात दिये गये - सं० १९२८ में महाराजकुंवार **रामसिंह** जी उत्पन्न हुए - १८७७ ईस्वी में महाराजा साहब को सितारे हिन्द दर्जे अव्वल का तमग़ा मिला - भरतपुर राजके समस्त ग्राम ३७० है इनमें १०० मन्दरों व धर्मार्थ के निमित्त हैं - वाकी खालसा हैं - कोई सरदार या जागीरदार नहीं है - महाराजको फ़ौज से बहुत मुहब्बत है - सरकार की ओर से खरीता के लिफ़ाफ़े पर "ब मुताले महाराजा साहब मुशफ़क़ मेहरबान मुखलिसान महाराजा ब्रज इन्द्र -

सवाई जसवन्त सिंह बहादुर बहादुरजंग सल्लमहु अल्लह तआला" और भी नामे पर "महाराजा साहब मुशफ़क़ मेहरबान मुखलिसान सलामत" लिखा जाता है-कागज़ सुनहरी येनी कमख़ाब की होती है-॥

राज्य धौलपुर

राजपूताना की पूरब दिसा में एक छोटी सी रियासत है-जिसके उत्तर में सरकारी ज़िला आगरा और पश्चिम भरतपुर करौली - दक्षिण और पूरब में गवालियार राज का इलाक़ा है- इस राज की लम्बाई ५४ मील - चौड़ाई ३२ मील - रक़वा १६२६ मील मुरब्बा - आमदनी ९ लाख रुपया - और फ़ौज सवार व पैदल ३००० के लगभग है- ख़िराज माफ़ - पदवी महाराजराना - सलामी की तोपें १५ सर होती हैं- इस राज की दक्षिण और पूर्व दिसा की सीमा पर चम्बल नदी ६० मील लों बह कर - गवालिआर और आगरे की सीम बन गई है- पश्चिम व दक्षिण दिसा में पहाड़ियां हैं- और बाक़ी ज़मीन सीधा मैदान है- बर्षा होने पर पैदावारी अधिक होती है- आंब के बृक्ष इस देश में अधिक हैं जिस से समसत ज़मीन लहलहाती हुई दिखाई देती है- **धौलपुर - बाड़ी - राजखेड़ा** - तीन बड़े परगने हैं-राजधानी **धौलपुर** आगरा और गवालियार की सड़क पर गवालियार से ३० मील उत्तर में और आगरे से ३४ मील दक्षिण में बसता है- धौलपुर की - दक्षिण दिसा में एक मील पर चम्बल नदी बड़े ज़ोर से बहा करती है - नदी के बाईं ओर बहुत मज़बूत किला बना हुआ है - और कई महल और मसजिद हैं- जिनमें एक मसजिद सन १६३७ ई० में शाहजहां बादशाह ने बनाई थी यह उन लोगों के निशान हैं जिनको सैकड़ो बर्ष हुए काल खा गया - हां- इतिहास उन के नामों और कामों को भली भांति दरसा रहा है-॥

तवारीख

धौलपुर वालों का निकास गोहद नामक ग्राम से है - जो किला गवालियार से २९ मील पर बसता है - इन के पुरखे ने जो जाट जाति का ज़मींदार था बाजे रावपेशवा की चाकरी में रहकर इज़्ज़त पाई थी और सं० १७९६ में बाजे राव ने इन को गोहद जागीर में बख़शी सं० १८१७ में अहमद शाह बादशाह अबदाली ने पानीपत के निकट बड़ी घमसान की लड़ाई लड़-कर मरहट्टो को भगा दिया उस समय गोहद का एक जाट जागीरदार लोकेन्द्र नामी गवालियार का किला दबाकर राना गोहद कहलाने लगा - राना पदवी इस को दिल्ली के बादशाह ने बख़शी थी - महाराज राना लोकेन्द्र सिंह से सं० १८२३ में मरहटों ने दूसरी बेर ज़ोर पकड़कर गोहद व गवालियार छीन ली - परन्तु ३ लाख रुपिया लेकर अपना ख़राजगुज़ार बनाकर गोहद लौटादी - और गवालियार को अपने क़बज़े में रक्खा सं० १८३५ में सरकार अंगरेज़ी ने इन से सन्धि करके अपनी ओर मिला लिया - और मरहट्टों से लड़कर गवालियर भी इन को दिला दिया - परन्तु ३ वर्ष पीछे दुशमनों से मिला रहने का दोष लगाकर सरकार ने इन का साथ छोड़ दिया - यह ख़बर सुनकर माधोराव सेंधिया ने हम्ला किया - और गोहद व गवालियर दोनों इन से छीन लिया - और राना को क़ैद कर दिया - २२ वर्ष लों यह क़ैद में रहे - और बड़े-२ दुःख भुगत कर अन्त को सरकार अंगरेज़ी ही की सहायता से दूसरी बेर रईस बने - इन के देवलोक होने की मिती का पता नहीं मिलता - ॥

महाराज राना कीरत सिंह सं० १८५९ में सरकार अंगरेज़ी ने गवालियर का किला अपने क़बज़े में कर लिया - और गोहद लोकेन्द्र सिंह के बेटे कीरत सिंह को दे दिया - किन्तु सं० १८६२ में जब दौलतराव सेंधिया और सरकार में अहदनामा होकर सुलह हो गई - तो सरकार ने गोहद और गवालियर दोनो सेंधिया के हवाले कर दिये - राना गोहद के पास कुछ भी न रहा - राना गोहद ने कोई क़सूर नहीं किया था जिस के बदले - में

उनकाराज मरहटों को दिया गया इसीवातकाविचारकरके सरकारने गोहदकेराना सेनयाअहदनामा किया और उसहानि के वदले में जो गोहद के छिनजाने से हुई थी सरकारने रानाजी गोहदको धौलपुर- वाड़ी-राजाखेड़ा-तीन परगने इनायत किये- तात्पर्य यह है- कि ४४ वर्ष यह गोहद के राना कहलाये और आजसे ८४ वर्ष पहिले गोहद छोड़कर धौलपुर के रईस बने- सं० १८९२ में महाराज राना कीरतसिंह मृत्यु को प्राप्त हुए- ॥

महाराजराना भगवन्तसिंह सं० १८९२ में- पाट बैठे सं० १८५७ ई० के उपद्रव में गवालियार से जो अंगरेज भागकर इनके पास आये थे- उनको हिफाज़त से र कब जेससे इनको भी दूसरे रईसो के समान गोदलेनेकी सनद मिली- सं० १९१७ में धौलपुर और गवालियार दरबार मे सख्त दुश्मनी होगई जिसके कारण महाराजराना ने गवालियार के महाजनों को दुःख देनेके लिये पारसनाथ जी का मन्दिर तोड़ दिया- इससे महाराजा साहब गवालियार का कोप भड़का- परन्तु सरकार ने फिसाद नहीं होने दिया सं० १९२६ में इनको सरकार से दर्जे अव्वल का तमग़ा मिला **गजरा** नाम की वेश्याकी दोस्ती से रियासत के बहुधा कामो में खराबी आगई थी और करज़ा भी कई लाख का होगया था **देवहंस** कामदार ने रानाजी को दबा लिया था- अन्त को एजन्ट साहबने दखल देकर बुरे आदमीओं को राज से निकाला कामदार कैद किया गया- पटियाला का मुन्शी अबदुल नबीखां और राजा डनकाराव के भाई **गजाधर** दीवान नियत किये गये- उन्हो ने नये सिरे से राजके कामों को दुरुस्त किया परन्तु पहिले अबदुल नबीखां और पीछे महाराजराना देवलोप हुए- ॥

महाराजराना नेहालसिंह (चिरनजीव) इनके पिता जो पाटवी थे अपने बाप महाराजराना भगवन्तसिंजी ही के सामने स्वर्गवास होचुके थे अतएव यह सं० १९२०

में आपने दादा की जगह ६ वर्ष की अवस्था में पाट बिराजे इनकी नाबालग़ी में प-
हिले राजा डनकरराव ने फिर मेजर डेन्ही साहब पोलीटिकल एजन्ट - इनके अतालीक़
और राज के मुन्तज़िम रहे- महाराना अंगरेज़ी- फ़ारसी- हिन्दी में भली भांति
लिख पढ़ सकते हैं सं० १८४० में इनको राज का अधिकार मिला - परन्तु फ़ुजूल ख़
रची और बद इन्तज़ामी के कारण मारटेली साहब पोलीटिकल एजन्ट की निगरानी
में काम होने लगा- और दो वर्ष से रायबहादुर मुन्शी **बिप्रानस्वरूप** साहब
जो अजमेर के ज़िले में डिपटी मजिस्ट्रेट थे राज्य के दीवान नियत हुए हैं- इनके श्री
श्रम से रियासत का काम अच्छी तरह से चलरहा है- सरकार की ओर से ख़रीता के
लिफ़ाफे पर " बमुताले महाराजा साहब मुशफ़िक़ बिसियार मेहरबान मुख़लिसा
न रईसुद्दोला सिपहदारुल मुल्क महाराजाधिराज श्रीसवाई राना लोकेन्द्र ब-
हादुर दिलेर जंगजी देवसल्लम हु अल्लाह तआला" और श्रीनामे पर "महाराजा सा
हब मुशफ़िक़ बिसियार मेहरबान मुख़लसान सलामत" लिखाजाता है- काग़ज़
सुनहरी थैली कमख़्वाब की होती है- ॥

राज्य परतापगढ़

परतापगढ़ का इलाक़ा जिस को कांठल कहते हैं- मेवाड़ के दक्षिण व पूर्व में है-
इसके पश्चिमोत्तर में मेवाड़- दक्षिण में बांसवाड़ा- और पूरब में रतलाम - हुल्कर
आदि मुल्क मालवा फैला हुआ है- लम्बाई उत्तर से दक्षिण को ५० मील चौड़ाई पू-
रब से पश्चिम को २५ मील- रक़बा १४६० मील मुरब्बा- आबादी १५०००० आदमी-
ओं की- आमदनी ख़ालसा ३५०००० रु० सालाना- फ़ौज सवार व पैदल ६०० आ
दमी समझे जाते हैं- परताप गढ़ का वह भाग जो बागड़ कहलाता है- पहाड़ी
और सूना है. भील इस राज्य में अधिक रहते हैं पहाड़ी वृक्षों के उपरान्त बांस यहां

का परसिद्ध है- वह भाग जो कांठल कहलाता है- नीची धरती है- जिस में गहूं आदि उत्पत्ति होते हैं- राजधानी परताप गढ ऊंची धरती पर सतेह समुन्दर से १६५८ फ़ीट ऊंचा और नीमच से ३२ मील पर दक्षिण में बस्ता है- रईस के महल नगर से आध मील पर हैं देवलिया यहांकी पुरानी राजधानी है- खिराज सरकारी ५६५००) सलामी की १५ तोपें है- ॥

तवारीख

परतापगढ वाले सीसोदिया राजपूत सूर्य्यवंशी खान्दान की छोटी शाख होने से **महारावत** कहलाते हैं- आज से चार सौ वर्ष पहिले चीतोड़ की दूसरी लड़ाई में परतापगढ वालों के एक पुरखा **बाघसिंह** जी बहादुरशाह गुजराती की लड़ाई में महाराना विक्रमादित्त के क़ायम मुक़ाम बनकर मारे गये थे इस कारण से जैसे मेवाड़ वाले अपने आप को श्री ईकलंगजी का दीवान कहते हैं उसी प्रकार परतापगढ वाले भी अपने नाम के साथ दीवान का लक़ब लिखते हैं-॥

महारावत खेमकरन सं॰ १४९० में चीतोड़ के महाराना मोकल जी मारे गये तो उनके दो बेटों कूंभा व मोकलजी में से कूंभाजी गादी विराजे- और मोकलजी को सादड़ी जावद जागीर में मिली- जहां से वह तरक्क़ी करके परतापगढ चले आये- और दूसरे राज्य की जड़ जमाई-॥

महारावत सूरजमल सं॰ १५५५ में पिता के मरने पर वही सादड़ी के मालिक बने- परन्तु चीतोड़ के पाटवी भयी राज से बखेड़ा रहने के कारण यह दक्षिण दिसा के पहाड़ों में चले गये- और देवलिया बसाया- महाराना चीतोड़ने इनकी जागीर ज़ब्त करली- ॥ *

महारावत बाघसिंह सं॰ १५७९ में पाट विराजे परन्तु अपनी पुरानी जागीर के ज़ब्त होने से नाराज़ होकर बादशाह मालवा के पास चले गये वहां इन को

* अर्थात नदी नाले

बादशाह ने डेढ लाख की जागीर बख्शी और इन्हो ने बाघवाडन ग्राम बसाया- सं० १५९५ में चीतोडगढ़ की लडाई में बहादुरशाह बादशाह गुजराती से लडकर काम आये - जब कि वह महाराना साहब की सहायता के लिये मालवा से आये थे-

महारावत रायसिंह १५९२ में चीतोडगढ के मुकाम पर पाट बिराजे - हुमायूं बादशाह के डर से गुजराती मेवाड से भागे - तो यह चीतोड महाराना को सौंपकर अपनी जागीर को चले गये - ॥

महारावत बीकाजी १६०९ में पाट बिराजे - और मेवाड छोड कर मंदसोर के बादशाही हाकिम से जा मिले - इनके साथ सूरजमल का पोता कान्हल भी जी म्वाहेडन की जागीर छोड कर चला गया था - महारावत ने उक्त हाकिम के कहने से सोनगरा राजपूतो से सुहागपुर छीन लिया और इसी तरह खेरोट - कोटडी - ननोद दबा लिये - और अपने काका कान्हल को घमोतर जागीर में दी - सं० १६१७ में **देवा मीना** को मारकर पहाडी मुल्क पर कबज़ा कर लिया - इन्हो ने बादशाही चाकरी में कृष्णदास के बेटे समरसी को दिल्ली भेजा - १६३५ में देवलोप हुए ॥

महारावत तेजसिंह सं० १६३५ में राज बिराजे और १५ बर्ष राज करके देवलोप हुए - तेजसागर इन्हीं ने बनवाया था - ॥

महारावत भानसिंह १६५० में पाट बिराजे - और सं० १६६० में **मकबन खां** जागीरदार मंदसौर के साथ जोधसिंह सीसोदिया को मारकर काम आये - ॥

महारावत सिंधा सं० १६६० में पाट बिराजे - और १९ बर्ष राज करके देवलोप हो गये - ॥

महारावत जसवन्तसिंह सं० १६७९ में पाट बिराजे - सं० १६८९ में महाराना जगतसिंह ने इन को उदेपुर में बुलाकर चंपा बाग़ में ठहराया - इन के पाटवी कंवर - महासिंह भी साथ थे - रात हुई तो महाराना ने **रामसिंह** राठोड को बहुत सी फ़ौज

साथ देकर वागमें भेजा कि महारावत जी को चुक करो। क्यों कि महाराना के दिल में महारावत के बादशाह से मिल जाने का रंज था - महारावत अपने पाटवी और साथियों समेत लड़ कर काम आए - ॥

महारावत हरी सिंह यह अपने पिता और बडे भाई के उदे पुर में मारे जाने पर सं॰ १६९० में राज बिराजे और दिल्ली में पहुंच कर महाराना के इत्याचार और भाई और पिता के मरवा डालने का हाल अर्ज़ कराया जिस पर बादशाह ने इन को इन आम और खिलअत व मन्सब देकर हाकिम मन्दसौर के नाम हुकम लिखा कि मेवाड़ का कबज़ा देवलिया से उठवा दो - दिल्ली से लौट कर महारावत ने उक्त हाकिम की सहायता से - मेवाड़ का कबज़ा उठा दिया - और ३२ गांव और भी मेवाड़ के दबा लिये - सं॰ १७३० में देव लोप हुए - ॥

महारावत परताप सिंह १७३० में पाट बिराजे ईडर विवाहने को गये थे लौटते समय **सलूमर** के रावत किशन सिंह के पोते मनोहर दास को साथ ले आये उन को सं॰ १७३५ में **बडलिया** आदि जागीर में दिया जो चूंडावतों की जागीर में आजलों है - सं॰ १७५३ में अपने नाम पर परतापगढ बसाया - और गढ़ बनाया सं॰ १७६४ में देव लोप हुए - ॥

महारावत प्रथ्वी सिंह सं॰ १७६४ में पाट बिराजे - १७७० में फर्रुखसेयर बादशाह ने दिल्ली में हाज़िर होने पर वक्त के उपरान्त राव की पदवी और खिलअत बखशा और राज्य में टकसाल जारी करने का अधिकार दिया - सं॰ १७७३ में म्रत्यु को पराप्त हुए - ॥

महारावत राम सिंह १७७३ में पाट बिराजे - और ६ महीने राज करके उसी सम्वत में देवलोप हुए - ॥

महारावत उमेद सिंह १७७४ में पाट बिराजे - और पांच वर्ष राज करके - वे

औलाद ही देवलोप हुए - ॥

महारावत गोपालसिंह सं० १७७९ में राज विराजे सं० १७८८ में पेश्वा हुलकर - मल्हारराव तीनों के साथ होकर महाराना उदेपुर ने डूंगरपुर घेर लिया - तब महा रावल शिवसिंह जी के बुलाने से यह डूंगरपुर गये और महारावलजी के - समझाने से डूंगरपुर बांसवाडे का खराज पेश्वा को देना स्वीकार किया - महासरा उठ गया - गोपालगंज बाज़ार बसाया - ३४ वर्ष राज कर के स्वर्गवास हुए ॥

महारावत सालमसिंह १८१४ में गद्दीनशीन हुए - परतापगढ की नई शहरपनाह बनवाई - सालमपुरा बसाया - दिल्ली जाकर आलमगीर सानी से - टकसाल का हुकम लाये - सालमशाही रुपया आजलों हर जगह चलता है - महता सूरतसिंह को जिस ने महाराना के विरुद्ध बग़ावत की थी सज़ा दी - हुलकर और - सेंधिया उदेपुर पर चढ आये - तो इन्हों ने महाराना अड्सीजी को मदद दी - जिस से रावत की पदवी जो बादशाह ने बख्शी थी बहाल रही - और धरयावद की जागीर पाई - द्वारकाजी में एक सदावर्त जारी किया - जो आजलों है - १७ वर्ष राज करके देवलोप हुए - ॥

महारावल सावंतसिंह - छोटे भाई लालसिंह को अरनोद जागीर में मिली - और आप सं १८३१ में राज विराजे - उदेपुर में सरदारों को चाकरी के लिये न भेजने से धरयावद महाराना भीमसिंह ने ज़बत करली - इन के समय में मरह टों ने राज्य परतापगढ को बहुत बरबाद किया - १५ हज़ार सालाना बादशाही खराज के बदले ७२ हज़ार खराज हुलकर ने लगा दिया - जिस के बदले में रुपया घोडे - ऊंट - धान दिया जाता था - तो भी पूरा नहीं पडता था - अन्त को मरहटों के दुरत्याचार से छुटने के लिये सं० १८७५ में कपतान मेगडा लड की मारफ़त महारावत ने सरकार से सन्धि की - पाटवी कंवर रूपसिंह ने महारावत के विरुद्ध

फिसाद उठाया - सरकार अंगरेजी ने गिरनार के गढ मे कंवरजी को क़ैद कर दिया जहां वह सं० १८०२ में मर गये - महारावत जी सं० १८४४ में ६० वर्ष की अवस्था में परलोकवास हुए - ॥

महारावत दलपत सिंहजी कंवर दीपसिंहजी के दो बेटे थे बडे केसरी सिंहजी और छोटे दलपत सिंहजी - महारावत सांवन्त सिंहजी ने पाटवी कं० के गिरनार में मरजाने पर बडे पोते केसरी सिंहजी को आप गोद लिया और छोटे दलपत सिंहजी को डूंगरपुर महारावल जसवन्त सिंहजी की गोद भेजा - परन्तु केसरी सिंहजी सं० १८९० में म्रत्यु को पराप्त हुए - जिनके कोई औलाद हीन थी - अतएव महारावत दलपत सिंहजी डूंगरपुर से उलटे आकर परतापगढ की गादी पर सं० १९०० में विराजे - और सरकार की मंज़ूरी से अपनी जगह डूंगरपुर की गादी पर - **आवरी के कंवर उदै सिंहजी** को गोद लेकर सं० १९०३ में बिठादिया और सरदारों व सरकार के कहने से आप दोनों रियास्तों का काम करते रहे - क्योंकि डूंगरपुर के महारावल जिन को इन्हों ने गोद लिया था - कम उमर थे - अन्त को आठ वर्ष लों डूंगरपुर का काम चलाकर परतापगढ में आगये - और फिर न हींगये - क्योंकि महारावल उदै सिंहजी डूंगरपुर के रईस भी होशियार होकर अपनी रियासत का काम अच्छी तरह चलाने लगे थे - सन १८५७ ई० के उपद्रव में सरकार को मदद दी - जिस से नेकनामी का खरीता सरकार से आया - तातपर्य यह कि १९ वर्ष डूंगरपुर में और २० वर्ष **परतापगढ** मे राज्य करके महारावत जी सं० १९२० स्वर्ग वास हुए - ॥

महारावल उदै सिंहजी १७ वर्ष की अवस्था में सं० १९२० में पाट विराजे - पहिले पहिले इन्हों ने भीलों और दूसरे लुटेरों को दण्ड देकर रियासत का अच्छा बंदोबस्त किया - सं० १९२२ में श्रीमान करनल **ईडन साहब** बहादुर रजीडन्ट राजपूताना

ने करनल निकसन साहब रज़ीडन्ट मेवाड़ समीत डूंगरपुर में जाकर महारावत जी को राज का अधिकार दिया- दूसरी वर्ष आगरा के दरबार में शामिल होकर श्री मान गवरनर जनरल से भेंट की- सं० १९२४ में एजन्ट साहब के शिकायत करने पर- निज़ामुद्दीन व नूरुद्दीन कामदार निकाले गये- और रतलाम का रहने वाला **उंकार** नामी महाजन कामदार हुआ- जिस को ७ वर्ष पीछे एक सिपाही ने मार डाला- और सिपाही ने फांसी पाई- फ़ज़ूल खर्ची और अकाल में हानि उठाने से रियासत क़रज़दार हो गई- इसलिये सं० १९४३ में सेठ **भीकाजी** फ़रामजी पारसी कामदार हुए- यह पहिले माही कांठा में असिस्टेन्ट पोलीटिकल एजन्ट थे- वहां से पिन्शन पाने के पश्चात परतापगढ़ के कामदार न्यत हुए- परन्तु सरदारों और रईअत की नाराज़ी के कारण काम नहीं चला सके सन १८७९ ईस्वी में महारावत जी देवलोप हुए-॥

श्री महारावत रघुनाथ सिंह जी (चरंजीव) महारावत जी स्वर्गवासी के असल से कोई औलाद न थी- [illegible] नामी [illegible] की पासवान [illegible] के पेट से एक कंवर प्रथवी सिंह जी हैं- अतएव **अरनोद** से महाराज रघुनाथ सिंह जी को लाकर सन १८७९ ईसवी में गादी पर बिठाया- यह महाराज बड़े दाना और लायक़ और दूर अन्देश सरदार हैं- इन्होंने गादी पर बैठते ही फ़ज़ूल खर्ची कम करदी- और रियासत का क़रज़ा उतारने का बन्दोबस्त किया- रियासत की खुशनसीबी से पंडियाजी श्री **मोहनलाल विशनोलाल** जी जो पहिले उदेपुर की महन्द्राज सभा के सिक्रट्री थे सं० १८९१ ई० से राज्य के प्रधान न्यत हुए हैं- यह महाशय अंगरेज़ी, फ़ारसी, संसक्रत आदि समपूर्ण विद्या के पंडित और राजरीति नीति से खूब वाकिफ़ हैं- आशा है कि इन के परीश्रम से राज्य का क़रज़ा मात्र उतर जाय- और रियासत सरसब्ज़ हो- सरकार अंगरेज़ी की तरफ़ से महारावत जी के नाम खरीता जाता है- उसके

सिफ़ाफ़े पर "बमुताले राजा साहब बिसियार मेहरबान दोस्तान राजारघुनाथ सिंह बहादुर सल्लमहु अल्लाहतआला" और श्रीनामे पर राजा साहब बिसियार मिहरबान दोस्तान सलामत" लिखाजाता है-॥

-परतापगढ़के अव्वल दर्जे के सीसोदिया सरदारों के ठिकानेयह हैं॥

धमोतर - झांतला - वरल्या - कल्यानपुर - रायपुर - आंवेराना - अचलोदा - अरनोद - सालमपुर - कचजोर - इन ठिकानों की जागीर में कुल ग्राम ४९ हैं - जिन में १२२१९ आदमी बस्ते हैं - आमदनी सालाना इन ठिकानों की ९०००० रुपयों की है - जिनमें से २२९५९ रुपिया रेख का भरते हैं - सब में धमोतर का ठिकाना बड़ा है - ॥

राज्य बांसवाड़ा

इसके उत्तर में मेवाड़ और डूंगरपुर - पश्चिम में रेवाकांठा व गुजरात - दक्षिण में - जहाज़पुर और रतलाम - पूर्व में परतापगढ़ का राज्य है - लम्बाई उत्तर से दक्षिण को ५० मील - चौड़ाई पूर्व से पश्चिम को ३७ मील - रकबा १४५० मील मुरब्बा आबादी १ लाख ४४ हज़ार आदमियों की - आमदनी खालसा २६०४०० रु० सालाना - फ़ौज सवार व पैदल ५०० गिनी जाती है - खिराज सरकारी ४२५०० रुपया साल सलामी १५ तोपें सरहोती हैं - इस राज्य में **मही नदी** के बहने से पैदावार की उन्नति होती है - जो बांसवाड़ा से ८ मील पर बहती है - राजधानी बांसवाड़ा नगर में ६००० आदमी बसते हैं - राज भवन ऊंची जगह पर उत्तम और सुन्दर बने हुए दिखाई देते हैं - जिनके निकट पक्के घाटों का तालाब मौजूद है - खुशहाल नगर - कालंजरा - संगवाड़ा - तीन नगर इस राज्य में परसिद्ध हैं ॥

तवारीख

बांसवाड़ाके महारावल जी डूंगरपुर वालों के समान सूर्य्यबन्सी राजपूत अहाड़िया

खांपके सरदार हैं- आजसे ३५९ वर्ष पहिले **डूंगरपुर में** शामिल थे- जिसकी बुनियाद १७५ वर्ष पहिले पड़ी है- बांसवाड़ा वालों का कथन है कि हमारे पुरखा **जगमाल जी** ने तलवार के बल से डूंगरपुर का आधा राज खालिया- डूंगरपुर वाले कहते हैं- कि हमारे बड़ेरे **प्रथवीराज** जी ने प्रसन्न होकर अपने छोटे भाई जगमाल को आधा राज बख्श दिया- मेवाड़ वालों का कहना है कि जब यह दोनों भाई राज्य के विषय में लड़ने लगे- तो हमने दोनों को आधा २ बांट दिया- परन्तु **तारीख फ़रिश्ता में अकबर बादशाह** के वज़ीर अब्बुल फ़ज़ल ने असल हाल यूं लिखा है- कि जब सं० १५८४ में डूंगरपुर के महारावल उदयसिंह जी महाराना **संगरामसिंह** जी के साथ **बाबर बादशाह से बयाना** में लड़कर काम आये- तो उनके बड़े पुत्र **प्रथ्वीराज** पाट विराजे ३ वर्ष पीछे सुलतान **बहादुरशाह** गुजराती डूंगरपुर पर चढ़ि आया- प्रथ्वीराज जी लाचार होकर बादशाह के हज़ूर में हाज़िर हो गये- उस समय जगमाल लूटमार करता था- और पहाड़ों में छिपा रहता था- वह पकड़े और मारे जाने के भय से चीतोड़ के महाराना रतनसी के पास चला आया- और महाराना की सिफ़ारिशसे बादशाह ने उसकी तकसीर क्षिमा करके प्रथ्वीराज जी और जगमाल को आधा २ राज्य बांट दिया- और आप कई दिन बांसवाड़ा में शिकार खेलकर चला गया- (देखो तारीख फ़रिश्ता मकाला ४) यह ग्रंथ ३०९ वर्ष पहिले अकबर के बड़े मंत्री के हाथ से लिखा गया है- जिसकी सनद मान्य अंगरेज़ भी स्वीकार करते हैं- इसी ग्रंथमें लिखा है कि सं० १६३३ में जब अकबर बादशाह अजमेर और मेवाड़ को विजय करके मालवा को जाता था- तो जगमाल के पोते **परतापसिंह** ने हाजिर होकर अताअत कबूल की- और चाकरी देकर **दूसरे** दर्जे **दूसरे रईसों** की बराबर कुरब पाया सं० १६५० में परतापसिंह के पोते **उग्रसेन** ने सरकशी करके बादशाही मुल्क को लूटना प्रारम्भ किया- इस दोश में मालवा के सूबेदार मिरज़ा **शाहरुख** ने बादशाह

के हुकम से बांसवाड़ा ज़बतकर लिया - महारावल परतापसिंह अपने पोते समेत भयके मारे पहाड़ों में जाछिपे - और वहीं से बादशाही राज्यमे लूटमार करने लगे- उक्त सूबेदार खबर पाकर मालवा को गया पीछे से महारावलने बांसवाड़ा ले लिया - दूसरे बर्ष सूबेदार बड़ी फौज लेकर बांसवाड़ा पर चढिआया - परन्तु महारावल ने नज़राना देकर अताअत कबूलकरली और फिर अंगरेज़ों का राज्य होने लों कभी नमकहरामी नहीं की - सं॰ १६८५ में महारावल के पोते **समरसी** जहांगीर बादशाह के हजूर में दिल्ली में हाज़िर हुए - ३००० नकद ३ हाथी १ पांनदान १ खंजर नज़र किया - बादशाह बहुत प्रसन्न हुए - और **शाहजहां** ने गादी पर बैठकर उन को १००० ज़ात का मन्सब १००० सवार का अधिकार - सोवर्ण का लंगर जड़ाऊ २५ हज़ार का - १ लाख नकद - और ८० हज़ार का सरोपा बख्शा - महारावल जी के पोते **अजबसिंह** ने उदैपुर की सीमा पर झगड़ा किया - जिसका बैर महाराना **अमरसिंह** जीने लेना चाहा - परन्तु बादशाही वज़ीर नवाब **असदखां** ने दोनों को समझाकर राज़ीनामा करा दिया - मुग़लों का परताप शोक समुद्र में डूबने के समय सं॰ १८५० में महाराना **भीमसिंह** जीने जो **ईडर** ब्याहने पधारे थे - महारावलजी से कई हज़ार नज़राना लेकर छोड़ा - ॥

महारावल उमेदसिंह जी पाट बैठकर दिल्ली के मालकों का भरोसा नहीं देखा - तो मरहटों को मुल्क से निकालने के लिये - जिन्होंने मालदेश को लूटकर बरबाद कर दिया था - सं॰ १८६८ में अपना वकील बड़ौदा के अंगरेज़ी रज़ीडन्ट के पास भेज कर सरकार से अहदनामा करना चाहा - परन्तु वहां से जवाब मिला कि दिल्ली को जाओ - पांच वर्ष पीछे सं॰ १८७४ में इन के वकील ने दिल्ली जाकर रज़ीडन्ट द्वारा सरकार से अहद नामा किया - इसी बर्ष में सरकार और महाराजा धार से जो अहदनामा हुआ था - उस के अनुसार धार ने ३५ हज़ार का खराज जो डूंगरपुर व बांसवाड़ा

महारावल उमैदसिंहजी का देहान्त इसी वर्ष

से लिया जाता था सरकार को देदिया -

में होगया -॥

महारावल भवानीसिंहजी सं० १८७५ में पाट बिराजकर दूसरा अहदनामा

धारवाले खिराज के उपरान्त सं० १८८० में ८००० रुपया

सरकार से किया - सरकार ने

किन्तु आमदनी के कम होने से कुछ दिन पीछे

फौजखर्च भी बांसवाड़ा पर लगया -

कामदारों की नालायकी से क़र्ज़ हो

माफ़ होगया - इनके समय में फ़ज़ूलखर्ची और

गया - अतएव महारावल डूंगरपुर ने बन्दोबस्त में मदद दी - सरकार ने कप्तान सेपर्स

साहब एजन्ट को बांसवाड़ा भेजा - उनको एक सिपाही ने मारडाला - जिसको काले

पानी का दण्ड दियागया - परन्तु रास्ते में से भागगया - सं० १८९३ में महारावल

देवलोक पहुंचे -॥

महारावल बहादुरसिंह गोद आकर सं० १८९४ में पाट बिराजे और कई

वर्ष राज करके देवलोक पहुंचे -॥

महारावल लछमनसिंहजी (चिरंजीव) सन १८४२ ई० में गादी बिराजे - ३

पुत्र महारानी साहबों और एक पासवान जी से हैं - महाराजकंवार हिन्दी उरदू लिख

पढ सकते हैं - महारावलजी पुरानी बातों को बहुत पसन्द करते हैं - १८४३ में मह

ारावलजी ने मुसलमानों की ईदगाह (मसीत) को जो टूट गई थी राज का रुपया ल

गाकर मरमत कराकर दुरुस्त करादी - जिससे मुसल्मान रय्यत इन से बहुत खुश हैं

इस राज में समसत ११८१ ग्राम हैं - जिनकी सालाना आमदनी ५ लाख है - इन

में से ५३३ ग्राम खालसा के हैं उनकी आमदनी २६७५०८ रुपया और -

११२ ग्राम धर्मार्थ - नौकरी - वचारन आदि की जागीर में हैं - इनकी आम

दनी २५ हज़ार सालाना है - और ५४३ ग्राम राजपूतों की जागीर में हैं - इनकी

आमदनी ३ लाख सालाना है - इनमें १४ सरदार अव्वल और १८ दूसरे दर्जे के हैं

अव्वल दर्जावालों के नाम वग़ैरा यहां लिखे जाते हैं - (१) मोरागांव-(२) मेनवाला (३) अथौना (४) गदी (५) सोरपुर (६) खांडू (७) गनोरा (८) किशनगढ (९) तलवाडन (१०) ओरीवाडन (११) खुशहालगढ (१२) नवागांव (१३) मोर (१४) खेडारोहनिया - इनमें ८ चौहानों (२) सीसोदियों (२) राठोडों और (१) मेहतीया (१) सकतावतों का ठिकाना है इन १४ ठिकानों के क़बज़े में २४९ ग्राम हैं और **खुशहालगढ** के रावत रणवन्त सिंह जी के सिवाय सब रेख भरते हैं ॥

सरकार अंगरेज़ो की ओर से ख़रीते के लिफ़ाफ़े पर " बसुताले राजा साहब बिसियार मेहरबान दोस्तान राजा ली मन सिंह बहादुर सल्लमहु अल्लाहु तआलाँ औ॒र्शी नामे पर "राजा साहब बिसियार मेहरबान दोस्तान सलामत" लिखा - जाता है- काग़ज़ सुनहरी थैली कमख़ाब की होती है ॥

राज्य सिरोही

राजपूताना के पश्चिम में एक छोटी सी रियासत है - जिसके पश्चिमोत्तर में मारवाड - दक्षिण में पालनपुर - माही कांटा और कडो था पूरब में मेवाड और मारवाड है - रक़बा ३०३४ मील मुरब्बा - आबादी ८० हज़ार आदमीयों की - आमदनी (१) लाख रुपया सालाना - फ़ौज सवार और पैदल ५०० - इसके उपरान्त १ लाख के लग भग जागीरदारों की आमदनी है - ॥ समस्त राज्य में जंगल और अरवली परबत फैला हुआ है - जिनमें सब से बडा परबत दक्षिण और पूरब में **आबू** है - जो सतह समुन्दर से ५००० फ़ीट ऊंचा है - इसी पहाड पर जनाब साहब एजन्ट गवरनर जनरल या रज़ीडन्ट साहब बहादुर राजपूताना रहा करते हैं - **लकवी** तालाब और देलवाडन के प्राचीन जैनमन्दरों से परबत की

सो आबाद गांव हैं- इसपहाड़ की आवोहवा बहुत ही उत्तम है - राज्य के इलाके
में ओसिये- भील- और मीने बहुत बसते हैं- जिनका पुराना पेशा लूटमार और
चोरी का है- प्राचीन समय में सिरोही के मातहत राजपूत भील और मीनों की
बेटियों से विवाह कर लेते थे- उनसे जो औलाद हुई- वह एक दूसरी जाति हो
कर **ग्रासिया** कहलाती है- बहुधा ग्रासियों के पास अच्छी जागीरें हैं यह
लोग कभी राज्य के अधिकार में नहीं रहे- राजधानी **सिरोही** नगर अजमेर
से २०० मील पहाड़ के पश्चिमी ढलाव में बस्ता है- इसमें ५००० आदमी रहते हैं
यह नगर १५ सदी के आरंभ में **सारनवा** परबत के नाम से बसा और फिर **सर
नवी** नाम रक्खा- जो बदल कर सिरोही बन गया- महारावजी के महल ऊंची
जगह पर हैं- तलवार यहां की हिन्दोस्तान भर में परसिद्ध है-॥

तवारीख

सं० १२५० में **शहाबुद्दीन** गोरी ने अजमेर के राजा प्रथवीराज चौहान
को मार कर दिल्ली और अजमेर आदि विजय कर लिये- तो चौहान लोग भाग
भाग कर राजपूताना के पश्चिम में आये- जहां परबत और बन होने से उनको
पनाह मिली- इनमें से **देवराज** नामी चौहान ने सं० १२४० में आबू दवा लि
या- और **परमारों** को निकाल दिया- इसी देवराज ने सिरोही राज्य की-
बुनियाद जमाई- उसकी औलाद आज लों **देवड़ा** कहलाती है- देवराज
के पीछे उसका बेटा राव **लूंभा** और फिर राव **सुलखा** राव रनमल-
तीन पीढी लों आबू ही पर राज करते रहे- परन्तु राव **सुभतान** ने सं० १४६२
में सिरोही बसा कर वहां रहना अख्तियार किया- सम्बत १४८२ में राव
सहंसमल ने नवीन सिरोही को बसाया- जो आज लों मौजूद है- मोहता **नैन
सी** अपनी ख्यात के अन्दर १५५२ में वर्तमान सिरोही का आबाद होना लिखते हैं

सं० १५०८ में रावलारवा ने आबू पहाड पर अपने नाम से ल्ह्वी तालाब बन वाया - जिस को अब **नरवी** कहते हैं - मतलब यह कि राव संहसमल से राव - सुलतान लों सौ वर्ष में लारवा - जगमाल - अखैराज - रायसिंह - दूदा - उदै सिंह - मान सिंह ७ रईस गादी पर बैठे - **मानसिंह** ने अपने भाई की बेवा रानी को जो हमल से थी जिस के पेट से पाटवी उत्पन्न होता बडे इत्याचार से मारडाला - परन्तु आप भी कई दिन पीछे कतल हुआ - ॥

सुलतान देवडा मानसिंह के कतल होने पर सं० १६२२ में पाट बिराजे और १२ बर्ष पीछे **ताजरवां** जालोर वाले के साथ हो कर (जिनकी औलाद आज दिन पालनपुर में राज करती है -) अकबर बादशाह से सरकशी की बादशाह ने - **तरसूरवां** और बीकानेर के राव **उदैसिंह** को फौज देकर भेजा उन्हों ने ताज खां और राव सुलतान को पकड कर बादशाह के हजूर में हाजिर कर दिया - दूसरी बेर भी ऐसाही हुआ - इस पर बादशाह ने मेवाड के महाराना उदैसिंह के बेटे - **जगमाल** को जो बादशाह की चाकरी में रहते थे - सिरोही का आधा मुल्क बांट दिया - परन्तु १६४१ मे **बीजा** देवडा ने सुरतान की ओर से बादशाही चाकरी - गुजरात में की जिस से अपना मुलक जगमाल से वापिस पाया - २० वर्ष राज कर के सुरतान देवलोक हुए - ॥

रावराजसिंह १६६७ में राज बिराजे - इनके पीछे अखैराज - फिर उदैभान फिर स० १७३३ में राव बैरीसाल - फिर सं० १७७६ में राव सुलतान दूसरे - सं० १७५४ में राव शत्रुसाल - स० १७६२ में राव मानसिंह - सं० १८०६ में प्रथवीराज सं० १७८२ में भारजा गांव से गोद आकर जगतसिंह पाट बिराजे - फिर राव हर साल - फिर राव उदै भान - १८६५ में पाट बिराजे - परन्तु रईयत को दुख देने के कारण सरदारों ने १० वर्ष पीछे इनको गादी से उतार कर कैद कर दिया - २८ वर्ष कैद

रहकर १९०३ में मृत्यु को प्राप्त हुए-॥

राव शिवसिंह राजसिंह के गादी से उतारे जाने पर सं० १८७४ में पाट विराजे- और सं० १८८० में सरकार से अहदनामा दोस्ती और मातहती का किया- १२ बर्ष पीछे सरकार ने रावजी को ५० हज़ार रुपया बिना ब्याज उधार देकर राज का कर्ज़ चुकवाया- सरकश ठाकरों को ज़ेर किया- परन्तु अहदनामा होने से पहिले- जितने ठाकुर **पालनपुर** के मातहत बन गये थे- वह वापिस रावजी के मातहत न हो सके- सं० १९०१ में रावजी ने आबू पर साहबरज़ीडन्ट बहादुर का रहना मंज़ूर- किया- इस शर्त पर कि ज़मीन का मूल्य मिले- और आबू पर मोर कबूतर आदि- न मारे जायें- अंगरेज़ी आदमी बिना दाम दिये सिरोही की रईयत से कोई चीज़ न लेसके- सं० १९१० में २ लाख का करज़ा होजाने से रावसाहब ने अपनी रियासत का इन्तज़ाम सरकार के हवाले किया- और राज्य की आमदनी १ लाख से कम सा बित होने पर सरकारी खराज ३० हज़ार से १५ हज़ार रह गया -सन १८५७ ई० के- ग़दर में रावसाहब की खैरख्वाही साबित होने से सरकारी खराज और भी माफ़ हो कर ७५०० रुपया रह गया- इस मौके पर राज मोत्मद मीर **न्यामतअली** की- कारगुज़ारी प्रसंसा के योग्य है- ७ बर्ष पीछे सं० १९१७ में रजन्टी से निकलकर रा- ज्य का अधिकार रावजी को मिला- रावसाहब ने अपने कंवर उमेदसिंहजी को राज का काम संम्हलाया- और आप इसी साल में परलोकबास हुए -॥

राव उमेदसिंह १९१७ में पाट बिराजे- इनके छोटे भाईयों ने थोड़ी जागीर- लेने से इनकार करके बहुत दिनों नकफ़िसाद रक्खा- परन्तु सरकार की सहायता के भय से अन्त को चुप होरहे- पहिले मीर न्यामतअली और फिर कछभुज के मुन्शी **महम्मद अमीन** दीवान रहे- सं० १९२२ में पिछले दीवान ने फ़ौजदारी दीवानी- और महकमे माल का बन्दोबस्त किया- १९३२ में रावसाहब परलोकबास हुए -॥

राव केसरी सिंहजी (चरंजीव) १९३२ में, १९ वर्ष की अवस्था में पाट विराजकर राज्य के इन्तज़ाम में चित्त लगाया- और मेवाड़ से मुन्शी न्यामतअली को उलगबुलाकर काम सोंपा जिसने खैरख्वाही से काम करने के बदले में सरकार से १९२० में **खान बहादुर** का खिताब पाया- खरूडी में जहां पहिले नंगलथा-रेल आने और आबू का रास्ता होने से बड़ा नगर बसगया और आमदनी भी बढ़गई है- महाराव जी ने अपने राज का बन्दोबस्त बहुत अच्छा किया-मिलापचन्द-मौल्वी अब्दुलहै- करीबुल्लाखां- सिंदी पूनमचन्द आदि अहिलकारों की होशियारी से बन्दोबस्त रहा- **जोवली** पर महाराव और उनके काका राजसाहवां **तेजसिंह** जी ने नोकड़े लायक और विद्यवान सरदार हैं- बहुत खुशी की जिससे प्रसन्न होकर सरकार ने सन १८८९ ई० में रावसाहब को महाराव साहब का खिताब बख़्श्या- थोड़े दिनों से महारावसाहब ने अपने काका राजसाहवांश्री **तेजसिंह** जी को मुहीराज अफसर नियत किया है- आशा है- कि यह लायक सरदार राजकी उन्नति का कार्या होंगे- इस राज्य में ९ परगनों के मातहत ३६० ग्राम हैं जिन में से १०० खालसा और २०० जागीरदारों और ६० धार्मिक आदि के क़बज़े में हैं- इसरीते के लिफ़ाफ़े पर सरकार की ओर से "बमुलाहिजे- महारावसाहब बिसियार मेहरबान दोस्तान महाराव केसरीसिंह बहादुर सलामत"- और श्रीनामे पर महाराव साहब बिसियार मेहरबान दोस्तान सलामत"- लिखा जाता है- कागज़ रंगीन- थैली अतलस की होती है-

राज्य शाहपुरा

यह छोटी सी रियासत मेवाड़ के उत्तर में और अजमेर के दक्षिण और पूरब में है- शाहपुरा वाले सीसोदिया कुल में महाराना अमरसिंह (१) के तीसरे पुत्र-

सूरजमल की औलाद हैं - महाराज सूरजमल के ३ बेटों - सुजानसिंह - भाऊ सिंह - और वीरमदेव में से पहिला **पलाना** के ठिकाने पर रहा - दूसरे को रखा र मेवाड़ से **नारेली** की जागीर मिली - तीसरा मेवाड़ से नाराज़ होकर बाद-शाह के हज़ूर में पहुंचा - और अच्छी चाकरी करने के बदले में २५०० का मन्सब पाकर मृत्यु को प्राप्त हुआ - इनके बड़े भाई -

सुजानसिंहजी जो अवलों मेवाड़ के मातहत थे महाराना जगतसिंहजी से बिगाड़ करके सं० १६२६ में दिल्ली पहुंचे - और टोडा के राजा **रायसिंह** की मार फ़त जो रिश्ते में इनके भाई लगते थे - शाहजहां बादशाह से सलाम हुआ बादशाह ने उनको उक्त सम्वत में **फूलिया** की जागीर बख्शी जो बहुत दिनों पहिले मेवाड़ से ज़ब्त होकर बादशाही खालसा में मिला ली थी - उस समय फू-लिया की आमदनी १ लाख की थी - सं० १६३२ में सुजानसिंह ने शाहजहां के नाम पर फूलिया के परगने में **शाहपुरा** बसाया - और सं० १७१५ में जब शाह जहां के मरने पर उनके बेटों में तख़्त के लिये झगड़ा खड़ा हुआ - तो राजा सुजान सिंह बड़े शाहज़ादे दाराशिकोह की ओर से मालवा में औरंगज़ेब से लड़ कर पां चों बेटों समेत काम आये - ॥

राजा दौलतसिंहजी १७२१ में पाट बिराजे और सं० १७४२ में मृत्यु को-प्राप्त हुए - ॥

राजा भारतसिंहजी १७६७ में शाह आलम बादशाह के हज़ूर से राजा का खिताब और साढ़े तीन हज़ारी मन्सब पाकर अपने पिता की जगह पाट बिराजे-परन्तु इनके बेटे ने इनसे राज छीन लिया - अन्त उसी अवस्था में सं० १७८७ में देवलोक हुए - ॥

राजा उमेदसिंहजी आपसे गादी छीन कर महाराना की चाकर अच्छी तरह से

की जिसके बदले मे दरबार मेवाड़ से रेख भरने के बदले में काछोला की जागीर पाई- सं॰ १८२५ में दरबार मेवाड़ की फौज के साथ होकर उज्जैन में मरहटों से लड़कर काम आये- ॥

राजा रनसिंह सं॰ १८२५ में दादा की जगह पाट बैठे- और ५ वर्ष राज करके परलोकवास हुए- ॥

राजा भीमसिंहजी सं॰ १८३१ में पाट बैठे- और ५ वर्ष राज करके परलोक वास हुए- ॥

राजा अमरसिंहजी १८४६ में गादी बिराजे और महाराना साहब की इच्छा अनुसार बहुल मे लुटेरो को ज़ेर करने के बदले में **राजाधिराज** की पदवी पाई- परन्तु थोड़े- दिनों पीछे महाराना ने नाराज़ होकर उनसे अगोचा और जहाज़पुर का परगना ज़ब्त कर लिया- और सं॰ १८८४ में राजा साहब देवलोप हुए॥

राजा माधोसिंहजी इनके गादी बैठने पर सरकार अंगरेज़ी ने शाहपुरा ज़ब्त कर लिया- परन्तु ३ वर्ष पीछे बाद शाही फ़रमान पेश करने पर उलटा दिया गया- सं॰ १८०३ में देवलोप होगये- ॥

राजाधिराज जगतसिंहजी १८०३ में पाट बिराजे और सं॰ १८०४ में सरकार ने इनसे अहद नामा किया और १००० रुपया सालाना खराज (उनतीन हज़ार दोसो की रेख के सिवाय जो काछोला की जागीर के बदले में महाराना साहब को भरी जाती है) लगाया- ८ वर्ष राज करके राजाधिराज परलोक वास हुए॥

राजाधिराज लछमनसिंहजी १८१० में पाट बिराजे- सं॰ १८२५ में कमिश्नरी अजमेर (सरकार) की निगरानी से निकल कर शाहपुरा की रियासत एजन्टी हाड़ौती की निगरानी में की गई- इनके अहद में रियासत बहुत क़र्ज़दार होगई- कई बेर सरकार ने हिदायत की- परन्तु कुछ बन्दो बस्त न हुआ- अन्त को खुद पोलिटिकल

रेजन्ट शाहपुराको रवाना हुए- किन्तु रास्ते में समाचार मिले कि २ ता: नवम्बर सं० १८६८ ई० को राजा धराज का देहान्त होगया- और एक खरीताभी राजा धराज स्वर्गवासी की ओर से जिसको कहा गया कि उन्हों ने जीतेजी लिखाया- साहब के रोबरू पेश हुआ उस में लिखाया था कि हम राजी खुशी से बिश्न्यां गम्भीर सिंह के बेटे रामसिंह को गोद लेकर अपना वारिस ठहराते हैं परन्तु एक धाभाई का मदार के सिवाय और किसीने इस खरीते के सच्चे होने की गवाही नहीं दी- अतएव वह कीकात के बाद खरीता जाली साबित होकर ठाकुर साहब **धनोप** के पुत्र नाहर सिंह जीको गोद लिया गया- जो राजा उमेद सिंह के छोटे बेटे ज़ालिम सिंह जी के वन्स में से हैं- और ७ महीने पीछे बिश्न्या के कंवर रामसिं को गादी छोडनी पडी-॥

राजा धराज श्री नाहर सिंह जी (चरंजीव) सं० १९२७ में पाट विराजे ना तजरबाकारी के कारण सरकार ने **सालगराम** जी कामदार को सलाहकार रक्खा- परन्तु वह थोडे दिन पीछे मर गया- तोभी राजा धराज नाहर सिंह जी ने उर्दू हिन्दी चित्त लगाकर सीखा- राज्य का काम भी चलाया- इनको सं० १९३३ में राज्य का पूरा अधिकार मिला- कई लाख रुपये का जो कर्ज़ था उतार दिया- पण्डित **मोहन किशन** एक्स्ट्रा असिस्टेंट कमिश्नरी सरकार की सलाह से प्रधान नियत हुये- परन्तु सं० १९३० में कई जागीरदारों ने आबूतक शिकायतें की- जिस पर पण्डित जी ने इस्तेफ़ा दिया- और बाबू **रामजीवनलाल** अजमेर गवर्नमेण्ट कालिज के मास्टर दीवान किये गये- इसी सं० में राजा धराज ने स्वामी **दयानन्दसरस्वती** जी महाराज की शिक्षा पाकर मूरती पूजन को छोड दिया- और आर्य्य समाज को अजमेर का बागीचा कीमती १००० रुपया दान किया- सन १८८० ई० में जागीरदारों की शिकायत करने पर मेजर थारन्टन साहब एजन्ट हाडौती के हुकम से बाबू रामजीवन निकाले गये- और मुन्शी **भोलानाथ** दीवान नियत हुए-

राजाधिराज के दो राज कंवार हैं बडे उमेद सिंहजी मेऊ कालिज में शिक्षा-पाते हैं खुदराजा धराज राजके कामों में चित्त लगाते हैं- रियासत अच्छी हाल त में है- परगने शाहपुरका रकबा ४०० मील मुरब्बा और काछोला का ३०० मील मुरब्बा है- आमदनी खालसा डेढ लाख रुपया की लगभग है- और इत नीही जागीरदारों के कबजे में हैं सरकार की ओर से खरीते के लिफाफे पर "राजा साहब मुशफक मेहरबान राजा धराज नाहरसिंह ज्योसलामत" और यही मीना-मे पर लिखा जाता है-

शेखावाटी

इस मुल्क की तीन छोटी रियासतें- खंडेला- सीकर- खेतडी- शेखावतों की हैं यद्यपि पहिले के समान यह खुद मुखतार नहीं हैं- जैपुर राज्य की मातहत हैं परन्तु फिर भी इन को अपने २ राज्य में दो चार बडे मामलों के सिवाय पूरे अधि कार हैं- दीवानी फौजदारी अपने २ राज्य की इन्हीं के अधिकार में है- राज्य जै पुर का नाज़िम जो झुंझनूं नगर में रहता है- उसके पास वही मुकदमे जाते हैं- जि नको यह ठिकाने फैसल न करसकें- यह बालूरेत के टीवों का मुल्क जैपुर के उत्तर दिसा में है- जहां आद्र जेठ से लेकर आधे आसोज़ लों पूर्ण वर्षा होने से- बाज़रा- मोठ- तिल- मूंग आदि उत्पन्न होते हैं- बैलों के सिवाय ऊंटों द्वारा भी हल जोते जाते हैं- इस देश के उत्तर में बीकानेर और पश्चिम में मारवाड का रेगिस्तानी मुल्क है- पानी यहां भी बीकानेर के समान औंडा और खारी होता है-॥

तवारीख

आंबेर के बारवें राजा **उदैकरन** के पोते और मोकल जी के बेटे **शेखा जी** कछवाहा के नाम से यह मुल्क शेखावाटी कहलाता है- क्योंकि उसी की औलाद इस मुल्क में अधिकतर बस्ती है- शेखावतों से पहिले इस देश में कायमखानियों

...राज था- जो चौहान बसते हैं- और मुसल्मान होगये हैं- **मोकलजी** ने औलाद के लिये एक मुसल्मान पीर **बुरहानुद्दीन** की बहुत टहल की थी जो खुरासान देश से आकर इस जंगल में रहते थे- फ़कीर की दुआ से बेटा उत्तपन्न हुआ- मोकलजी ने शेख़ बुरहानुद्दीन के नाम पर उसका नाम शेखा या शेखजी रक्खा उसकी औलाद आजलों **शेखावत** कहलाते हैं- यह लोग उक्त दरवेश की- शिक्षा के अनुसार मुसल्मानों के पीर पैग़म्बरों की पूजा करते हैं- बच्चा उत्पन्न होता है- उसको शेख़ बुरहानुद्दीन की कबर के पहिले झंगला पहनादेते हैं- सुअर का मास नहीं खाते- और झटका भी नहीं छूते- बुरहान के मरने पर उसकी पक्की कबर बनाई है- जिस पर आजलों चढ़ावा चढ़ाते हैं- और साल भर में वहां मेला भरता है- खंडेला- खेतड़ी- सीकर- मनोहरपुरा के जागीरदार शेखजी के बंस में पसिद्ध हैं- और समसत कछवाहों की खांपों में शेखावत अधिक हैं और अपने बल के भरोसे पर सरकश रहे हैं- अकबर बादशाह के समय में राजा गिरधर- राव मनोहरदास- राव रईसाल- नामी शेखावत थे- जिन्होंने बादशाही दरबार में मन्सब और कुरब पाया था- मुसल्मानों की बादशाहत जब शोक समुद्र में डूबने लगी- तो **महम्मद शाह** बादशाह के अहद में जैपुर के महाराजा सवाई **जैसिंहजी** ने शेखावतों का बल तोड़ कर अपना खराज गुज़ार बना लिया- हर एक जागीरदार के मरने पर उसकी जागीर समसत औलाद में बराबर तकसीम होने से कोई ठिकाना कायम नहीं रहा- सीकर- खेतड़ी- खंडेला- तीन ठिकानों ने उक्त रिवाज को नहीं माना- जिससे वह बने रहे- इन में से सीकर- और खेतड़ी की सालाना आमदनी चार चार लाख रुपया है- जिन में से २ लाख सालाना राज जैपुर में खराज भरते हैं- इसी कारण से- शेखावत और **राजावत** दूसरे जागीरदारों के समान चाकरी नहीं देते-॥

(दफ़ा ५)

सूबा अजमेर

पराचीन इतिहासों से साबित है- कि हिन्दोस्तान में पुराना और समस्त क़िलों से पहिला गढ **बीटली** है जो तारा गढ के नाम से परसिद्ध है- (इसको बीठल गढ भी पुराने ग्रंथों में लिखा है)- **अरव बारुल अरवयार** इतिहासकाले खक- लिखता है कि इस देश में सब से पहिले जिस क़िले की नीव पडी वह तारागढ है- बहुत से हिन्दी ग्रंथों में ऐसा भी लिखा है कि **बालसुगरीव** का भाई महाराजा राम चन्द्रजी की सैना का सरदार था उसने अपनी पतनी के नाम से जिसका नाम तारा था तारागढ को बसाया- कुछ ही हो- इसके पराचीन होने में कोई संदेह नहीं हां बींठ लीगढ (या बींटलगढ) जो बहुत पुराना था उसको राय पिथौरा ने तुडवाकर नया क़िला लाल पत्थरों का उसकी जगह बनाया था- जो आज लों टूटा फूटा मौजूद है- वह तारा गढ जिस पर अबदुलमुल्क के सैनापती **महम्मद क़ासिम** ने सिंध से उतर कर आज से १२०३ वर्ष पहिले सन ९५ हिजरी में हमला करके दूल्हाराय और उसके पुत्र **लुत** को शिकस्त दी थी वह तारागढ नहीं है- यह क़िला ८०० फ़ीट ऊंची टीकरी पर नगर के दीहारा में मौजूद है- अजमेर के बसाने का ठीक सम्वत किसी ग्रंथ या पत्थर के कुतबे (प्रशस्ति) से नहीं मिलता परन्तु यह साबित है कि **अनहलदेव** चौहान के (जिसने सं० ८०२ मे अनहलवाडा जिसे अब पटन गुजरात कहते हैं बसाया था) पडपोते **अजैपाल** चौहान ने सन १४५ ई० में **अजगंध** परवत में जो **अरबली** परबत की टीकरी के नीचे है- अपने नाम से अजमेर को बसाया था- अरबली का अर्थ उमर का पहाड- अजगंध का अर्थ बकरियों की

गिंध आनेवाला पहाड़ और संसक्रत में परबत को भी **मेरू** कहते हैं तो अजमेर नाम का अर्थ **अजैपालकापहाड़** (या बकरियों की गिंध आने का पहाड़) हुआ **टाड साहब** लिखते हैं कि इसी राजा ने अपनी रानी **तारा** के नामसे तारागढ़ का किला बनवाया था - पहिले **राय पिथौरा** के बाप समेस्वर देव ने **नाग पहाड़** पर जो पुशकरजी और अजमेर के मध्य में है नया गढ़ बनाना चाहा - परन्तु दिन को जितना काम बनता रातको उसे दैत आकर ढा जाते - इस गढ़ की भीतें आज लों नागपहाड़ पर खड़ी हैं हारकर राजा ने पुराने बीठलगढ़ ही की जगह नया किला बनाया - राजपूताना के मध्य में परसिद्ध नगर होने के कारण दिल्ली के बादशाह सदा अजमेर को खालसा में रखते रहे - और सूबेदार या किलेदार की राजधानी रही - अकबर बादशाह के समय में जब समसत हिन्दोस्तान की पैमायश होकर इस मुल्क में भिन्न भिन्न सूबे नियत किये गये - तो अजमेर में भी सूबे का रखना करार पाया और इस प्रकार से इस की सीमा स्थापित की गई - गढ़ **आंबेर** से जैसल्मेर व बीकानेर लों १६८ कोस लंबाई चौड़ाई अजमेर से बांसवाड़ा लों १५० कोस - पूरब में आगरा - पच्छिम में देपालपुर - मुलतान उत्तर में इलाका दिल्ली - दक्षिण में गुजरात - सरकारें इसकी सात थीं - अजमेर - चीतौड़ - रंतभंवर जोधपुर नागौर - सिरोही - बीकानेर - इनके मुत्अल्लिक १२३ मुहाल - आमदनी ५५ करोड़ ३ लाख ६० हज़ार दाम (या डेढ़ करोड़ रुपया) सालाना मुलसद्दियों की बोली में पैसे के पचीस्वें भाग का नाम दाम है - सरकार अंगरेजी ने भी देखा देखी बादशाहों के समान अजमेर को खाल्सा रखकर यहां चीफ़ कमिश्नर अथवा रज़ीडन्ट को रखा है परन्तु अब इसकी सीमा और हद्दें इस तरह पर हैं **जस्सारवेड़ा** से बवायचा ग्राम लों दक्षिण से उत्तर को १०८ मील लम्बाई और चौड़ाई नदी बिनास जागीर सावर से खरवा लों - ७६ मील - पूरब में किशनगढ़ व जैपुर दक्षिण में

मेवाड़ - पश्चिम में जोधपुर - उत्तर में मेरवाड़ा - रकबा २७१५ मील मुरब्बा आबादी ४८०८७८ आदमीओं की - आमदनी खालसा ३ लाख सालाना जागीरदारों के कबज़े में ६५०००० की जागीर है - जिनमें से इस्तमरारी जागीरदार ११५५११) रुपया सरकार में रेख भरते हैं - खास अजमेर में ७२ हज़ार आदमी बस्ते हैं - ॥

दरगाह ख्वाजाजी - सन हिजरी ५६१ में ख्वाजा मुईनुद्दीन नामी दरवेश खुरासान से यहां आये - रात दिन ईश्वर की भक्ती में रहते थे - अत एव हिन्दू मुसल्मान उन को पीर मानने लगे - अकबर बादशाह से पहिले केवल पक्की कबर और उस पर छतरी हो थी - परन्तु अकबर ने चीतोड़ विजय करके - (जिसकी उस ने मान्ता मानी थी) ख्वाजाजी की दरगाह में बहु मुल्य मकान बनाये - कबर पर जड़ाऊ मुकबरा बनाया - जिसमें हीरा - पन्ना - और भांति भांति के नग जड़े हैं - और चीतोड़गढ़ के नक्कारों की जोड़ी स्वन चिराग - और फाटक - घड़ियाल आदि चढ़ाई - आगरा से नंगे पांव अजमेर को आया - और कोस कोस पर कुंवा - और मीनार बनवाया - जो आज लों मौजूद हैं - हर एक मीनारे पर नक्कारा लेकर आदमी बैठा था - जिस वक्त अकबर दरगाह में पहुंचा - तो उस के हुकम से कोस कोस पर नक्कारा बजने लगा - जिससे उसकी मां को आगरे में उसी दम खबर होगई कि अकबर इस वक्त दरगाह में है - कबर के गिर्द मरहटों का बनवाया हुआ चांदी का कठरा है - इस दरगाह की जागीर में १८ ग्राम ३७ हज़ार की जागीर के हैं - और ४३००) रुपया साल हैदराबाद दखिन से आता है - दोनों वक्त ६ मन जौ का दलिया पका कर गरीबों को बांटा जाता है - जिसको लंगर कहते हैं - रजब महीने की पहिली से सातवीं तो मेला लगता है - ॥

पुष्करजी अजमेर से ३ कोस पश्चिमोत्तर दिसा में हिन्दुओं का बड़ा तीरथ है -

यहां ब्रम्हाजी महाराज ने यग्य किया था और मात्र देवता एकत्र हुए थे- शास्त्र में इस को प्रथवी की दाहनी आंख लिखा है- इसी कार्ण से इस में स्नान करने का इतना बड़ा महातम है- जितना समसत तीर्थों में नहाने से होता है- पुशकर के गिर्द- बड़े २ मन्दर और घाट महाराजाओं और रईसों के बनाये हुए मौजूद हैं- जिन में ब्रम्हाजी और अर्रसिंह जी के मन्दिर देखने के योग्य हैं- पन्डे यहां के दो भांति के हैं- एक बड़ी बस्ती दूसरे छोटी बस्ती वाले कहलाते हैं- महाराजा साहब जैपुर व जोधपुर और बादशाही सनदों में छोटी बस्ती वाले असल पन्डे साबित हुए हैं- पुशकरजी की जागीर बहुत पुरानी है- परन्तु पीछे जहांगीर बादशाह और फर्रुखसियर ने खास फरमान के जरिये से जागीरें दी हैं- कार्तिक में बहुत बड़ा मेला लगता है-जो ६ दिन लों रहता है- ॥ (कार्तिकसुदी १० से पुन्यु लों)

पराचीन वस्तुओं में से ढाई दिन का झोंपड़ा (इन्द्रकोट का जैन मन्दिर जिस को शम्सुद्दीन अल्तमश बादशाह ने मसीत बनाया है) और सी से और लोहे की- खानें- आना सागर- और बीस्ला तलाव है- बीस्ले के गिर्द राज भवन थे- कंवल- के फूल इस में खिले रहते थे- ११०० पुतलियां मकराने के पत्थर की थीं- एक पुतली के सिर से फुव्वारा छोड़ने में समसत पुतलियों के सरों से फुव्वारे चल पड़ते थे-यह शोभा इस की मरहटों के समय लों थी- परन्तु अब तो घुड़दौड़ का मैदान और जंगल है- हाय* **दौलतखाना** इस को अकबर बादशाह ने बनवाया था- (अब सरकारी तहसील आदि कचहरियां हैं- और मेगज़ीन कहलाता है) **दौलत-बाग़** (जहांगीर ने आनासागर के बन्ध पर बनाया था) तारागढ की नाल- अजैपाल जोगी की कुटी वगैरा वगैरा देखने के योग्य हैं-॥

तवारीख

सं- ७४० में अजैपाल की छठी पीढी में दूल्हाराय चौहान अजमेर का राजा

*- अंग्रेजों के पहिले दूत मिसटर रो ने जहांगीर बादशाह से यहीं भेंट की थी-॥

हुआ - इनके समय में खलीफ़ा वलीद अबदुलमल्क की सैना क़ासिम सिंध के रास्ते से घोड़ों की सौदागरी के भेस में चढ़ आया - और दूल्हाराय और उसके पुत्र को क़तल करके गढ़ बीटली विजय कर लिया - और राजा का भाई **मानिकराय** सांभर को भाग गया - जिसने देवी के बताने से वहां साकम्बरी देवी का मन्दिर बनाया - इस मामले का पता प्रथीराज रासे के इस दोहे से मिलता है - **दोहा**

सम्वत सात सौ इकतालिस मालत पानेवीस । सांभर आया ताने सरस मानिकराय स्वरीस -॥ थोड़े दिनों पीछे राजा **हर्सराज** चौहान ने मुसलमानों से अजमेर छीन लिया - नासरदीन हारकर चला गया - हर्स के पीछे राजा **बीरबीसलदेव** गादी पर बैठा परन्तु महमूद ग़ज़नवी के हाथ से क़तल हुआ - फिर सम्वत ९६६ में राजा **बिसलदेव** पाट बैठा - राजपूताना, गुजरात मालवा आदि के मात्र राजाओं को साथ लेकर महमूद ग़ज़नवी से युद्ध किया - सात दिन जों घमसान की लड़ाई रही - आठवें दिन बिसलदेव की सैना भाग गई - बिसलदेव को यवनों ने पकड़ लिया - और क़तल का हुकम दिया - परन्तु मुसल्मान मत धारण करने पर उसकी जान बख़शी की गई - अजमेर में बीसलसर ताल इसी ने बनाया था - बीस वर्ष मुसल्मानों का राज रहा - फिर चौहानों ने **सालार ग़ाज़ी** से छीन कर **सारंगदेव** को गादी पर बिठाया उस के पीछे **आनादेव** राजा हुआ जिसके नाम से आनासागर तालाब आज जो अजमेर में है - फिर **जैपाल** उसके पीछे **अनन्ददेव** हुआ - इसने पोहकरजी का बंध बंधवाया - फ़िर धर्मेस्वर देव हुआ - इसने अपनी शादी दिल्ली के राजा **अनंगपाल** तंवर की बेटी से की थी - उसी के पेट से सम्वत १११५ में **प्रथीराज** चौहान या रायप्रिथौरा हिन्दुओं का पिछला महाराजा उतपन्न हुआ - यह सम्वत १२२२ में, ३ लाख सवार ४ लाख पैदल १५० राजा और ३००० हाथियों की फ़ौज साथ लेकर **तलावड़ी** के मैदान

में दूसरीवेर **शहाबुद्दीन** गोरी से लडा - परन्तु हार कर पकडा गया - और मुसल-
मानों को कैद में भेजा उसका भाई खांडेराय ८१ हजार आदमीओं समेत मारा-
गया - हिन्दू मुसल्मानों में यह पिछला महा युद्ध था - फिर ऐसा नहीं हुआ - शाह
बुद्दीन ने सन ११९३ में अजमेर को विजय करके लूटा - और इन्द्रकोट में राजा
इन्द्रसेन बोधका जो मन्दिर था - उस को तोड फोड कर बरबाद कर दिया और
बंगाला - बिहार - दिल्ली - कनोज आदि को बिजय करके अपनी ओर से अपने
गुलाम **कुतबुद्दीन** को राज सौंपकर आप ईरान को चला गया - कुतबुद्दीन से
सकने सं० १२५२ में **मीरां सैयद हुसेन** मंगलवार को अजमेर का किलेदार
नियत किया - जिसको सं० १२५८ में राजपूतों ने रात को किले पर चढ कर धावे
या - इसकी दरगाह किला तारागढ पर है - और ३ गांव जागीर के हैं - जिनकी आ
मदनी से दरगाह का खर्च चलता है - दूसरी बर्ष अजमेर राजपूतों से उलटा छी-
ना गया - और कुतबुद्दीन की जगह **शम्सुद्दीन** अलतमश सम्बत १२७६
में हिन्दोस्तान का बादशाह हुआ - उसकी ओड से **अहमद** नामक सूबेदार-
अजमेर आया - और सं० १३६७ में **अलाउद्दीन** खिलजी ने राज पाकर
बाबुद्दीन बेग को अजमेर का किलेदार नियत किया - सम्बत १३८८ में **म**
हम्मदशाह तुगलक के राज में सूबेदारों ने सरकश होकर मालवा के सूबेदा-
र ने अजमेर - और गुजरात वाले ने नागौर दबा लिया - सं० १४१५ में मेवाड के महा
राना कुंभा ने **महमूद** खिलजी से अजमेर ले लिया - परन्तु थोडे दिनों पीछे -
महमूद ने राना से लड कर उलटा छीन लिया - और पहिले ख्वाजा न्यामतउल्ला और
फिर सं० १५१९ में **मलूखां** को अजमेर का सूबेदार नियत किया - इस मलूखां-
के बनाये हुये तलाव छोटा मलूसर - और बडा मलूसर आज लो मौजूद हैं जिनके -
पक्के घाटों और बनावट को देख कर अकिल दंग रह जाती है - सम्बत १५८८ में

सुलतान **बहादरशाह** गुजराती ने समसत मेवाड़ और गढ़ **चीतौड़** विक्रमादित्य महारानासे छीनकर खिलजी से अजमेर और मालवा का सब मुल्क लेलिया परंतु १५९२ में हुमायुं बादशाह ने मन्दसौर के निकट बहादुरशाह को मार भगाया और वह खम्बायतकी ओर भाग गया हुमायूं उलटा बंगाले को गया- पीछे से महाराना ने चीतौड़- और जोधपुर के राव मालदेव ने अजमेर दबा लिया- सं॰ १६०० में शेरशाह ने बादशाह बनकर अजमेर और नागौर लेलिया - और उसके मरने पर फिर राव मालदेव ने कबज़ा कर लिया - परन्तु ९ वर्ष पीछे सं॰ १६१४ में अकबर बादशाह के वज़ीर सरदार **महरमकुलीखां** ने राव से **जेतारन** समेत छीनकर अजमेर को खालसा में मिला लिया- उससमय से लेकर सं॰ १८०८ लो कि महम्मदशाह बादशाह की बदचलनी के कारण मुग़लों की हुकूमतका जहाज़ शोक समुद्र में डूबरहाथा अजमेर खालसा ही रहा और बादशाही सूबेदार महा रहतारहा - परन्तु सं॰ १८०८ में जोधपुर के महाराजा बखत सिंह जी ने सूबेदारी का दावा करके अजमेर को मारवाड़ में मिला लिया- और सं॰ १८१२ में-

अप्पाजी सेंधिया ने मारवाड़ से ले लिया- सं॰ १८४४ में जैपुर और जोधपुर ने मिलकर टोंक के निकट **माधोराव** सेंधिया को मार भगाया- और दुबारा मारवाड़ का कबज़ा अजमेर पर होगया- परन्तु सं॰ १८४७ में सेंधिया ने समस्त राजपूताना को काबू करके अजमेर को भी मारवाड़ से लिया- और २७ वर्ष राज करके सं॰ १८७५ में अहदनामा के अनुसार सरकार अंगरेज़ी के हवाले करदिया- जो **शाह आलम** बादशाह के कायम मुकाम बनकर आई थी- जून सन १८१८ ई॰ में सरकारी फ़ौज ने अजमेर पर कबज़ा किया और सेंधिया का सूबेदार **बापूराव** लाचार होकर अजमेर छोड़ गया- तात्पर्य यह है कि ९७४५ वर्ष में पठान- लोदी- तग़लक़- चौहान- मांडोगढ

के मुसलमान बादशाह - मारवाड़ के राठोड़ - मुगल बंसके बादशाह - सेंधिया
और अंगरेज़ सात भिन्न भिन्न के बंसों ने अजमेर में राज्य किया - और अब सातवें
वंस में अंगरेज़ी सरकार का राज्य है - ईश्वर इसे सदा कायम रक्खे - ॥

अंगरेज़ी राज्य में आज लों जितने हाकिम हुए हैं - इनके नाम यह हैं -
कर्नल डिकसन साह - वेलडर साहब - मॉड लेटिन साहब - कमेन्डस
साहब - लाकट साहब - मेजर अलगज़ेंडर सिपर साहब - एडमेन्सन साहब
टेरेवलन साहब - मेगनाटम साहब - डिकसन साहब - लारंस साहब - लायड
साहब - बरक साहब - रेपटन साहब - सांडरस साहब - पलोडन साहब - टेवर
साहब - मारटंडेल साहब (जो अब मौजूद हैं) इनमें से पहिले डिकसन साहब
ने फिर मगलाटन साहब - और फिर सांडरस साहबने अजमेर के ज़िले को बहुत
कुछ उन्नति दी - तालाब - बावड़ियां बनवाईं - गांव बसाये - जागीरदारों का -
कर्ज़ उतारा - डिकसन साहब जिन्हों ने ब्यावर या नया नगर बसाया - और -
मेगनाटन साहब हिन्दोस्तानी पोशाक पहिनते थे - और देशी भोजन खाते थे -
धोती पहिनकर रहते थे - और हिन्दोस्तानी हुक्का पीते थे - देशी भाषा बोलते -
और गरीब किसानों के घरों में घूमते थे - जिससे आज लों इस देश के लोग उन
को श्रीजी से याद करते हैं - और कर्नल डिकसन साहब की कबर पर जो ब्यावर -
में है - फूल चढ़ाते हैं - ॥

अजमेर के जागीरदारों का हाल

अकबर बादशाह से पहिले की कोई जागीर अजमेर में नहीं है - अकबर के -
अहद से जो राजाओं के भाई बंद हैं किसी कारण से रियास्तें छोड़ २ कर बादशाही
चाकरी में आये - उनको अजमेर ज़िला के खालसा में से जागीरें दी जाती थी -
मिनाय - खरवा - मसूदा - गोविन्दगढ़ वगैरा के राठोड़ों को अकबर बादशाह

ने जागीरें बख्शीं - जहांगीर ने किशन सिंह राठोड़ को जागीर दी जो आजदि न किशनगढ़ है - **शाह जहां** ने महाराना अमरसिंह के बेटे **सुजान सिंह** सीसोदिया को खालसा का परगना फूलिया जागीर में इनायत किया - जिसका अब शाहपुरा होगया - इसी बादशाह ने गोकलदास सीसोदिया को तीन हज़ारी मंसब और जागीर दी थी जिसकी औलाद अब **सावर** की जागीरदार है - **आलमगीर** ने सुजान सिंह और जुझार सिंह राठोड़ को जागीर दी थी ; जिन की औलाद अब जूनिया की जागीरदार है - अजमेर में दो प्रकार के जागीरदार हैं - पहिले इस्तमरारदार और दूसरे माफीदार कहलाते हैं - माफीदारों के कब्ज़े में एक लाख रुपया सालाना की जागीर - और इस्तमरारदारों के कब्ज़े में ५ लाख ६० हज़ार की जागीर है - इसमें से इस्तमरारदार १ लाख १४ हज़ार ९५४ रुपया ९ आना ११ पाई सालाना सरकार में रेख भरते हैं - माफीदारों से कुछ नहीं लिया जाता - बड़े २ ताज़ीमी इस्तमरारदार (जागीरदारों) के नाम यह हैं ॥ भिनाय - सावर - मसूदा - जूनिया - महरौन - पीसांगन - बांदनवाड़ा - खरवा - गोविन्दगढ़ - बागसोरी - बांधनवाड़ा - राजगढ़ - वगैरा - जिन में ताज़ीमी तो यही दस हैं - जिन के नामों पर हमने लकीर खींच दी है - इनके सिवाय सात छोटे दर्जे के इस्तमरारदार हैं - जिनकी आमदनी कडेल के सिवाय दो हज़ार से अधिक नहीं है -*

राजपूताने की मजमूई कैफ़ियत

राजपूताना (या राजस्थान) हिन्दोस्तान के पश्चिम भाग के बीच में है इस के उत्तर में पंजाब - पश्चिम में सिंध व गुजरात - दक्षिण में माही कांटा और मालवा - पूरब में गवालियार - और सरकारी राज है - चौड़ाई गढ़ भटनेर

* माफीदार खाजाजी की दर्गाह व मीरांजी की दर्गाह आदि ७ है वो ही रेख नहीं भरते - म. मुराद अली

लम्बाई धौलपुरसे जैसलमेरकी

राज्यबीकानेरसे थौंसवाडा लों ४६० मील- ओर सन १८८१ ईस्वी

पश्चिमीसीमालों ५३० मीलरकबा १३०००० मीलमुरब्बा- आदमीओंकी-

की मरदुमशुमारी (मनुष्यगणना) के अनुसार १२३०० १५० दूसरीकौमें ६३४०००

आबादी है- जिनमें राजपूत ४८०००० महाजन ८०६००० अहीर-

चमार ५६७००० मीना ४२८००० गूजर ४०३००० जाट ४२६००० ईसाई १२०००है

१३१००० इनमें जैनमतवाले ३८४००० मुसलमान ८६०००० रुपया ११ आना ८ पाई

आमदनी समस्त राजपूतानाकी ३ करोड़ २२लाख ५५३ आमदनी भी है)

सालाना है - ॥ (इसमें सरकारी जिले अजमेर की आम दक्षिण दिसा से-

पहाड़. - राजस्थान में अरबली नामी परबत पूरब और इसकी सबसे ऊंची चोटी

शुरू होकर फैलता हुआ पश्चिम को चला गया है- यह चोटी सतह समुन्दर से ५५००

आबू है- जो सिरोही राज्यके इलाके में है- निकली है- यह पहा

फीट ऊंची है- इस देश की समसत पहाडियां इसी परबतसे लोहा सीसा

ड़ कहीं हरसबज़ और कहीं सूखा है- और इसकी बहु धाटी करियों में- मकराना का संगमरमर- सरवाड़-

गंधक- कोयला और बहु मूल्य पत्थर हैं- जिनमें (कालापत्थर) बहुत ही की

और मेवाड़ का तांबा- और डूंगरपुर का संग मूसा बिनास - और-

मती हैं ॥

नदियां - इस देशमें बहुत हैं- उनमें सबसे बडी- लोनी- **विंध्याचल**

चम्बल हैं- इनमें से चम्बल १२ महीने बहती रहती है- चम्बल मेवाड़ से निकलकर-

परबतसे और बिनास - **अरबली** परबत इलाके

इटावाके निकट जमनाजी मे जा मिली है- ॥ (यह अब फूटा हुआ पडा है) चीतोडगढ-

किले भी बहुत हैं- जिनमें से तारागढ़ आदि पुराने और परसिद्ध हैं- ॥

मांडलगढ़- रंतभंवर- आंबेर- भटनेर

नमक कीखानें बहुत हैं - परन्तु डीडवाना-पचभद्रा-फलोदी-सांभर यह चारखाने मारवाड़ राज्य मे पसिद्ध हैं जिनमे से सांभरकी झील २२ मील लम्बी और ६ मील चौड़ी है - इसका लोन बहुत ही उत्तम होता है- पहिले बादशाही खालसा में थी - मुग़लों की बादशाहत जाने पर मारवाड़ ने उसपर कबज़ा कर लिया - परन्तु थोड़े दिनो पीछे नवाब अमीरखां ने दखल करके अपना थाना बिठाया - जब मीरखां चले गये - तोमारवाड़ और जैपुर दोनो ने मिलकर सं- १९४६ में एक लाख २५ हज़ार रुपय पर सरकार को सांभरका ठेका देदिया - और ना वाका ९ लाख सालानापर दूजारा दिया गया - और १० मई सन १८७९ ई॰ को दरबारमारवाड़ ने - डीडवाना - पचभद्रा - फलोदी और लोनीका भी ५ लाख ३५ हज़ार ५८५ रुपया सवा पाव आना सालानापर सरकार अंगरेज़ी को २१ वर्ष के लिये ठेका देदिया - ॥

राजपूतानाके चार भाग

सरकार अंगरेज़ी की अमलदारीमें बन्दोबस्तकी आसानीके लिये - राजिस्थानके चार हिस्से कियेगये - और हर एक हिस्से का निगरां जिसमें कई रजवाड़े होते हैं एक२ रज़ीडेन्ट नियत कियागया जिसका - व्रतान्त इसतरहपर है -

जनूबीराजपूताना रज़ीडेन्ट साहब उदेपुर मे रहते हैं - और डूंगरपुर परतापगढ़ - बांसवाड़ा आदि रियास्तें इसरज़ीडन्सी की निगरानी में हैं ॥ *

मग़रबीराजपूताना रज़ीडन्ट साहब जोधपुर में रहते हैं और सिरोही जैसलमेर की रियास्तें व मलानी उनकी निगरानी में हैं ॥

मशरक़ीराजपूताना रज़ीडन्ट साहब जैपुर में रहते हैं - किशनगढ़

[१ उसपर कब्जा कर लिया और आज लौं दोनो ही का कब्जा है परन्तु दरबार मारवाड ने ०]

* कोटड़ा - छावनी खेरवाड़ा दोनो स्थानों में असिसटन्ट रजीडन्ट मेवाड़ रहते हैं जो मोगियों और पहाड़ी भीलों की नगरानी भी रखते हैं - मु॰ मुरादअली - ॥

और शेखावाटी इनकी निगरानी में है ॥

एजन्सी हाडोती - एजन्ट साहब देवली में रहते हैं - टोंक-कोटा -
बूंदी- झालावाड- शाहपुरा आदि इनकी निगरानीमें हैं ॥

इनके सिवाय **करोली- भरतपुर - अलवर- बीकानेर -**
कोटा- झालावाड- में खासतौर पर पोलीटिकल एजन्ट रहते हैं
यह चारो रज़ीडन्सी और एजन्टी साहब रज़ीडन्ट राजपूताना के मातहत हैं
जो **आबू** पर रहते हैं और ज़िला **अजमेर** की चीफ़ कमिश्नरी का
अधिकार भी रखते हैं - और जनूबी रज़ीडन्टी के दो अंगरेज़ असिस्टन्ट
कोटरा और खेरवाडा में भी रहते हैं - जो सरकारी सैना के अफ़ीसर हैं
और बांसवाडा वग़ैरा रियास्तों की निगरानी रखते हैं - जोजो रियास्तें -
जिन २ रज़ीडन्टों की निगरानी में हैं वह अपने २ वकील रज़ीडन्टी में रख
ती हैं - और यह सब मिलकर पंच वकला कहलाते हैं - और अपनी रिया-
स्तों के मुशतरका मुकदमें फैसल करते हैं - ॥

राजपूताना में सरकारी फ़ौज

इन्तज़ाम और वक़्त पर काम लेने के लिये राजपूताना की हद में निम्न
लिखे हुए पांच स्थानों में सरकारी फ़ौज रहती है - नसीराबाद - देवली-
एरनपुरा- खैरवाडा- अजमेर- इनमें से नसीराबाद और अजमेर की
फ़ौज कवायद जान्ती है- बाकी बेक़ायदा है- नसीराबाद में एक तोपखा
ना-गोरों की एक पूरी रिजमेन्ट- और पूरा ६०० सवारों का रिसाला रहता है
समस्त सरकारी सैना की तादाद जो उक्त स्थानों में रहती है ४०५० आद
मी है- इनमें से ९९८ गोरा और बाकी देसी सैना हैं- नसीराबाद और
अजमेर का खर्च सरकार देती है- बाकी फ़ौज का खर्च रियास्तों से इसतरह

पर लियाजाता है- **देवली** की फ़ौजके लिये कोटासे २ लाख सालाना- **ऐरनपुरा** के लिये जोधपुर से एक लाख ९१ हज़ार - **खैरवाड़ा** के लिये उदैपुर से ५० हज़ार सालानालियाजाता है- (रजवाड़ों की कुल फ़ौज १५०००[१] गिनी जाती है)

सरकारीखिराज

राजिस्थान के समसत रजवाड़ों और ज़िला अजमेर के जागीरदारों से मिलाकर कुल २१ लाख रुपया सालाना खिराज सरकार को वसूल होता है-॥४

शाहिन्शाहीको दीनेवाली सैना

स० १८८७ मे कि ४ वर्ष हुये जे **पंज देह** नामी स्थान जो जोकाबुल की पश्चमी सीमा पर है- रूसी चढ़ आये थे- तो हिन्दोस्थान में कोलाहल मच गया था- उस समय पहिले पहिल हैदराबाद दखिन की रियासत ने सरकार की सहायता में ६० लाख रुपया दिया और कहा कि यह रुपया हिन्दोस्तान की हिफ़ाज़त में खर्च कियाजाय - सरकारने दरबार दखिण का शुकरिया (धन्यवाद) अदा किया- परन्तु रुपया लौटादिया- क्योंकि इतनी बड़ी सल्तनत की शान के खिलाफ़ है- कि खिराजगुज़ार दोस्त रईसों से यों रुपया वसूल करे- परन्तु इसबात को सरकारने मंज़ूर किया कि जो रियासत सरकार की सहायता के लिये अपनी ओर से फ़ौज देगी (जैसाकि मुसलमान बादशाहों के दरबार में समसत देसी रियास्तें चाकरी करती थी और अपनी २ फ़ौजें लेकर वक्त परसाथ होती थीं) तो सरकार मनज़ूर कर सक्ती है- उसी दिनसे हिन्दोस्तान की बहुतसी रियास्तों ने सरकारके हज़ूर में फ़ौजें देनेकी दरख्वास्तें भेजनी शुरू करदीं- और सरकारने भी उनकी दरख्वास्तों को मंज़ूर कर लिया- किन्तु यह कहा कि जिस फ़ौजको आप देना चाहते हैं उसको

[१] फ़ौज खर्चे जिसका ब्योरा ग्रंथ कर्त्ता ने किताब में लिखा है इस रकम में शामिल नहीं है- मा० मुरादअली

सरकारी फौजके समान कवायद सिखाकर लैस रखना चाहिये-ऐसाही हुआ इन फौजोंका नाम इम्पीरियल सर्विस - शाही खिदमात की फौज रखा गया* और वर्दी-तन खाह - हथियार आदि सरकारी सेना के समान दियेगये-और तीन अंगरेज-सरकारी सेना के सरदार सरकारने ऐसी रजवाडों की उक्त फौजों पर अफसर नियत किये हैं जो साल भर में दो चार बेर इन को संभालते और कवायद लेते हैं इसके उपरान्त यह भी हुकम है - कि रियासत के निकट जो सरकारी छावनी हो वहां यह फौज सरदी के मौसम में तीन महीने रहकर कवायद सीखे - हमारे सूबे में निम्न लिखी हुई रियासतों ने फौजें दी हैं - जोधपुर १ रिसाला - बीकानेर ऊंटों का १ रिसाला (या शुतरसवारों का रिसाला) जैपुर - फौज - की बार बरदारी के लिये १००० टट्टू सामान समेत - अलवर - १ पियादा - पलटन - भरतपुर १ सवारों का रिसाला - उदैपुर १ पैदल पलटन - जिस रियासत की जो फौज है उसका समस्त खरच रियासत ही के ज़िम्मः है - ॥

राजपूताना में विद्या की उन्नती

सबसे पहिले जैपुर के महाराजा राम सिंह जी स्वर्गवासी ने जैपुर नगर में - स्कूल जारी किया था जो आज के दिन महाराज कालिज कहलाता है - अव्वल दर्जे की तालीम इसमें दी जाती है - सन १८७० ई० के पीछे जोधपुर - उदयपुर बीकानेर - अलवर - भरतपुर - धौलपुर - झालावाड - टौंक - शाहपुरा करौली - कोटा में बडे २ स्कूल जारी होगये - जिन में आज के दिन अंगरेजी फारसी - हिन्दी खूब पढाई जाती है - मेवाड - मारवाड - बीकानेर - अलवर - भरतपुर में मातहत हकूमतों के अन्दर भी पाठशाले जारी होगये हैं - इन - सब स्कूलों के विद्यार्थी अजमेर गवर्नमेन्ट कालिज की निगरानी में हरसाल परीक्षा देने को आते हैं और प्रति वर्ष विद्या की उन्नति राजपूताना में होती जाती है - ॥

* अंग्रेजी में इमपीरियल सर्विस कहते हैं - म० मुराद अली होशियार - ॥

† बडे सरदार का नाम करनैल मेलस साहिब है - ॥ उक्त फौजों की देखभाल इन्हीं के सुपुर्द है - म० म० अली - ॥

नम्बर गिनती	नाम रियासत	ख़िताब रईस॥	नाम रईस व जाती	त
१	उदेपुरमेवाड़	महाराना	फ़तहसिंहजी सीसोदिया	अपने रिश्ते राजा… और अन्तसमयसी… महाराना फ़तहसिंहजी… का अव्वलमिला है॥
२	जैपुर	महाराजा	माधोसिंहजी(२) कछवाहा	…कातमग़ा मिलाहै- …७०ई०में मशीरकैसरकीप
३	जोधपुर	महाराजा	जसवन्तसिंहजी (२)राठोड़	…गारुजीअव्वलमिला है-
४	बीकानेर	महाराजा	गंगासिंहजी बीकाराठोड़	…धपुरसे निकले हैं॥
५	बूंदी	महाराणवराजा	रघुवीरसिंहजी हाडा	…दरबार सन १८७७ ई० …था॥
६	कोटा	महाराव	उमेदसिंहजी हाडा	…दी से निकले हैं
७	टोंक	नवाब	ख़्वराईमग़नीखांसा हब पठान	…मिनाहै॥
८	भरतपुर	महाराजा	जसवन्तसिंहजी जाट	स
९	करौली	महाराजा	भंवरपालजी यादोवंस राजपूत	स
१०	अलवर	महाराजा	जैसिंहजी कछवाहा नरूका	स…सिंहजी स्वर्गवास की सरकार॥ अभी नाबालिग है जैपुर

नम्बर गिन्ती	नाम	खिताब रईस	नाम रईस व जाती	रियासत किस सन अंगरेजी में कायम हुई	रकबा मील	कितने
११		महाराजराना	ज़ालिमसिंहजी झाला	१८३८ई॰	२५००	३४०४
१२	धौलपुर		निहालसिंहजी जाट	१०६१ई॰	१६२६	२४६६
१३		महाराजा	सिंहजी राठौड़	सन१६०८ई	७२४	११२
१४	जैसलमेर		जी भाटी	सन७३१ ई॰	१२२५२	१०८१
१५	सिरोही	महाराव	केसरीसिंहजी देवड़ाचौहान	सन१२८४ई॰	३०२४	१४३९
१६	डुंगरपुर	महारावल	उदैसिंहजी सीसोदिया	सन१३२५ई	१०००	१५३३
१७	बांसवाड़ा	महारावल	लछमनसिंहजी सीसोदिया	सन१५२१ई॰	१५५०	१५२८
१८	परतापगढ़	महारावत	रघुनाथसिंहजी सीसोदिया	१५३४ई॰	१५००	१७९
१९	अजमेर		मिस्टरमार्टण्डलसाहब बहादुर	१८१८ई॰	२७५५	४६०६

नोट कमिश्नरी के उपरान्त ७ का चहरियां खास अजमेर में और २ ब्यावर में और यह सब कमिश्नरी को फौजदारी मुकदमों के फैसले का अधिकार है

मयो कालिज अजमेर

राज पूताने में ऐसा कोई पाठशाला नहीं था जिस में राजा महाराजओं के पुत्र सिक्षा पाये अतएव सन १८७० ईसवी मे हिन्दुस्थान के गवर्नर जनरल श्री मान लार्ड **मयो साहिब** बहादुर स्वर्गवाशी ने (जिन को काले पानी अर्थात इन्डेमान के टापू मे एक उमर केदी मुसलमान ने छुरी से मार डाला) अजमेर में दरबार किया जिस मे इस सूबे के समस्त राजा महाराजा एकत्तर हुये थे इस दरबार में लाट साहिब ने कहा कि रईसों की औलाद के लिये एक कालिज होना अवश्य है इस बात को सब रईसों ने मंजूर करके सालाना चंदा देना स्वीकार किया और ६ लाख से अधिक उसी दम एकत्तर होगया और लाट साहिब ही के नाम से अजमेर मे मयो कालिज बना या गया इस में राजपूताने के रईस जिन की अवस्था २१ वर्ष से कम हो सिक्षा पाते हैं सिपाहियाना करतब भी सिखाये जाते है सब रईसों के एक जगह रहने से एक दूसरे में मुहब्बत हो जाती है और पिछला रंज दुखजो सैकडों बरसो से चला आता था दूर हो जाता है यह सरकार की राजनीती है ॥

॥ तवारीख के मुतअल्लिक जानने के योग्य बातें (मनसब)

इस ग्रंथ में बहुत जगह माही मरातब और मनसब का शब्द लिखा गया है इस लिये हम चाहते हैं कि पाठकों को इन शब्दों के मतलब से वाकिफ करें ॥

विदित हो कि **मनसब** एक मुलकी और फौजी दर्जा है **मौलवी उबैदुल्लाह फरहती** ने तुहफे राजिस्थान में आईन अकबरी के हवाले से लिखा है कि मनसब और माही मरातब दोनो **अकबर बादशाह** के समय मे हिन्दुस्थान में प्रचलित हुये है अकबर से पहिले बादशाह १०० और १००० नम्बर के सरदार रखते थे परन्तु अकबर बादशाह ने गादी पर बैठ कर इस रीति को

कायदे के साथ प्रचलित किया मनसब में २ भाग किये एक जात दूसरा सवार का जात से मतलब ओहदेदार की तनख्वाह अर्थात पंजहजारी को ५ हजार और ७ हजारी को ७ हजार रुपया महीना बादशाही खजाने से जागीर के उपरान्त तनख्वाह मिलती थी और सवार से उसकी फौज की जामईयत समझी जाती थी- बादशाही राज्य में फौज के अंदर सबसे जियादह इज्जत इक्कों की थी और उनसे बढ़ कर मनसबदार गिने जाते थे जिसका मनसब अधिक होता था वही युध्ध के समय सेना पती नियत किया जाता था **अकबर** के समय से **आलमगीर** के मरने लों अव्वल दरजे के सरदारों को केवल ५ हजारी मनसब मिलता था और ७ हजारी किसी मंत्री या खास मुसाहिब को दिया जाता था १०-२०- अथवा ३० हजारी मनसब शाहजादों ही को मिल सक्ता था- राजपूताने के रईसों मेसे **मिरजा राजा मानसिंह** कछवाहा को अकबर ने और **महाराजा जसवन्तसिंह** राठोर को शाहजहां बादशाह अकबर के पोते ने सात २ हजारी मनसब दिया था और किसीको न्हीं मिला- बीकानेर के **रावरायसिंह** और बूंदी के **रावरतन** ने पांच २ हजारी मनसब का कुर्ब पाया था आलमगीर के पीछे **किशनगढ** वालों को **मुहम्मदशाह** बादशाह ने भी जो उनका भानजा था यह कुर्ब दिया था परन्तु बिना तनख्वाह के केवल जबानी जमा खर्च होने से लोगों की नजरों में उस का कुछ मान न्हीं किया गया (यह भूल है सरकार अंग्रेजी का खिताब भी तो जबानी जमा खर्च है बल्कि खिताब पाने वाले को उल्टा कई हजार रुपया खर्च करना पडता है परजो उसका मान न करे मूर्ख है) -॥

माहीमरातब

माही फारसी मे **मछली** को बोलते है और "चांदवाली" भी इसका

अर्थ है और मरातिब मामरतबा दर्जे को कहते हैं - इस का ब्रत्तान्त पुराने इतहासों में यों लिखा है कि ईरान के बादशाह **नोशेरवां** के पोते **खुसरो** को जब देश निकाला दिया गया तो वह रूम में जहां के बादशाह की बेटी **शीरीं** नामी उसे बियाही थी चला गया और वहां से फौज की मदद लेकर अपने देश पर चढाई की रूमी फौज की सहायता से उसने ईरान विजे कर लिया - फतह पाने के समय चन्द्रमा मीं (मछली) का या खुसरो ने उस चन्द्रमां को अपने लिये जो तिस के अनुसार अच्छा शगून समझ कर सरदारों को जो निशान दिये उन पर चांदी सोने से चन्द्रमां और मछली की मूर्त्यां बनाकर लगादी थीं इसी चीज का नाम माही मरातब पड गया - मुगल बादशाहों ने भी जो ईरानियों के पडोसी होने के कारण बहुधा बातों में उन की नकल उतारा करते थे हिन्दुस्थान में इस का रिवाज दिया और पांच या सात हजारी मनसब वालों को माहीमरातब मिलता था - ॥

सरदार या जागीरदार

राज पूताने की मात्र रियास्तों में तीन अथवा चार दर्जे के जागीरदार है जिन को किसी बहादुरी या रईस की रिश्तेदारी के कारण जागीर मिली है - पहिले दर्जे की जागीरें लाख से सवा - डेढ लाख तक की हैं इनको साल भर में दसेहरा या शादी गमी के मौके पर दरबार में हाजिर होना पडता है मेवाड में ३ महीने और जोधपुर - जैपुर में शाल भर तक जमईयत रखनी पडती है पहिले जमाने में यह लोग फौज के सरदार बनकर चाकरी देते थे किन्तु आज दिन अमन व अमान होने से इनको साहिब लोगों की पेशवाई या राज्य के कामों मे सलाह देने का काम पडता है ऐसे सरदार बहुत कम हैं मेवाड में १६ - जोधपुर में ८ और जैपुर में १२ - और कोटा में ३ बाकी रियास्तों में इनकी बराबर आमदनी का कोई सरदार नहीं है - **दूसरे** रईस की जात के सरदार होते है वह महाराज कहलाते है इनकी जागीरे २० हजार से ५० हजार तक है यदि कोई रईस लावल्द फौत होजाय

तो इनमें से जो नजदीक का हो उसका बेटा गोद लिया जाता है - ॥

तीसरे जागीरदार १० हजारी से ५० हजारी तक जागीरें रखते हैं यह भी राजधानी में अव्वल दरजे वालोंसे जियादह चाकरी देते हैं और राज्य के कामों में सलाह भी दियाकरते है **चौथे** दरजा के जागीरदार ५ हजार रूपये सालाने की जागीर से जियादह न्ही रखते यह परगनो में हाकिमो के पास चाकरी देते है - ॥

पांचवे दरजे के जागीरदार ब्राह्मण - चारन - मंदिरों के पुजारी - जोगी - अतीत आदि हैं इन के सिवाय उपर के चारो दरजे वाले जागीरदार रेख भरने के उपरान्त वक्त पर अपने स्वामी की चाकरी भी करते रहते हैं - ॥

हिन्दुसथान की मजमूई कैफियत

हिन्दुस्थान का कुल रकबा १५८०००० मील मुरब्बा है जिसमे से अंग्रेजी राज्य के कबजे मे ९१५००० मीलमुरब्बा और देशी रियास्तों के कबजे मे ६५०००० मील मुरब्बा जमीन है अंग्रेजी अमलदारी मे (सन १८९१ ई० की मनुष्य गिणना के अनुसार) ५२८०२७०० घर हैं जिनमें केवल २२०००००००आदमी बसते हैं - और देशी रजवाडो के राज्यमें १८०५६२१५१ हैं जिनमें ६६०००००० आदमी बसते हैं अंग्रेजी और देशी रजवाडो की समस्त आबादी २८७२८९७८३ आदमियों की है हिसाब से मालूम हुवा कि अंग्रेजी राज्यमें फीमील मुरब्बा २६२०७० और देशी रजवाडो मे फी मील मुरब्बा ९५११६ आदमी बस्ते है - पिछले (सन १८८१ ई० की मनुष्य गिणना को सन १८९१ ई० की मनुष्य गिणना के मिलाने से ज्ञात हुवा कि अंग्रेजी राज्य में पिछले दस वर्ष के अंदर सेकडे पीछे ९३ और देशी रियास्तों मे २३/२ आबादी की उन्नती हुई इन पिछले दस वर्षों में मरदों से स्त्रीयां अधिक उतपन्न हुई एक अध्भुत वात यहभी पाई गई कि अंग्रेजी राज्य मैं कन्या २२ फीसेकडा अधिक और देसी रजवाडों में लडके १६ फीसेकडा जियाद

उत्पन्न हुये जिसका ठीक कारण मालूम नहीं हुवा कि क्यों ऐसा हुवा ॥ सूबे बारे दरबार गया नोब्रह्मा देश मे सेकड़े पीछे २३ सिन्ध में २९ अजमेर मे १६ मन्दराज में ५३ बम्बई में १२ आसाम और अवध व पंजाब में ११ बंगाले में ८ की अधिकताई हुई ॥

हिन्दुस्थान के बड़े २ नग्रों की आबादी निम्नलिखे समान साबित हुई बम्बई ८ लाख २१ हजार ७६ आदमी - कलकत्ता ७ लाख ५१ हजार, १५० आदमी मद्रास ५ लाख ५५ हजार ५२० आदमी - हैदराबाद दक्षण (बाहर के मुहल्लों को मिलाकर) ४१५०० लखनौ २७३०३० बनारस (काशीजी) २१९५७० अमरतसर ३२९९८० इन के उपरान्त २२ शहर ऐसे हैं जिन की आबादी १ लाख से अधिक है बड़े नग्रों में से पटना - अमरतसर - मिरजापुर मे कुछ तरक्की न्हीं हुई - तोभी सन १८८१ ई० की मनुष्य गिणना का मुकाबिला सन १८९१ ई० की मरदुम शुमारी से किया गया तो मालूम हुवा कि पिछले १० वर्ष के अंदर हिन्दुस्थान की आबादी मे ३ करोड़ ३३ लाख ८६२०१ आदमियों की जियादती हुई इनमें से २५ करोड़ ६२ लाख आदमी अनपढ हैं और १ लाख २६ हजार कुष्टी - ४ लाख ८५ हजार अंधे एक लाख ९६ हजार गूंगे बहिरे और ८६ हजार दीवाने (पागल) ७ करोड़ ९ लाख १८ हजार आदमी बेकार हैं ॥ *

हिन्दुस्थानमे देशीरियासतें

हिन्दुस्थान में समस्त रियासतें छोटी बड़ी १०१ हैं जिनमे १५ पर मुसलमान रईस

इस मुआमले में हमारा यह अभिप्राय है कि अंग्रेजी राज्य में वैश्या और रंडियां आजादी से रहती हैं और हर प्रकार के भले बुरे आदमी खुले बन्दों काला मुंह करते हैं जिससे उनका बल घट जाता है व्यादक के अनुसार निर्बल मर्द हो तो स्त्री की मनी अधिक होने से कन्या और मर्द का बल गालिब हो तो लड़का उत्पन्न होता है (देखो ग्रंथ कानूनचा) म० मुरादअली ॥

* सन १८९१ ई० की मनुष्यगिणना १२८५०००० आदमी कुल हिन्दोस्थान में थे एक २ ने ६० घर या ३०० आदमियों की गिनती की मरदुम शुमारी १७ भिन्न २ जबानों मे लिखी गई कुल कागजात मरदुम शुमारी में लगे गिन्ती में ९ करोड़ थे और तोल मे २९० टन थे कागज से कागज जोड़ कर बिछाये जावें तो २५०० मील लम्बा [illegible] ॥ मुहम्मद मुराद अली ॥

और ८८ पर हिन्दू रईसों का कबजा है इन में से ३ मुगल १ बलोच ११ पठान -
६६ राजपूत ५ मरहठा २ ब्राह्मण ७ जाट १ जोगी ३ सिख १ नव्वा १ गूजर अ
हीर १ राज बंगशी १ ढेनर १ खत्री है - ॥

दुन्या के बड़े नग्रों की आबादी

आज दिन समस्त दुन्यां में बड़े और प्रसिद्ध ११ नग्र हैं जिनमे निम्न लिखे समान
आदमी बस्ते हैं (१) लेगडिन राजधानी इंगलिस्थान मे ४१ लाख ४८ हज
र ५२२ (२) पैरिस राजधानी फ्रांस २२ लाख ४४ हजार ५५० (३) बिरल
न राजधानी जरमनी १३ लाख १५ हजार ४११ (४) निउयार्क राजधानी इ
मरीका १४ लाख २ हजार २६६ (५) कुसतुनतुन्या राजधा
नी तुरकी रूम १२ लाख (६) वियाना राजधानी इसटिरया ११ लाख ३ हज
र ८५७ (७) सैन्ट पीटर्सबर्ग राजधानी रूस ९ लाख २९ हजार ॥
(८) कलकत्ता बर्तमान राजधानी हिन्दुस्थान ७ लाख २५ हजार ९४६ ॥
(९) फलाडलफिया मुल्क इमरीका ८ लाख ४७ हजार १७० ॥
(१०) बम्बई मुल्क हिन्दुस्थान ८ लाख २१ हजार ७६ (११) मासकू पुरा
नी राजधानी रूस ८ लाख ५३ हजार ४६८ - इस हिसाब से लेगडिन नग्र राज
धानी इंगलैन्ड की आबादी सब से अधिक पाई जाती है जिससे अंग्रेजों की उन्नती
का पूरा सबूत मिलता है ॥

॥ राजपूताने में राज्य करनेवाले राजपूत

सूर्यबंसी व चन्द्रबंसी राजपूत

हिन्दुस्थान में पहिले पहिल एक्ष्वाक नामी राजा सूर्यबंसी ने राज्य की जड ज
माई थी इनकी औलाद सूर्यबंसी कहलाती है - इनके पीछे बुध नामी एक मनुष्य
ने तातार से आकर राज एक्ष्वाक की पुत्री एला नामी से बिवाह किया इन की औलाद

चंद्रवंसी कहलाती है ॥ **सूर्यवंसी** राजपूतों में पहिले गहलोत फिरसी सो दिय: राठोर कछवाहे आदि हिन्दोस्थान और राजपूताने में राज्य करते आये हैं फिर **चंद्रवंसी बंस** के राजा भाटी - यादो - जारीजा - समतीजा आदि हैं जो हिन्दोस्थान के प्राचीन रईस माने जाते हैं राजपूताने के सिवाय इस बंस की बडी शाख भाटीयों का हुकूमत खुरासान - गजनी काबुलिस्तान - और पंजाब में बहुत वर्षों तक रही है - **अगनी कुल** की चार खापे सो लखी चौहान - पंवार पड़हार भी इस देश में हुकूमत करते आये हैं जिनमें से चौहान तो मुसलमानो के आनेतक बड़े दर्जे के रईस थे - ॥ इनके उपरान्त तंवर भी पुराना बंस है जो यवनों के आने तक हस्तनापुर (दिल्ली) का मालिक था इस के सिवाय - जावरा ताक यातरूप - झाला - गोड - जतीयूह - गोहल - काटी - बाल - सरोया - दानी - होडय्ह - पैरवाल - बुंदेले - बडगूजर - सोनगरा - सगरवाल - बैस - वाढ़िया - जोदेल नोहल - निकोम्पा राजपाली - द्वालरया - दाहो आदि राजपूतों की बहुत सी खापे राजपूताने में पाई जाती हैं परन्तु कोई रियासत आज दिन इन के कबजे में न्ही है अलबत्ता बुंदेले राजपूतों के कबजे में पन्ना - चरखारी ओडछा दत्या यह चार रियास्ते आज दिन बुंदेल खंड में मोजूद है - तातपर्य यह है कि समय के हेर फेर से बहुत से राज पूतों की रियास्ते नाबूद हो कर नाम व निशान ही जाता रहा तो भी सूर्यवंसी और चंद्रवंसी व अगनी कुल के पंवार - सोलंखी चौहान वगैरह इस देश के प्राचीन हाकिम माने जाते हैं ॥

राजपूताने के सिवाय हिन्दोस्थान में जितनी रियास्ते कायम है उनका नाम

हैदराबाद दखण - भोपाल - भावलपुर - जूनागढ - रामपुर - जावरा पधनपुर पालनपुर - खंबे - खैरपुर - मालियरकोटला बावनी बालासिनोर - कोडवाई - अजे

गढ अलीराजपुर- बांसदा - बरया - बडोधा बडवानी बनारस - बरोदा - भावन
गढ़ - बिजावर - कशमीर व जम्बू - चंबा छतरपुर चरखारी - छोटाउदयपुर - कोची
न - दतिया - देवास - धार - धर्मपुर - धरवल - दरंगदरह - ईडर - फरीदकोट -
ढिठी - गोंडाल - गवालियार - इन्दौर भाबुवा - जेंद कछ - बिलासपुर - कपूरथ
ला - खरोंद - खलजीपुर - कोलापुर कोचबेहार - नेमडी लोनावाडह - मैसूर -
मंडी मनीपुर - मोरवी - मेहर - नाभा - नागौद - नरसिंगगढ - नवानगर -
पन्ना पालीताना - पटियाला - पुरबन्दर - राजपीपला राजकोट - रीवा - रतलाम
समथर - सावंतवाडी - सलाना सरमोरनाहन - सीतामो - सोंठा सोकेत - बेतर -
ट्रावनकोर ओरीछा - बरद्वान - वंकानेर - राजगढ / - जोड ८३ - राजपूतानेकी
रियास्ते १८ कुलजोड - १०१ - ॥

इतिश्रीतवारीख जैसलमेरका तीसरा भागसम्पूर्ण शुभम्

बिज्ञापन

कोटा कोट धन्यवाद है श्री जगदीश्वर को जिन की कृपा से यह ग्रंथ आजस
माप्त हुवा बहुत से हालात जो पीछे से मालूम हुये है - जैसे भावलपुर खैरपुर
व केलन जी वगैरह के हालात उनको हम अगामी चल कर ग्रंथ के अंत में
जमीमों अर्थात किरोड पत्र के तौर पर छापकर लगादेते हैं पाठक किताब
से मिलाकर उन को भी पढे - ॥ देश हितैषी सेवक लखमीचंद - ॥

التماس

ہزار ہزار شکر ہے پرمیشور کا کہ آج تواریخ جیسلمیر کا تیسرا حصہ بہی اوسکی عنایت سے تمام ہوگیا - عقب
سے جو حالات معلوم ہوئے ہین مثلا تواریخ بہاولپور - خیرپور سندہ - کیلن جی کا اتہاس وغیرہ وغیرہ
اونکو ہم آگے چلکر بطور ضمیمہ کے لگا دیتے ہین ناظرین مضمون کتاب سے ملا کر پڑہین -
راقم خیرخواہ ملک سیوک لکہمی چند -

ज़मीमानम्बर (१)

नरोगेंट के उन्नड़ो का हाल

सफ़ा १६६ परगने नरोगेंट के हाल में सतर ५ के बाद पढ़ना चाहिये

म॰ लाखावट काजी के सहर में उनड़ो का राज है कमाल का बेटा बंदा भायां से नाराज हो नोहवर में आ रहा बड़ा बेटा सांहणा की सादी नोहवर में कोम कटा के और छोटे वीसे की सादी झुडे की बस्ती कोम बंदा के करी नोहवरीया कहीजे सांहणा का पड़पोता लखमीर जैसलमेर से पीछा जाते को नोहवर का कामदार मिला कि पिछाडी कटक आता है यह बोला अब अगाड़ी नहीं आने दूंगा चुनाचे कटक से मुकाबिला हुआ बलो चों को मार के मरा श्री दरबार ने उस के बेटे हमीद को बुलाकर कुरब वसरोपाव दिया- हमीद ने सांहणा के बड़े बेटे दीने के खमीसे को पघडी बंधवाई- वोह पाटवी है फेर नरोगेंट में आबाद कर कोट सौंपा- थावतों से- पानी पर तकरार हुई तो खमीसे का पड़पोता ताहर खां बहावलपुर गया खान साहब कहा नरोगेंट लिख दे जवाब दिया मेरे लिखने से लेसको- तो दिल्ली भी लिख दूं जब ताहर को कैद किया- सो श्री दरबार ने वकील भेज के छुडाया- जब दूसरे धुड़े वीसा को भी साथ लाया- नरोगेंट पर खांन साहब की फौज आई सो हारकर पीछी जाती गां ओं लेगई- एवज में खांन के सवारी के १२० ऊंट लाये सो बेच के पड़ कोटा बनाया- जब से नवाब का खिताब दिया धुड़े सांहणा में जाम ताहर- व वीसां में जांम बाहर की तनखा रु ३) रोज बदांणा में कलोती व गांम

यह हाल तकिताब लिखनेवाला का तिब अपनी बेवकूफी से छोड गया था इस लिये जमीमे में लिखे गये हैं पाठक अन्य सांमिलाकर पढ़ें- मुहम्मद मुराद अली-

[illegible] पटे दिया सो इनोम है और नौकरी में रहे तो तनखा होजावे - [illegible] आदमी तो [illegible] को भी कोट में रहें और काम पडे ज़रूरत हो [illegible] होवे और जैसलमेर में तो आदमी व घोडे को बदला [illegible] और दूसरी जगह कोट फ़तह गढ़ पर जोधपुर की फ़ौज संगी फतेरा [illegible] आया और यहां से भी फ़ौज गई वक्त मुकाबिले के भाटी भाग गये [illegible] ने फ़तह पाई

सोरठा

निबसोया [illegible] होत पग ठाम्या मामांभद पना ।

[illegible] ने [illegible] अवचल राखे ईस्वरी ॥ १ ॥

[illegible] से नाहर से फ़रमाया कि किल्ला किशनगढ़ का क्यों होने [illegible] अर्ज़ करी बना हुआ लेदूंगा फेर वहां जाकर सुरंग लगा [illegible] कोट वाले चेतने से नाहर बाहर जाना वगैरे मारे गये कामयाब न हुए मगर [illegible] भरोसेदार समझ गये कि श्रीजी साहबों के सफ़र में तम्बू के अगाड़ी भाटी रूपसी और पिछाड़ी ऊनड़ों का डेरा होता है ॥

[illegible] के बेटे डेहर का डेहर मंधु का मंधुवांणी का [illegible] का [illegible] और [illegible] के बेटे महड का महड हींगो ले का हींगोला कहीजे है दोनों के घर २०० तो ऊनड और बहुत से [illegible] हार हैं ॥

ज़मीमां नम्बर (२)

इतिहास कोम खालत जो १५ पाड़न हैं

सफ़ा १६४ परगने रामगढ़ के हालमें सतर ४ के बाद पढ़ना चाहिये

मोज़े टुकरोले के सोलंखी राजे मूलराज का कुं॰ महेसदास लुद्रवा के पुवार राय सांवतसी भाग भोज की पुत्री परनीजे और तणोट में आरहे इसके कुं॰ चेतसी को नानी हुलरावतीने खालच कहा जिससे खालत कहीजे - खेतसी के वेटे रूपसी के ३ पुत्र १ देवराज ने श्री घंटीयालराय का थान व १ कुंवा जो चूडाले विजेराव का वनाया हुआ मिसमारथा तयार कराया दूजे विजे देवराज तीजे सिद्ध देवराजका वेटा मायेथी ने राम गढ से पश्चिम कोस ६ मायेथी नाम कुंवा वनाया व जुझार हुआ सो पूजीजे है और देवराज के ७ वेटों में दूजे रतनु कुवा २ रतडीया-वनाया और बडे वेटे चामुंड का बेटा मालु को सरवाड के भाटीयां मार कर तणोट लूटी और मालु का वेटा वीसल अपने नानेरे गां॰ जसोल- में नावालिग था सो जवान हुआ तव मोज़े हाडेमें आकर महारावल श्री वाछुजी से रुप्या व फ़ौज की मदद लेकर भाटीयां को वफ़ात दी और सरवाड लूट दरवाजेका किवाड ले आया - और श्री दरवार में सालीयाना- रकम जिसको माल कहते हैं लिखदीया सो हनोज़ भरता है तथा - तणोट में कुवा एक चौतीना जो मौजूद है वनाया और एक पग वाव वनाई थी पानी खारा होने से अंकवाव कहकर वूरदी और मोज़े राम गढ में श्रीदरबार से कोट बनाया जब खालत भी यहां आरहे ॥ वीसल के पुत्र जैतका वेटा

भोजने कुंवा १ भोजसर नाम से बनाया सो बूरा हुआ भोचरा कहते हैं ॥ और भोजके पुत्र १२ मध्ये बडे चूंडे का चांवड गांव बारू में रहते हैं दूजे आंगक ने रणाउ नाम दो कुंवा बनाया और इस के बेटे जैपालका बेटा भाग चंद ने भागासर नामा कुंवा जो रणाउ से पूर्व १॥ कोस बूरोडा है बनाया- और तीजे भार का भारा कहीजे और चौथे सालगाती के बेटा अडेकमल के ७ बेटा में से चार का बंस चला एक ... का ... पाल्त मुसलमान गांम सतोय वगैरे में हैं तीजे मांडण का बेटा सेउ व सांयत का सेउ वसांयत क- हीजे है और चौथे सूरजन के बेटे सजन का सजन कहीजे व तलाई १ सजन की खुदाई ॥ और दूजे लूंभे के ३ बेटा में दूजे रणधीर का रणधीर क- हीजे है - और तीजे उदैराव व बेटा लोगायत दोनों को बीये ने मारकर जामोलाईली उदैराव की औलाद का गांम मेहेरोरी में भायां के बिराड से न्या रा रहते हैं और बडे बेटे अजे के १२ बेटे हुए जिसमें एक जोगे का जोगा जो माल में बहारस भरते हैं चौथे कोले के बेटे राघव का राघव सुहन गढ में व दसवें गोड का गोड और बारहवें मींहे का मींहा व इग्यारवें बीये के ९ बेटे हुए जिसमें दूजे रामके हेम व नेतसी बपेरासर पर हैं व पांचवें सिदे- का सिदा गांम कांसोंध में व छठे सते के वस्ते का वस्तांणी गांम छांपरा में है व आठवें आंबे का आंबा और बडे बेटे थारे के तीन बेटा में से मेहस के दो बेटा बडा तो भोजराज का पाड़ा भोजराज जो सबका जामो तरखरड पर रहते हैं जामो त का नाम आज पर्यंत नीचे लिखा गया और दूजे कुजे का मुजा कहीजे है भोजराज के भोपत भोपत के हेमो दान २ के सुजांण २ के जगन्नाथ २ के आपमल ३ के भीमा २ के सरूपा २ के सेरा २ के मूला - मूला के बाहादरा ॥

ज़मीमा तवारीख जैसलमेर - नं॰ (३)

जो इस देश मे नीमा पहाड बहुत लंबा चौडा व ऊंचा जिससे पानी का झरना व अच्छे २ दरख्त जो कोरन्डी नाम का भाखर जिसको डुंगर व मगरा कहते हैं तफसील जैल है अव्वल यहां गेरहरा जिसपर गढ है सामने सुली डुंगर से उत्तर सर्प वगेरह ८ कोस बराबर गां॰ चाहडू व काले डुंगर तक वहां से खं चम गां॰ बर्मसर व रूपसी फेरह गां॰ कुलधर व काकनय वहां से प॰ मुहार फेर पू॰ तेमडे वहां से उ॰ जायग फेर पू॰ धनवा व सांगांणा वहां से या॰ गां॰ हमीरां तक चौडा तो २ से ८ कोस और लंबाई में लगाता हुवा येरा यहां से चौतर्फी ४० कोस बीगा नाम हरएक ग्राम के पास जुदा २ होते हैं तथा इससे जुदी डुंगरी मोलासर नाचनरी भभेटा वगेरह कई हैं । त्या काले डुंगर ते काकनय तक मगरा सजीवन है चुनांचे कबीरेरीसाल वह भीमरो गोडो ब्रह्म कुंड रामकुंड रुचीका कुंड मुंदडी भुवांह में कहतसाली मे भी पानी बहुत रहा शहर मे भी यहां से आता था जिस में अनुमान होता है कि इस मगरे व व्हालों में खोदने से पानी नजदीक ही निकलेगा और सुना भी है कि ब्रह्माजी ने वै शाखी पर यग्य किया था जब मान्य रिषि देवता वनदी आये थे जब से नदी गोमती यहां गुप्त चलती है इस के गुप्त गति का साखा सिकंद पुराण में है कि रुर्व रिषि के बेटे अग्नि को मारने के लिये नदीयों को ब्रह्मा जी ने आज्ञा की जब सरस्वती व गोमती बीडा उठाय अग्नि को धकेल समुद्र मे बैठा था सो सरस्वती के कुंडल मे बैठा हुवा है गोमती अग्नि को धकेलने से तपजाती थी तब जमीन मे घुस कर ठंढा होने बाद प्रगट होती थी इस से संभव है कि यहां भी गुप्त चलती है खैर कहीं ही हो पानी तो बेशक नजदीक है और पर्वतो का हाल खाने मे लिखा है और परगनात मे पहाडियों का नाम नीचे,

लिखा है बाकी हाल लंबा चौडा ऊंचा व दूर दिसा वगैरह का नकशा मे लिखा जावेगा तथा इस देश के भाखरों व मगरों मे बाज २ जगह कुं भटीया गुंदया गूगल बलसीडा के सिवाय कुछ भी पैदा न्ही होता है ॥

प्र० जेसलमेरमें १ सूरमाली २ कीनां का डुंगरा ३ बाभगीया ऊहरी का भाखर

प्र० देवी कोट मे १ - - - २ - - -

प्र० लाखेमें १ रणधां वालो २ गुष्परीयेरमाडी ३ - - -

प्र० देवामे - १ भूरेरो डुंगर २ बाला डी डुंगरी ३ सिलाडी डुंगरी ४ पालाडुंगरी ५ वाचोली डुंगरी ६ कालो डुंगर ७ हईखा को डुंगर ८ आसदेयं को ९ गोसीरसर १० ऊहीयेरो ११ जरववालो १२ जोगणीया वालो १३ घेरालो १४ बहाडो १५ जगांवालो ॥

प्र० वापमे १ घटोररीमाजी २ तीबीमाडी ३ कोडीयो भाखर ४ गेदायतमाडीबारद ५ नोडेरीमाडी ६ मनुजीरो पहाड ७ जादमरो पहाड ८ भोजालवारो पहाड ९ रतेपीरो १० कोठीवाडो ११ मोटोढाठरेनवालो १२ लखुवालो १३ कुभारीयेरी माडी १४ गोनरडीमाडी १५ देराड़रीभा० १६ कीनोतमाडी १७ मोतीसेरोभा० १८ थंभणरीभा० १९ गोव भा० २० चंदारेटेचरी २१ चांपजासरोवलो २२ बोवणी भा० २३ चीचोभार भा० २४ मेणा गटीया भा० होय

इस मंडलमें सिध्ध व संत जमाने साबिक में बहुत थे उनमें से ठिकाना बनाया मोहाल वरहनेवालों के नाम

जमीमा नं० (४) अतीत मंडीयां

आमस का मठ - रावल जोगी रतन नाथ वाले शहर से बाहिर सं० १२०७ मा सुद ५ (१) गणेशी नाथने मठ बनाया भोमीयों के गांवों में कटाल्ला व सेरमें आं भिक्षा का लगमान है (२) धनानाथ (३) फतेनाथ (४) धननाथ

(५) सिधनाथ (६) समनाथ (७) रतननाथ (८) रामनाथ (९) पीथानाथ (१०) सांवतनाथ (११) नेमीनाथ (१२) जीवननाथ (१३) आदनाथ (१४) गुतीनाथ (१५) भानीनाथ (१६) थाननाथ (१७) फूलनाथ (१८) लालनाथ (१९) गोपालनाथ (२०) लडनाथ (२१) जीवानाथ (२२) किशननाथ (२३) गंगानाथ (२४) हीरानाथ (२५) बादलनाथ (२६) खेमनाथ जी अब मौजूद है ॥

(बावडी) आस के मठ में जीवन नाथा का भार (१) बडनाथ जुदा हुवा (२) दरयानाथ ठिकाना बनाया (३) सिधनाथ (४) सीधरनाथ १ ज्याएनी को रक्खी जबसे घरबारी हुये (५) विजेनाथ (६) रूपनाथ (७) उतरनाथ (८) प्रागनाथ (९) भगवाननाथ है - और चतरनाथ के भेरुनाथ का है लादेन नाथ है सु. नारा वद्दरजी सेवक है ॥

(धुनीनाथ का मठ) यहा एक कोठा में आसद वेराग नाथ का पादक रहनेसे वेराग नाथ का मठ भी कहते है - गंगा पार से रमता सामी एक धुनी नाथ आया - श्री मूलराज जी साहबा को कैद होकर फिर राज करने का चमन कार बताने से सिलावटों के बास मे मठ बना दिया सो पातरीयां का गुरद्वारा है फिर नाथजी - बीकानेर ऊस तां को लाने गया ऊसी वक्त भीराज का वस्त्र भाटी ले गया था सो नाथ जीके बचन सो साठीया पी ही और जब राजा जी ने मठ को कडी फेर दी थी मा १ थे रयासे चोसर खेलते थे उसके सतां की रछा से लंगोट खोला और लडका हुवा सो चेला (२) मस्त नाथ घरबारी हुवा (३) देवनाथ का चेला मोजनाथ तो सिध्धी पाने से रमता रहा- बेटा (४) लालनाथ अब है (५) रछयानाथ ॥

(म्हादेव का मठ) रमता सामी (१) हरवस गिर आया सो हाल अमर

सिंहजी के हालमे लिखा है (२) लालगिर अहंत हुवा (३) जगरूपगिर (४) थानगिर (५) हरनाथगिर (६) जनगिर (७) रिधगिर (८) दरीगिर (९) भावगिर (१०) पेमगिर (११) धनीगिर सं० १८६५ से कच्चा मठ था सो पक्का बनाया (१२) रतनगिर अब महंत है छडी नगारा भी है इन को कहागया कि इस मंडल के ठिकाने में अतीत हुये वहै सोनाम वरीत रसम वगेर हाल पंचायती बही मे लिखो - भंडारनाथ के तो ठिकाने मे बाकी सबके - वैसाखी का मेला मे होता है - और जमाती इनसे जुदे है सोगुरू महाराज के निशान फते है - ॥

(कपूरीया का मठ) रमता फकड (१) सुंदरपुरी जो सिध थे गांवमें आरहे (२) बालपुरी ने जो राम कुंडा का साध को ईशरामजी वडा था एक चमार की पुकारपर ५ माई भोमिया जुनकी गती मरने से जमीन मे दूव पाया व गांव मे सीव व वसी जुदी करी (३) ईश्वर पुरीने शहरमे (४) गुणेस पुरी ने गांव में पक्का मठबनाया (५) निरमल पुरी (६) चंचलपुरी के हरीयाल पुरी तो जोगी राज रमता रहेता है (७) बालपुरी तक सिध थे (८) सागरपुरी श्रीनाग के काठीये को बचाता है तथा गणेसपुरी के दुजा चेला जमन पुरी का छत्रपुरी ने गाव सुंदरे का सोढा गाये लेगया किसनसिंहजी सोढा को पनाह दी जिससे गाव सतोरे मे समाधली जबसे सतोरे मे अतीत नहीं रहे सकता और कुवा का पानी भी खारा होगया चमारोंने धुई की टहल करी थी उसका कुवा अच्छा है चेला गोयंद पुरी के मनहापुरी के जो रावरपुरी के चेला सो अब है - ॥

(मोजे मया जलार मे) सेजनाथ वनोख मे देववन - व बेसाखी मे फतेपुरी वाघमे दलुनाथ के ठिकाना का चीत्तु पहेले लिखाहै और गाव देवा मे पीर कोठारी मे नकबीर ला होला मे ओघड व शहर मे अजबपुरी वाले रूखड

कहातेहैं त्यासंत पुरीरत नाथ देचन्दं देसपुरी का मठ - नील कंठ-डुगरपुरी-चंपापुरी-हीकर नामवगेरेके ठिकाने शहरमें. औरगांवमें बहुत अतीत रहते हैं सोकहां तक लिखे ठीच गांव भाडली मे मोनी गिरसिध है - ॥

(जमीमा) नं०(५) साध

(रामकुंड) रामानंदी रमताराम (१) हृणत रामजी जो संत थे यहां आकर श्रीअगर सिंहजी साहिब के गुरू हुयेठिकाना व मंठ बनाया बहुत वर्ष बाद खालसे समाध बनाय . नमालूम चोला कहां छोडा (२) तुलशीदास (३) बालकदास नकसिधनथी (४) रामदासके समयमे सिंधकाकिजोअमीयाने १ महल बनवादिया जहां हृणत रामजी की गुदडी-टोप-माला-वाघंबर-विराजेहै (५) बदरीदास (६) श्यामदास (७) माधोदास (८) किशनदास (९) जीवणदास (१० लक्ष्मणदासने विलासी करने वगेरे मरजाद तोडी व शहर की हवेली बेचीसो भी करजा रहा-खडीन भी गिरवी रक्खाथा (११) गोपालदासजी अब महंत है मंडलके साधांका जोइसठिकानेके कंठीबंध है दिल हाथमे लेकर करजा भी उतारा और मरजादसे चलते है शहरमे हनुमान का ठिकाना भी रामकुंडकाहै- **(कबीरपंथी साध)** इसरदासजीने सिंधहैदराबादमे मसजिदपास पेशाव करनेसे मुसलमानों* का कहनाथा हलतव लंगोट खोलकर १०० इंद्रीयां दिखायकर तसल्ली हुयेसो कादो केरगाहाथीसिंघकी विनतीसे गांव खुहडीमे ठिकाना बांधकर बहुत लोगोंको कंठी बंध किया और गुरू भाइ बोलकदासआकर महादीरहा त्याचेलाअर्जुदासकेतो चेलानहीरहा और पाटवी मगनीरामके जगजीवन दास भी ग्यानी थे इनके चेलारतनदासके अबगरीवदीदासहै और दूसरे रूपीदासकेजेरामदास ने जुदा ठिकाना गां० धोवा व पोकरनमे भी करके लोगोंकोमंत्रोपदेस करते है इनका चेला पीतांबरदास अबहै जिसके सारंगदास **(मुनीजीकाठिकाना)** रामसनेही साधूका चेला जो पण्डित था पोकरनसे आकर १२ वरस मुनरक्ती सो पलीवालोने छोडाय हनूमानके वांतरफ ठिकाना बनाया और लगमांची बांधदिया यहां शास्त्रग्रंथ बहुतहै परन्तु पीछे कोइ साधू पण्डित नहीरहा-ठिकाने के चोकमें पानीका टांका बनाना जरूर है- त्यावरकतवाले मुसलमान फकीरोंका जिक्र किताबमे मोका २ परलिखागयाहै बाकी तकिया व पीरस्थानतो अकसर वइलाकेमे बहुत जगह है सो कहां तक लिखा जावे - ॥

* परंतुलिकरा असलीन्ने खगे ऐसा ही है ठीकनहीं पढागया -

(जमीमा) नं॰ (६) रियासत भावलपुर

इस रियासत का रकबा ३८२ ६६ मील मुरब्बा है जिस मे सन १८९१ ई० की मरदुम शुमारी (मनुष्य गिणना) के अनुसार ५,२५६,६७० आदमी बसते है आमदनी सालाना ५७.३५ ८५ रुपया है खिराज माफ है अहदनामे मे दोस्ताना मदद देने का सरकार ने वादा किया है रईस कोम अब्बासिया दाउद पुत्रा कहलाते है सलामी की १७ तोपें सर होती है भावल पुर के जनूब व मशरक में जैसलमेर और बीकानेर का रेगिस्तानी मुल्क है और शिमाल व मगरब मे सरकारी इलाका है चुंकि पैगम्बर साहिब के चचा हजरत अब्बास से कोम अब्बासी सुलतान रूम के खानदान से ८५ पुश्त बाद कुरेशी दाऊद खां मुल्क सिंध मोजे लखी मे आ रहे शिकार की जगह शहर शिकारपुर बसाया दाऊद पोते २०हजार से उपर है १ केहर के १२ बेटों के केहरानी २ आर्फ के अर्फानी ३ प्रोज के पीरप्रजानी ४ आर्बपाशवानीया के अरबांखी केहर १५० मनुष्यो से खडीन भलारी जो देरावर से उत्तर ३२ कोस है जा बैठे बेटे नूर का गा० नूरवाला बसा ह जहां अब कोट में हाकिम रहता है देरावर रावलजी से आधा २ रखने का शर्त पर बहुत सा मुल्क लैने बाद रावलजी कहा जैसलमेर ले दो तो यह सब तुम्हारा वर्ना निकल जाओ जिस पर फतेखांने देरावर ही लेकर बाप के कहने से प्रोज के बेटे फते खां को मारु फरवा किल्ले शिकारपुर मे कंधार के बादशाह का साला नवाब सैफुल्लाखां दुरानी जो इनकी वरि सहित सोया था मारकर कैद से निकाल लाया था गादी बैठाय मालिक मुल्क करके आप सलामी हुये फिर गढ व शहर बनाये सो लिखे है और छोटे २ गांव तो सहहा बसाये इनकी बहादुरी व वल्लीपने के रलात कहां तक लिखे जावे गादी धर नवाब याने खां साहिब के नाम लिखे गये है १ फतेखां २ सादिक मुहम्मद ३ भावलखां ने देरावर से उ० इ० ३२ कोस

कनोरे दरया के शहर भावलपुर बसाया राजधानी करी परन्तु गादी बैठने का दस्तू
र देरायर मे ही होताहै ७ **मुबारकखां** ५ **व्हावलखां** मुल्कगीर ने मुल्क व
धायाहै **सादकमुहम्मद** ७ **व्हावलखां** सालिस विलखैर बडे ही आकल
थे दूरअंदेशी से सरकार दौलतमदार अंग्रेजी की मदद हाजरी याने मुलतानव
गैरहकी लडाइयों में ७ सो हावद पोते मारे गये सरकार आली ने मुल्क दरिया पा
को जो सिख रनजीत सिंह ने ले लिया था दिया सो पीछा देकर रियासत व अख
तियार रहने याने सरकार दस्त अंदाजी न करने व मदद देने वगेरह कलमा लिख
वाली ९ **फतेखां** फिर ५ म्हीने पासवानी याहाजी खांने भी राज्य किया था-
२ **व्हावलखां** १० **सादकमुहम्मद** ७ वर्ष के सं० १९२२ मे राज्य बैठे ज
व दरख्वास्त पर सरकार से मीचन साहिब मुखतार होकर आबादी वसूली वगे
रह से आमदनी बहुत बधाइ फिर इनको अखतियार मिला बाद पुस्तों का खजाना
निकाल कर मोजां करते है· खुदा खैर करे ·।।

नकशह गढ व शहरों का जो इलाके जात में नामी है

केहर के मारूफ के रहीवेठे नकार बंध्योंके					नम्बर	नाम ठिकाना	कोस दिशा	किसने बनाया	अब किस के पास है
नम्बर	नाम ठिकाना	कोस दिशा	किसने बनाया	अब किस के पास है	५	हासलगढ	५० पू	हासल खां	हासलखां
१	खैरपुर	२५ पू०	खैरमुहम्मद	दुरमुहम्मद	६	मुबारकगढ	६० पू	मुबारक खां	खा०
२	मीरगढ	५५ अ	मीरखां	खालसे	७	शहरपुरा	२५ पू	शहमुहम्मद	खा०
३	मौजगढ	२५	मोजदीन	खा०	८	गढीअखतियारखां	६६ पू	अखतियारखां	अलावखश
४	दुरपुर	१६ पू	दुरमुहम्मद	खा०	९	अलाबाद	५० पू	अलादाद	नजरमुहम्मद

१०	कायमपुर	२४ पू	कायमखां	खां०
११	सबजल्दा कोट	१०० प	सबजल खां	खां०
१२	खानगढ	१८ द	खानमुहम्मद	खां०
१३	लतीफगढ	६ ई	लतीफखां	
१४	गोरदाणा	८५	नवलअली	खां०
१५	शाहरफरीद	६० पू	फरीदखां	
१६	ददुरा कोट	१५ वा	देदुखां	स्माइलखां अलीदाद
१७	ख्वनदीगोट	१६ पू	ख्वनखां	खां०
१८	नेहाडा	२४ द	नेहाडेखां	खां०
१९	अहमदपुर	२० पू	अहमदखां	खां०
२०	शे.कादरेहा	८२ प	कादरेखां	खां०
२१	स्माबेदाकोट	५८ प	स्माधेखां	खां०
२२	ताजगढ	६८ प	ताजमुहम्मद सरफराजखां	

५	रूकणपुर	७२ पू	ये
६	खानगढ	५० द	ये
७	खेरपुरठोहरी	३२ वा	खेरमुहम्मद

अगले बने हुये

१	वीझणोटे	६० द
२	भरोट	२५ अ
३	न्हवर	७२ नै
४	जजा	४६ प

किल्ला देहनूर उर्फ उच · मेहोपीर गिल्यानी व बुषारी है ।।

केहरसे ५ पुस्त हालाके हाला जीयोंने

१	नवसारा	८० प	नवलअली	
२	हीनगढ	७२ नै	बुटेशाहर खां	राज्य जैसलमेर
३	ताजगढ	७० प	ताजमुहम्मद	खुदाबक्श
४	वदली	६६ प		
५	संजरपुर	ये	संजरखां	
६	मुहम्मदपुर	ये	मुहम्मदखां	
७	जाफरपुर	ये	जाफरखां	
८	कबूलवाला शहर	८० प	कबूलखां	लालमुहम्मद का बेटा

प्रजाणीगरी धर्सोंने ।।

१	फतैगढ	२०० पू	फतैखां नं० १
२	मुबारकपुर	५८ पू	मुबारकखां नं० ४
३	खानपुर	५० अ प	ख्वावलखां नं० ५
४	देरः ख्वावलखां	३२ नै	ख्वावलखां नं०

(जमीमा) नं० ७ दुकान

राजकी दुकान जो नुथका कोठार सं ५ से हुवा श्रीगिरधारीजी के मंदिर व रसोडा

व घोड़ा हाथीयों का दानव संज मसाला व पेटियो सरोपाव वगैरह जिन्स का-
खर्च व दूसरे मन्दरों सरदारों व धर्मादे वगैरः के रुजगार का हिसाव शाहू
कारी रीत ज्यों तो रक्खा ही था सं॰ ४१ से हरएक हिसाव समझने की सु
गम तरकीब की गई है- और कामदार कई पलटे मगर वधत व उडन्ती का
हिसाब किसी ने नहीं दिया साल भर में २४ से ३० हज़ार का खर्च है- क-
इन साली वबीका सरदारों के रहने से ४० के ऊपर रहा -॥

ज़मीमा नं॰ ८ कोठार अन्नपूर्णा

जो राजका अव्वल खर्च का क़दीम स्थान है- खास तवेला व बारगीर वगैरह
घोड़ों का दाना व तेल का खर्च व ज़नाना सरदार वरा जबीयों व हजूरियों का रुज़
गार देनगी चकरीं चाकरों व धर्मादे का पेठिया व सिपाहियों व कारीगर हर कौम-
का वतवायफ़ वगैरे लोगों को वलांकि हिसाव का दस्तूर अद्भुत है- सो मुफ़स्सिल-
लिखने में जुदी किताब चाहिये- ज्यों बहुत लोगों को नगदी तनख्वाह होगई व जिस
को नहीं हुई है-सो भी होने की सलाह है-जिससे पुराना दस्तूर लिखना ज़रूर भी-
नहीं रहा- तथा उडन्ती नहीं निकलने के कारण विजैसिंह पूनमचन्द वगैरे-कामदार व-
दरोग़ा यानें ४। ५ आदमी शामिल होकर कोठार खोलते हैं यहां कोई आकर पल्ला वि
छावे सो निरास नहीं जाता- और तहसील काम हक्मा भी इसके शामूल है-सं॰४१ से द्वर
पय वाडे-हिसाव समझने की ठीक तजवीज़ रक्खी गई है- इस काम पर बहुत बर्षों से-
कामदार सुखतार व्यास पोलजी व दरोगा हजूरी लालजी हैं- और जिन्स खरीद फ़रो
ख़्त पर मोकार्ती वलदेवदास जिसके ताल के तलाव व साठियों वगैरे का काम भी है-॥

ज़मीमा नं॰ ९ तजवीज़

चौपाया-देवा की घोड़ियों व ऊंठ सांडों का बरग व गायों भैंसियों की थारों जो
लाखों रुपये का माल है- इसका जुदा महक्मा होकर वाजिब तजवीज़ से कारखाई

काफ़ायदा लिखे मूजब होने की जवाके भी श्रीजी साहब मंजूर फ़रमावेंगे तो बहुत माल व धने व राज का ठाठ रूपक दीखने व बहुत से मुलाज़म परवर्श पाने व कई काम आसानी से होकर आराम रहने के अलावा बधंती खर्च निकलकर २० पचीस हज़ार रुपे सालका फ़ायदा होहीगा -

राजकाम से अलाहदा फन की आमदनी में खास शहर व जो धलुरबा लोतरा के रास्तों दू० हाज़ा में बंगला व पोह धर्म साला व दूसरे रास्तों सिंधवगैरे के में कुवा वगैरा जो मुनासिब हो - बनाया जावेगा - और हर उपाव से लोगों के कराने उपरंत राज में रु० १० हज़ार सालका देस में जाबजा कुवा बनाने वगैरे आराम व फ़ायदे के काम में लगाने की तजवीज़ है - सो ज़माना अच्छा आने से होगी - ॥

जमीमा नं० १० महकमागिराई

इस काम पर सं० २१ से कभी २ महता फूलचंद जी व अखैराज जी वगैरह दौरा के तोर पर जाते थे - सो दीवानी फ़ौजदारी का काम करने से प्र० के हाकमों के हुकम से - ज़ोफ़ आने के बायस आपस की तकरार वगैरा कभायतें रहेती थी सं० ४१ से यह तजवीज़ ठहराई कि दूला के जात में ४ ग्राई कीजावें जिसकी रिपोर्ट तो महकमे सदर में - अदालत में होवे - और मुकदमात दीवानी फौजदारी का हर प्र० के हाकम को शामिल रखकर किया करें व पैदा हो सो भी प्र० का हाकिम लेवे - और इनका खर्च कामदार की तनख्वाह मधे भत्ता व जो सवार वगैरह का मुकर्रर किया जावेगा हर महीने श्री दाआने पर खज़ाने खास या हकूमत वगैरे से दिलाया जावेगा - चुनांचे कोट जाठी से उत्तर देस में महता अखैराजजी को रखकर - जाठी सूं दक्षिण प्र० लरपात क जहां अकसर चोरियां का गुमान रहता है - गिराई का जुदा महकमा किया - और महाजनार पांना सम साहागढ घोटडु - का दूला का मूलचन्दजी के तालुक रखा - तथा कोट खारा से मोहनगढ तक में करना रहा था - और इसमें यभी तजवीज़ थी कि गिराई वाले तालुके का काम

के अलावा हरएक गांव का जुग़राफ़िया व वर्तमान हालात लिख भेजे- और लोगों के- आराम व फायदा याने मुल्क में आबादी आमदनी व धन की बाबत जो ख्याल देखें सुनें या दिल से समझें सो मुफ़स्सिल लिखकर कौन्सिल में रिपोर्ट किया करें तो मुनासिब तजवीज़ होती रहेगी- परं॰ कहत साली व कामदारों के आपुस का रंज व कई सबब ऐसे हुए कि मन्शा मूजिब यह काम भी नहीं चला सो भी अच्छे होने के समय में ही वे होगा-॥

ज़मीमा नं॰ ११

मुतअल्लिक़े इतिहास पूगल रावरानगदेव के लखा जी व चाचाजी वग़ैरह

जो तवारीख के सफ़ १११ पर आचुका है

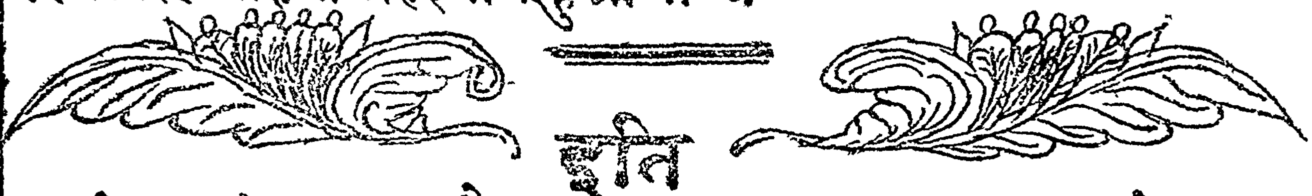
चाचाजी के वंसज के शेखा जी राव भीकनी जी की कृपा से नामी ग्रामी हुए-कछ वायों से बैर लेने आदि बहुत प्रवाडन में वीरत देखाय अपनी मृतु का पूछी जब करनी जी ने कहा कि बैर की छाया आक की खट पी पका बासा भूरी मे: का दही त्या घेटा का पल रव: जगह मिलैगा तब मरेगा -सो ऐसा ने ल हुआ तो आपही कहा कि ये पेटु भाता आया जन से मृतु के मौका पर ये आवाया है तथा किशनावत बारवाय में नामी हुए यह मारहीं नपल सिंघ जी गोपालसिंहोत सपूत हैं- सं॰ में जैशलमेर भी आये थे-॥

ऐसे ही शेखा जी के पौत्र उन्हीं के योजी भी सूर बीर हुए-गढ़ रामके नाम से बरसल पुरव नाया व बादशाही खज़ाना मुलतान से लूट लाया- जब फ़ौज आई तो मा का कर के कुल्लत सिंह बरसलपुर-॥ व दूजे कर्न अमरा साईदास गोपालदास चन्द्रसेन- जगतसिंह देवीदास षडगसिंह हिन्दूसिंह खेतसी भोमसिंह हूंडवलसिंह कुंकर्न नी रावत जैमलसर जो अब ई॰ वीकानेर है- ॥ तीजे धनराज खेतसी सेरसिंह-राघो दास-माधोदास अखैराज-बिहारी-किसनसिंह-किर्तसिंह-भोमसिंह-भामजा-

महूजीजयमाल· मुकुनजी· कुं० जोरजी· ठा० बीठनोक भी अब दू० बीकानेर ।।

ज़मीमा न० १२ रियासत खैरपुर सिंध

यह रियासत ६१५९ मील मुरब्बा और सन १८९१ ई० की मरदुमशुमारी के मुताबिक १३१९६० आदमीयों की आबादी· आमदनी सालाना ७१६००० रु० की है· खराज माफ़ है· मगर ज़रूरत के वक्त फ़ौज की मदद देने का इक़रार है रईस यहां का मीर अली मुरादखां साहब है· जो बिलोची पठान है· सन १८३८ ई० में सरकार से पहिला अहदनामा हुआ था· ।।



इति

कोटान कोट धन्यवाद है श्री सच्चिदानन्द जगदीश्वर महाराज को जिनकी कृपा से आज दिन अबकि ३० दिसम्बर सन १८९२ मुताबिक़ ११ रबीउलआखर सन १३१० हिजरी व अगहन सुदी १२ सं० १९५० बिक्रमी व फ़सली अगहन की २७ सन १३०१ है· यह ग्रंथ समापत हुआ· पाठक बिचार कर सक्ते हैं कि जैसलमेर जैसे उजड देस का इतिहास लिखना श्री महताजी नथमलजी ही ऐसे पुर्ष का काम था इन के परिश्रम से जाना गया कि हमारे सूबे के पिछले रज़ीडन्ट कारनल सर ईडन साहब बहादुर ने इन की सच्ची तारीफ़ की थी· हम भी महताजी साहब को धन्यवाद देते हैं· कि उनकी महनत का फल पराप्त हुआ· ।।

خاتمۃ الطبع

ہزار ہزار شکر ہی پروردگار عالم کا جنکی عنایت سی آج ۳۰ دسمبر ۱۸۹۲ء کو یہہ کتاب ختم ہوئی یہہ حقیقت میں ہی ایسے عاقل اور محقق شخص کا کام تہا کہ جیسلمیر جیسے اوجڈ ملک کی تواریخ ہندی مین تیار کی ہم بہی مہتہ صاحب موصوف کو مبارکباد دیتے ہین ۔ الہ العالمین اونکو خوش رکہی ۔ کہ اونکی یہہ یادگار ہزارون برس تک دنیا مین بنی رہیگی ۔

غرض نقشیست کز ما یاد ماند * کہ ہستی را نمی بینم بقائے *

جریدہ خاکسار محمد مراد علی ہوشیار

مالک مطبع راجپوتانہ گزٹ و چراغ راجستان اجمیر

तितम्मः तवारीखजैसलमेर नम्बर (१)

अवमें अपार अफसोस के साथ थोडासापि हाल लिखताहूं कि सं० ४७ फागुन को श्रीजी साहिब वैकुंठ पधारे तो मात्र जीव जड व चेतन को ऐसा गम हुआ कि कलम को लिखने की ताकत न्हीं गोया राज का जहाज ही शोक समुद्र में डूब गया फिर राजा श्रीखुसालसिंहजी के कुंवर साम सिंहजी को जो ३ वर्ष के थे राज बैठाकर बमूजिब वसीअत के नाम शालिवाहनजी रक्खा और इस खियाल से सबने दिल को तसल्ली व सबर दिया कि इस जमाने में आली सरकार अंग्रेज बहादुर मालिक मुल्क व हाकिम बक्त रियास्तों के खास दोस्त हैं - जहां नाबालगी होती है तो अपनी निगरानी से ऐसी तजवीज फरमाते हैं कि रियासत खातिरख्वाह तरक्की पर आने के सिवाय मात्र लोग जो रियासत में हैं अपने रुतबह मूजिब हक बदूनसाफ पाने से आसूदे होकर व आराम रहते हैं और यहां तो आगे व मेहजूर श्री गजसिंहजी साहिब वैकुंठ पधारे व श्री रणजी तसिंहजी को जो २॥ वर्ष के थे नाचना से बुलाय राज बैठाये जब माजी श्री रानावतजी साहबाने दाना ई व दूर अन्देशी से अपना काम हरीभजन को रख कर राजरीत व ठाठ बदस्तूर रखने के लिये मुखतार राज श्री केसरी सिंहजी के रहने का दरख्वास्त सरकार में की थी सो मनजूर होकर सरकार की मदद व भहरबानी से राज बना रहा · फिर सं २१ में श्री वैरीसालजी साहिब राज बिराजे जब बाजे लोगों ने अपना मतलब निकालने को माजी वीकीजी को मुखतारी का धोखा देकर ठाकुर केसरी सिंहजी की झूठी शिकायतें व सब को बहकाकर भारी बखेडा कराया था परन्तु जनाब कप्तान साहिब कर्नैल इडनसाहिब बहादुरजी सदर से मंजूरी मंगाकर यहां तशरीफ लाये और बाद तहकीकात शिकायतों के वैसे ही ठाकुर साहिब को कुल मुखतार रखकर महता नथमलजी को राज की सच्ची खैरख्वाही व इयानतदारी देख कर

अपनी रजामन्दी की सनद लिखवा दी कदीवान रक्खा था सो अब तो कर्नेल पौलट सा हिब बहादुर जो बहुत बरसों से रजीडन्ट साहिब रियास्तों के रिवाज से वाकिफ मुनसिफ मिजाज हैं सो जरूर ऐसा ही करावेंगे १६ मार्च सं ४१ को आये उस वक्त तो कुंवर शिवदान सिंह जी को ले जाने या कोई और खयाल होगा गोलमोल कार रवाई रख कर फरमाया था कि ताहुक्म सानी अब है जियों ही रहै इस में सुजाना था कि बिल्फेल बखेड़ा होने के गुमान से ऐसा रखा है परन्तु सदर से मनजूरी मंगा कर सरकार की बुजुर्गी व अपनी नेकनामी रखने को साबक मूजिब तजवीज करावेंहीगे - फिर थोड़े दिनों बाद कि अभी सोग ही न्हीं बदला था मांजी साहिबा ने वल्सा अपनी मुखतारी की ओरवा रवा कर दीवान जगजीवन जी को फैर में सो नाइनायत करके आबूजी भेजे उन्होंने अपनी मुखतारी का बन्दोबस्त करके सरदारों को ननर्क्षान देने का हुक्म दिया तब भी यह उमेद रही कि अभी सदर से हुक्म आने का न्हीं फरमाया है सो जब हमारे रजीडन्ट साहिब कर्नल साहिब से पक्की सलाह कर के आवेंगे बेशक सब तरह का लिहाज हर एक के वाजिब हक बरियासत के कदीम रिवाज का फरमा ने से सब का भोसा रहै - यही खयाल खाम होकर विजारत खास हालत से मामला यहा इ बिल्ला का यह नाजेबा बेजा इन्साफ की खिलाफ होने लगी और रजीडन्ट साहिब बहादुर जी भी स० ४८ के पहो सुदि २ को फिर तसरीफ लाये जब सारी ही मौसूफ की मुनसफी के भरोसे पर राजवी आदि सब सरदार बसादू कार व पारी बगैरह सद हा लोग अपना वाजिब हक ब इन्साफ पाने के लिये नालसी हो कर दीवानजी की नाफहमी वहा कि म अदालत की बेबन्दोबस्ती बगैरह इन्साफी की शिकायत होने पर वाजिब तजवीज की उमेद हुई थी उसी रात को दीवानजी ने साहब जी को हाथ में लेकर कहा कि ये सब लोग नातमीज आपा भूल हैं सिर्फ सिसला वैसे शान्ती हुये बाकी कुछ नहीं कर सके ज्यों ही राजवी व सरदारों को धमका

करदवालियां और जैसे चाहासाहिवसे कराया चुनाचे राजके खैरखुवाहोंकी सलाहसे नथमलजीने भीजो काम छोडनेवाद किसीके आकी सिफ़ारशी न्हीदे अपनी शिकायत कौनह की कात कराने और हिसाव वरोजगार की वावत नवूजी साथ कै फित भेजी सो लेकर १० वजे मिलनेका हुक्म दिया था फिर दीवानजीके भूंठे कहनेसे कहलाया कि आपलोगोंसे फितनह कराते हैं और २० वर्ष सेदफतर साफ न्हींमे नाराजहूं मिलना न्हीं चाहता - नवूजीने दरचंदकहा की यही लिखा है कितह की कात हो कर असल भेद और सच झूठ तो समझिये किसवव क्या है परन्तु कुछ भी न्हीं वोले जिसपर फिर कैफियत भेजी सो न्हीं ली जव डाकमें चिट्ठी भेजी तौ भी खयाल न्हीं किया सो वडी गल्ती करी कियों कि नाराजगी का जो सवव फरमाया सो महज गलत और खुदगर्जियों की कोताअंदेशी का जाल है इन से मिलने में तो दीवानजी को भी काममें आसानीसे राज्य का वहुत ही फायदा होता कियों कि ४० वर्ष सच्ची खैरख्वाहीसे नोकरी दीवानी कर के अपनी खुशी से काम छोडा है सो सवके हक में अच्छे होने की सलाह देते - मगर मालूम हुआ कि साहिव मौसूफ़ को राज्य के फायदे व अपनी मुनसफी के गर्ज न्हीं सिर्फ दीवानजी का कहना ... रखना था वरनह इतना तो जरूर ही था कि श्रीहजूर साहिव पास या खुमाणसिंहजी का रखकर डोढी पर लायक शखसको मुकर फरमाते वस व लोगों को हिकमतअमली से हीतसल्ली वरवातिर तो करते सो ही न्हीं किया जो २ फरियादी थे इनसा फन पाकर सवमहरूम रहे सो सारी उमर रोते ही रहेंगे कियों कि किसी ही तरह से ऐसी ताकत कोई नहीं रखता कि जो श्री वडे लाट साहिव जी तक तो क्या वडे साहिव जी तक ही पहुंच कर कामयाव हो सके सव लोग यही समझते हैं कि कर्नल साहिव जी भी हिकमतअमली से अर्ज टोवे कहने को ही सही रखते हैं किसी फरयादी ने दाद नहीं पाई कियों खराव हुये आगे जैसी न्यतहाकमों की न्हीं है - वार २ यह कहते हैं कि यह कोताहअंदेशी व हिम्मत

हारकी बात है लिखना तो चाहिये फिर चाहे सो हो मगर बहुत लोग नाउमेद हो कर कहते हैं कि कुछ नहीं होगा होनहार तो देखो कि मुतवातिर सात कैत का पड़ना बनयम लजी जैसे सब तरह लायक सच्चे स्वामधर्मी का काम छोड़ना और श्री वैरीसालजी साहिब सबके सच्चे माबाप का धाम पधारना व दोनो माजी साहिब दानुजी खुमाजी की अवल पर चलने से खैरख्वाहों को लायक न समझ कर धोखेबाजों पर एतबार रखने से राज्य काज का अधिकार हाथ से खोना व शिवदान सिंह जी जो बोल चाल में लायक राजवी थे निकालना और कछीजी की लाफ हमकार रवाई जो कच्चे सलाहगीरों के बाथ से होती है व पंजाबी की गैरइनसाफी साहिबजी को बखूबी मालूम होने पर ही इनको ही सुखनार रखना दूसरे किसी ही की वाजिब अर्ज सुन कर इनसाफ न करना बिदेशियों में किसी का ऐतबार नहीं होना वगैरः २ खराबी ही खराबी का बाइस होगया है इसके सिवाय खुदा का कहर है कि इस ११ महीने में शहर व देश में ८ हजार आदमी तो मर गये ब बहुत से देहाती लोग इलाके सिंध में जा रहे हैं सो तो फिर सुख होने पर शायद के पीछे भी आवेंगे मगर शहर के लोग सावा बीतने बाद निकलना कहते हैं सो खुदा ऐसा न करे वरनः यह लोग पीछे नहीं आवेंगे - महाशोक की बात है इस रियासत में श्री कृष्णचन्द्र भगवान औतार से आदि लेकर देवराज जिनसे वैरीसालजी पर्यन्त बड़े २ नामी ग्रामी राजा हुये सबने राज का बोझ व लाज ग्रात्म देशियों पर रखने से अपने मुल्क में आपही हुकम रान रहे - अब वो साखी मिली जो लूणाकरन जी के हाल में लिखी हैं कि बिल्ला चुंचिरा के जादवों से जेसलमेर जावेगा - इस का बदनामी काटी का करनैल पौल्ट साहिब जी ने लगाया कि श्री जी उनका कहना नहीं मानने से बहुत कहीं रहे थे सो सरहद के निकालने में बहुत सा नुकसान देने पर ही ध्यान लाकर श्री जी के वैकुंठ पधारने बाद उनकी वसीअत न सीहन का कुछ भी लिहाज न करके साहिब जी का मनशा था ज्यों किया वरनः जाबालगी

तो श्री रण जी नसिंहजी ववैरीसालजी साहिबराजविराजे जव ही था बल कि पिछले वक्त तोआपस की फूट का भी भारी रेल था तो भी नेक नाम ज नाव कलां साहिब ने वसलाह मह तान थमलजी दूरअन्देशी से कि भाटी वंस में १ नाम की रियासत भी सिर्फ यही है दस्तअन्दाजी न करके राजाश्री केसरी सिंह जी को जिम्मे वार रखने से यहां के सबलोग जो देश विदेश में रहते हैं दुआ य खैरसे साहिब ममदूह को याद कररहे हैं और अब जो रिया सत की तरक्की के लिये निगरानी रखनी थी तो भी नाम का मुखतारी श्री मानसिंजी या खुआलसिंहजी कारख कर बेजा खर्च घटाना वा जिब पैदा वढाना करजाउतारना चोरी धाडे आदि सब तरह से मुल्क का बन्दो वस्त रखना वगैरह २ जो २ बातें जरूर व फर्ज हैं हिदायत करके साहि व रजीडंट बहादुर जी को रपोर्ट देने और सलाह व मदद लेकर देसी ढं ग कायदे से कारिवाई करने का हुक्म लिखा देते तो दोनों बातें रह स क्ती थी और अब तो रियासत सरसवज हो कर आमदनी दुचन्द सेच न्द होनी सहज है कियों कि राज ध्धिराज की मरजी से बालाई खर्च व नुकसान का काम होता था सो न्हीं रह कर जो ही तजवीज फायदे व सुधार का रजीडन्ट साहिब की मनशा मूजिब की जावे हो सक्ती है सो अगर इनसे ऐसा न्हीं होता तो साहिब मौसूफ को अखतिया र ही था कि दूसरा मुखतार करदेते तथा सब जान्ते हैं कि नथमलजी ने राज व रयत के फायदे व आराम की जो २ बातें सोची व लिखी है उस मूजिब कारखाई होती या अब इस तफसील से होवे तो सदर मेंहा जरी की रिपोर्ट का मौका जल्दी हासिल हो सक्ता है मगर वडा ही अ

फसोस है कि साहिब मौसूफ ने वह कार्रवाई देखी जो सुनी बल्कि खुद
गर्जियों के धोखे में आकर दरयाफ्त न्हीं फरमाया सो तो उमेद है कि हा
किमआला व दूसरा रजीडन्ट साहिब जो इस रियासत का अच्छा होना चा
हेंगे तो पूछे होंगे परन्तु तअज्जुब है कि पौलट साहिब बहादुर जोने रिया
सत जोधपुर व सिरोही को देश के रिवाज का लिहाज रख कर बहुत तरह
परत्ना ने मे सरदार मुसाहिब वगैरह किसी ही का हक व हर्ज न्हीं किया यां
बरखिलाफ कर के कियो जुलमी कहलाये और सरकार से सुपरिन्डनटी
ही करनी चाही तो किसी युरोपिअन साहिब को मुखतार रखना चाहिये
ताकि अदावत से किसी का बुरा न हो कर सब लोग अपना वाजिब हक
व इन्साफ पाने से इत्तिफ़ाक़ व संहरतरह हाजरी दियावे कि जिसमें रा
ज व लोगों के फायदे का काम आसानी से होता रहे ज्यादः क्या लिखा
जावे - भावी जोग भया सो देखा - होगा सो देखेंगे - ॥ परन्तु बिलफैल
अच्छे होने की कोई सूरत नजर में न्हीं आती कारण कि यहां के आला व अ
दना मात्र आदमी आपा भूल हो गये कि देसी जात जो ४० पीडी से हक
दारी का घमंड रखते थे किसी लायक न्हीं रहने का खयाल ही न हो कर आ
पस के वसवको धवड़खा में यहां तक भर रहे है कि एक दूसरे के जीव
जीवाइ जीव का वइज्ज़त जाने में खुश हो कर दत्तुलवसा गुमाने की को
शिश में कोताही न्हीं करते यह न्हीं समझते कि इस निर्धन देश मे जो
आगे असी अकिलवरी होती तो इतनी पुश्तों तक वडी नामवरी के सा
थ कियों कर निबाह होता और अकिलवनीयत का फल परमेश्वर देवे
ही है कि इस दो वर्ष में स्वपना की माया ज्युं क्या था और क्या हो गया जिस

को अच्छी तरसे देखने परभीं किसी को किसी ही तरह से कुछ भी खयालहीं सिर्फ अपनेपेट का फिकर धर्म अधर्म सेरखकरवा दियात गलमारनेव हरएक की गिला करनेमें जैसे हरी भक्त भजन करनेमें संतोशवआलसन हीं करते ज्युं होरहे हैं और यह भी नीत धर्म का कौलहे कि **दोहा** कपटी कृत घनअधर्मी । भूख हीन व हीनार। बाल निवलअनीत पति। सुरपु रहोत नुजार ॥ २ ऐसे होनेसे उजडने में आश्चर्य क्या है - बडे हजूर श्रीवै रीशाल जी साहिबको अंपने बुजुर्गों की रियासत रयत वरीतको निभानेव खासकर इस दूरअंदेशी से कि यहां के लोग देशावरोंसे धन्य कमाय यहां ला कर खर्च करते हैं इनकी हरतरहसे इज्जतव खातररखने से हीजरहेंगे इसलिये कारमुखतार देशी ही जरखना मुनासब जाना चुनांचे **नथम लजी** के काम छोडनेबाद गिरधारीलाल जीव नथमलजी की सिफार शसे लायक विदेशी जैसा जान कर **कछीजी** कोबुलाया था कि सब के वाजिब हक व कदर वगैरह इनसाफ का लिहाजरखेंगे इन्होंने कचेस लादिगीरों की अकिल परचलकर श्रीजी साहिबों की दूरअन्देशी औरख नशा का कुछ भी खयाल न्हीं किया और नाज़ेबा कारखाई जो इस देश के ढंगसे विरुध्द है करने से मात्र लोग नाउमेद हो कर हदसे परेशा कीहो गये जिससे तरक्की व सुधारा होना तो दरकनार रहा काम का आराम व य सभी हरगिज न्हीं रहेगा सो जो नेकनामी व अपनी बात का खयालक रेंगे तो बेशक इसत्ती फा देवेंगे वरनः दिलमें पशेमान हो कर बहुत पछ तावें हींगे कियों कि जैसलमेर को **सिंधों की** मुल्कतो आगे ही कह तेथे इस वक्त में तो यहां के लोग विधाता बल्कि परमेश्वर को ही कुछ

नहीं समझते हैं इस हालत में कच्चे सलाहकारों की अकिल पर चल
ने से अच्छे बन्दोबस्त होने की उमेद कैसे हो सक्ती है बस खुदाही हाफि
ज है और जनाब कर्नल साहिब बहादुर जी नो रजीडन्ट साहिब के
भरोसे पर हैं और रजीडन्ट पौलेट साहिब जी किया सो सबने देख लि
या सिर्फ १ हुक्म वाजिब दिया था जिसकी भी तामील न्हीं हुई अब
देखिये नये रजीडन्ट साहिब बहादुर जी क्या मुनासिब जानकर तज
वीज करेंगे - ॥

बिनयपत्र अज़तरफ़

खाकसार मुहम्मद मुरादअली होशियार मुहतमम राजपूताना गजट अजमेर - चुंकि कर्नल
प्रसीडबल्यु - जनाब पौवलेट साहिब बहादुर रजीडन्ट गरबी राजिस्थान की सलाह व महा
राजाधिराज महारावल श्री वैरीसाल जी साहबों की आज्ञा अनुसार महता नथमल जी दी
वान श्री दरबार जैसलमेर ने ५ वर्ष पर्यंत श्रम करके सेवग लखमीचंद जी से यह किताब तय्यार करा कर
मेरे पास छपवाई है - इस १ जिल्द मे ३ भाग तवारीख महाराजगान रियासत मौसूफ व जगराफिया
मुल्क मांड ३ हिस्से में रियासत हाय राजपूताने की तवारीखें के नाम वगैरह जो २ हालात हैं नजर मे गुज
रने से मालूम होगे - अगरचे लाइल्मी के बायस तहरीर वगैरह कायदे से न्हीं मगर मिअत भा
षा सब के समझने को रखी है और यह किताब इस देश के लिये कारआमद याने बहुत ही वाकफी
का यादगार जान कर पसंद फरमावेगे और नुक्स हो या कम व बेश करना वाजिब हो सो बराह
कदरदानी व मिहरबानी से लिखावेंगे ताकि दोबारह छापने में ठीक हो जावे ऐसी आशा है
सं० १९४९ का मिति मः मुरादअली

التماس

یہ کتاب حسب الحکم سر بجفور مہاراول بیری سال جی صاحب بہادر سورگ باشی سابق والی جیسلمیر جناب مہتہ
تھمل جی صاحب بہادر دیوان ریاست ممدوحہ نے بڑی جانفشانی و سرکاری کاغذات وغیرہ کے حوالہ سے سیوگ لکھمی
جی سے پانچ برس کی محنت میں تیار کرا کر طبع کرائی ہے اول حصہ میں والیان جیسلمیر کی تواریخ (۲) جغرافیہ ملک مانڈ –
(۳) تمام خود مختار ریاستہائے راجپوتانہ کی تواریخ مع حالات اجمیر اور اکثر رؤسا و شرفا ہندوستان کے حالات ضروری با
لتفصیل درج ہیں – سچ تو یہ ہے کہ ایسی مبسوط کتاب آجتک ہندی میں تیار نہیں ہوئی امید کہ ناظرین کوئی غلطی پائیں تو براہ
عنایت اطلاع بخشیں تاکہ دوبارہ طبع ہونے میں صحت ہو سکے – خاکسار محمد مراد علی ہوشیار مالک و مہتمم مطبع چراغ راجستان و راجپوتانہ گزٹ اجمیر المرقوم ۱۵ اگست ۹۲ء